बेसिक बाइबल कोर्स

इरा वाई. राइस, जूनि.

Basic Bible Course

(A Study of the Book of Acts)

Author:
Ira Y. Rice., Jr.

Hindi Translation by
Earnest Gill

(Director)
The North India BIble College
Chandigarh

Published by
THE NORTH INDIA BIBLE COLLEGE
CHANDIGARH

Print version available
E-mail: hindibiblecourse@gmail.com
basicbiblecourse@gmail.com

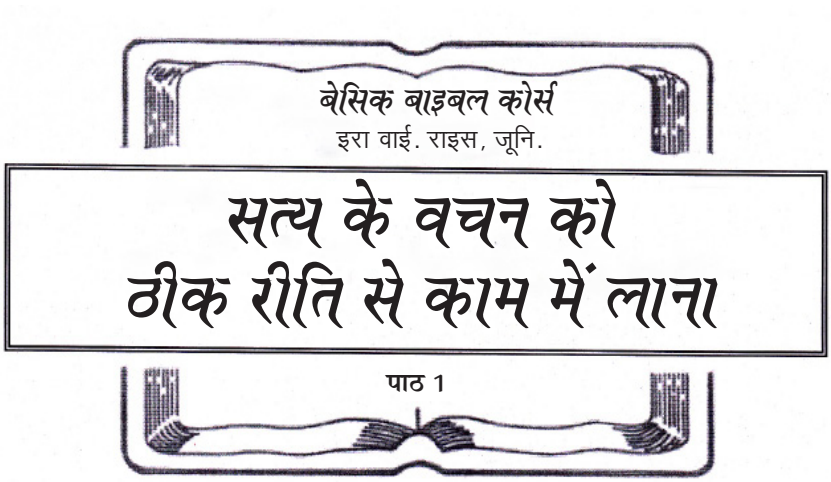

परिचय: जवान मसीही प्रचारक तीमुथियुस के नाम लिखते हुए प्रेरित पौलुस ने कहा, ''अपने आप को परमेश्वर का ग्रहण योग्य और ऐसा काम करने वाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो **सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो**'' (2 तीमुथियुस 2:15)। ''सत्य का वचन'' बाइबल अर्थात परमेश्वर का वचन है (यूहन्ना 17:17)। सही ढंग से इस्तेमाल करने पर यह वचन पृथ्वी से स्वर्ग की ओर ले जाता है। परन्तु गलत ढंग से ''**काम में लाने**'' पर ''**सत्य का वचन**'' भ्रमित करने वाले वचन में बदल सकता है। यदि हम ''ऐसा काम करने वाला'' ठहरना चाहते हैं ''**जो लज्जित होने न पाए**'' तो हमें भक्तिपूर्ण ढंग से सत्य के वचन को सही ढंग से काम में लाना आवश्यक है।

I. बाइबल परमेश्वर का बड़ा पुस्तकालय है

क. पूरी बाइबल में कुल 66 पुस्तकें हैं।

ख. बाइबल का **पहला** मुख्य भाग **पुराना** नियम है।

1. पुराने नियम में 39 अलग-अलग पुस्तकें हैं।
2. पुराने नियम में धर्म के दो अलग-अलग युग या बड़े काल आते हैं।
   - क. उत्पत्ति 1:1 से लेकर निर्गमन 20 अध्याय तक परमेश्वर व्यक्तियों और परिवारों के द्वारा पुरखाओं से व्यवहार करता था। जिसे पुरखाओं का युग कहा जाता है।
   - ख. निर्गमन 20 से मलाकी (वास्तव में, प्रेरितों के काम 2) तक परमेश्वर यहूदियों के साथ एक जाति के रूप में व्यवहार करता था। जिसे मूसा का युग कहा जाता है।
3. लगभग 32 लेखकों ने, पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर, पुराने नियम की

बातें लिखीं।

क. बाइबल के कुछ विद्वानों का मानना है कि **अय्यूब** की पुस्तक बाइबल की सबसे पुरानी पुस्तक है जबकि अन्य विद्वान **मूसा** के लेखों को सबसे पुराना मानते हैं।

ख. दोनों ही मामलों में पुराने नियम के पूरा होने में लगभग 1,100 वर्ष लगे।

ग. पुराने नियम के अन्तिम लेख मसीह से लगभग 400 वर्ष पहले हुए थे।

ग. बाइबल का **दूसरा,** मुख्य विभाजन **नया** नियम है।

1. नये नियम में 27 अलग-अलग पुस्तकें हैं।
2. प्रेरितों के काम के अध्याय 2 तक, नये नियम की पहली चार पुस्तकें किसी हद तक युग बदलने वाली हैं, जो यहूदी युग से मसीही युग में ले जाती हैं।
   क. इन पुस्तकों में मसीही विश्वास के बुनियादी नियमों की स्पष्ट घोषणा की गई है।
   ख. परन्तु ये नियम मसीह के जी उठने के बाद आने वाले पिन्तेकुस्त के दिन से पहले प्रेरितों के काम 2 अध्याय तक लागू नहीं हुए थे।
3. प्रेरितों के काम 2 अध्याय से **नया** नियम (अर्थात मसीही युग) प्रभावी हो गया था।
4. कुल-मिलाकर आठ लेखकों ने नये नियम की पुस्तकों को लिखते हुए पवित्र आत्मा द्वारा चुनी गई बातों को दर्ज किया।
   क. इस प्रयास में मोटे तौर पर 40 से 60 वर्ष लग गए थे।

II. पुराने नियम का सही विभाजन पांच भागों में होता है:

क. पुराने नियम के पहले भाग में मुख्यतया **व्यवस्था** आती है।

1. इसमें पांच पुस्तकें हैं।
   क. उत्पत्ति
   ख. निगर्मन
   ग. लैव्यव्यस्था
   घ. गिनती
   ङ. व्यवस्थाविवरण
2. उत्पत्ति 1:1 से निर्गमन 20 तक परमेश्वर ने अपनी इच्छा **व्यक्तियों** और **परिवारों** पर प्रकट की।
   क. परिवारों के पुरुष मुखिया जिन्हें ''पुरखे'' कहा जाता था, अपने परिवारों के **याजकों** का काम करते थे।
   ख. इस काल के दौरान जो लगभग 2,500 वर्ष तक का था, परमेश्वर ने धर्म का कोई सामान्य प्रबन्ध नहीं दिया।
3. निर्गमन 20 के आरम्भ से, सीनै पर्वत (अरब में) पुराने नियम का शेष भाग इस्राएल

की सन्तान अर्थात यहूदियों के लिए था।

ख. पुराने नियम के दूसरे भाग में मुख्यता **इतिहास** आता है।

1. इसमें 12 पुस्तकें हैं
   - क. यहोशू
   - ख. न्यायियों
   - ग. रूत
   - घ. 1 शमूएल
   - ङ. 2 शमूएल
   - च. 1 राजाओं
   - छ. 2 राजाओं
   - ज 1 इतिहास
   - झ. 2 इतिहास
   - ञ. एज्रा
   - ट. नहेम्याह
   - ठ. एस्तेर
2. इस ऐतिहासिक भाग को कालक्रम में लिखा और इकट्ठा किया गया है।
3. यह यहूदी जाति के कनान देश में प्रवेश करने से लेकर लगभग 400 ई. पू. तक के परमेश्वर के उनके साथ व्यवहारों का इतिहास है।

ग. पुराने नियम के तीसरे भाग में मुख्यतया **साहित्य** है।

1. इसमें पांच पुस्तकें हैं
   - क. अय्यूब
   - ख. भजन संहिता
   - ग. नीतिवचन
   - घ. सभोपदेशक
   - ङ. श्रेष्ठगीत
2. बेशक अन्य भागों की तरह थोड़ी व्यवस्था, थोड़ा इतिहास और थोड़ी नबूवत (यानी भविष्यवाणी) इन पुस्तकों में यहां-वहां बिखरी पड़ी है।
3. परन्तु अधिकतर भाग साहित्य या कविता वाला ही है।
   - क. वे अभिव्यक्ति की अपनी सुन्दरता और स्पष्टता के लिए प्रसिद्ध हैं।
   - ख. उनमें सदा तक रहने वाली सच्चाई है।

घ. पुराने नियम के चौथे भाग में **बड़े नबी** हैं।

1. इसमें पांच पुस्तकें हैं
   - क. यशायाह
   - ख. यिर्मयाह
   - ग. विलापगीत
   - घ. यहेजकेल

ङ. दानिय्येल

2. बाइबल के विद्वानों द्वारा इस भाग को आमतौर पर ''बड़े नबी'' कहा जाता है।
   क. इस कारण नहीं कि ये भविष्यवाणियां अन्य भविष्यवाणियों से किसी प्रकार अधिक महत्वपूर्ण हैं।
   ख. बल्कि इस कारण कि ये लेख अन्य भविष्यवक्ताओं या नबियों के लेखों से **अधिक विस्तृत** हैं।

ङ. पुराने नियम के पांचवें भाग को **छोटे नबी** कहा जाता है।

1. इसमें 12 पुस्तकें हैं
   क. होशे
   ख. योएल
   ग. आमोस
   घ. ओबद्याह
   ङ. योना
   च. मीका
   छ. नहूम
   ज. हबक्कूक
   झ. सपन्याह
   ञ. हाग्गै
   ट. जकर्याह
   ठ. मलाकी
2. इन पुस्तकों को ''छोटे नबी'' इसलिए कहा जाता है क्योंकि उनकी पुस्तकें छोटी हैं, न कि इसलिए कि उनका महत्व कम है।

III. इसी प्रकार नये नियम में पांच मुख्य भाग हैं:

क. नये नियम का पहला भाग अर्थात सुसमाचार का वृत्तांत **जीवनी** *है।*

1. इसमें 4 पुस्तकें हैं
   क. मत्ती
   ख. मरकुस
   ग. लूका
   घ. यूहन्ना
2. इन पुस्तकों का उद्देश्य यह साबित करना है कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है।

ख. नये नियम के दूसरे भाग में मुख्यतया **इतिहास** है।

1. इसमें एक पुस्तक है जिसे 'प्रेरितों के काम' कहा जाता है।
2. यह पुस्तक प्रेरितों के **सभी** काम या **सभी** प्रेरितों के काम बताने का दिखावा नहीं करती।
3. इसके विपरीत यह **कुछ** प्रेरितों के **कुछ** काम बताती है।

क. प्रेरितों 1 से 12 अध्याय तक इतिहास मुख्यतया प्रेरित पतरस पर केन्द्रित रहता है।

ख. प्रेरितों 13 से 28 अध्याय तक, इतिहास मुख्यतया प्रेरित पौलुस को समर्पित है।

ग. नये नियम के तीसरे भाग में **विशेष पत्र** हैं।

1. इस भाग में 14 पुस्तकें हैं
   - क. रोमियों
   - ख. 1 कुरिन्थियों
   - ग. 2 कुरिन्थियों
   - घ. गलातियों
   - ङ. इफिसियों
   - च. फिलिप्पियों
   - छ. कुलुस्सियों
   - ज. 1 थिस्सलुनीकियों
   - झ. 2 थिस्सलुनीकियों
   - ञ. 1 तीमुथियुस
   - ट. 2 तीमुथियुस
   - ड. तीतुस
   - ढ. फिलेमोन
   - ण. इब्रानियों
2. निस्संदेह प्रेरित पौलुस ने ये सभी 14 पुस्तकें लिखीं।
   - क. बाइबल के कुछ विद्वानों ने इब्रानियों की पुस्तक के उसके द्वारा लिखे जाने पर संदेह करने की कोशिश की है।
   - ख. परन्तु अधिकतर विद्वान इस बात से सहमत हैं कि इब्रानियों की पुस्तक भी पौलुस द्वारा ही लिखी गई थी।
3. इन चौदह पुस्तकों का उद्देश्य मसीही लोगों को बताना था कि कलीसिया में कैसे व्यवहार करना और बढ़ना है।

घ. नये नियम के चौथे भाग में **सामान्य पत्र** हैं।

1. इसमें 7 पुस्तकें हैं।
   - क. याकूब
   - ख. 1 पतरस
   - ग. 2 पतरस
   - घ. 1 यूहन्ना
   - ङ. 2 यूहन्ना
   - च. 3 यूहन्ना
   - छ. यहूदा

2. इनमें से प्रत्येक पुस्तक का शीर्षक यह स्पष्ट करता है कि इसे किसने लिखा।
3. ये पुस्तकें भी कलीसिया में मसीही लोगों की सामान्य शिक्षा के लिए हैं।

ङ. नये नियम का पांचवां (और अन्तिम) भाग **भविष्यवाणी** है।

1. इसमें एक पुस्तक है —प्रकाशितवाक्य।
2. इसे पतमुस नामक टापू पर प्रेरित यूहन्ना ने लिखा था।
3. प्रकाशितवाक्य के पहले तीन भाग पिछले और फिर वर्तमान के मामलों से सम्बन्धित हैं: ''आसिया की सात कलीसियाओं।''
   क. प्रकाशितवाक्य में ''आसिया'' एशिया माइनर अर्थात तुर्की को कहा गया है।
   ख. ''आसिया'' में बताए गए नगर ही आज भी आधुनिक तुर्की में प्राचीनकाल से हैं।
4. प्रकाशितवाक्य के शेष 19 अध्याय अधिकतर कलीसिया के **भविष्य** से सम्बन्धित हैं, जो 96 ईस्वी में पुस्तक के लिखे जाने से बाद का है।
   क. सम्भवतया इसकी अधिकतर सामग्री, जो बहुत ही प्रतीकात्मक थी, 96 ईस्वी में ''भविष्य'' थी।
   ख. परन्तु इस बात में थोड़ा संदेह है कि भविष्यवाणी के रूप में प्रकाशितवाक्य का कम से कम कुछ **भाग** अभी पूरा हो गया हो।

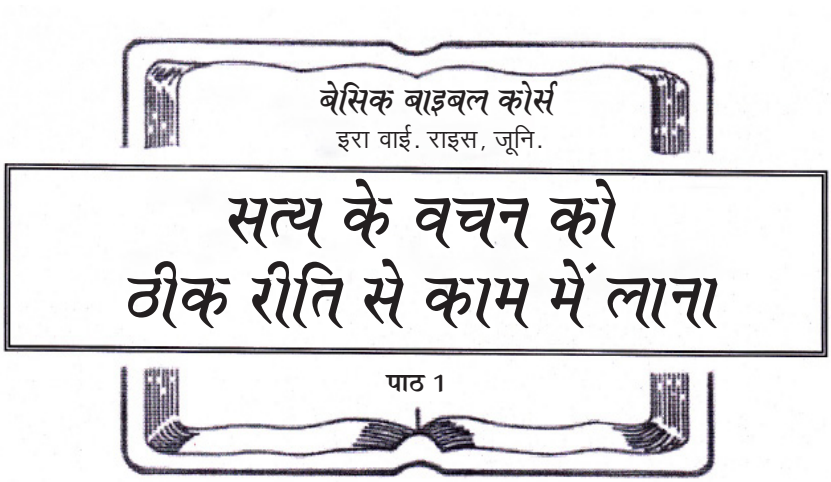

पाठ 1 के प्रश्न

Registration No..... Grade .....

Name.....

Address.....

.....

.....PIN.....

Mobile No.....e-mail.....

(पता अंग्रेजी के बड़े अक्षरों में ही लिखें।)

1. किस **लेखक** ने जवान प्रचारक तीमुथियुस को समझाया कि ''अपने आप को परमेश्वर का ग्रहण योग्य और ऐसा काम करने वाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो **सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो**''?

.....

2. **बाइबल** में **कितनी पुस्तकें** हैं? .....

3. **पुराने** नियम में **कितनी पुस्तकें** हैं? .....

4. **नये** नियम में **कितनी पुस्तकें** हैं? .....

5. बाइबल के कितने मुख्य विभाजन हैं? .....

6. बाइबल के दो **मुख्य विभाजनों** के नाम लिखें।

   1)..... 2).....

7. **पुराने** नियम के **धार्मिक युगों** कौन-कौन से हैं?

   1. ..... 2. .....

8. **पुराने** नियम को लगभग **कितने लेखकों** ने लिखा?

   .....

9. क्या पुराने नियम के उन लेखकों ने (क) उनकी **अपनी ही इच्छा** के अनुसार लिखा? या (ख) **पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाने से** भविष्यवाणी की? कैसे?

   .....

   (अपने उत्तर के लिए 2 पतरस 1:21 की सहायता लें)

10. **पुराने** नियम के **लेख** को पूरा करने के लिए लगभग **कितने वर्ष** लगे?

    .....

11. **नये** नियम को लगभग **कितने लेखकों** ने लिखा?

    .....

12. **पुराने** नियम के अन्त और **नये** नियम के आरम्भ के बीच लगभग **कितने वर्ष** बीत गए?

.....

13. क्या **नये** नियम के लेखकों ने उनके **अपने ही शब्दों** को चुना या वे शब्द **पवित्र आत्मा** की ओर से दिए गए थे? कौन सा सही है? .....

(उत्तर देने से पहले 1 कुरिन्थियों 2:13 का अध्ययन कर लें।)

14. **नये** नियम के लेख को पूरा होने में लगभग **कितने वर्ष** लगे? .....

15. सही ढंग से काम में लाएं तो **पुराने** नियम में पुस्तकों के **कितने भाग** हैं? .....

16. प्रत्येक विभाजन में **पुस्तकों की संख्या** बताते हुए पुराने नियम के **विभाजनों** (भागों) के नाम बताएं (क्रम में):

विभाजन (भाग):	कितनी पुस्तकें?
1.	.....
2.	.....
3.	.....
4.	.....
5.	.....

17. ठीक रीति से काम में लाने पर नये नियम में पुस्तकों के **कितने भाग** हैं? .....

18. प्रत्येक विभाजन में **पुस्तकों की संख्या** बताते हुए नये नियम के **विभाजनों** (भागों) के नाम बताएं (क्रम में):

विभाजन (भाग) :	कितनी पुस्तकें?
1.	.....
2.	.....
3.	.....

4. ....

5. ....

19. मसीह के नियम किस **दिन** लागू हुए .....

20. बाइबल का हवाला बताएं .....

(पुस्तक का नाम और अध्याय बताएं)

क्या आपका कोई प्रश्न है ? .....

.....

.....

.....

.....

सब वस्तुओं का आरम्भ कैसे हुआ

परिचय: हर युग में मनुष्य ने इस बात पर ध्यान दिया है कि पृथ्वी, आकाश, जीवित वस्तुएं और वह स्वयं सब कैसे आरम्भ हुआ। जिसमें ''नैबुलर'' (अस्पष्ट), ''प्लैनिटेसिमल'' (ग्रहाणु) और ''इवोल्युशनरी'' (विकासवादी) थ्यौरियां या अनुमानों सहित कई निष्कपट थ्यौरियां (अनुमान) बनाई गई हैं। बाइबल कोई थ्यौरी नहीं देती यानी **अनुमान** नहीं लगाती है कि सब वस्तुओं का आरम्भ कैसे हुआ। इसके विपरीत यह इन बातों को केवल तथ्यों के रूप में बताती है, जैसा कि नीचे पता चलता है:

I. ''आदि में परमेश्वर ने **आकाश** और **पृथ्वी** की **सृष्टि की**'' - उत्पत्ति 1:1
   - क. पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी थी— आयत 2.
   - ख. गहरे जल के ऊपर अंधियारा था— आयत 2.
   - ग. परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मंडराता था— आयत 2.
   - घ. परमेश्वर ने कहा, ''**उजियाला हो**''— आयत 3.
     1. उजियाला हो गया।
     2. परमेश्वर ने उजियाले को देखा कि यह अच्छा है— आयत 4.
   - ङ. परमेश्वर ने उजियाले को अंधियारे से अलग किया— आयत 4.
   - च. परमेश्वर ने उजियाले को दिन कहा— आयत 5.
   - छ. परमेश्वर ने अंधियारे को रात कहा— आयत 5.
   - ज. सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार **पहला दिन** हो गया— आयत 5.

II. परमेश्वर ने कहा, ''जल के बीच एक **अन्तर हो** कि जल दो भाग हो जाए'' -आयत 6
   - क. तब परमेश्वर ने अन्तर को बनाया।
   - ख. अन्तर ने अपने नीचे के जल को अपने ऊपर के जल से अलग कर दिया— आयत 7.

नोटः यह ''अन्तर'' वही है जिसे हम आम तौर पर ''आकाश'' कहते हैं।

ग. परमेश्वर ने अन्तर को आकाश कहा— आयत 8.

घ. सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार **दूसरा दिन** हो गया— आयत 8.

III. फिर परमेश्वर ने कहा, ''आकाश के नीचे का **जल एक स्थान में इकट्ठा हो जाए** और **सूखी भूमि** दिखाई दे'' — आयत 9.

नोटः विचार करें कि परमेश्वर का वचन कितना सामर्थ से भरा था। सृष्टि की हर बात में, परमेश्वर ने केवल *कहा* और वैसा ही हो गया!

क. परमेश्वर ने सूखी भूमि को पृथ्वी कहा— आयत 10.

ख. इकट्ठे हुए जल को समुद्र कहा — आयत 10.

ग. परमेश्वर ने देखा कि यह अच्छा है।

घ. परमेश्वर ने कहा, ''पृथ्वी से ... हो''

1. हरी **घास**
2. बीज वाले **छोटे छोटे पेड़**
3. **फलदायी वृक्ष**
   - क. जिनके फल उनकी जाति के अनुसार
   - ख. जिनके बीज उनकी जाति के अनुसार हों

ङ. वैसा ही हो गया (आयत 11)। पृथ्वी से ... उगे।

1. हरी घास
2. बीज वाले छोटे छोटे पेड़
3. फलदायी वृक्ष

च. परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है— आयत 12.

छ. सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार **तीसरा दिन** हो गया— आयत 13.

IV. परमेश्वर ने कहा, ''दिन को रात से अलग करने के लिये **आकाश के अन्तर** में **ज्योतियां** हों; और वे **चिह्नों,** और **नियत समयों,** और **दिनों,** और **वर्षों** के कारण हों। और वे ज्योतियां आकाश के अन्तर में **पृथ्वी पर प्रकाश देने वाली** भी ठहरें;'' और वैसा ही हो गया - आयतें 14-15.

क. परमेश्वर ने दो बड़ी ज्योतियां बनाईं:

1. बड़ी ज्योति दिन पर प्रभुता करने के लिए— आयत 16.
2. छोटी ज्योति रात पर प्रभुता करने के लिए— आयत 16.

ख. उसने तारागण को भी बनाया।

ग. परमेश्वर ने उनको आकाश के अन्तर में रखा— आयत 17.

1. पृथ्वी पर प्रकाश देने के लिए।
2. दिन और रात पर प्रभुता करने के लिए— आयत 18.
3. उजियाले को अंधियारे से अलग करने के लिए— आयत 18.

घ. परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है।

ङ. सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार **चौथा दिन** हो गया— आयत 19.

V. परमेश्वर ने कहा, ''**जल जीवित प्राणियों से** बहुत ही भर जाए, और **पक्षी** पृथ्वी के ऊपर आकाश के अन्तर में उड़ें''- आयत 20.

क. परमेश्वर ने जाति-जाति के बड़े बड़े जल जन्तुओं की जो पानी में चलते फिरते हैं, सृष्टि की— आयत 21.

ख . जल उनकी जातियों से बहुत ही भर गया— आयत 21.

ग. हर जाति के उड़ने वाले पक्षी भी बनाए गए— आयत 21.

घ. परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है— आयत 21.

ङ. परमेश्वर ने यह कहके उनको आशीष दी, ''**फूलो-फलो,** और **समुद्र के जल में भर जाओ** और **पक्षी पृथ्वी पर बढ़ें**'' — आयत 22.

च. सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार **पांचवां दिन** हो गया।

VI. परमेश्वर ने कहा, ''**पृथ्वी** से एक-एक जाति के **जीवित प्राणी,** अर्थात् **घरेलू पशु,** और **रेंगने वाले जन्तु,** और पृथ्वी के **वनपशु**, जाति-जाति के अनुसार उत्पन्न हों''- और वैसा ही हो गया —आयत 24.

क. परमेश्वर ने बनाया—

1. पृथ्वी के जाति जाति के वन पशुओं को— आयत 25.
2. जाति जाति के घरेलू पशुओं को।
3. जाति जाति के भूमि पर सब रेंगने वाले जन्तुओं को

ख. परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है।

ग. परमेश्वर ने कहा, ''हम **मनुष्य** को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं; और वे समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और घरेलू पशुओं, और सारी पृथ्वी पर, और सब रेंगने वाले जन्तुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, **अधिकार** रखें''— आयत 26.

1. परमेश्वर ने मनुष्य को अपने ही स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया— आयत 27.
   - क. परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया।
   - ख. नर और नारी करके उस ने मनुष्यों की सृष्टि की।
2. परमेश्वर ने उनको आशीष दी—
   - क. **फूलो फलो,**
   - ख. और **पृथ्वी में भर जाओ** और उसको **अपने वश में कर लो**।
   - ग. **अधिकार रखो**
     - (1) समुद्र की मछलियों पर
     - (2) आकाश के पक्षियों पर

(3) पृथ्वी पर रेंगने वाले सब जन्तुओं पर

3. परमेश्वर ने कहा, ''सुनो, जितने बीज वाले छोटे-छोटे पेड़ सारी पृथ्वी के ऊपर हैं और जितने वृक्षों में बीज वाले फल होते हैं, वे सब मैं ने तुम को दिए हैं; वे तुम्हारे भोजन के लिये हैं: और जितने पृथ्वी के पशु, और आकाश के पक्षी, और पृथ्वी पर रेंगने वाले जन्तु हैं, जिन में जीवन के प्राण हैं, उन सब के खाने के लिये मैं ने सब हरे-हरे छोटे पेड़ दिए हैं''- और वैसा ही हो गया —आयतें 29-30.

घ. परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था सब को देखा, तो क्या देखा, कि वह बहुत ही अच्छा है— आयत 31.

ङ. सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार **छठवां दिन** हो गया— आयत 31.

VII. यों आकाश और पृथ्वी और उनकी सारा सेना का बनाना समाप्त हो गया— उत्पत्ति 2:1.

क. परमेश्वर ने **अपना काम** जिसे वह करता था, **सातवें दिन** समाप्त किया— आयत 2.

ख. **परमेश्वर ने सातवें दिन विश्राम किया**— आयत 2.

ग. परमेश्वर ने **सातवें दिन को आशीष दी** और **पवित्र ठहराया**; क्योंकि उसने उसमें सृष्टि की रचना के अपने सारे काम से विश्राम किया— आयत 3.

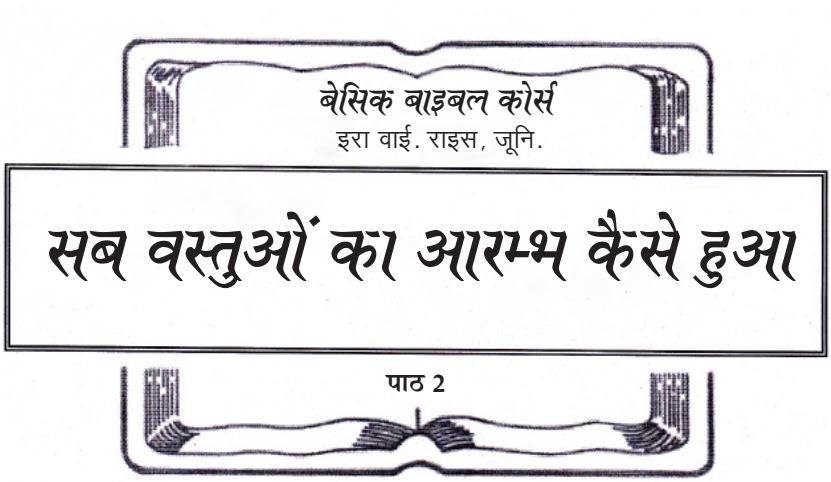

पाठ 2 के प्रश्न

Registration No..... Grade .....

Name.....

Address.....

.....

.....PIN.....

Mobile No.....e-mail.....

(पता अंग्रेजी के बड़े अक्षरों में ही लिखें।)

1. वस्तुओं के आरम्भ के बारे में मनुष्य द्वारा बनाई गई तीन थ्यौरियां (अनुमान) बताएं:

   1. .....

   2. .....

   3. .....

2. क्या बाइबल इस बात की थ्यौरी (या **अनुमान**) देती है कि वस्तुओं का आरम्भ कैसे हुआ? .....

3. उत्पत्ति 1:1 में से उस **ढंग** या **माध्यम** का नाम बताएं जिसके द्वारा परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी को अस्तित्व में लाया: .....

4. परमेश्वर द्वारा बनाए जाने के समय पृथ्वी कैसी थी? .....

5. अंधियारे में से, जो मूलतया पृथ्वी के ऊपर था, **ज्योति** कैसे आई?

   .....

6. बताएं कि परमेश्वर ने **पहले दिन** किस की सृष्टि की?

   .....

7. परमेश्वर ने **दूसरे दिन** किसे बनाया? .....

8. परमेश्वर ने सब वस्तुओं की **सृष्टि** किस **शक्ति** के साथ की? .....

9. बताएं कि परमेश्वर ने **तीसरे दिन** क्या बनाया? .....

   .....

10. परमेश्वर ने **सूखी भूमि** को क्या कहा? .....

11. उसने इकट्ठा हुए **जल** को क्या कहा? .....

12. बताएं कि परमेश्वर ने **चौथे दिन** क्या बनाया? .....

13. वे **पांच कारण** बताएं जो परमेश्वर ने सूर्य, चांद और तारागण को बनाने के लिए दिए:

(देखें उत्पत्ति 1:14, 15)।

1. .....

2. .....

3. .....

4. .....

5. .....

14. बताएं कि परमेश्वर ने **पांचवें दिन** में क्या बनाया? .....

15. रेंगने वाले, जल जन्तुओं और आकाश के पक्षियों को आशीष देते हुए परमेश्वर ने उन्हें क्या आज्ञा दी? .....

.....

.....

.....

16. बताएं कि परमेश्वर ने **छठे दिन** क्या बनाया? .....

17. **मनुष्य** को किस दिन बनाया गया? .....

18. परमेश्वर ने मनुष्य को किसके स्वरूप के अनुसार बनाया? .....

19. परमेश्वर ने कहा, ''..... ..... को ....
के अनुसार अपनी समानता में बनाएं; और वे समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और घरेलू पशुओं, और सारी पृथ्वी पर, और सब रेंगनेवाले जन्तुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, ... रखें'' (रिक्त स्थानों को भरें)।

20. परमेश्वर ने **सातवें दिन** क्या-क्या बनाया?

.....

.....

.....

आपका कोई प्रश्न है तो उसे यहां लिखें .....

.....

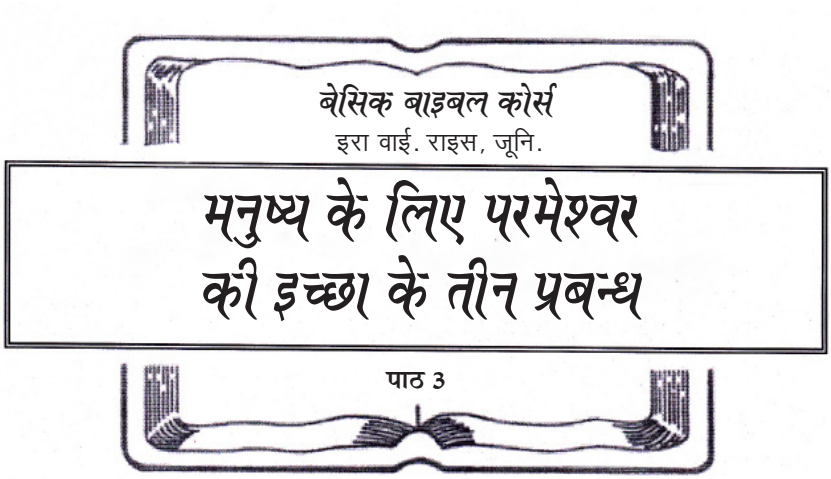

परिचय: ''आकाश परमेश्वर की महिमा का वर्णन कर रहा है; और आकाशमण्डल उसकी हस्तकला को प्रगट कर रहा है'' (भजन संहिता 19:1)। तो, परमेश्वर की **महिमा** और उसकी **हस्तकला** को जानने के लिए आइए आकाश और आकाशमण्डल का अध्ययन करते हैं। परन्तु हो सकता है कि कोई मरने तक तारों का अध्ययन करता रहे पर इसके बावजूद उसे मनुष्यजाति के लिए परमेश्वर की **इच्छा** की एक भी बात पता न चल पाए। परमेश्वर की **इच्छा** को जानने के लिए मनुष्य के लिए उसके **वचन** का अध्ययन करना आवश्यक है।

परमेश्वर के वचन अर्थात बाइबल का अध्ययन ध्यान से करने पर पता चलता है कि इसे धर्म के तीन प्रबन्धों में बांटा गया है जिसे पुरखाओं का प्रबन्ध, यहूदी प्रबन्ध, और मसीही प्रबन्ध कहा जाता है। परमेश्वर ने इन में से प्रत्येक प्रबन्ध में लोगों पर अपनी इच्छा प्रगट की। परन्तु एक प्रबन्ध में परमेश्वर की इच्छा (परमेश्वर का ठहराया हुआ इंतज़ाम या सिस्टम) अगले प्रबन्धों के लिए वही नहीं थी। परमेश्वर के वचन में से, हम बुनियादी अन्तरों को देखते हैं:

I. **पुरखाओं का प्रबन्ध** (उत्पत्ति 1:1 से निर्गमन 20)
   क. मनुष्यजाति के आरम्भिक लगभग 2,500 वर्षों तक (यानी आदम से मूसा तक), परमेश्वर मनुष्यों के साथ व्यक्तियों और परिवारों के रूप में व्यवहार करता था।
      1. प्रत्येक परिवार का मुखिया जिसे ''पुरखा'' कहा जाता था, अपने परिवार के ऊपर एक प्रकार का याजक होता था।
   ख. इस काल के दौरान परमेश्वर किसी एक व्यक्ति के लिए एक बात और दूसरे व्यक्ति के लिए दूसरी बात की आज्ञा देता था। यानी आवश्यक नहीं था कि एक व्यक्ति या परिवार को दी गई उसकी आज्ञाएं अगली पीढ़ी के लिए भी हों।

   उदाहरण:

1. परमेश्वर ने **आदम और हव्वा** को आज्ञा दी कि ''भले और बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है उसका फल तू कभी न खाना, क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाएगा उसी दिन अवश्य मर जाएगा'' (उत्पत्ति 2:17)।
   क. आदम और हव्वा ने इस पेड़ का फल खा लिया जिसका परिणाम हम सब जानते हैं (उत्पत्ति 3:1-24)।

   प्रश्न: आदम और हव्वा दोनों के अलावा और किसे इस वृक्ष का फल न खाने की आज्ञा दी गई थी? उत्तर है किसी को भी नहीं।
2. परमेश्वर ने **नूह** को एक बड़ा जहाज़ बनाने की आज्ञा दी (उत्पत्ति 6:14-16)।
   क. यहां तक, पृथ्वी पर होने वाली किसी वर्षा का वर्णन नहीं है (उत्पत्ति 2:5-6)।
   ख. परन्तु मनुष्य की दुष्टता से परमेश्वर का मन दुखी हुआ (उत्पत्ति 6:5-6)।
   ग. परमेश्वर ने मनुष्य को पृथ्वी पर से मिटा देने का निश्चय किया (उत्पत्ति 6:7)।
   घ. परन्तु नूह के ऊपर यहोवा के अनुग्रह की दृष्टि बनी रही (उत्पत्ति 6:8)।
   ङ. नूह को जहाज़ बनाने की परमेश्वर की आज्ञा का कारण ''पृथ्वी पर जल प्रलय'' लाकर सब प्राणियों को, जिनमें जीवन का प्राण है, नष्ट करने का उसका निर्णय था (उत्पत्ति 6:17)।
   च. वर्षा होती या न, परन्तु नूह ने परमेश्वर पर विश्वास किया, क्योंकि ''परमेश्वर की इस आज्ञा के अनुसार नूह ने किया'' (उत्पत्ति 6:22)।
   छ. नूह के आज्ञा मानने का परिणाम उत्पत्ति की पुस्तक के अध्याय 7 और 8 में दिया गया है।

   प्रश्न: परमेश्वर ने नूह के अलावा ऐसा जहाज़ बनाने की आज्ञा और किसको दी थी? उत्तर है किसी को भी नहीं।
3. परमेश्वर ने **अब्राहम** को अपने पुत्र इसहाक को होमबलि के रूप में वेदी पर बलिदान करने की आज्ञा दी (उत्पत्ति 22:1-2)।
   क. इस आज्ञा का उद्देश्य अब्राहम के विश्वास को परखना था (आयतें 1 और 12)।
   ख. विश्वास से अब्राहम बिल्कुल वैसे ही करने के लिए जैसे परमेश्वर ने उसे आज्ञा दी थी करता रहा जब तक परमेश्वर ने उसकी आज्ञाकारिता से संतुष्ट होकर उसके हाथ को रोक नहीं दिया (आयतें 3-14)।

प्रश्न: परमेश्वर ने अपने पुत्र को होमबली करने की आज्ञा और किस को दी? उत्तर है किसी को नहीं।

नोट: ऊपर लिखी गई बातों से हम देखते हैं कि परमेश्वर ने आदम से लेकर मूसा तक के पुरखाओं के समय के दौरान एक व्यक्ति और/या परिवार से दूसरे तक परमेश्वर की प्रगट की गई इच्छा

अलग अलग थी।

II. **यहूदी प्रबन्ध** (निर्गमन 20 से प्रेरितों के काम 2 तक)।

क. पुरखाओं के काल के अन्त के पास, अब्राहम के पोते याकूब ने एक रात एक स्वर्गदूत के साथ ''पौ फटने तक'' मल्लयुद्ध किया (उत्पत्ति 32:24-32)।

1. यह स्वर्गदूत याकूब पर प्रबल नहीं हो पाया (आयत 25)।
2. उसने याकूब की जांघ की नस को छू लिया जिससे मल्लयुद्ध करते उसकी जांघ की नस चढ़ गई (आयत 25)।
3. स्वर्गदूत ने कहा, ''मुझे जाने दे, क्योंकि भोर होने वाला है।''
4. याकूब कहने लगा, ''जब तक तू मुझे आशीर्वाद न दे, तब तक मैं तुझे जाने न दूंगा'' (आयत 26)।
5. स्वर्गदूत ने पूछा, ''तेरा नाम क्या है? ''
6. उसने कहा, ''याकूब'' (आयत 27)।
7. स्वर्गदूत ने उत्तर दिया, ''तेरा नाम अब याकूब नहीं परन्तु **इस्राएल** होगा, क्योंकि तू परमेश्वर से और मनुष्यों से भी युद्ध करके प्रबल हुआ है'' (आयत 28)।
8. स्वर्गदूत ने उसे आशीर्वाद दिया (आयत 29)।

ख. इस घटना से सैकड़ों वर्ष पहले, परमेश्वर ने अब्राहम से (जो उस समय अब्राम कहलाता था) कहा था, ''अपने देश, और अपनी जन्मभूमि, और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊंगा। और **मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊंगा,** और तुझे आशीष दूंगा, और तेरा नाम बड़ा करूंगा, और तू आशीष का मूल होगा। और जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूंगा; और जो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूंगा; और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएंगे'' (उत्पत्ति 12:1-3)।

ग. कई सदियां बीत जाने के बाद, मिस्र देश के अपने प्रवास के अन्त में, अब्राहम की संतान जिसे अब ''इस्राएल'' कहा जाता था, सचमुच में ''**एक बड़ी जाति**'' बन गई थी।

1. इस्राएल की संतान फूले फले, और अत्यन्त सामर्थी हुए और इतने अधिक बढ़ गए कि सारा देश उनसे भर गया (निर्गमन 1:7)।
2. मिस्री लोग इस्राएल की संतान (अर्थात यहूदियों) से जलते थे क्योंकि उन्होंने उन्हें दासता और गुलामी में रखा हुआ था (निर्गमन 1:8-14)।
3. परमेश्वर ने इस्राएल की संतान में एक सामर्थी अगुआ उत्पन्न किया जिसका नाम मूसा था।
4. मिस्रियों के साथ बहुत व्यर्थ झगड़े के बाद मूसा अन्त में इस्राएल की संतान को दासता में से सीनै नामक जंगल में ले गया जो मिस्र से लाल समुद्र के दूसरी ओर था (निर्गमन 14)।
5. इस्राएल की संतान के मिस्र देश से निकलने के बाद, तीसरे महीने, वे सीनै के जंगल में पहुंचे (निर्गमन 19:1)।

क. उस जंगल में उन्होंने एक पहाड़ के पास डेरा लगाया (आयत 2)।

ख. परमेश्वर ने मूसा से बात करने के लिए उसे पहाड़ पर बुलाया (आयत 3)।

ग. परमेश्वर ने मूसा को बताया कि *यदि इस्राएल की संतान उसकी बात सुनकर उसकी वाचा को माने* तो वह उन्हें **सब लोगों में से** अपने लिए *अपने निज धन* बना लेगा (आयत 5)।

घ. इस्राएल की संतान को अपने ''लोग'' होना चुनकर परमेश्वर ने उन्हें सीनै पहाड़ पर एक विशेष ''व्यवस्था'' दी (निर्गमन 20)।

1. इस व्यवस्था की जानकारी उनके पूर्वजों को नहीं थी (व्यवस्थाविवरण 5:3)।
2. यह व्यवस्था (जिसमें *दस आज्ञाएं* भी थीं) इस्राएल के साथ यानी उनके साथ बांधी गई थी ''जो दासत्व के घर अर्थात मिस्र देश से निकाले'' गए थे (निर्गमन 20:2)।
3. यह व्यवस्था *केवल* इस्राएल पर लागू होनी थी (व्यवस्थाविवरण 5:1-4)।
4. यह *अन्यजातियों* के ऊपर लागू नहीं होती थी (रोमियों 2:14)।

ङ. तो, अगले लगभग 1,500 वर्षों तक परमेश्वर ने व्यक्तियों और परिवारों के साथ व्यवहार *नहीं किया* बल्कि एक जाति के रूप में इस्राएल की संतान के साथ व्यवहार किया।

नोट: यह ''व्यवस्था'' जिसे ''वाचा,'' ''यहोवा की व्यवस्था'' या ''मूसा की व्यवस्था'' भी कहा जाता है, यहूदियों और अन्यजातियों के बीच बांटने वाली एक दीवार बन गई। इस्राएल जाति के पास व्यवस्था थी जबकि अन्यजातियों के पास व्यवस्था नहीं थी। यह प्रबन्ध सीनै पर्वत पर मूसा से लेकर पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा के उतरने के साथ मसीह तक रहा।

III. मसीही प्रबन्ध

क. यीशु मसीह का जन्म मूसा की व्यवस्था के अधीन हुआ (गलातियों 4:4)।

ख. यीशु व्यवस्था को ''नष्ट'' करने के लिए नहीं बल्कि इसे ''पूरा'' करने आया (मत्ती 5:17-18)।

1. उसने बताया कि व्यवस्था तब तक **नहीं टल सकती थी जब तक सारी की सारी पूरी न हो** जाए (आयत 18)।
2. उसके आने का उद्देश्य व्यवस्था को **पूरा करना** था (आयत 17)।
3. यीशु ने उस काम को जिसे वह करने के लिए आया था **पूरा किया** (यूहन्ना 17:4)।
4. इस प्रकार से हम देखते हैं कि व्यवस्था का टल जाना उसका **नष्ट होना** नहीं बल्कि उसका **पूरा होना** है।

नोट: बाइबल के कुछ शिक्षार्थी इस बात को न समझते हुए कि यीशु व्यवस्था को नष्ट करने के द्वारा नहीं बल्कि इसे पूरा करने के द्वारा किस प्रकार टाल पाया, इस बात पर ठोकर खाते

हैं। इस नियम को एक अनुबन्ध यानी किसी काम को करने का ठेका दिए जाने के द्वारा समझाया जा सकता है। मान लीजिए कि एक बिल्डर ने किसी नगर में एक पुल बनाने का ठेका किया है। इस ठेके में दो बातें हीहो सकती हैं। या तो वह अनुबन्ध को खत्म कर दे या फिर इसे पूरा करे। यदि वह इसे खत्म कर देता है तो अनुबन्ध या ठेका अपने आप रद्द हो जाएगा। परन्तु यदि वह इसे पूरा करता है तो अनुबन्ध इस प्रकार खत्म नहीं हुआ जैसे यह रद्द होकर हो सकता था। फर्क इस बात का नहीं है कि अनुबन्ध अभी भी लागू है या नहीं बल्कि इस बात का है कि यह टला कैसे, नष्ट होने के द्वारा या पूरा होने के द्वारा? इसी प्रकार से इस्राएल को दी गई व्यवस्था नष्ट होने के द्वारा नहीं बल्कि यीशु द्वारा पूर्ण रूप में इसके अनुसार जीवन बिताकर इसे पूरा करते हुए टल गई। इस प्रकार से व्यवस्था का पूरा होना हुआ। उसे क्रूस पर कीलों पर ठोका जाने पर वहां उसके साथ पुरानी व्यवस्था को कीलों से ठोक दिया गया जिससे नई व्यवस्था के लागू होने के लिए रास्ता खुल गया।

ग. यीशु सब बातों में **पुरानी** व्यवस्था अर्थात उस व्यवस्था जिसके अधीन वह जन्मा था, की शर्तों को पूरा करते हुए उस **नई** व्यवस्था के नियमों और शर्तों की घोषणा कर रहा था जो बाद में लागू होनी थीं।
   1. यह **नई** व्यवस्था (या नियम), यीशु के पृथ्वी पर रहने के समय पहले लागू नहीं हो सकती थी (इब्रानियों 9:15-17)।

घ. जब तक पहली व्यवस्था थी तब तक दूसरी व्यवस्था भी लागू नहीं हो सकती थी (इब्रानियों 10:9)।
   1. इसलिए यह आवश्यक था कि पुराना नियम (या व्यवस्था) जो मूसा के द्वारा दिया गया, क्रूस पर कीलों से ठोक दिया जाए (बेशक प्रतीकात्मक भाषा में), जिससे नये नियम के लागू होने के लिए रास्ता साफ़ हो।

नोट: हर अगले पाठ में हम इस विषय में और गहराई में जाएंगे। मसीही लोगों के लिए यह सोचना काम नहीं आएगा कि **पुरानी** व्यवस्था का कोई भी भाग **नई** व्यवस्था में लाया गया था। ऐसा नहीं है। हर अन्तिम ''बिन्दु'' या ''नुक्ता'' कलवरी पर निरस्त कर दिया गया था।

ङ. यीशु ने पिन्तेकुस्त के दिन अपना पवित्र आत्मा भेजा था (प्रेरितों 2), जिससे नये नियम के अनुसार (जो उसी दिन लागू हुआ था), प्रेरितों को सुसमाचार सुनाने की सामर्थ दी गई।

च. उस दिन के बाद से **नये** नियम ने पूरी तरह से **पुराने** नियम का स्थान ले लिया (इब्रानियों 10:9)।
   1. यहूदी लोग जो पहले **पुराने** नियम को मानते थे अब उनके लिए उसे छोड़कर **नये** नियम को स्वीकार करना आवश्यक था।
   2. अन्यजाति, जो **पुराने** नियम के अधीन **निकाले हुए लोग** थे, **नये** नियम के अधीन उन्हें मिला लिया गया।

छ. इस प्रकार नया नियम **अन्तराष्ट्रीय** या **विश्वव्यापी** धर्म का आधार बन गया (लूका 24:46-47; मरकुस 16:15-16)।

ज. प्रेरितों 2 में ठहराए गए के अनुसार, पिन्तेकुस्त के दिन (ईस्वी 33) से यह समय के अन्त तक यह लागू रहेगा (मत्ती 28:20)।

नोट: तीनों प्रबन्धों को समझाने के लिए नीचे दो चार्ट दिए गए हैं:

चार्ट ए-

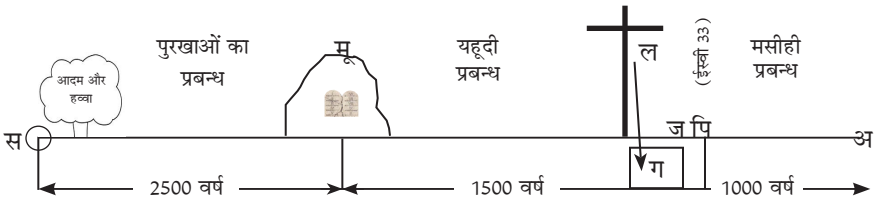

व्याख्या: स से **अ** तक की बीच की रेखा संसार की **सृष्टि** से **अन्त** तक की **समय की अवधि** को दर्शाता है। आदम और हव्वा वाला वृक्ष (बायें) **अदन की वाटिका** को दर्शाता है जहां उन दोनों को रखा गया था। पहाड़ के ऊपर **मू व्यवस्था** लेते हुए **सीनै पर्वत** पर मूसा को दर्शाता है। **म मसीह के आने** और उस के **क्रूस पर चढ़ाए जाने** को दर्शाता है; **ल मृत्यु** में बहे उसके लहू को दर्शाता है। उसके नीचे का **ग** उसके गाड़े जाने, **ज** तीसरे दिन उसके मुर्दों में से **जी उठने** और पि 50 दिन बाद आने वाले **पिन्तेकुस्त** को दर्शाता है। आदम और हव्वा से लेकर सीनै पर मूसा तक परिवार पर आधारित **पुरखाओं** के धर्म का शासन रहा, जो 2,500 साल तक रहा। मूसा से लेकर पिन्तेकुस्त के दिन (ईस्वी 33) मसीह तक पुरखाओं के प्रबन्ध ने जाति के रूप में इस्राएल की संतान पर आधारित यहूदी धर्म का मार्ग खोला जो 1,500 साल तक रहा। पिन्तेकुस्त के दिन मसीह से लेकर समय के अन्त तक यहूदी धर्म की जगह लेने वाला मसीही धर्म अन्तर्राष्ट्रीय धर्म है जो संसार भर में फैला है और लगभग 1,900 साल से है और संसार के अन्त रहेगा। ऐसी ही व्याख्या चार्ट बी पर भी लागू होती है:

चार्ट बी–

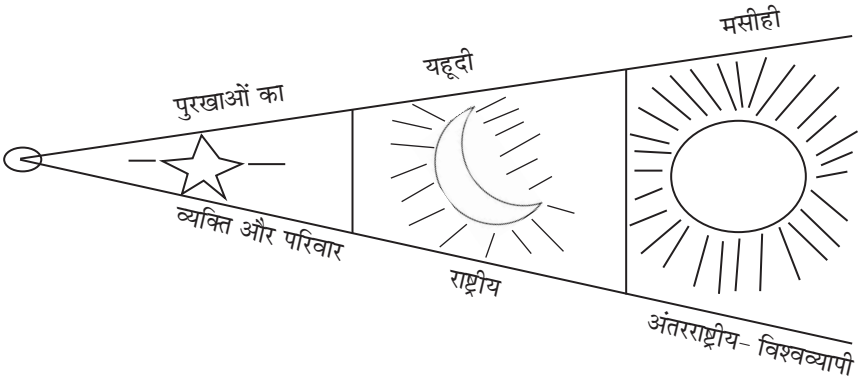

नोट: चार्ट बी चाहे अपनी व्याख्या आप करता है परन्तु हम एक या दो अतिरिक्त विचारों पर ध्यान देंगे। परमेश्वर द्वारा **व्यक्तियों** और **परिवारों** के रूप में उस दौरान मनुष्यजाति को ''प्रकाश'' की छोटी सी झलक का संकेत देने के लिए पुरखाओं वाले भाग में हमने **तारा** बताया है। ... सीनै पर्वत पर मूसा तक आने तक, परमेश्वर की इच्छा का प्रकाश बहुत बढ़ गया था जिसमें धर्म को पारिवारिक की आराधना से **राष्ट्रीय** आराधना में बढ़ा दिया गया– इस कारण हमने इस विचार को समझाने के लिए **चांद** बनाया है। ... परन्तु पुरखाओं के तारे के प्रकाश और यहूदी जाति के चांद का प्रकाश (अर्थात पुराना नियम) किसी भी प्रकार से **मसीही** धर्म के सूर्य के प्रकाश (यानी नये नियम) के साथ नहीं मिलाया जा सकता था, जहां पर यीशु मसीह ने **सब मनुष्यों के** ऊपर **हर जगह** उद्धार देने वाले अपने अनुग्रह की छाया की है। इस कारण हमने **मसीही प्रबन्ध** के बड़े प्रकाश को दर्शाने के लिए सूर्य बनाया है।

बाइबल की स्पष्ट समझ के लिए ***इस पाठ के महत्व*** को नकारा नहीं जा सकता। बहुत से लोग यह न समझ पाने के कारण कि पवित्र शास्त्र में धर्म के **तीन पृथक** और **अलग–अलग प्रबन्ध** हैं, बाइबल को समझ नहीं पाते हैं। परमेश्वर **आप** कभी नहीं बदलता, परन्तु निश्चित रूप से उसने अलग–अलग प्रबन्धों में मनुष्य के प्रति अपनी **इच्छा** को बदला है (यही कारण है कि उसके **वचन** को **ठीक रीति से काम में लाना** यानी विभाजित किया जाना आवश्यक है!)।

हर विचारवान छात्र को तुरन्त साफ़ हो जाता है कि **पहले** प्रबन्ध में व्यक्तियों और/या परिवारों को दी गई परमेश्वर की व्यक्तिगत आज्ञाएं उन लोगों की, जिन्हें वे दी गई थीं, मृत्यु के साथ खत्म हो गईं। उदाहरण के लिए आदम और हव्वा जब मर गए तो किसी दूसरे को भले और बुरे के ज्ञान के पेड़ में से खाने की मनाही नहीं की गई, जिससे उनकी मृत्यु हुई थी। किसी दूसरे को जहाज़ बनाने की आज्ञा न मिलने के कारण यह आज्ञा नूह के साथ ही मर गई। होमबलि के

रूप में अपने पुत्र को बलिदान करने की आज्ञा किसी और को नहीं दी गई, इस कारण यह आज्ञा अब्राहम के साथ ही मर गई। इसी प्रकार से पुरखाओं के प्रबन्ध में दूसरों को दी गईं व्यक्तिगत आज्ञाओं के साथ हुआ।

परन्तु सीनै पर्वत पर मूसा के द्वारा दी गई परमेश्वर की व्यवस्था का क्या हुआ, क्योंकि उस व्यवस्था में **दस आज्ञाएं** थीं। इस कारण कुछ लोगों की ओर से यह दिखाने का बहुत प्रयास किया जाता है कि बेशक पूरी व्यवस्था मर गई परन्तु दस आज्ञाएं अभी भी लागू होती हैं। नहीं तो हम से पूछा जाता है कि तुम्हारी **नैतिक व्यवस्था** कहां है?

अगले पाठ में हम संक्षेप में बताएंगे कि इस्राएलियों को दी गई **व्यवस्था का कोई भी भाग** नये नियम में या मसीही प्रबन्ध में जारी नहीं है, अर्थात **इसकी हर बात को** प्रतीक के रूप में ''क्रूस के ऊपर **कीलों से ठोक दिया गया।**'' उस व्यवस्था की एक भी बात लागू रहने तक नया नियम प्रभावी नहीं हो सकता था। परन्तु हम इस चर्चा को **अगली** बार के लिए छोड़ देते हैं। ... अभी के लिए कृपया पाठ 3 में बताई गई बातों का अध्ययन करें और सही किए जाने और ग्रेड पाने के लिए प्रश्नों के उत्तर दें।

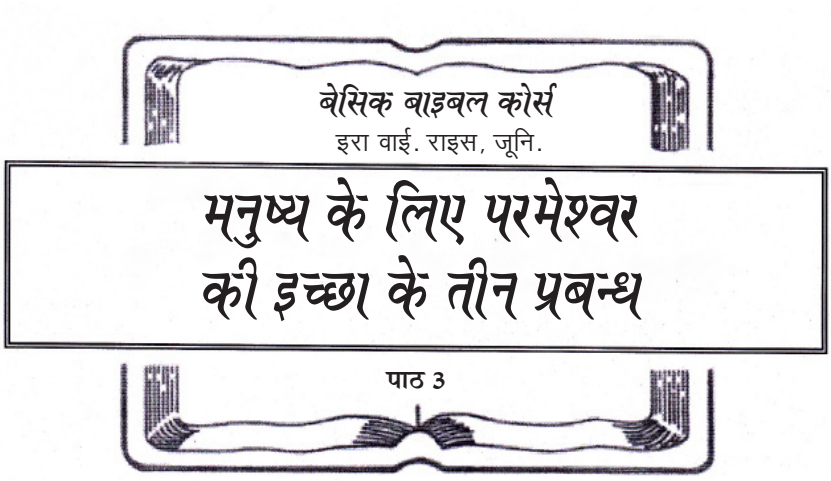

पाठ 3 पर प्रश्न

Registration No..... Grade .....

Name.....

Address.....

.....

Pin.....Mobile No.....

e-mail.....

(कृपया पता अंग्रेजी के बड़े अक्षरों में ही लिखें।)

1. **तारे** का अध्ययन करके क्या व्यक्ति को मनुष्यजाति के लिए परमेश्वर की **इच्छा** का कुछ पता चल सकता है ? .....

2. यदि नहीं तो हमें मनुष्य के लिए परमेश्वर की **इच्छा** को जानने के लिए किस चीज का अध्ययन करना पड़ेगा ? .....

3. बाइबल के सावधानी पूर्वक अध्ययन से ये धर्म ..... (कितने) प्रबन्धों में बंटती है।

4. इन प्रबन्धों का नाम बताएं: (1) ..... (2) .... (3) .....

5. आदम से मूसा तक धर्म का कौन सा प्रबन्ध लागू था ? .....

6. धर्म के इस काल के दौरान मनुष्यों के साथ परमेश्वर ने किस प्रकार से व्यवहार किया। .....

7. पुरखाओं के प्रबन्ध के दौरान क्या परमेश्वर हर व्यक्ति को **एक ही** बात की आज्ञा देता था या **अलग-अलग** बातों की ? .....

8. मनुष्यजाति के लिए परमेश्वर की इच्छा का **दूसरा** प्रबन्ध कौन सा था। .....

9. सीनै पर्वत पर किस **जाति** को व्यवस्था दी गई थी ? .....

10. रात भर स्वर्गदूत के साथ मल्लयुद्ध करने के बाद किस का नाम बदलकर **इस्राएल** कर दिया गया था ? .....

11. क्या सीनै पर्वत पर दी गई **व्यवस्था** इस्राएल के पूर्वजों को भी दी गई थी ? .....

12. परमेश्वर ने किस **जाति** को ''सब लोगों से ऊपर'' बनाया ? .....

13. क्या सीनै पर्वत पर दी गई **व्यवस्था** अन्यजातियों पर भी लागू होती थी ? .....

14. **पुरखाओं** का प्रबन्ध कितने साल तक रहा ? .....

15. **यहूदी** काल कितने साल तक रहा? .....

16. **मसीही** प्रबन्ध को आरम्भ हुए कितना अरसा हो गया है? .....

17. क्या यीशु मसीह का जन्म मूसा की व्यवस्था के अधीन हुआ था? .....

18. **व्यवस्था** के सम्बन्ध में, यीशु मसीह के आने का क्या **उद्देश्य** था? .....

19. क्या व्यवस्था पूरा होने से **पहले** टल सकती थी? .....

20. क्या यीशु मसीह ने व्यवस्था को **पूरा किया**? .....

21. क्या यीशु मसीह के **नये** नियम की शर्तें पृथ्वी पर उसकी मृत्यु से पहले उसके जीते जी प्रभावी हो गई थीं? .....

22. क्या **नया** नियम **पहले** नियम के लागू रहते ही प्रभावी हो गया था? (इब्रानियों 10:9)

.....

23. यदि **पुरखाओं** का प्रबन्ध निजी लोगों और परिवारों पर लागू होता था और यहूदी प्रबन्ध **केवल** इस्राएल जाति पर तो फिर **मसीही** प्रबन्ध किस पर लागू होता है? .....

.....

24. **इस समय** हम किस प्रबन्ध के अधीन रह रहे हैं? .....

25. **मसीही** प्रबन्ध का अन्त कब होगा? .....

आपका कोई प्रश्न है तो उसे यहां लिखें .....

.....

.....

.....

.....

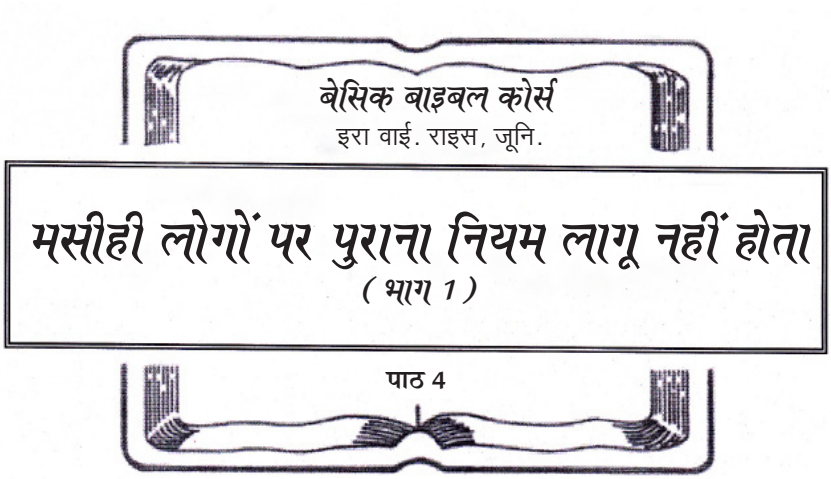

परिचय: बाइबल के सम्बन्ध में एक आम गलत धारणा पाई जाती है कि इसके हर पृष्ठ पर परमेश्वर की इच्छा हर युग की मनुष्य जाति के लिए लिखी गई है। यदि ऐसा होता तो ''सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में'' लाने की तीमुथियुस को पौलुस की ताड़ना (2 तीमुथियुस 2:15) बेकार होनी थी। सारी बाइबल परमेश्वर का वचन है। परन्तु **परमेश्वर का सारा वचन हर किसी पर लागू नहीं होता है।**

पाठ 3 में हम ने संसार के आरम्भ से लेकर अब तक मनुष्यजाति को परमेश्वर की इच्छा के तीन अलग-अलग, समझ में आने वाले प्रबन्धों अर्थात पुरखाओं के प्रबन्ध, यहूदी और मसीही प्रबन्ध को दिखाया था। हमने दिखाया कि किस प्रकार से **मूसा से पहले** पुरखाओं को दी गई आज्ञाएं उसी व्यक्ति या परिवार पर ही लागू होती थीं जिसे वे दी गई होती थीं (उदाहरण, **अकेले** नूह को अपने घर को बचाने के लिए एक बड़ा जहाज़ बनाने की आज्ञा दी गई थी; किसी दूसरे को नहीं)।

पुरखाओं के युग के अन्त (आदम से मूसा तक, मोटे तौर पर 2,500 साल) में परमेश्वर ने **एक जाति** अर्थात इस्राएल, जिन्हें उसने विशेष रूप से अपने ''चुने हुए लोग'' बनाया था, को एक विशेष व्यवस्था दी। यह ''व्यवस्था'' जिसे ''वाचा,'' ''यहोवा की व्यवस्था,'' या ''मूसा की व्यवस्था'' के रूप में जाना जाता है, इस्राएल के ''पितरों'' को नहीं दी गई थी (व्यवस्थाविवरण 5:3); न ही यह अन्यजातियां इसके प्रबन्ध में थीं (रोमियों 2:14), बल्कि यह उन्हीं के लिए अर्थात इस्राएलियों के लिए थी जिन्हें ''दासत्व के घर ... अर्थात मिस्र देश से निकाल लाया'' गया था (निर्गमन 20:2; व्यवस्थाविवरण 5:1-4)।

अगले 1,500 सालों तक, परमेश्वर ने लोगों से व्यक्तियों और परिवारों के द्वारा नहीं, बल्कि ''इस्राएल की संतान'' के साथ **एक जाति के रूप में** व्यवहार किया। तभी यीशु, व्यवस्था को ''नष्ट'' करने नहीं, बल्कि इसे ''पूरा'' करने के लिए आया (मत्ती 5:17-18)। यह व्यवस्था ने

''पूरा'' हुए बिना ''टल'' नहीं सकती थी (आयत 18)। यीशु ने उस काम को पूरा किया जिसे वह करने के लिए आया था (यूहन्ना 17:4)। वह व्यवस्था को पूरा करने के लिए आया था, इस कारण उसने इसे **पूरा कर दिया**; और, पूरा होने के कारण, जैसा कि हम इस पाठ में देखेंगे, **व्यवस्था को यीशु मसीह के साथ क्रूस के ऊपर कीलों से जड़ दिया गया।**

इस प्रकार से एक **नई** व्यवस्था, वाचा या नियम लागू होने का रास्ता खुल गया जो कि 53 दिन बाद पिन्तेकुस्त के दिन लागू हुई (प्रेरितों 2)। परन्तु अपना ध्यान **नये** नियम की शर्तों की ओर लगाने से पहले, पहले हमें यह विचार कर लेना आवश्यक है कि किसी भी अर्थ में **पुराना** नियम अभी लागू है या नहीं। बहुत से निष्कपट मन लोगों को यह विश्वास दिलाया गया है कि **नया** नियम केवल **पुराने** नियम के साथ **जोड़ दिया गया** था, इस कारण मसीही लोग इन **दोनों** नियमों के अधीन हैं। ऐसा प्रबन्ध अन्तहीन विरोधाभास में ले जाएगा क्योंकि दोनों नियमों में एक जैसी शर्तें नहीं हैं। यह समझ आ जाने पर कि परमेश्वर की ओर से दी गई व्यवस्था (अर्थात पुराना नियम) **विशेष रूप से** ''इस्राएल की संतान'' को मूसा के द्वारा दी गई थी जबकि मसीही लोग उससे **बिल्कुल** नई व्यवस्था के अधीन हैं, ये विरोधाभास नहीं रहेंगे ...

I. *लूका 5:36-39*- यीशु यहां पर **अपने नये नियम का बुनियादी सिद्धांत** समझाता है:
   क. वह कहता है, ''कोई मनुष्य नये वस्त्र में से फाड़कर पुराने वस्त्र में पैबंद नहीं लगाता'' (आयत 36)। इसके वह दो कारण बताता है:
      1. नये वस्त्र के पैबंद से पुराना वस्त्र ''फट'' जाएगा।
      2. नये वस्त्र का पैबंद पुराने वस्त्र में मेल नहीं खाएगा।
   ख. ''और कोई नया दाखरस पुरानी मशकों में नहीं डालता'' (आयत 37)। इसके फिर उसने दो कारण बताए:
      1. नया दाखरस मशकों को फाड़ देगा और बिखर जाएगा।
      2. मशकें फट जाएंगी।
   ग. परन्तु नया दाखरस नई मशकों में ही डाला जाता है ताकि दोनों बचे रहें (आयत 38)।

नोट: ''स्पष्टतया ये आयतें दो नियमों की बात करती हैं जिनमें एक नया और दूसरा पुराना है। यीशु अपने चेलों को दिखाने की कोशिश कर रहा था कि इन दोनों नियमों को अलग अलग रखा जाए। अवश्य ही आयत 39 यहूदियों की ही बात करती है, जिन्होंने पुराने नियम में से खूब पिया था। उन्होंने जल्दी से नये दाखरस (अर्थात नये नियम) की इच्छा नहीं करनी थी क्योंकि उनका कहना था कि पुराना दाखरस (यानी पुराना नियम) बेहतर था। इतिहास बताता है कि शारीरिक इस्राएल के सब लोगों ने नये नियम को स्वीकार नहीं किया क्योंकि उनका कहना था कि पुराना नियम बेहतर है। आज भी वे यही कहते हैं।

II. रोमियों 7:1-7— पौलुस यहां पर **मानवीय विवाह** और **मूसा की व्यवस्था** और/या मसीह से हमारे **आत्मिक रूप से ब्याहे होने** में **समानता** दिखाता है।

क. ब्याहुता का मनुष्यों का कानून मनुष्य के जीवित रहने तक उस पर लागू होता है (आयत 1)।

1. विवाहिता स्त्री व्यवस्था के अनुसार अपने पति के जीते जी उससे बंधी हुई है (आयत 2)।
2. परन्तु यदि पति मर जाए, तो वह अपने पति की व्यवस्था से **छूट** गई (स्वतंत्र हो गई) (आयत 2)।
3. यदि, पति के जीते जी, किसी दूसरे पुरुष के साथ विवाह कर ले तो वह व्यभिचारिणी कहलाएगी (आयत 3)।
4. परन्तु, यदि पति की मृत्यु हो जाए, तो वह व्यवस्था से **छूट** गई, जिस कारण वह व्यभिचारिणी नहीं है, चाहे किसी दूसरे पुरुष से विवाह भी कर ले (आयत 3)।

ख. वैसे ही, **मसीही लोग मसीह की देह** के द्वारा **''व्यवस्था** के लिए **मरे हुए''** बन गए, कि **उस दूसरे** (अर्थात मसीह) **के हो जाएं जो मरे हुओं में से जी उठा;** ताकि हम परमेश्वर के लिए फल लाएं (अर्थात बच्चे जनें) (आयत 4)।

1. हम व्यवस्था से **''छूट गए''** (यानी मुक्त हो गए) हैं (आयत 6)।

नोट: कौन सी व्यवस्था से? जिस व्यवस्था में कहा गया था, ''लालच मत कर'' (आयत 7)।

निर्गमन 20 अध्याय पढ़ें तो आपको पता चलेगा कि सीनै पर्वत पर दी गई दस आज्ञाओं वाली व्यवस्था में ही कहा गया था कि ''लालच न करना।'' विशेषकर आयत 17 को देखें। तो यह वही व्यवस्था है जिसके लिए रोमियों 7:1-7 बताता है कि हम ''मरे हुए बन गए'' और ''उस से छूट'' गए हैं।

III. *2 कुरिन्थियों 3*—पौलुस **मसीह में** हमें मिली **स्वतन्त्रता** को पहले की बातों से अलग करता है।

क. पौलुस कुरिन्थुस के मसीही लोगों से यह पूछने के बाद कि उसे और उसके सहकर्मी को उन्हें प्रशंसा की पत्रियां देने या उन्हें उनसे प्रशंसा की पत्रियां लेने की आवश्यकता है या नहीं, यह कहते हुए उनका अभिवादन करता है कि ''हमारी पत्री [यानी सिफारिशी चिट्ठी] तुम ही हो, जो हमारे हृदयों पर लिखी हुई है और उसे सब मनुष्य पहचानते और पढ़ते हैं'' (आयतें 1-2)।

1. पौलुस और तीमुथियुस द्वारा की गई सेवा से ''मसीह की पत्री'' होने के कारण पौलुस कुरिन्थियों को **''स्याही से नहीं,** परन्तु **जीवते परमेश्वर के आत्मा से, पत्थर की पट्टियों पर नहीं** पर **हृदय** की मांस रूपी पट्टियों पर लिखी'' हुई बताता है।

क. यह बात कि मसीही लोग **''आत्मा** से ... लिखी'' पत्रियां थे, पत्थर की पट्टियों पर लिखी व्यवस्था से उनके स्वतन्त्र होने को साबित करती है। आयत 17 घोषणा करती है, ''प्रभु तो आत्मा है: और जहां कहीं प्रभु का आत्मा है, वहां **स्वतन्त्रता**

है।''

ख. यह बात कि कुरिन्थुस के लोग ''**पत्थर की पट्टियों पर नहीं,** परन्तु हृदय की मांस रूपी पट्टियों पर लिखी'' पत्रियां थे, उन्हें इस्राएल की संतान से अलग करती है जिन्हें सीनै पर्वत पर मूसा के परमेश्वर के साथ बातें करने के बाद परमेश्वर के हाथ से लिखी **पत्थर की पट्टियां** दी गई थीं (निर्गमन 31:18)।

ख. कुरिन्थुस के मसीही लोग चाहे पत्थर पर लिखी पटियां तो नहीं बल्कि दिल पर लिखी पट्टियां थे, परन्तु उन्होंने अपने आपको नहीं बल्कि परमेश्वर को ही योग्य माना।

1. पौलुस ने कहा, ''हम **मसीह के द्वारा परमेश्वर पर** ऐसा ही भरोसा रखते हैं'' (आयत 4)।
2. ''हमारी **योग्यता परमेश्वर की ओर से** है'' (आयत 5)।

ग. पौलुस ने कहा कि परमेश्वर ने ''हमें **नई वाचा के सेवक** होने के योग्य किया'' है (आयत 6)।

1. यह सेवकाई ''**शब्द की नहीं**'' (यानी सीनै पर्वत पर दी गई व्यवस्था की नहीं) थी ... ''क्योंकि शब्द मारता है'' (आयत 6)।
2. बल्कि यह सेवकाई ''**आत्मा की**'' (यानी नये नियम की) थी, ... ''आत्मा जिलाता है'' (आयत 6)।
3. पौलुस ''**शब्द** [जो] **मारता है**'' (आयत 6) को ''**मृत्यु की वाचा** [या सेवकाई] कहता है, **जिसके अक्षर पत्थरों पर खोदे गए थे**'' (आयत 7)।
4. वह कहता है कि जिसके ''**अक्षर पत्थरों पर खोदे गए थे**'' ... वह ''**तेजोमय** हुई।''
   क. वास्तव में वह **यहां तक** तेजोमय हुई कि ''मूसा के मुंह पर के तेज के कारण जो घटता भी जाता था, इस्राएली उसके मुंह पर दृष्टि नहीं कर सकते थे'' (आयत 7. निगर्मन 34:29-35 से तुलना करें)।
   ख. **वह** ''तेज'' (यानी उसका तेज जिसके ''अक्षर पत्थरों पर खोदे गए'') ''**घटता जाता**'' था (आयत 7)।
5. पौलुस बताता है कि ''आत्मा की वाचा (या सेवकाई),'' उससे जो केवल ''तेजोमय'' थी अर्थात जिसके ''अक्षर पत्थरों पर खोदे गए थे,'' ''**और भी** तेजोमय'' (यानी **बढ़कर** तेज से भरी) है (आयत 8)।
6. पौलुस जिसे पहले ''**शब्द**'' **जो** ''**मारता है,**'' और ''**मृत्यु की वाचा**'' कह चुका है आगे वह उसे ''**दोषी ठहराने वाली वाचा** (या सेवकाई)'' कहता है (आयत 9)।
   क. इस कारण जिसके ''अक्षर पत्थर पर खोदे गए थे,'' यानी **दस आज्ञाओं वाली व्यवस्था,** ''**दोषी ठहराने वाली वाचा** (या सेवकाई)'' **थी** (आयत 9)।
   ख. ''दोषी ठहराने वाली वाचा (या सेवकाई) तेजोमय'' थी (आयत 9)।

ग. परन्तु ''धर्मी ठहराने वाली वाचा'' (या जिसे अभी अभी उसने ''नया नियम,'' ''आत्मा'' और ''आत्मा की वाचा (या सेवकाई)'' कहा) **''उससे कहीं अधिक तेजोमय''** है (आयत 9)।

7. ''तेजोमय'' बनाए जाने के बावजूद उसमें जो उससे बढ़कर है उससे अधिक तेज नहीं था (आयत 10)।

नोट: उदाहरण के लिए, समझाने के लिए, रात को चन्द्रमा तेज होता तो है; परन्तु सुबह होने पर सूरज के निकल आने से चांद के प्रकाश का तेज सूरज के उससे अधिक तेजभरा होने के कारण इतना महत्वपूर्ण नहीं रहता। इसी प्रकार पुराने नियम की व्यवस्था का तेज तब तक था जब तक नये नियम का उससे भी अधिक तेज नहीं आया था

8. जो ''तेजोमय'' था (अर्थात जिसके ''अक्षर पत्थरों पर खोदे गए थे''– आयत 7 फिर से देखें) उसे **''घटता''** जाने वाला बताने के बाद पौलुस, उसकी बात करता है, जो **''स्थिर रहेगा''** (अर्थात **नया** नियम) **''और भी बढ़कर तेजोमय''** है (आयत 11)।
9. पौलुस और कहता है कि जो मूसा के द्वारा दिया गया था वह **''घटता जाता''** था (आयत 13. निर्गमन 34:29-35 से इस आयत को मिलाएं)।
10. वह दिखाता है कि **''पुराना नियम** पढ़ते समय'' इस्राएलियों के मनों पर **''पर्दा''** पड़ा रहता है (आयतें 14-15)।
    क. इस कारण उनके मन ''मतिमन्द'' हैं (आयत 14)।
    ख. ''पुराने नियम को पढ़ते समय'' इस्राएल के मन पर ''पर्दा'' पड़ा रहता है।
    ग. परन्तु **मसीह में** यह पर्दा (पुराने नियम को पढ़ते समय पड़ने वाला) **''उठ जाता है।''**
    घ. फिर भी जब इस्राएल का मन ''प्रभु की ओर फिरेगा, तब वह पर्दा [जो पुराने नियम को पढ़ते समय पड़ता है] उठ जाएगा'' (आयत 16)।

सारांश: जब तक इस्राएली पुराने नियम की बातों को मानना जारी रखते हैं तब उनका मन अभी ''प्रभु की ओर'' नहीं फिरा है। और जो बात इस्राएलियों पर लागू होती है वही सब के लिए है क्योंकि परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता (रोमियों 2:11)।

नोट: 2 कुरिन्थियों 3 के अपने अध्ययन से हमें क्या समझ आया है? (1) कि नये नियम के अधीन परमेश्वर के लेख (''हमारे हृदयों पर'') और पुराने नियम (''जिसके अक्षर पत्थर पर खोदे गए थे'') की बातों में अन्तर पाया जाता है। (2) वैसे ही, हमारी योग्यता अपने आप में नहीं बल्कि परमेश्वर के कारण है। (3) कि हम पुराने नियम (अर्थात ''शब्द'' जो ''मारता है,'' ''मृत्यु की वाचा,'' ''दोषी ठहराने वाली वाचा'') के नहीं हैं ।(4) पुराना नियम ''घटता जाता'' था (आयत 7), ''जाता रहा'' (आयत 11), ''हटा दिया गया'' (आयत 13)।(5) बल्कि हम ''नये नियम''

(आयत 6) जो ''और भी तेजोमय'' (आयत 8), ''उससे भी तेजोमय'' (आयत 9), ''उससे बढ़कर तेजोमय'' (आयत 10), ''और भी तेजोमय'' (आयत 11) है, और ''स्थिर रहेगा'' (आयत 11) के सेवक हैं। (6) जब तक मन मतिमन्द अर्थात अंधा है तब तक पुराने नियम को पढ़ते समय मन के ऊपर ''पर्दा'' पड़ा रहता है। (7) तौभी जब मन प्रभु की ओर फिर जाएगा तो यह पुराने नियम की बातों को नहीं मानेगा, जो कि पर्दा हट जाने पर ही होगा। (8) इसके विपरीत ''आत्मा'' के सेवक के रूप में (आयत 6), हम इस बात को समझ जाएंगे कि जहां प्रभु का आत्मा है वहां स्वतन्त्रता यानी पुराने नियम से आजादी है (देखें आयत 17)। इस कारण हम प्रभु के तेज की आकृति में बदलने के लिए, अंश अंश करके प्रभु के आत्मा के द्वारा बदलने को स्वतंत्र हैं (आयत 18)। इसका अर्थ स्पष्ट प्रतीत होता है कि यदि पुराना नियम अभी लागू होता तो हम इस प्रकार स्वतंत्र न होते।

IV. गलातियों, अध्याय 4 से 6 –

क. ''वारिस,'' **जब** बच्चा होता है तो उसके साथ सेवक के जैसा व्यवहार ही किया जाता है (अध्याय 4 आयत 1)।

1. वह संरक्षकों और प्रबंधकों के अधीन होता है (आयत 2)।

ख. परमेश्वर की ''संतान'' (इस्राएल) **पुराने नियम** की ''**व्यवस्था के अधीन**'' ... ''**दास बने हुए**'' थे (आयतें 3-5)।

1. व्यवस्था के अधीन जन्म लेकर मसीह ने उन्हें जो व्यवस्था के अधीन थे **छुड़ा लिया** (आयतें 4-5)।

नोट: ''छुड़ाई हुई'' चीज़ अब कब्जे में नहीं रही।

ग. जो व्यवस्था के अधीन **थे** उन्हें **छुड़ा लिया** गया है इस कारण उन्हें ''**लेपालक होने का पद**'' मिला है (आयत 5)।

1. हम ''पुत्र'' हैं जिस कारण परमेश्वर ने अपने **पुत्र** का आत्मा हमारे हृदयों में भेजा है (आयत 6)।
2. इसलिए अब हमारे साथ सेवक की तरह, नहीं बल्कि पुत्र जैसा व्यवहार किया जाता है (आयत 7)।
3. यदि कोई पुत्र है तो **मसीह के द्वारा परमेश्वर का वारिस** ठहरा (आयत 7)।

घ. जो लोग मसीही भी बनना चाहते हैं और मूसा की व्यवस्था को भी मानने की कोशिश करते हैं उन्हें ''**निर्बल** और **निकम्मी आदि-शिक्षा की बातों** की ओर **फिर जाने**'' वाले कहा गया है (आयत 9)।

1. वे फिर से दास होना चाहते हैं (आयत 9)।
2. वे ''दिनों और महीनों और नियत समयों और वर्षों को मानते'' हैं (आयत 10)।
3. पौलुस कहता है कि उसे ''डर'' है कि कहीं उन पर किया गया उसका परिश्रम ''व्यर्थ'' न जाए (आयत 11)।

ङ. व्यवस्था के अधीन होने के इच्छुक लोगों को पौलुस व्यवस्था की बातों पर गौर करने

के लिए बुलाता है, जिसमें अब्राहम के दो पुत्रों की बात है (आयतें 21-22)।

1. एक पुत्र दासी से अर्थात हाजिरा से था (आयत 22. उत्पत्ति 16:15 से तुलना करें)।
2. दूसरा पुत्र स्वतन्त्र स्त्री अर्थात सारा से था (आयत 22. उत्पत्ति 21:2 से तुलना करें)।
3. दासी का पुत्र ''शारीरिक रीति से'' जन्मा था (आयत 23)।
4. स्वतन्त्र स्त्री का पुत्र ''प्रतिज्ञा के अनुसार'' जन्मा था (आयत 23)।
5. यह दो वाचाओं या नियमों का रूपक है (आयत 24)।
   क. सीनै पर्वत वाली वाचा ''**दासत्व** में ले जाती है।'' इसका अर्थ यह हुआ कि पौलुस द्वारा लिखे जाने के समय ''यरूशलेम'' (अर्थात यहूदी जाति) का अर्थ यह है कि वह सीनै पर्वत पर दी गई व्यवस्था के दासत्व में अपने बच्चों के साथ ''दासत्व में'' थी (आयत 25)
   ख. परन्तु ''**ऊपर** की यरूशलेम'' **स्तवन्त्र** है (आयत 26)।

नोट: यह स्पष्टतया उसी की बात है जिसे इब्रानियों 12:22 में ''स्वर्गीय यरूशलेम'' कहा गया है यानी कलीसिया की (आयत 23)। यह दूसरा ''यरूशलेम'' मसीही लोगों की ''माता'' है। ''स्वतन्त्र'' होने के कारण वह ''स्वतन्त्र स्त्री'' सारा की तरह है। इस कारण इसहाक की तरह हम मसीही लोग दास नहीं बल्कि ''प्रतिज्ञा की संतान'' हैं (आयत 28)।

6. पवित्र शास्त्र कहता है, ''**दासी** [अर्थात सीनै पर्वत से मिलने वाली व्यवस्था] **और उसके पुत्र** [अर्थात इस्राएल] **को निकाल दो, क्योंकि दासी का पुत्र** [इस्राएल] **स्वतन्त्र स्त्री के पुत्र** [अर्थात मसीही लोगों] **के साथ अधिकारी नहीं होगा**'' (आयत 30)।
7. हम (मसीही लोग) **दासी (सीनै पर्वत पर दी गई व्यवस्था)** की संतान **नहीं** बल्कि **स्वतन्त्र (यानी कलीसिया)** की संतान हैं (आयत 31)।

च. इसलिए हम मसीही लोगों को दासता अर्थात सीनै पर्वत पर दी गई व्यवस्था के जुए से **छूट कर** अपनी स्वतन्त्रता में बने रहना चाहिए (अध्याय 5:1)।

1. यदि हम व्यवस्था के **भाग** (जैसे खतने) को मानते हैं तो हम पूरी व्यवस्था को मानने को विवश हैं (आयतें 2-3)।
2. यदि हम व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहराए जाने की कोशिश करते हैं तो हम ''अनुग्रह से गिर गए'' हैं (आयत 4)।
   क. इसलिए यदि हम व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहराए जाना चाहते हैं तो मसीह का कोई फायदा नहीं।
3. मसीह में, **व्यवस्था** (जो सीनै से दी गई) **को मानना** या **न मानना** (जैसे, खतना) **कुछ नहीं** है; अगर कुछ है तो (मसीह में) वह विश्वास है जो प्रेम के द्वारा प्रभाव डालता है (आयत 6)।
4. पौलुस तर्क देता है कि अब वह खतने का यानी मूसा की व्यवस्था का प्रचार

नहीं करता; अगर कर रहा होता तो यहूदियों के हाथों सताया नहीं जाता (आयत 11)।

5. सीनै पर्वत से दी गई व्यवस्था एक ही बात में पूरी हो गई कि **तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख** (आयत 14)।
6. यदि हम **आत्मा के चलाए चलते** हैं तो **''व्यवस्था के अधीन नहीं''** हैं (आयत 18)।
   क. आत्मा का ''फल'' ''प्रेम, आनन्द, शांति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम'' को बताया गया है (आयतें 22-23)।
   ख. ऐसे ऐसे कामों के विरोध में कोई व्यवस्था नहीं है (आयत 23)।

छ. मसीह में न तो खतना कुछ है और न खतना-रहित, परन्तु **''नई सृष्टि''** है (अध्याय 6 आयत 15)।
1. खतने के लिए विवश करने वाले लोग भी व्यवस्था को नहीं मान रहे थे (आयत 13)।
2. बल्कि वे केवल अपनी शारीरिक दशा पर घमण्ड कर रहे थे (आयतें 12-13)
3. पौलुस मसीह के क्रूस पर घमण्ड करने को छोड़ किसी और बात पर घमण्ड करने को गलत कहता है (आयत 14)।

V. इफिसियों 2:11-19—

क. अन्यजाति लोग किसी समय ''इस्राएल की प्रजा के पद'' से **''अलग''** थे (आयत 12)।

ख. अन्यजाति लोग ''प्रतिज्ञा की वाचाओं'' से भी **''दूर''** थे (आयत 12)।

ग. मसीह यहूदियों और अन्यजातियों के बीच ''मेल'' है (आयत 14)।
1. उसने दोनों (अर्थात यहूदियों और अन्यजातियों को) **एक** कर दिया (आयत 14)।
2. उसने अलग करने वाली ''दीवार को जो बीच में थी'' **ढहा दिया** (आयत 14)।
   क. यह ''दीवार जो बीच में थी'' जिसे ''वैर'' भी कहा जाता था **''वह व्यवस्था** [थी] **जसकी आज्ञाएं विधियों की रीति पर थीं''** (आयत 15)।
   ख. व्यवस्था को **''मिटा दिया''** गया था (आयत 15)।
3. मसीह का व्यवस्था को ढहाने और मिटाने का उद्देश्य यहूदियों और अन्यजातियों को अपने में **''एक नया मनुष्य''** बनाने के लिए था, जिससे मेल हो सके (आयत 15)।
4. यहूदियों और अन्यजातियों दोनों को **''एक देह में''** (अर्थात **कलीसिया में**-इफिसियों 1:22-23) **मिलाया** गया था (आयत 16)।
5. **''वैर''** अर्थात **व्यवस्था** को क्रूस के द्वारा **''नाश''** किया गया था (आयत

16)।

6. यहूदियों के साथ साथ अन्यजातियों में भी मेल मिलाप का प्रचार किया गया (आयत 17)।
7. मसीह के द्वारा यहूदी और अन्यजाति लोग अब एक दूसरे के लिए अजनबी और विदेशी नहीं बल्कि ''संगी-स्वदेशी'' हैं (आयत 19)।

नोट: यदि व्यवस्था को जो यहूदियों और अन्यजातियों को ''अलग करने वाली दीवार जो बीच में थी'' ''ढहाया,'''' मिटाया'' और ''नाश'' न किया जाता (आयतें 14-16), तो संगी स्वदेशी का यह नया प्रबन्ध सम्भव नहीं हो सकता था। पहले दीवार (या व्यवस्था) जो बीच में थी, का गिरना आवश्यक था, तभी संगी स्वदेशी की बात हो पानी थी।

VI. कुलुस्सियों 2:14-17—

क. ''विधियों का वह लेख,'' अर्थात ''व्यवस्था जिसकी आज्ञाएं विधियों की रीति पर थी'' (इफिसियों 2:15 से तुलना करें)।

1. मिटा डाला (आयत 14)।
2. सामने से हटा दिया (आयत 14)।
3. क्रूस पर कीलों से जड़ दिया (आयत 14)।

ख. इसलिए मसीही लोगों का इन-इन बातों में न्याय न हो-

1. खाने में (आयत 16)।
2. पीने में (आयत 16)
3. किसी पर्व के विषय में,
4. नये चांद के विषय में,
5. या सब्त के विषय में (आयत 16)।

ग. बीत गई बातों को आने वाली बातों की ''**छाया**'' कहा गया है; परन्तु ''**देह**'' तो **मसीह** ही है (आयत 17)।

नोट: बेशक मसीह एक बार पहले ही ''आ'' चुका है और जल्द ही दोबारा आने वाला है। व्यवस्था की ये विधियां मिटा डाली गई हैं, सामने से हटा दी गई हैं और क्रूस पर कीलों से जड़ दी गई हैं। वे जाती रही हैं!

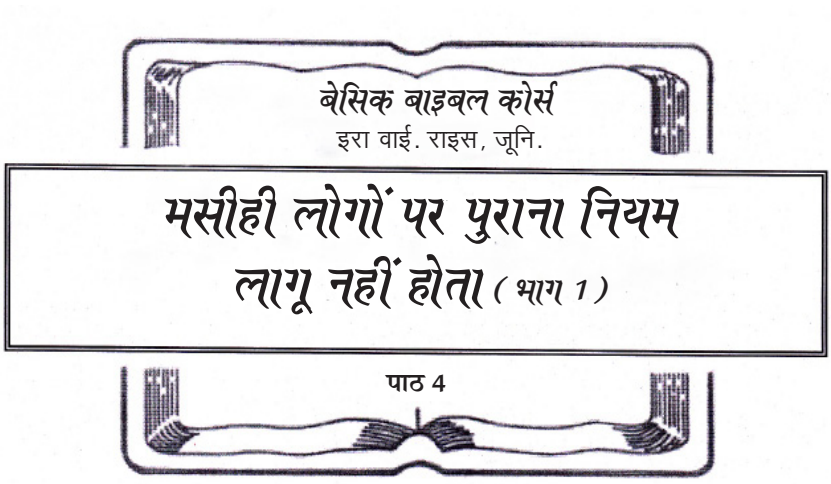

पाठ 4 के प्रश्न

Registration No..... Grade .....

Name.....

Address.....

.....

Pin.....Mobile No.....

e-mail.....

(कृपया पता अंग्रेजी के बड़े अक्षरों में ही लिखें।)

1. लोगों की किस जाति को दस आज्ञाओं वाली व्यवस्था दी गई थी ? .....

2. लूका 5 अध्याय में नये और पुराने दाखरस के सम्बन्ध में यीशु की शिक्षा का **केन्द्रीय भाव** क्या है ? .....

   .....

3. रोमियों 7 अध्याय के अनुसार स्त्री के लिए अपने पहले पति के जीवित रहते क्या किसी दूसरे पुरुष के साथ विवाह करना उचित है ? .....

4. क्या मसीही लोग मसीह के साथ ''ब्याहे गए'' हैं ? .....

5. मसीही लोग मसीह के साथ ब्याहे जाने के साथ-साथ क्या ''व्यवस्था'' के साथ भी ब्याहे गए हैं ? .....

6. यदि नहीं, तो व्यवस्था के साथ उनके सम्बन्ध पर रोमियों 7:4, 6 क्या कहता है ?

   .....

7. **कौन सी** व्यवस्था ? .....

8. ''मसीह की पत्री'' पत्थर पर लिखी गई है या हृदय पर .....

9. मूसा द्वारा दी गई परमेश्वर की व्यवस्था किस पर लिखी गई थी ?.....

10. मसीही लोग **पुराने** नियम के सेवक हैं, या **नये** नियम के, या फिर **दोनों** के ही ? .....

    .....

11. ''शब्द'' जो ''मारता है'' किसको कहा गया था ? .....

12. ''तेजोमय'' क्या था ? .....

13. ''और भी तेजोमय'' किसे कहा गया ? .....

14. 2 कुरिन्थियों 3 अध्याय में पौलुस ने कहा कि कुछ जो ''घटता जाता'' था और ''मिट गया।'' वह क्या था ? .....

15. 2 कुरिन्थियों 3:11 के अनुसार उसने कहा कि कुछ ''स्थिर रहेगा।'' वह क्या है?

.....

16. गलातियों 4 में पौलुस उन लोगों की बात करता है जो मसीही होने के साथ-साथ मूसा की व्यवस्था को भी मानने की कोशिश करते हैं। वह उनके विषय में क्या कहता है?

.....

17. इस अध्याय के रूपक में ''दासी'' हाजिरा को किसके साथ मिलाया गया है?

.....

18. मसीही लोग ''दासी'' की संतान हैं या ''स्वतन्त्र स्त्री'' की? .....

19. इफिसियों 2 अध्याय में पौलुस बताता है कि उस व्यवस्था का क्या हुआ **''जिसकी आज्ञाएं विधियों की रीति पर थीं''**? .....

.....

20. क्या मसीही लोगों का इस बात में न्याय होना चाहिए या नहीं कि वे क्या **खाते** हैं या नहीं?

या वे **सब्त** को मानते हैं या नहीं? .....

अपने शब्दों में समझाएं: .....

.....

.....

आपका कोई प्रश्न है तो उसे यहां लिखें .....

.....

.....

.....

.....

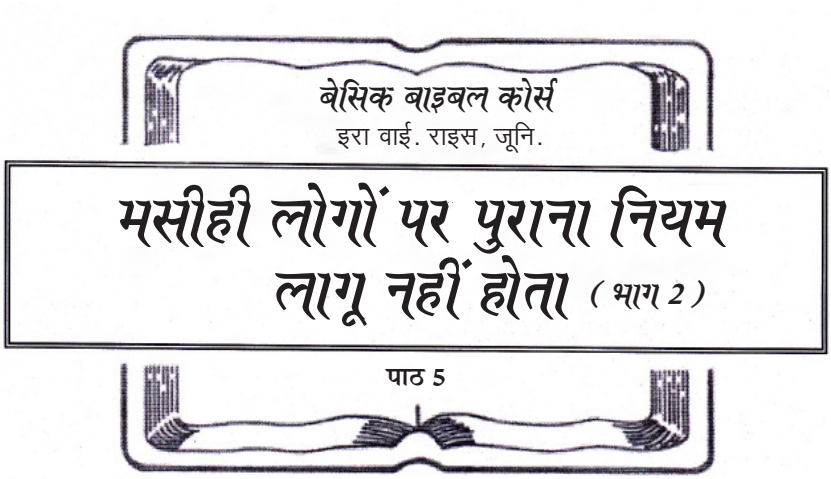

परिचय: मसीही लोगों पर पुराना नियम लागू नहीं होता के अपने पहले अध्ययन में हमने कई बातें जानी थीं:

(1) कि यीशु ने बताया कि ''पुराने'' वस्त्र पर ''**नया** पैबंद'' **नहीं लगाया जाता**; न ही ''**पुरानी** मशकों'' में ''**नया** दाखरस'' भरा जता है (लूका 5:36-39)।

(2) मसीही लोग व्यवस्था ''**से छुड़ाए जाने**'' के साथ साथ ''**इसके लिए मर**'' भी गए हैं (रोमियों 7:1-7)।

नोट: आयत 7 बताती है कि *कौन सी* व्यवस्था से। उसी व्यवस्था से जिसमें कहा गया था कि ''**लालच मत कर ...।**''

(3) **पहली व्यवस्था** जहां परमेश्वर के ''हाथ'' से पत्थर के ऊपर लिखी गई थी, वहीं मसीही लोग **स्याही से या पत्थर पर नहीं** बल्कि ''**हृदय** की मांस रूपी पट्टियों पर'' **परमेश्वर के** ''**आत्मा**'' से लिखे गए हैं (2 कुरिन्थियों 3)।

(4) व्यवस्था जिस के अक्षर ''**पत्थरों पर खोदे गए थे, तेजोमय**'' थी।

(5) जो ''**तेजोमय**'' थी, पौलुस कहता है कि वह ''**घटती जाती**'' और ''मिट'' गई।

(6) ''**स्थिर**'' रहने वाली व्यवस्था वह नहीं है जो ''**तेजोमय**'' थी, बल्कि वह है जो ''**और भी तेजोमय**'' यानी ''उस से कहीं अधिक तेज से भरी'' अर्थात **नया** नियम है, जिसके मसीही लोग ''सेवक'' हैं।

(7) गलातियों 4 से 6 अध्याय से हमें पता चलता है कि मसीह ने उन्हें जो व्यवस्था के अधीन थे, ''**छुड़ा लिया।**''

(8) **सीनै पहाड़ से दी गई व्यवस्था** को हम ''**दासी**'' के रूप में पहचानते हैं और गलातियों 4:30 भी कहता है ''**दासी को निकाल दे।**''

(9) मसीही लोग ''दासी'' (अर्थात पुराने नियम) की नहीं बल्कि ''**स्वतन्त्र**'' (अर्थात **नये नियम**) की संतान हैं।

(10) **इफिसियों 2** अध्याय में हमें दिखाया गया है कि ''**बीच की दीवार**'' अर्थात ''**व्यवस्था जिसकी आज्ञाएं विधियों की रीति पर थीं**'' (आयत 15) को ''**मिटा दिया,**'' ''**खत्म कर दिया**'' या ''**मार दिया**'' गया है।

(11) कुलुस्सियों 2:14 कहता है कि ''**विधियों का वह लेख**'' अर्थात **व्यवस्था** को ''**मिटा डाला,**'' ''**क्रूस पर कीलों से जड़कर सामने से हटा दिया**'' गया है।

आज के अध्ययन में हम नये नियम की **शिक्षा की अपनी जांच को पूरा** करेंगे कि **मसीही लोगों पर पुराना नियम लागू नहीं होता।** ....

I. इब्रानियों 6 से 10:9—

क. लेखक उनकी बात करता है ''जो विश्वास के द्वारा **प्रतिज्ञाओं के वारिस**'' हैं (इब्रानियों 6:12)।

1. ''**प्रतिज्ञाएं**'' अब्राहम को दी गई थीं (आयत 13)।
2. अब्राहम के ''**वारिसों**'' को दी गई परमेश्वर की ''**प्रतिज्ञा**'' को शपथ के द्वारा पक्का किया गया था (आयत 17)।
3. इस ''**प्रतिज्ञा**'' को पूरा करने में हमारे पास एक **महायाजक** अर्थात **यीशु** है जिसकी याजकाई *''मलिकिसिदक की रीति पर''* है, जो स्वर्ग में अर्थात ''पर्दे के भीतर'' हम से आगे चलता है (आयत 20)।
4. मलिकिसिदक और उसकी याजकाई का वर्णन किया गया है (7:1-10)।

ख. *सिद्धता* **लेवियों की याजकाई के द्वारा नहीं होती** (आयत 11)।

1. इस याजकाई के अधीन ''**व्यवस्था**'' मिली थी।
2. परन्तु यह याजकाई **सिद्ध नहीं** थी क्योंकि *हारून की रीति* (यानी लेवियों की याजकाई) *के अनुसार नहीं बल्कि मलिकिसिदक की रीति के अनुसार* ''**दूसरा याजक**'' ''आवश्यक'' था (आयत 12)।

ग. *याजकाई* बदल गई इस कारण ''**व्यवस्था**'' का **बदला जाना भी** आवश्यक था (आयत 12)।

1. इसका कारण यह था कि **पुराने नियम की व्यवस्था** *लेवी के गोत्र के* याजकों द्वारा चलाई जाती थी।
2. इसे मूसा के द्वारा *परमेश्वर ने ठहराया* था।
3. हमारा प्रभु यीशु मसीह, *लेवी में से नहीं* बल्कि **यहूदा** के गोत्र में से निकला (आयत 14)।
4. **यहूदा** के गोत्र के विषय में मूसा ने याजकाई के बारे में **कुछ नहीं** कहा था।
5. सो परमेश्वर ने जब यीशु को हमारा *''महायाजक''* बनाया और मूसा के द्वारा दी गई परमेश्वर की *यीशु दस आज्ञाओं वाली व्यवस्था के अधीन याजक नहीं बन सकता था।* इस कारण याजकाई के बदलने के कारण **व्यवस्था का बदलना** *भी* आवश्यक था।

घ. ''पहली आज्ञा'' (अर्थात व्यवस्था) लोप हो गई (आयत 18)।
   1. इसके तीन कारण बताए गए हैं (आयत 19):
      क. व्यवस्था निर्बल थी
      ख. व्यवस्था निष्फल थी
      ग. व्यवस्था ने किसी बात की सिद्धि नहीं की।

ङ. चाहे ''**व्यवस्था** ने किसी बात की सिद्धि नहीं की'' परन्तु आयत 19 कहती है कि ''एक उत्तम आशा'' के दिए जाने से (सिद्धि की है)

नोट: किससे ''उत्तम आशा''?- दस आज्ञाओं वाली व्यवस्था के द्वारा दी जाने वाली आशा।

च. ''उत्तम आशा'' हमें व्यवस्था के द्वारा नहीं बल्कि ''**परमेश्वर के समीप**'' जाने के द्वारा मिलती है (आयत 19)।

नोट: हम अपना ध्यान ''**उत्तम**'' शब्द पर लगाए रखें। इस पर कोई झगड़ा नहीं है कि मूसा के द्वारा दी गई परमेश्वर की व्यवस्था *अच्छी नहीं* थी- बल्कि मसीह के द्वारा दी गई परमेश्वर की व्यवस्था *उत्तम* है। हम किसी अच्छी से क्यों चिपकें जबकि इसके स्थान पर वह मिल सकता है जो **उत्तम** है। फिर भी बहुत से लोग यह साबित करने की कोशिश करते हुए अपने आपको थका लेते हैं कि मसीही लोगों पर पुराना नियम लागू होता है। आगे हम देखेंगे कि वास्तव में **मसीही लोगों को** पुराने नियम अर्थात दस आज्ञाओं वाली व्यवस्था के द्वारा दी गई आशा के बजाय एक ''**उत्तम**'' आशा के द्वारा **परमेश्वर की समीप लाया जाता है**।

छ. **शपथ** के साथ **सदाकाल का** याजक बनाए जाने के कारण यीशु ''**उत्तम**'' वाचा की हमारी जामिनी है (आयत 22)।
   1. *लेवियों की याजकाई* मृत्यु के कारण *''बदल जाती''* थी (आयत 23)।
   2. *यीशु की* याजकाई *''अटल''* है (आयत 24)।
   3. यीशु को ''शपथ के वचन'' के द्वारा याजक बनाया गया था (आयत 28— तुलना करें आयत 21)।

   क. ''शपथ का वचन'' व्यवस्था **के बाद से ही** था (आयत 28)।

नोट : ''**व्यवस्था के बाद**'' में ''**बाद**'' शब्द का अर्थ है कि **दस आज्ञाओं वाली व्यवस्था ''शपथ का वचन'' दिए जाने से पहले खत्म हो गई थी।**

ज. **यीशु मसीह हमारा** महायाजक है (8:1)।
   1. इस कारण वह ''**सच्चे**'' **तम्बू** का सेवक है (आयत 2)।
   2. इस तम्बू को प्रभु ने (मनुष्य ने नहीं) खड़ा किया।
   3. लेवीय याजक स्वर्गीय वस्तुओं के *''प्रतिरूप''* और *''प्रतिबिम्ब''*की सेवा करते

थे (आयत 5)।

4. **मसीह की** सेवकाई उनकी सेवकाई से ''**बढ़कर**'' है (आयत 6)।
5. इसके दो कारण दिए गए हैं:
   क. वह ''**उत्तम वाचा**'' का मध्यस्थ है (आयत 6)।
   ख. यह वाचा ''**उत्तम प्रतिज्ञाओं**'' के सहारे बांधी गई है (आयत 6)।

झ. **यदि पहली** वाचा (यानी **दस आज्ञाओं वाली व्यवस्था) निर्दोष** होती तो **दूसरी के लिए अवसर न ढूंढ़ा जाता** (आयत 7)।

1. **पहली** वाचा के अधीन परमेश्वर को लोगों में दोष मिला।
2. परमेश्वर ने एक **नई** वाचा देने का वायदा किया (आयत 8)।
3. **नई** वाचा **पहली वाचा के समान नहीं** होनी थी (आयत 9)।
4. ''**नई** वाचा'' कहकर परमेश्वर ने **पहली** वाचा को ''**पुरानी**'' ठहरा दिया (आयत 13)।

नोट: तो इब्रानियों की पुस्तक का लेखक बड़ी सावधानी से, धीरज से और ध्यान से यहां तक इब्रानी सोच को ले आया, जहां से वह घोषणा कर सकता है कि ''**पुरानी**'' का ''**मिट जाना**'' आवश्यक है (आयत 13)। फिर वह ''पुरानी'' या ''पहली'' दी गई वाचा में पाई जाने वाली कई बातों का वर्णन करता है, जिन्हें वह समझाना चाहता है कि वे मिट गई हैं ...

ञ. पहली वाचा में ये बातें थीं (9:1-5)—

1. सेवा के नियम
2. पवित्र स्थान जो इस जगत का था
3. तम्बू
4. दीवट
5. मेज की रोटियां
6. दूसरा पर्दा
7. सोने की धूपदानी
8. वाचा का संदूक
9. मन्ना
10. हारून की छड़ी
11. वाचा की पट्टियां
12. करूब
13. प्रायश्चित का ढकना
14. लहू

इस पर विशष रूप से ध्यान दें! याद रखें कि **दस आज्ञाएं वाचा की इन्हीं पट्टियों के ऊपर लिखी गई थीं!**

ट. ''परम पवित्र स्थान'' में जाने का मार्ग पहले तम्बू के खड़ा रहने तक दिखाया नहीं

गया था (आयत 8)।

1. तम्बू उस समय के लिए ''दृष्टांत'' था (आयत 9)।
2. इस तम्बू में भेंट और बलिदान दिए जाते थे
3. ये विवेक को ''सिद्ध'' नहीं कर सकते थे (आयत 9)।
4. वे केवल
   - क. खाने
   - ख. पीने
   - ग. भांति भांति के स्नान
   - घ. शारीरिक नियम थे
5. वे **सुधार के समय तक** चलते रहे।

ठ. परन्तु मसीह ''**और भी बड़े**'' व ''**और सिद्ध**'' तम्बू के द्वारा महायाजक बना (आयत 11)।

1. वह **अपना ही लहू** लेकर पवित्र स्थान में गया (आयत 12)।
2. **मसीह का लहू** बकरों और बैलों के लहू से जो पहली वाचा के अधीन थे **कहीं उत्तम है** (आयतें 13-14)।

ड. मसीह **नये** नियम का मध्यस्थ है (आयत 15)।

1. उसकी मृत्यु ने **पहली** वाचा के अधीन किए गए अपराधों से छुटकारा दिला दिया (आयत 15)।
2. **मसीह की मृत्यु के बाद** तक **नया नियम प्रभावी नहीं** था (आयतें 16-17)।

ढ. मूसा के द्वारा दी गई व्यवस्था लहू के साथ बांधी गई थी (आयतें 18-22)।

1. ''हर आज्ञा'' पहले सुनाई गई थी।
2. फिर इसे लहू के द्वारा बांधा गया था।
3. इस नियम के **नैतिक, नागरिक, धार्मिक और सांसारिक अर्थात सब भागों** हर शब्द में **परमेश्वर** (**केवल मूसा नहीं** जैसा कि कुछ लोग समझते हैं) साथ था।
4. **व्यवस्था** में केवल स्वर्गीय बातों के **प्रतिरूप** थे।
   - क. इन **प्रतिरूपों** को *पशुओं के* लहू से शुद्ध किया जाता था।
   - ख. **स्वर्ग में की वस्तुएं** ''**उत्तम** बलिदानों'' से शुद्ध की जानी आवश्यक थी (आयत 23)।
5. **हाथों के बनाए पवित्र स्थान** सच्चे पवित्र स्थान का केवल **नमूना** थे (आयत 24)।

ण. मसीह परमेश्वर के सामने पेश होने के लिए अब **स्वर्ग में प्रवेश कर गया** है (आयत 24)।

1. मसीह ने **सदा के लिए** अपने आपको भेंट कर दिया (10:1)।
   - क. व्यवस्था के अधीन महायाजक की तरह वर्ष में एक बार **नहीं।**

त. व्यवस्था (मूसा की आने) वाली वस्तुओं का ''**प्रतिबिम्ब**'' थी।

1. इसके अधीन किए जाने वाले बलिदान इसके आराधना करने वालों को सिद्ध नहीं कर सकते थे (10:1)।
2. बैलों और बकरों का लहू (जैसा कि व्यवस्था के अधीन था) पापों को दूर नहीं कर सकता था (आयत 4)
3. व्यवस्था के अधीन दिए जाने वाले बलिदानों और भेंटों से परमेश्वर प्रसन्न नहीं था (आयत 5-8)।

थ. इस कारण परमेश्वर ने ''**प्रथम**'' (व्यवस्था, नियम, तौरेत या वाचा) को **उठा दिया** ताकि ''**दूसरी**'' को **नियुक्त** करे (आयत 9)।

संक्षेप में: जो कुछ हमने पाठ 4 में पहले सीखा था उसके साथ **आज के** पाठ में अपने अध्ययन से कृपया इन विशेष बातों पर ध्यान दें:

(1) अब्राहम को दी गई परमेश्वर की प्रतिज्ञा के ''वारिसों'' (यानी मसीही लोगों) का एक महायाजक है, अर्थात यीशु मसीह।

(2) यीशु यहूदा के गोत्र में से निकला।

(3) व्यवस्था लेवी के गोत्र में से निकले याजकों द्वारा चलाई जाती थी, न कि यहूदा के द्वारा, इसलिए यीशु के याजक बनने के लिए व्यवस्था का भी बदला जाना आवश्यक था।

(4) इसलिए ''आगे जाने वाली आज्ञा'' (अर्थात व्यवस्था) ''रद्द कर दी गई'' थी।

(5) व्यवस्था ने ''किसी बात को सिद्ध नहीं किया'' इस कारण इसे रद्द करना सही था।

(6) ''एक **उत्तम आशा** लाया जाना'' (सिद्ध करता है)।

(7) मसीही लोगों को व्यवस्था के द्वारा नहीं बल्कि ''**उत्तम आशा**'' के द्वारा परमेश्वर के समीप लाया जाता है।

(8) यह ''**उत्तम आशा**'' मसीह के द्वारा लाई गई थी जो शपथ के साथ सदाकाल का याजक बनाए जाने के कारण ''**उत्तम वाचा**'' का हमारा जामिन है।

(9) यह ''शपथ का वचन'' व्यवस्था के बाद दिया गया।

(10) लेवीय याजक जहां केवल स्वर्ग की बातों का ''प्रतिरूप'' और ''प्रतिबिम्ब'' ही थे वहीं मसीह की सेवकाई उनकी सेवकाई से ''**और सिद्ध**'' है, क्योंकि वह ''**उत्तम प्रतिज्ञाओं**'' पर बांधी गई ''**उत्तम वाचा**'' का मध्यस्थ है।

(11) **पहली** वाचा यदि निर्दोष होती तो **दूसरी** के लिए अवसर न ढूंढ़ा जाता।

(12) **दूसरी** वाचा **पहली** के समान नहीं थी।

(13) पहली वाचा में ''**वाचा की पट्टियों**'' सहित जिनके ऊपर **दस आज्ञाएं** लिखी गई थीं, कई बातें थीं

(14) ये ''सुधार के समय'' तक रहीं।

(15) परन्तु मसीह के **नई** वाचा का महायाजक और मध्यस्थ बनने पर उसने ''पहली'' (व्यवस्था, नियम, तौरेत या वाचा) को **उठा दिया** ताकि वह ''दूसरी'' को **नियुक्त** या स्थिर करे।

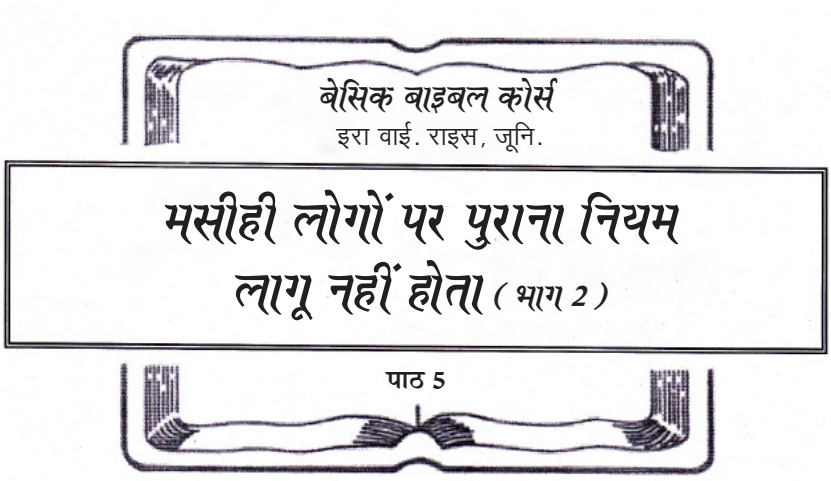

पाठ 5 के प्रश्न

Registration No..... Grade .....

Name.....

Address.....

.....

Pin.....Mobile No.....

e-mail.....

(कृपया पता अंग्रेजी के बड़े अक्षरों में ही लिखें।)

1) इब्रानियों की पुस्तक के अध्याय 6 के अनुसार, अब्राहम के साथ की गई अपनी ''प्रतिज्ञा'' को पूरा करके परमेश्वर ने यीशु को हमारे लिए क्या बनाया? .....

2) यीशु की याजकाई मलिकिसिदक की याजकाई के अनुसार है या हारून की याजकाई के अनुसार? .....

3) पुरानी व्यवस्था के प्रभावी रहते वेदी पर सहायक के लिए याजक किस गोत्र से होते थे?

.....

4) क्या यीशु उसी गोत्र में से निकला? .....

5) किसी और गोत्र में से होने के कारण यदि यीशु को याजक बना दिया जाता तो क्या इससे याजकाई बदल जानी थी? .....

6) यदि **याजकाई** बदल गई तो क्या **व्यवस्था** का बदलना भी आवश्यक था? .....

7) ''आगे जाने वाली आज्ञा'' (व्यवस्था) का क्या हुआ? (देखें अध्याय 7 आयत 18)

.....

8) तीन कारण बताएं कि व्यवस्था को क्यों ''रद्द किया गया'':.....

1. .....

2. .....

3. .....

9) क्या पुराने नियम की व्यवस्था ने किसी बात की सिद्धि की? .....

10) किस ने सिद्धि **की**? .....

11) मसीही लोग किसके द्वारा ''परमेश्वर के समीप'' आते हैं? .....

12) याजक होने के नाते यीशु लेवीय याजकाई **वाली** वाचा की हमारी जामिनी है या उस से **उत्तम** वाचा की? .....

13) यीशु की याजकाई ''बदल सकती'' है या यह ''अटल'' है ? .....

14) ''शपथ का वचन'' जिसके द्वारा यीशु याजक बना, व्यवस्था से **पहले**, उसके **दौरान** या उसके **बाद** दिया गया था ? .....

15) यीशु की सेवकाई लेवीय याजकों की सेवकाई से ''**और सिद्ध**'' क्यों है ? .....

.....

16) यदि **पहली** वाचा निर्दोष होती तो क्या **दूसरी** वाचा के लिए अवसर ढूंढ़ा जाता ?

.....

17) क्या परमेश्वर ने **नई** वाचा देने की प्रतिज्ञा दी थी ? .....

18) **नई** वाचा पहली वाचा के समान ही होनी थी या नहीं ? .....

19) **नई** वाचा कहकर परमेश्वर ने **पहली** वाचा को क्या ठहराया ? .....

20) क्या ''मिट जाने'' वाला था ? .....

21) क्या ''**पहली** वाचा'' में ''**वाचा की पट्टियां**'' थीं ? .....

22) क्या ''**वाचा की पट्टियों**'' के ऊपर परमेश्वर के हाथ से लिखी **दस आज्ञाएं** थीं ?

.....

23) यदि ''पहली वाचा'' में ''वाचा की पट्टियां'' थीं और यदि ''वाचा की पट्टियों'' में परमेश्वर के हाथ से लिखी ''दस आज्ञाएं'' थीं तो क्या वे ''दस आज्ञाएं'' ''पहली वाचा'' का भाग थीं ? .....

24) इब्रानियों 10:9 कहता है: ''**वह पहले को उठा देता है**, ताकि **दूसरे को नियुक्त** करे।'' क्या दूसरी वाचा (नये नियम) में दस आज्ञाएं हैं ? .....

.....

25) मसीही लोग **नये** नियम के अधीन हैं या **पुराने** नियम के ? .....

आपका कोई प्रश्न है तो उसे यहां लिखें .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

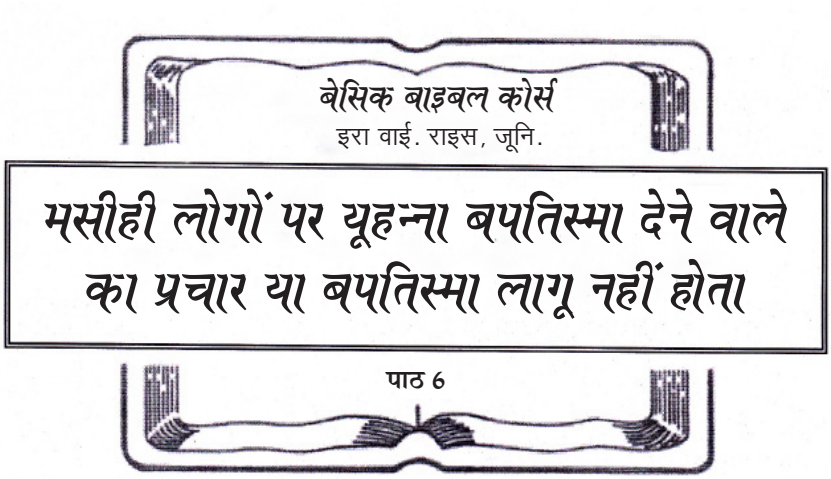

परिचय: परमेश्वर के वचन से अध्ययन की इस शृंखला में अब तक हमने सीखा है: (1) वचन को **ठीक रीति से काम में** कैसे लाएं, (2) **सब वस्तुओं का आरम्भ कैसे हुआ,** और (3) पुरखाओं और यहूदी और मसीही नामक **मनुष्य के लिए परमेश्वर की इच्छा के तीन प्रबन्धों** का परिचय।

आरम्भिक 2,500 वर्षों में व्यक्त की गई परमेश्वर की इच्छा उन्हीं लोगों के लिए थी जिन पर यह व्यक्त की गई थी, इस कारण जब उनकी मृत्यु हो गई तो परमेश्वर की इच्छा का वह भाग उनके साथ ही खत्म हो गया। इसी प्रकार से वह व्यवस्था जो इस्राएल की संतान को परमेश्वर की ओर से मूसा के द्वारा दी गई थी यानी व्यवस्था अर्थात दस आज्ञाओं वाली पूरी व्यवस्था, क्रूस पर खत्म हो गई।

परन्तु हम यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के प्रचार और बपतिस्मे के लिए क्या कहें?

यूहन्ना 1:6 से स्पष्ट है कि *''एक मनुष्य परमेश्वर की ओर से भेजा गया जिसका नाम यूहन्ना था।'' ''परमेश्वर की ओर से भेजा गया''* होने के कारण यह भी स्पष्ट है कि वह एक निश्चित उद्देश्य को पूरा करने के लिए आया था।

इस पाठ के अध्ययन में कोशिश यह समझाने की रहेगी कि (1) वह उद्देश्य क्या था, (2) यह क्रूस से पूर्ण रूप में पहले पूरा हो गया था, और यह कि (3) जब यहूदी प्रबन्ध खत्म हो गया, जिसका यूहन्ना का काम एक भाग था तो प्रेरितों 2 अध्याय में पिन्तेकुस्त के दिन प्रभावी होने के लिए मसीह के नये नियम का रास्ता साफ करते हुए उसका **प्रचार** और उसका **बपतिस्मा** दोनों खत्म हो गए। ...

I. यशायाह भविष्यवक्ता द्वारा यूहन्ना के आने की भविष्यवाणी की गई थी

क. मसीह से लगभग आठ सदियां पहले, यशायाह नाम का एक नबी इस्राएल में रहता

था।

1. वह आमोस का पुत्र था
2. उसने उजिय्याह, योताम, अहाज और हिज़कियाह नामक यहूदा के राजाओं के दनों में भविष्यवाणी की थी।

ख. उसकी भविष्यवाणी के अध्याय 40 में, 3 से 8 आयतों में हमें ये शब्द मिलते हैं, *[3]किसी की पुकार सुनाई देती है, जंगल में यहोवा का मार्ग सुधारो, हमारे परमेश्वर के लिये अराबा में एक राजमार्ग चौरस करो। [4]हर एक तराई भर दी जाए और हर एक पहाड़ और पहाड़ी गिरा दी जाए; जो टेढ़ा है वह सीधा और जो ऊंचा-नीचा है वह चौरस किया जाए। [5]तब यहोवा का तेज प्रगट होगा और सब प्राणी उसको एक संग देखेंगे; क्योंकि यहोवा ने आप ही ऐसा कहा है। [6]बोलने वाले का वचन सुनाई दिया, प्रचार कर! मैं ने कहा, मैं क्या प्रचार करूं? सब प्राणी घास हैं, उनकी शोभा मैदान के फूल के समान है। [7]जब यहोवा की सांस उस पर चलती है, तब घास सूख जाती है, और फूल मुर्झा जाता है; नि:सन्देह प्रजा घास है। [8]घास तो सूख जाती, और फूल मुर्झा जाता है; परन्तु हमारे परमेश्वर का वचन सदैव अटल रहेगा।*

1. इन शब्दों के आधार पर इस्राएल की संतान आपस में बातें करते थे कि यहोवा के मसीह के प्रगट होने से पहले यशायाह का आना आवश्यक है (मलाकी 3:1 और 4:5-6 भी देखें)।

ग. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला इस भविष्यवाणी का पूरा होना था जिसकी शिक्षा पवित्र शास्त्र के कई वचनों में दी गई है। उनमें से कुछ ये हैं

1. **मत्ती 3:1-3:** *[1]उन दिनों में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला आकर यहूदिया के जंगल में यह प्रचार करने लगा कि [2]मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है। [3]यह वही है जिसकी चर्चा यशायाह भविष्यवक्ता के द्वारा की गई कि जंगल में एक पुकारने वाले का शब्द हो रहा है कि प्रभु का मार्ग तैयार करो, उसकी सड़कें सीधी करो।*
2. **मरकुस 1:1-4:** *[1]परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के सुसमाचार का आरम्भ। [2]जैसा यशायाह भविष्यवक्ता की पुस्तक में लिखा है कि देख, मैं अपने दूत को तेरे आगे भेजता हूं, जो तेरे लिए मार्ग सुधारेगा। [3]जंगल में एक पुकारने वाले का शब्द सुनाई दे रहा है कि प्रभु का मार्ग तैयार करो, और उस की सड़कें सीधी करो। [4]यूहन्ना आया, जो जंगल में बपतिस्मा देता, और पापों की क्षमा के लिए मनफिराव के बपतिस्मा का प्रचार करता था।*
3. **लूका 3:1-6:** *[1]तिबिरियुस कैसर के राज के पंद्रहवें वर्ष में जब पुन्तियुस पीलातुस यहूदिया का हाकिम था, और गलील में हेरोदेस, इतूरैया और त्रखोनीतिस में उसका भाई फिलिप्पुस, और अबिलेने में लिसानियास, चौथाई के राजा थे। [2]और जब हन्ना और कैफा महायाजक थे, उस समय परमेश्वर का वचन जंगल में जकर्याह के पुत्र यूहन्ना के पास पहुंचा। [3]और वह यरदन के आस पास के सारे देश में आकर, पापों की क्षमा के लिए मन फिराव के बपतिस्मा का प्रचार*

करने लगा। [4]जैसे यशायाह भविष्यवक्ता के कहे हुए वचनों की पुस्तक में लिखा है, कि जंगल में एक पुकारने वाले का शब्द हो रहा है कि प्रभु का मार्ग तैयार करो, उस की सड़कें सीधी बनाओ। [5]हर एक घाटी भर दी जाएगी, और हर एक पहाड़ और टीला नीचा किया जाएगा; और जो टेढ़ा है सीधा, और जो ऊंचा नीचा है वह चौरस मार्ग बनेगा। [6]और हर प्राणी परमेश्वर के उद्धार को देखेगा।

4. **यूहन्ना 1:23:** *उसने कहा, जैसा यशायाह भविष्यवक्ता ने कहा है, मैं जंगल में एक पुकारने वाले का शब्द हूं कि तुम प्रभु का मार्ग सीधा करो।*

II. मलाकी नबी द्वारा यूहन्ना के आने की भविष्यवाणी की गई थी।

क. पुराने नियम के एक और नबी मलाकी ने भी, जिसने लगभग 445–432 ई.पू. के दौरान लिखा, यूहन्ना के आने की बात इस प्रकार की थी:

1. **मलाकी 3:1:** *''देखो, मैं अपने दूत को भेजता हूं, और वह मार्ग को मेरे आगे सुधारेगा, और प्रभु, जिसे तुम ढूंढ़ते हो, वह अचानक अपने मन्दिर में आ जाएगा; हां वाचा का वह दूत, जिसे तुम चाहते हो, सुनो, वह आता है, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।''*
2. **मलाकी 4:5-6:** *[5]देखो, यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन के आने से पहिले, मैं तुम्हारे पास एलिय्याह नबी को भेजूंगा। [6]वह माता पिता के मन को उनके पुत्रों की ओर, और पुत्रों के मन को उनके माता-पिता की ओर फेरेगा; ऐसा न हो कि मैं आकर पृथ्वी को सत्यानाश करूं।*

ख. यूहन्ना मलाकी की भविष्यवाणी का पूरा होना था जिसका प्रमाण नीचे दिए गए हवालों से मिलता है:

1. **मत्ती 11:7-15:** *[7]जब वे वहां से चल दिए, तो यीशु यूहन्ना के विषय में लोगों से कहने लगा, तुम जंगल में क्या देखने गए थे? क्या हवा से हिलते हुए सरकण्डे को? [8]फिर तुम क्या देखने गये थे? क्या कोमल वस्त्र पहिने हुए मनुष्य को? देखो, जो कोमल वस्त्र पहिनते हैं, वे राजभवनों में रहते हैं। [9]तो फिर क्यों गये थे? क्या किसी भविष्यवक्ता को देखने को? हां; मैं तुमसे कहता हूं, कि भविष्यवक्ता से भी बड़े को। [10]यह वही है जिसके विषय में लिखा है: 'देख, मैं अपने दूत को तेरे आगे भेजता हूं, जो तेरे आगे तेरा मार्ग तैयार करेगा।' [11]मैं तुम से सच कहता हूं कि जो स्त्रियों से जन्मे हैं, उनमें से यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से कोई बड़ा नहीं हुआ; पर जो स्वर्ग के राज्य में छोटे से छोटा है वह उससे बड़ा है। [12]यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के दिनों से अब तक स्वर्ग के राज्य में बलपूर्वक प्रवेश होता रहा है, और बलवान उसे छीन लेते हैं। [13]यूहन्ना तक सारे भविष्यवक्ता और व्यवस्था भविष्यवाणी करते रहे। [14]और चाहो तो मानो कि एलिय्याह जो आने वाला था, वह यही है। [15]जिस के सुनने के कान हों, वह सुन ले।*

2. **मत्ती 17:10-13:** *''[10]इस पर उस के चेलों ने उस से पूछा, 'फिर शास्त्री क्यों कहते हैं कि एलिय्याह का पहले आना अवश्य है?' [11]उस ने उत्तर दिया, 'एलिय्याह अवश्य आएगा सब कुछ सुधारेगा। [12]परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि एलिय्याह आ चुका है, और लोगों ने उसे नहीं पहचाना; परन्तु जैसा चाहा वैसा ही उस के साथ किया। इसी रीति से मनुष्य का पुत्र भी उनके हाथ से दुःख उठाएगा।' [13]तब चेलों ने समझा कि उसने हमसे यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के विषय में कहा है।''*
3. **मरकुस 9:11-13:** *[11]और उन्होंने उससे पूछा, शास्त्री क्यों कहते हैं, कि एलिय्याह का पहिले आना अवश्य है? [12]उस ने उन्हें उत्तर दिया, कि एलिय्याह सचमुच पहिले आकर सब कुछ सुधारेगा, परन्तु मनुष्य के पुत्र के विषय में यह क्यों लिखा है, कि वह बहुत दुख उठाएगा, और तुच्छ गिना जाएगा? [13]परन्तु मैं तुम से कहता हूं, कि एलिय्याह तो आ चुका, और जैसा उसके विषय में लिखा है, उन्होंने जो कुछ चाहा उसके साथ किया।*
4. **लूका 7:24-27:** *[24]जब यूहन्ना के भेजे हुए लोग चल दिए, तो यीशु यूहन्ना के विषय में लोगों से कहने लगा; तुम जंगल में क्या देखने गए थे? क्या हवा से हिलते हुए सरकण्डे को? [25]तो फिर तुम क्या देखने गए थे? क्या कोमल वस्त्र पहिने हुए मनुष्य को? देखो, जो भड़कीला वस्त्र पहिनते, और सुख विलास से रहते हैं, वे राजभवनों में रहते हैं। [26]तो फिर क्या देखने गए थे? क्या किसी भविष्यवक्ता से भी बड़े को। [27]यह वही है, जिस के विषय में लिखा है, कि देख, मैं अपने दूत को तेरे आगे आगे भेजता हूं, जो तेरे आगे तेरा मार्ग सीधा करेगा।*

नोटः यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के अपने बारे में कही प्रेरित यूहन्ना के विवरण की बात को पढ़कर कई लोग यूहन्ना की बातों और यीशु मसीह की बातों के बीच विरोधाभास मानकर परेशानी में पड़ गए हैं जो हमने अभी अभी कही है। यूहन्ना 1:19-23 में यह लिखा हैः

''[19]यूहन्ना की गवाही यह है, कि यहूदियों ने यरूशलेम से याजकों और लेवियों को उससे यह पूछने के लिए भेजा, कि तू कौन है? [20]तो उसने यह मान लिया, और इनकार नहीं किया, परन्तु मान लिया कि मैं मसीह नहीं हूं। [21]तब उन्होंने, उस से पूछा, 'तो फिर कौन है? क्या तू एलिय्याह है? उस ने कहा, मैं नहीं हूं: तो क्या तू वह भविष्यवक्ता है?' उसने उत्तर दिया, कि 'नहीं।' [22]तब उन्होंने उस से पूछा, फिर तू है कौन? ताकि हम अपने भेजने वालों को उत्तर दें। तू अपने विषय में क्या कहता है? [23]उस ने कहा, जैसा यशायाह भविष्यवक्ता ने कहा है, मैं जंगल में एक पुकारने वाले का शब्द हूं कि तुम प्रभु का मार्ग सीधा करो।''

ग. यदि हम अभी-अभी दिए गए पवित्र शास्त्र के हवालों पर ही अपना अध्ययन करें तो कोई संदेह नहीं कि हमें यही निष्कर्ष निकालना पड़ेगा कि यूहन्ना के बारे में जो

कुछ यीशु ने कहा और जो यूहन्ना ने स्वयं कहा उसमें सीधा-सीधा विरोधाभास पाया जाता है।

1. *मत्ती 11 और 17, मरकुस 9 और लूका 7 में यीशु ने बताया कि यूहन्ना ही ''आने वाला एलिय्याह'' था।*
2. *परन्तु यूहन्ना 1 से आगे के हवाले से ''क्या तू एलिय्याह है?'' के सीधे प्रश्न का उत्तर यूहन्ना ने दिया, ''मैं नहीं हूं।''*

घ. प्रश्न: इन दो विरोधाभासी लगने वाली घोषणाओं को मिलाया कैसे जा सकता है?

1. इसका उत्तर यूहन्ना के जन्म से पहले जकर्याह को कही गई स्वर्गदूत की बात में मिलता है। लूका 1:13-17 में स्वर्गदूत ने उससे कहा,
   ''[13]हे जकर्याह, भयभीत न हो क्योंकि तेरी प्रार्थना सुन ली गई है और तेरी पत्नी इलीशिबा से तेरे लिए एक पुत्र उत्पन्न होगा, और तू उसका नाम यूहन्ना रखना। [14]तुझे आनन्द और हर्ष होगा: और बहुत लोग उसके जन्म के कारण आनन्दित होंगे। [15]क्योंकि वह प्रभु के सामने महान होगा; और दाखरस और मदिरा कभी न पीएगा; और अपनी माता के गर्भ ही से पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाएगा। [16]और इस्राएलियों में से बहुतेरों को उन के प्रभु परमेश्वर की ओर फेरेगा। [17]वह एलिय्याह की आत्मा और सामर्थ में हो कर उसके आगे आगे चलेगा, कि पितरों का मन लड़के बालों की ओर फेर दे; और आज्ञा न मानने वालों को धर्मियों की समझ पर लाए; और प्रभु के लिए एक योग्य प्रजा तैयार करे।''
2. इस प्रकार हम देखते हैं कि यूहन्ना देह में एलिय्याह नहीं बल्कि *''एलिय्याह की आत्मा और सामर्थ में''* था।
3. याजकों और लेवियों द्वारा यूहन्ना से किए गए प्रश्न से यह स्पष्ट है कि वे यूहन्ना की देह को पहचानने का प्रयास कर रहे थे; इसलिए उनके पूछने पर कि *''क्या तू एलिय्याह है?''* उसका उत्तर था *''मैं नहीं हूं।''*
4. इसके विपरीत यीशु को यह पता होने पर कि यूहन्ना की *''आत्मा और सामर्थ'' एलिय्याह के जैसी थी, जैसा कि स्वर्गदूत ने कहा था, उसने उसे ''एलिय्याह जो आने वाला था''* बताया।
5. यदि *''एलिय्याह''* शब्द के इन दोनों अलग अलग उपयोगों को ध्यान में रखा जाए तो यीशु और यूहन्ना के बीच लगने वाला विरोधाभास कोई विरोधाभास रहेगा ही नहीं: यूहन्ना अपनी देह की बात कर रहा होगा, जबकि यीशु उसकी आत्मा और सामर्थ की। यूहन्ना देह में एलिय्याह नहीं था परन्तु वह आत्मा और सामर्थ में एलिय्याह था।

III. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का गर्भ में आना, जन्म से पूर्व का अनुभव और जन्म।

क. स्वर्गदूत की घोषणा- लूका 1:5-22:

''[5]यहूदियों के राजा हेरोदेस के समय अबिय्याह के दल में जकर्याह नाम का एक याजक था, और उस की पत्नी हारून के वंश की थी, जिसका नाम इलीशिबा था।

[6]और वे दोनों परमेश्वर मे साम्हने धर्मी थे: और प्रभु की सारी आज्ञाओं और विधियों पर निर्दोष चलने वाले थे। [7]उन के कोई भी सन्तान न थी, क्योंकि इलीशिबा बांझ थी, और वे दोनों बूढ़े थे। [8]जब वह अपने दल की पारी पर परमेश्वर के साम्हने याजक का काम करता था। [9]तो याजकों की रीति के अनुसार उसके नाम पर चिट्ठी निकली, कि प्रभु के मन्दिर में जाकर धूप जलाए। [10]और धूप जलाने के समय लोगों की सारी मण्डली बाहर प्रार्थना कर रही थी। [11]कि प्रभु का एक स्वर्गदूत धूप की वेदी की दहिनी ओर खड़ा हुआ उस को दिखाई दिया। [12]और जकर्याह देखकर घबराया और उस पर बड़ा भय छा गया। [13]परन्तु स्वर्गदूत ने उस से कहा, हे जकर्याह, भयभीत न हो क्योंकि तेरी प्रार्थना सुन ली गई है और तेरी पत्नी इलीशिबा से तेरे लिए एक पुत्र उत्पन्न होगा, और तू उसका नाम यूहन्ना रखना। [14]और तुझे आनन्द और हर्ष होगा: और बहुत लोग उसके जन्म के कारण आनन्दित होंगे। [15]क्योंकि वह प्रभु के साम्हने महान होगा; और दाखरस और मदिरा कभी न पीएगा; और अपनी माता के गर्भ ही से पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाएगा। [16]और इस्राएलियों में से बहुतेरों को उन के प्रभु परमेश्वर की ओर फेरेगा। [17]वह एलिय्याह की आत्मा और सामर्थ में हो कर उसके आगे आगे चलेगा, कि पितरों का मन लड़के बालों की ओर फेर दे; और आज्ञा न मानने वालों को धर्मियों की समझ पर लाए; और प्रभु के लिए एक योग्य प्रजा तैयार करे। [18] जकर्याह ने स्वर्गदूत से पूछा; यह मैं कैसे जानूं? क्योंकि मैं तो बूढ़ा हूं, और मेरी पत्नी भी बूढ़ी हो गई है। [19]स्वर्गदूत ने उस को उत्तर दिया, कि मैं जिब्राईल हूं, जो परमेश्वर के साम्हने खड़ा रहता हूं; और मैं तुझ से बातें करने और तुझे यह सुसमाचार सुनाने को भेजा गया हूं। [20]और देख जिस दिन तक ये बातें पूरी न हो लें, उस दिन तक तू मौन रहेगा, और बोल न सकेगा, इसलिए कि तू ने मेरी बातों की जो अपने समय पर पूरी होंगी, प्रतीति न की। [21]और लोग जकर्याह की बाट देखते रहे और अचम्भा करने लगे कि उसे मन्दिर में ऐसी देर क्यों लगी? [22]जब वह बाहर आया, तो उन से बोल न सका: सो वे जान गए, कि उस ने मन्दिर में कोई दर्शन पाया है; और वह उन से संकेत करता रहा, और गूंगा रह गया।''

ख. **जकर्याह की पत्नी इलीशिबा गर्भवती होती है— लूका 1:23-25:**

''[23]जब उस की सेवा के दिन पूरे हुए, तो वह अपने घर चला गया। [24]इन दिनों के बाद उस की पत्नी इलीशिबा गर्भवती हुई; और पांच महीने तक अपने आप को यह कह के छिपाए रखा कि [25]मनुष्यों में मेरा अपमान दूर करने के लिए प्रभु ने इस दिनों में कृपादृष्टि करके मेरे लिए ऐसा किया है।''

ग. **जिब्राईल स्वर्गदूत मरियम को भी दर्शन देता है— लूका 1:26-38:**

''[26]छठवें महीने में परमेश्वर की ओर से जिब्राईल स्वर्गदूत गलील के नासरत नगर में [27]एक कुंवारी के पास भेजा गया। जिस की मंगनी यूसुफ नाम दाऊद के घराने के एक पुरुष से हुई थी: उस कुंवारी का नाम मरियम था। [28]और स्वर्गदूत ने उसके पास भीतर आकर कहा; आनन्द और जय तेरी हो, जिस पर ईश्वर का अनुग्रह हुआ है, प्रभु तेरे साथ है। [29]वह उस वचन से बहुत घबरा गई, और सोचने लगी, कि यह

किस प्रकार का अभिवादन है? [30]स्वर्गदूत ने उस से कहा, हे मरियम; भयभीत न हो, क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है। [31]और देख, तू गर्भवती होगी, और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा; तू उसका नाम यीशु रखना। [32]वह महान होगा; और परमप्रधान का पुत्र कहलाएगा; और प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उस को देगा। [33]और वह याकूब के घराने पर सदा राज करेगा; और उसके राज्य का अन्त न होगा। [34]मरियम ने स्वर्गदूत से कहा, यह क्योंकर होगा? मैं तो पुरुष को जानती ही नहीं। [35]स्वर्गदूत ने उस को उत्तर दिया; कि पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परमप्रधान की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी इसलिए वह पवित्र जो उत्पन्न होने वाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा। [36]और देख, तेरी कुटुम्बिनी इलीशिबा के भी बुढ़ापे में पुत्र होने वाला है, यह उसका, जो बांझ कहलाती थी छठवां महीना है। [37]क्योंकि जो वचन परमेश्वर की ओर से होता है वह प्रभाव रहित नहीं होता। [38]मरियम ने कहा, देख, मैं प्रभु की दासी हूं, मुझे तेरे वचन के अनुसार हो: तब स्वर्गदूत उसके पास से चला गया।''

घ. **यूहन्ना आनन्द से इलीशिबा की कोख में उछलता है— लूका 1:39-56:**

''[39]उन दिनों में मरियम उठकर शीघ्र ही पहाड़ी देश में यहूदा के एक नगर को गई। [40]और जकर्याह के घर में जाकर इलीशिबा को नमस्कार (सलाम) किया। [41]ज्योंही इलीशिबा ने मरियम का नमस्कार (सलाम) सुना, त्योंही बच्चा उसके पेट में उछला, और इलीशिबा पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गई। [42]और उस ने बड़े शब्द से पुकार कर कहा, तू स्त्रियों में धन्य है, और तेरे पेट का फल धन्य है। [43]और यह अनुग्रह मुझे कहां से हुआ, कि मेरे प्रभु की माता तेरे पास आई? [44]और देख, ज्योंही तेरे नमस्कार (सलाम) का शब्द मेरे कानों में पड़ा, त्योंही बच्चा मेरे पेट में आनन्द से उछल पड़ा। [45]और धन्य है, वह जिस ने विश्वास किया कि जो बातें प्रभु की ओर से उस से कही गई, वे पूरी होंगी। [46]तब मरियम ने कहा, मेरा प्राण प्रभु की बड़ाई करता है। [47]और मेरी आत्मा मेरे उद्धार करने वाले परमेश्वर से आनन्दित हुई। [48]क्योंकि उस ने अपनी दासी की दीनता पर दृष्टि की है, इसलिए देखो, अब से सब युग युग के लोग मुझे धन्य कहेंगे। [49]क्योंकि उस शक्तिमान ने मेरे लिए बड़े-बड़े काम किए हैं, और उसका नाम पवित्र है। [50]और उस की दया उन पर, जो उस से डरते हैं, पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है। [51]उस ने अपना भुजबल दिखाया, और जो अपने आप को बड़ा समझते थे, उन्हें तितर-बितर किया। [52]उस ने बलवानों को सिंहासनों से गिरा दिया; और दीनों को ऊंचा किया। [53]उस ने भूखों को अच्छी वस्तुओं से तृप्त किया, और धनवानों को छूछे हाथ निकाल दिया। [54]उस ने अपने सेवक इस्राएल को सम्भाल लिया कि अपनी उस दया को स्मरण करे, [55]जो अब्राहम और उसके वंश पर सदा रहेगी, जैसा उसने हमारे बाप-दादों से कहा था। [56]मरियम लगभग तीन महीने उसके साथ रहकर अपने घर लौट गई।''

ङ **यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का जन्म— लूका 1:57-58:**

''[57]तब इलीशिबा के जनने का समय पूरा हुआ, और वह पुत्र जनी। [58]उसके पड़ोसी और कुटुम्बी यह सुनकर, कि प्रभु ने उस पर बड़ी दया की है, उसके साथ आनन्दित

हुए।''

च. **यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का खतना और नामकरण— लूका 1:59-64:**

''[59]और ऐसा हुआ कि आठवें दिन वे बालक का खतना करने आए और उसका नाम उसके पिता के नाम पर जकर्याह रखने लगे। [60]और उस की माता ने उत्तर दिया कि नहीं; वरन उसका नाम यूहन्ना रखा जाए। [61]और उन्होंने उस से कहा, तेरे कुटुम्ब में किसी का यह नाम नहीं! [62]तब उन्होंने उसके पिता से संकेत करके पूछा कि तू उसका नाम क्या रखना चाहता है? [63]और उस ने लिखने की पट्टी मंगाकर लिख दिया, कि उसका नाम यूहन्ना है: और सभों ने अचम्भा किया। [64]तब उसका मुंह और जीभ तुरन्त खुल गई; और वह बोलने और परमेश्वर का धन्यवाद करने लगा।''

छ. **जकर्याह अपने नन्हें पुत्र यूहन्ना के विषय में भविष्यवाणी करता है— लूका 1:65-80:**

''[65]और उसके आस पास के सब रहने वालों पर भय छा गया; और उन सब बातों की चर्चा यहूदिया के सारे पहाड़ी देश में फैल गई। [66]और सब सुनने वालों ने अपने अपने मन में विचार करके कहा, यह बालक कैसा होगा क्योंकि प्रभु का हाथ उसके साथ था। [67]और उसका पिता जकर्याह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गया, और भविष्यवाणी करने लगा। [68]कि प्रभु इस्राएल का परमेश्वर धन्य हो, कि उस ने अपने लोगों पर दृष्टि की और उन का छुटकारा किया है। [69]और अपने सेवक दाऊद के घराने में हमारे लिए एक उद्धार का सींग निकाला। [70][जैसे उस ने अपने पवित्र भविष्यवक्ताओं के द्वारा जो जगत के आदि से होते आए हैं, कहा था]। [71]अर्थात् हमारे शत्रुओं से, और हमारे सब बैरियों के हाथ से हमारा उद्धार किया है। [72]कि हमारे बाप-दादों पर दया करके अपनी पवित्र वाचा का स्मरण करे। [73]और वह शपथ जो उस ने हमारे पिता अब्राहम से खाई थी [74]कि वह हमें यह देगा, कि हम अपने शत्रुओं के हाथ से छूटकर [75]उसके साम्हने पवित्रता और धार्मिकता से जीवन भर निडर रहकर उस की सेवा करते रहें। [76]और तू हे बालक, परमप्रधान का भविष्यवक्ता कहलाएगा, क्योंकि तू प्रभु का मार्ग तैयार करने के लिए उसके आगे चलेगा, [77]कि उसके लोगों को उद्धार का ज्ञान दे, जो उन के पापों की क्षमा से प्राप्त होता है। [78]यह हमारे परमेश्वर की उसी बड़ी करुणा से होगा; जिस के कारण ऊपर से हम पर भोर का प्रकाश उदय होगा [79]कि अन्धकार और मृत्यु की छाया में बैठने वालों को ज्योति दे, और हमारे पांवों को कुशल के मार्ग में सीधे चलाए। [80]और वह बालक बढ़ता और आत्मा में बलवन्त होता गया, और इस्राएल पर प्रकट होने के दिन तक जंगलों में रहा।''

IV. **यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का लिबास और भोजन।**

क. **मत्ती 3:4**— ''यह यूहन्ना ऊंट के रोम का वस्त्र पहिने था, और अपनी कमर में चमड़े का कटिबन्ध बान्धे हुए था। उसका भोजन टिड्डियां और वनमधु था।''

ख. **मरकुस 1:6**—*''यूहन्ना ऊंट के रोम का वस्त्र पहिने और अपनी कमर में चमड़े का पटुका बान्धे रहता था और टिड्डियां और वन मधु खाया करता था।''*

V. **यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले द्वारा बताया गया और दिया जाने वाला बपतिस्मा।**

क. **मत्ती 3:5-6, 11**—*''[5]तब यरूशलेम और सारे यहूदिया, और यरदन के आस-पास के सब स्थानों के लोग उसके पास निकल आए। [6]उन्होंने अपने-अपने पापों को मानकर यरदन नदी में उससे बपतिस्मा लिया। ... [7](यूहन्ना ने कहा) 'मैं तो पानी से तुम्हें ... बपतिस्मा देता हूं।' ''*

ख. **मरकुस 1:4-5, 8**—*''[4]यूहन्ना आया, जो जंगल में बपतिस्मा देता, और पापों की क्षमा के लिए मन-फिराव के बपतिस्मा का प्रचार करता था। [5]और सारे यहूदिया देश के, और यरूशलेम के सब रहने वाले निकलकर उसके पास गए, और अपने पापों को मानकर यरदन नदी में उस से बपतिस्मा लिया। ... [8][यूहन्ना ने कहा] 'मैं ने तो तुम्हें पानी से बपतिस्मा दिया है ... ।' ''*

ग. **लूका 3:3, 21**—*''[3]और वह यरदन के आस पास के सारे देश में आकर, पापों की क्षमा के लिए मन फिराव के बपतिस्मा का प्रचार करने लगा। ... [21]सब लोगों ने बपतिस्मा लिया ... ।''*

घ. **लूका 7:29-30**—*''[29]और सब साधारण लोगों ने (मसीह की) सुनकर और चुंगी लेने वालों ने भी यूहन्ना का बपतिस्मा लेकर परमेश्वर को सच्चा मान लिया। [30]पर फरीसियों और व्यवस्थापकों ने उस से बपतिस्मा न लेकर परमेश्वर की मंशा को अपने विषय में टाल दिया।''*

ङ **यूहन्ना 1:26**—*''यूहन्ना ने उनको उत्तर दिया, 'मैं तो जल से बपतिस्मा हूं ... ।' ''*

च. **यूहन्ना 3:23-24**—*''[23]यूहन्ना भी शालेम के निकट ऐनोन में बपतिस्मा देता था। क्योंकि वहां बहुत जल था, और लोग आकर बपतिस्मा लेते थे। [24]यूहन्ना उस समय तक जेलखाने में नहीं डाला गया था।''*

VI. **यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले द्वारा सिखाई गई अतिरिक्त बातें।**

क. अपने चेलों को जीने के लिए सिखाए गए उसके नियम

1. मन फिराव (मत्ती 3:2, 8, 11; लूका 3:3, 8)।
2. उपवास रखना (मत्ती 9:14-15; मरकुस 2:18-20; लूका 5:33-35)।
3. प्रार्थना (लूका 11:1)।
4. व्यभिचार को गलत ठहराया गया (मत्ती 14:3-4; मरकुस 6:17-18; लूका 3:19)।
5. बांटना (लूका 3:10-11)।
6. आर्थिक ईमानदारी (लूका 3:12-13)।
7. सही आचरण (लूका 3:14)।
8. सच्चाई (लूका 3:14)।
9. संतुष्टि (लूका 3:14)।

ख. वे बातें, जो आम तौर पर माना जाता है कि यूहन्ना ने अपने चेलों को सिखाईं-

1. उसका बपतिस्मा *''पापों की क्षमा''* के लिए था (लूका 3:3)।
2. कि मनुष्यों को यदि स्वर्ग की ओर न दिया जाए तो उसे कुछ नहीं मिल सकता (यूहन्ना 3:27)।
3. कि स्वर्ग का राज्य तब *''निकट''* था (मत्ती 3:2)।
4. कि *''क्रोध''* आने को था (मत्ती 3:7, 10-12; लूका 3:7, 9, 16-17; यूहन्ना 3:36)।
5. कि परमेश्वर अब्राहम के लिए पत्थरों से संतान उत्पन्न कर सकता है (मत्ती 3:9; लूका 3:8)।
6. कि कुछ लोगों का उद्धार होना था (मत्ती 3:12)।
7. कि जो स्वर्ग से आता है वह सबसे ऊपर है (यूहन्ना 3:31)।
8. बहुत सी और बातें (लूका 3:18)।

ग. यूहन्ना ने अपना नमूना देकर जो कुछ सिखाया

1. संयम (मत्ती 11:18; लूका 7:33)।
2. नम्रता (यूहन्ना 3:30)।
3. कोई आश्चर्यकर्म नहीं किया (यूहन्ना 10:41)।

घ. यूहन्ना की डांटें।

1. फरीसियों और सदूकियों को (मत्ती 3:7-12)।
2. भीड़ को (लूका 3:7-9)।
3. हेरोदेस को (मत्ती 14:3-4; मरकुस 6:17-18; लूका 3:19)।

ङ. यीशु के विषय में जो कुछ यूहन्ना ने बताया

1. यूहन्ना ने इस से इनकार किया कि वह स्वयं मसीह (लूका 3:15-16; यूहन्ना 1:19-20; 3:28)।
2. यूहन्ना ने मसीहा के आने की भविष्यवाणी अपने से सामर्थी और श्रेष्ठ दोनों के रूप में की (मत्ती 3:11, 13-14; मरकुस 1:7-8; लूका 3:16; यूहन्ना 1:15, 25-27, 29-30; 3:29-30)।
3. यूहन्ना ने यीशु को *''परमेश्वर का पुत्र''* कहा (यूहन्ना 1:32-34)।
4. यूहन्ना ने यीशु को *''परमेश्वर का मेमना''* कहा जो जगत के पाप उठा ले जाता है (यूहन्ना 1:29, 36)।
5. यूहन्ना ने कहा कि यीशु ने पवित्र आत्मा से और आग से बपतिस्मा देना था (मत्ती 3:11; मरकुस 1:8; लूका 3:16-17)।
6. यूहन्ना ने कहा कि यीशु ने जो कुछ बोला वह परमेश्वर की ओर से था (यूहन्ना 3:34)।
7. यूहन्ना ने कहा कि यीशु ने उसी की, जो उसने देखा और सुना था, गवाही दी (यूहन्ना 3:32)।
8. यूहन्ना ने कहा कि जो कोई यीशु की गवाही को ग्रहण करता है वह परमेश्वर को सच्चा मान लेता है (यूहन्ना 3:33)।

9. यूहन्ना ने कहा कि परमेश्वर ने मसीह को बिना माप के आत्मा दिया (यूहन्ना 3:34)।
10. यूहन्ना ने कहा कि परमेश्वर ने यीशु से प्रेम रखा और सब कुछ उसे दे दिया (यूहन्ना 3:35)।
11. यूहन्ना ने कहा कि यीशु पर विश्वास करने वालों को अनन्त जीवन मिला है; दूसरे लोग जीवन को नहीं देखेंगे (यूहन्ना 3:36)।

VII. **यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले द्वारा यीशु का बपतिस्मा** (मत्ती 3:13-17; मरकुस 1:9-11; लूका 3:21-22)।

नोट: यूहन्ना का बपतिस्मा *''पापों की क्षमा के लिए''* था। यूहन्ना जानता था कि यीशु में कोई पाप नहीं था, जिस कारण उसने यीशु को बपतिस्मा लेने से रोका होगा। परन्तु यीशु ने यह कहते हुए ज़ोर दिया कि *''अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है''* तब उसने वैसा ही होने दिया।

VIII. **यूहन्ना की कैद और पूछताछ और मृत्यु।**

क. हेरोदेस से बैर लेने पर, जिसे उसने व्यभिचार के लिए डांटा था, यूहन्ना को कैद में डाल दिया गया (मत्ती 4:12; मरकुस 1:14; 6:17; लूका 3:19-20)।

ख. जेल में ही यूहन्ना ने अपने चेलों को यीशु से यह पूछने के लिए भेजा कि क्या वही मसीहा है (मत्ती 11:2-6; लूका 7:18-23)।

1. यीशु ने इन चेलों को वापस जाकर यूहन्ना से *''जो बातें तुम से सुनी और देखी हैं''* बताने को कहकर उत्तर दिया:
   - क. अंधे देखते हैं
   - ख. लंगड़े चलते हैं
   - ग. कोढ़ी शुद्ध होते हैं
   - घ. बहरे सुनते हैं
   - ङ मुर्दे जिलाए जाते हैं
   - च. कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है
   - छ. धन्य है वह जो मेरे कारण ठोकर न खाए

ग. सिर काटकर यूहन्ना की मृत्यु (मत्ती 14:3-12; मरकुस 6:17-29)।

IX. **यूहन्ना के प्रति लोगों का अलग अलग व्यवहार**

क. लोगों की भीड़ यूहन्ना को नबी मानती थी (मत्ती 14:5; 21:26; मरकुस 11:32)।

ख. हेरोदेस यूहन्ना से डरता था (मत्ती 14:9; मरकुस 6:20)।

ग. हेरोदियास यूहन्ना से घृणा करती थी (मत्ती 14:3-11; मरकुस 6:17-28)।

घ. यीशु ने यूहन्ना को जो वह था माना (मत्ती 11:11; 21:32; लूका 7:24-30;

यूहन्ना 5:32-35)।

X. **यूहन्ना की मृत्यु के बाद बहुतों ने यीशु को मुर्दों में से जी उठा यूहन्ना समझ लिया** (मत्ती 14:1-2; । 16:13-14; मरकुस 6:14-16; 8:27-28; लूका 9:7-9; 9:18-20)।

XI. **यीशु ने प्रधान याजकों और प्राचीनों से यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के बारे में पूछा** (मत्ती 21:23- 27; मरकुस 11:27-33; लूका 20:1-8)।

XII. **यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले द्वारा पूरा किया गया उद्देश्य**

क. यीशु मसीह के अग्रदूत के रूप में उसका मार्ग तैयार करना (मत्ती 3:3; मरकुस 1:3; लूका 3:4; यूहन्ना 1:23; 3:28)।

ख. मसीह की गवाही देना (यूहन्ना 1:6-8, 15; 5:32-33, 36; 10:41)।

XIII. **यीशु मसीह यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की जगह लेता है**

क. यूहन्ना ने स्वयं कहा कि वह मसीह नहीं है (लूका 3:15-16; यूहन्ना 1:19-20; 3:28)।

ख. यूहन्ना ने यीशु को मसीह के रूप में पहचाना

ग. यूहन्ना ने कहा, *''आवश्यक है कि वह बढ़े और मैं घटूं''* (यूहन्ना 3:30)।

घ. यीशु ने यूहन्ना को *''जगता और चमकता हुआ दीपक''* कहा, *''तुम्हें कुछ देर तक उसकी ज्योति में मगन होना अच्छा लगे। परन्तु मेरे पास जो गवाही है वह यूहन्ना की गवाही से बड़ी है''* (यूहन्ना 5:35-36)।

XIV. **यीशु का बपतिस्मा यूहन्ना के बपतिस्मे का स्थान ले लेता है।**

नोट: यीशु मसीह के क्रूस पर चढ़ाए जाने, दफ़नाए जाने और मुर्दों में से जी उठने के बाद, उसने अपने चेलों को एक आज्ञा दी जिसमें विशेष अर्थ में उसके द्वारा दिया गया बपतिस्मा यूहन्ना के बपतिस्मे से श्रेष्ठ था (देखें मत्ती 28:18-20; मरकुस 16:15-16)। कि यह नया बपतिस्मा यूहन्ना द्वारा बताए गए पुराने बपतिस्मे का स्थान इस प्रकार लेता है:

क. अकविल्ला और प्रिसकिल्ला ने जब अपुल्लोस को प्रचार करते हुए सुना, *''जो केवल यूहन्ना के बपतिस्मे की बात जानता था''* तो *''वे उसे अपने यहां ले गए और परमेश्वर का मार्ग उसको और भी ठीक ठीक बताया''* (प्रेरितों 18:24-28)।

ख. यह पता चलने पर कि चेलों को केवल *''यूहन्ना का बपतिस्मा''* मिला था, पौलुस ने उन्हें बताया कि यूहन्ना लोगों को यह कहता था कि वे यीशु पर विश्वास लाएं जिस कारण उन्होंने यीशु के नाम में बपतिस्मा लिया (प्रेरितों 19:1-5)।

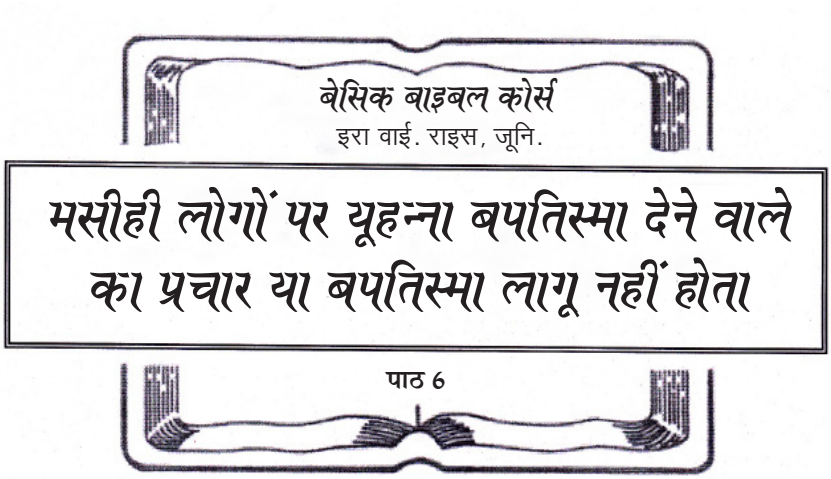

पाठ 6 के प्रश्न

Registration No..... Grade .....

Name.....

Address.....

.....

Pin.....Mobile No.....

e-mail.....

(कृपया पता अंग्रेजी के बड़े अक्षरों में ही लिखें।)

1. **किस धार्मिक प्रबन्ध** के अन्त के निकट **यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला** आया?

   .....

2. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के आने से लगभग **कितना समय** पहले यशायाह भविष्यवक्ता ने उस के आने की भविष्यवाणी की थी? .....

3. किस नबी ने लिखा था कि ''जंगल में यहोवा का मार्ग सुधारो, हमारे परमेश्वर के लिए अराबा में एक राज-मार्ग चौरस करो''? .....

4. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला जब प्रचार करते और बपतिस्मा देते हुए आया तो क्या यह सब ''जंगल'' में किया गया? ..... यदि हां तो किस जंगल में .....?

5. पुराने नियम के एक और नबी का नाम बताएं जिसने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के आने की भविष्यवाणी की थी: .....

6. मलाकी ने यूहन्ना से **कितना समय** पहले भविष्यवाणी की थी? .....

7. क्या यीशु मसीह ने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को यशायाह और मलाकी की भविष्यवाणी वाला व्यक्ति कहा था? .....

8. यीशु ने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को ''एलिय्याह [जिस ने] पहले आना'' था, कहा। तौभी जब यूहन्ना से सीधा प्रश्न पूछा गया कि ''क्या तू एलिय्याह है?'' तो उस का उत्तर था कि मैं नहीं हूं। इस विरोधाभास लगने वाली बात को समझाएं:

   .....

   .....

9. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के माता-पिता का **नाम** और **पहचान** बताएं: .....

   .....

   .....

10. क्या यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के **जन्म** में कोई अनोखी या असाधारण बात थी?

..... यदि हां तो क्या थी? .....

11. यूहन्ना की माता के गर्भवती होने के लगभग छह महीने बाद, यीशु मरियम की कोख में आया। कुछ दिनों के बाद जब मरियम, यूहन्ना की माता के पास गई तो **जन्म लेने से पहले यूहन्ना ने क्या किया था**? .....

12. यूहन्ना के जन्म के आठ दिन बाद उन्होंने उस का नाम रखा और उस का खतना किया। इस अवसर पर उस के पिता के साथ क्या **अनोखी बात** हुई थी? .....

13. यूहन्ना का क्या **लिबास** और क्या **भोजन** था? .....

14. वह कौन-सी आयत है, जिससे पता चलता है कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला **पानी में बपतिस्मा देता** था? .....

15. कौन-सी आयत बताती है कि बपस्तिमे के लिए "**बहुत** जल" आवश्यक था? .....

16. कौन-सी आयत कहती है कि यह बपतिस्मा "**मन फिराव** के लिए" था? .....

17. कौन-सी आयत बताती है कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का बपतिस्मा लेने वालों द्वारा **पापों का अंगीकार** किया जाता था? .....

18. कौन-सी आयत बताती है कि यूहन्ना का बपतिस्मा "**पापों की क्षमा**" के लिए था?

.....

19. **स्वर्ग के राज्य के आने** पर यूहन्ना क्या कहना था? .....

.....

20. प्रेरितों 19:1-5 से हमें कैसे पता चलता है कि **यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले और उसके बपतिस्मे** की जगह **यीशु और उसके बपतिस्मे ने ले लेनी** थी? .....

.....

आपका कोई प्रश्न है तो उसे यहां लिखें .....

.....

.....

.....

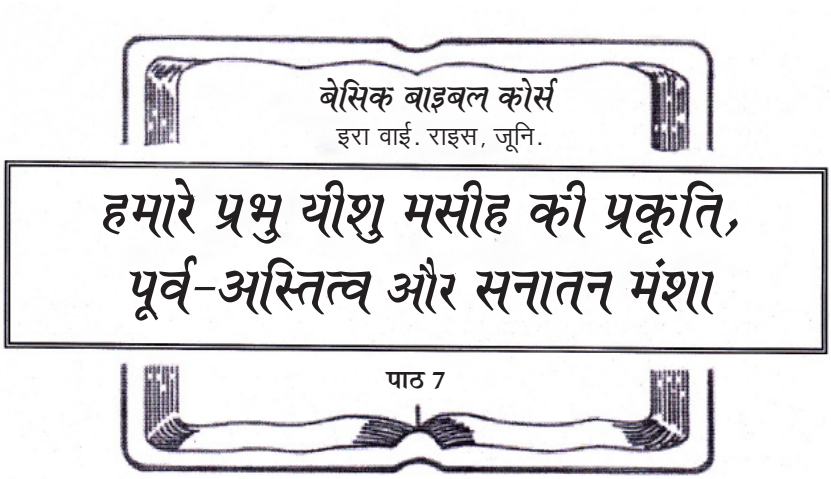

परिचय: *पहली सदी के समय से ही मनुष्यजाति की हर पीढ़ी के लोग यीशु मसीह के संसार में आने, असाधारण जीवन, अद्‌भुत कामों, ज़बर्दस्त समझ और अत्यन्त त्रासदीपूर्ण मृत्यु को समझने के ढंग पर उलझे रहे हैं। कइयों ने कहा है कि वह अन्य लोगों की तरह केवल एक और मनुष्य था, जो चाहे सबसे अलग था। औरों का कहना था कि वह नबी, या यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला ही था जो मुर्दों में से जी उठा था! औरों ने कहा कि वह* ***परमेश्वर का पुत्र*** *है और इस कारण* ***परमेश्वर*** *ही है!*

यह अपने आप में साफ़ है कि इन तीनों व्याख्याओं में से ***सारी की सारी*** *सही नहीं हो सकतीं। आइए देखते हैं कि* ***बाइबल*** *इस पर क्या कहती है।*

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के जीवन, प्रचार और बपतिस्मे के अपने अध्ययन में पिछले पाठ में हमने देखा था कि संसार में यूहन्ना के आने का कारण यीशु मसीह के आने का मार्ग तैयार करना था। हमने जाना था कि पुराने नियम के कम से कम दो नबियों, यशायाह और मलाकी ने यूहन्ना के इस क्षमता में आने की भविष्यवाणी की थी।

हमने जाना था कि यूहन्ना और यीशु दोनों जब अपनी-अपनी माता के गर्भ में थे तो यीशु की माता मरियम, यूहन्ना की माता इलीशिबा से मिलने गई तो मारे आनन्द के यूहन्ना इलीशिबा की कोख में उछल पड़ा था।

बाद में बड़ा होने पर यूहन्ना यहूदिया के जंगल में यह कहते हुए प्रचार करते हुए आया कि ''प्रभु का मार्ग तैयार करो, उस की सड़कें सीधी करो'' (मत्ती 3:3)। अपने ही विरोध में बोलते हुए यूहन्ना ने कहा था, ''मैं तो पानी से तुम्हें मन फिराव का बपतिस्मा देता हूं, परन्तु जो मेरे बाद आने वाला है, वह ***मुझ से शक्तिशाली*** *है; मैं उस की जूती उठाने के योग्य नहीं'' (मत्ती 3:11)। यूहन्ना ने यह कहते हुए यीशु की गवाही दी थी कि ''यह वही है, जिस का मैंने वर्णन किया, कि जो मेरे* ***बाद*** *आ रहा है, वह मुझ से* ***बढ़कर*** *है ... क्योंकि वह मुझ से पहले*

*था'' (यूहन्ना 1:15, 30); ''अवश्य है कि वह **बढ़े** और मैं **घटूं**'' (यूहन्ना 3:30)।*

*यह सम्भव भी कैसे हो सकता है कि यीशु मसीह जिस का जन्म यूहन्ना से लगभग छह महीने के **बाद** हुआ था, वह यूहन्ना से **पहले** हो? इसे समझने के लिए हमें विचार करना आवश्यक है ...*

I. *यीशु मसीह की प्रकृति*

नोट: जो लोग यीशु के केवल मनुष्य होने की बात सोचते हैं वे बाइबल द्वारा उस के लिए किए जाने वाले दावों से ठोकर खाते हैं।

*क. नया नियम यीशु मसीह को केवल **मनुष्य से बढ़कर** दिखाता है।*

1. *यीशु ने स्वयं भी **परमेश्वर के साथ एक** होने का दावा किया।*
   - *क. यूहन्ना 10:30 में यीशु ने कहा, ''मैं और मेरा पिता **एक** हैं।''*
   - *ख. फिर यूहन्ना 14:10-11 में उस ने घोषणा की, ''**मैं पिता में** हूं और **पिता मुझ में** है?''*
   - *ग. अपनी बड़ी सिफारिशी प्रार्थना में फिर से यीशु ने प्रार्थना की, ''हे पवित्र पिता, अपने उस नाम से जो तू ने मुझे दिया है, उन की रक्षा कर, कि वे हमारी नाईं एक हों'' (यूहन्ना 17:11)।*
   - *घ. उसी प्रार्थना में यीशु ने आगे विनती की, ''मैं केवल इन्हीं के लिए विनती नहीं करता, परन्तु उनके लिए भी जो इन के वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे, कि वे सब **एक** हों। जैसा **तू हे पिता मुझ में** है, और **मैं तुझ में** हूं, वैसे ही वे भी **हम में एक** हों, इसलिए कि जगत प्रतीति करे, कि तू ही ने मुझे भेजा। और वह महिमा जो तू ने मुझे दी मैंने उन्हें दी है कि वे वैसे ही एक हों जैसे कि **हम एक हैं**'' (यूहन्ना 17:20-22)।*
2. ***परमेश्वर के तुल्य***
   - *क. फिलिप्पियों 2:5-11 में प्रेरित पौलुस समझाता है, ''[5]जैसा **मसीह यीशु** का **स्वभाव** था वैसा ही तुम्हारा भी **स्वभाव** हो। [6]जिस ने **परमेश्वर के स्वरूप** में होकर भी **परमेश्वर के तुल्य** होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। [7]वरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। [8]और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली। [9]इस कारण **परमेश्वर ने उस को अति महान** भी **किया,** और उस को वह नाम दिया जो **सब नामों में श्रेष्ठ** है [10]कि जो **स्वर्ग में** और **पृथ्वी पर** और जो **पृथ्वी के नीचे** हैं; वे **सब** यीशु के नाम पर **घुटना टेकें**। [11]और परमेश्वर पिता की महिमा के लिए **हर एक जीभ अंगीकार कर ले** कि **यीशु मसीह** ही **प्रभु है**।''*
3. ***परमेश्वर के रूप में***
   - *क. इब्रानियों की पुस्तक का लेखक परमेश्वर पिता को अपने पुत्र यीशु से यह*

*कह कर सम्बोधित करते हुए लिखता है, ''[8]**हे परमेश्वर,** तेरा सिंहासन युगानुयुग रहेगा: तेरे राज्य का राजदण्ड न्याय का राजदण्ड है। [9]तू ने धर्म से प्रेम और अधर्म से बैर रखा; इस कारण **परमेश्वर** तेरे **परमेश्वर** ने **तेरे साथियों से बढ़कर** हर्ष रूपी तेल से तुझे अभिषेक किया'' (इब्रानियों 1:8-9)।*

*ख. प्रेरित यूहन्ना भी यीशु को परमेश्वर होने, और **''परमेश्वर के साथ''** होने के रूप में दर्शाता है (यूहन्ना 1:1-2), जो आगे इस बात पर और ज़ोर देता है कि ''परमेश्वरत्व'' का **उद्देश्य** बेशक **एक** है पर **व्यक्तिगत** रूप में यह **बहुवचन** में है।*

*ग. यीशु के लिए प्रेरित पौलुस कहता है, ''क्योंकि उस में **ईश्वरत्व** की सारी **परिपूर्णता** सदेह वास करती है'' (कुलुस्सियों 2:9)।*

II. *यीशु मसीह का पूर्व-अस्तित्व*

***नोट:** यीशु के (1) परमेश्वर के साथ **एक** होने, (2) परमेश्वर के **तुल्य** होने और (3) और **परमेश्वर के स्वरूप** में होने की बात पहले ही साबित हो जाने के कारण अब हम में यह समझ आने लगनी चाहिए कि उस का **अस्तित्व** संसार में मरियम से उस के जन्म से **आरम्भ** नहीं हुआ था। वह **सदा से** अर्थात अनादिकाल से है! इसी कारण:*

*क. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने यीशु के लिए कहा कि ''वह मुझ से बढ़कर **है** क्योंकि वह मुझ से पहले **था**'' (यूहन्ना 1:15, 30)।*

*ख. यीशु **अब्राहम से** भी **पहले** था, जो यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से लगभग 2,000 वर्ष पहले हुआ था।*

*1. ''यीशु ने उन से कहा, मैं तुम से सच कहता हूं, कि **पहले इस के कि अब्राहम उत्पन्न हुआ, मैं हूं**'' (यूहन्ना 8:58)।*

*ग. यीशु ने घोषणा की कि वह **संसार का आरम्भ होने से पहले** से था।*

*1. ''और अब, हे पिता, तू अपने साथ मेरी महिमा उस महिमा से कर जो **जगत के होने से पहले,** मेरी तेरे साथ **थी**'' (यूहन्ना 17:5)।*

*2. ''हे पिता, मैं चाहता हूं कि जिन्हें तू ने मुझे दिया है, जहां मैं हूं, वहां वे भी मेरे साथ हों कि वे मेरी उस महिमा को देखें जो तू ने मुझे दी है, क्योंकि तू ने **जगत की उत्पत्ति से पहले** मुझ से प्रेम रखा'' (यूहन्ना 17:24)।*

*घ. **संसार** और **सब वस्तुओं** को यीशु के द्वारा ही रचा गया; इसी कारण वह सब वस्तुओं से पहले था।*

*1. ''**सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ,** और **जो कुछ उत्पन्न हुआ है उस में से कोई भी वस्तु उस के बिना उत्पन्न नहीं हुई**'' (यूहन्ना 1:3)।*

2. पौलुस प्रेरित ने लिखा, ''[8]मुझ पर जो सब पवित्र लोगों में से छोटे से भी छोटा हूं, यह अनुग्रह हुआ, कि मैं अन्यजातियों को मसीह के अगम्य धन का सुसमाचार सुनाऊं। [9]और सब पर यह बात प्रकाशित करूं, कि उस भेद का प्रबन्ध क्या

है, जो यीशु मसीह के द्वारा ***सब के सृजनहार परमेश्वर*** *में आदि से गुप्त था'' (इफिसियों 3:8-9)।*

3. *''[16]क्योंकि* ***उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई,*** *स्वर्ग की हों अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुताएं, क्या प्रधानताएं, क्या अधिकार,* ***सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिए सृजी गई हैं।*** *[17]और* ***वही सब वस्तुओं में प्रथम है,*** *और* ***सब वस्तुएं उसी में स्थिर रहती हैं''*** *(कुलुस्सियों 1:16-17)।*
4. *''[1]पूर्व युग में* ***परमेश्वर ने*** *बाप-दादों से थोड़ा-थोड़ा करके और भांति-भांति से भविष्यवक्ताओं के द्वारा बातें करके [2]इन दिनों के अन्त में हम से पुत्र के द्वारा बातें कीं, जिसे उस ने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा* ***उस ने सारी सृष्टि रची*** *है'' (इब्रानियों 1:1-2)।*

नोट: *यह देख कर कि पिता परमेश्वर (एक व्यक्ति) ने संसार और सब वस्तुओं को परमेश्वर पुत्र (एक और व्यक्ति) के द्वारा बनाया, हमें सृष्टि के मूसा द्वारा दिए गए विवरण कि (1)* ***''हम*** *मनुष्य को* ***अपने*** *स्वरूप के अनुसार* ***अपनी*** *समानता में बनाएं''* *(उत्पत्ति 1:26) और फिर (2) उत्पत्ति 3:22 में कि ''यहोवा परमेश्वर ने कहा, मनुष्य भले बुरे का ज्ञान पाकर* ***हम*** *में से एक के समान हो गया है'' में* ***''हम''*** *और* ***''अपने/अपनी''*** *के बहुवचन शब्द के इस्तेमाल को समझने में सहायता मिलती है।*

ङ. *यीशु (जिसे यूहन्ना 1 में ''वचन'' के रूप में दिखाया गया) का वर्णन*
   1. *''****आदि*** *में'' के रूप में (आयत 1)।*
   2. *''****आदि*** *में* ***परमेश्वर के साथ''*** *के रूप में (आयत 2) हुआ है।*

च. *मीका ने बैतलहम में जन्म लेने वाले (यीशु) की भविष्यवाणी की कि उस का ''निकलना* ***प्राचीन काल*** *से, वरन* ***अनादि काल से*** *होता आया है'' (मीका 5:2)।*

छ. *इस कारण जबकि यीशु* ***अनादि काल से*** *था, हम समझ सकते हैं कि इब्रानियों 13:8 के कहने का अर्थ क्या है जहां कहा गया है कि''****यीशु मसीह कल*** *और* ***आज*** *और* ***युगानुयुग*** *एक सा है।''*

III. यीशु मसीह के सम्बन्ध में परमेश्वर की सनातन मंशा

*(****नोट:*** *यह देखकर कि परमेश्वर पुत्र के रूप में यीशु मसीह परमेश्वर पिता के तुल्य और उसके साथ था, कइयों की समझ में नहीं आता कि उसे संसार में भेजा ही* ***क्यों*** *गया। आइए देखते हैं।)*

क. *मनुष्य को बनाने के तुरन्त बात यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य को यह कहते हुए आज्ञा दी, ''[16]तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है: [17]पर भले या बुरे के*

ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना: क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाए उसी दिन अवश्य मर जाएगा'' (उत्पत्ति 2:16-17)।

*ख. उत्पत्ति 3:1-19 में मूसा ने बताया कि शैतान ने जो इबलीस कहलाता है सर्प के रूप में आकर किस प्रकार से हव्वा को बहकाया और उस ने ''**उस में से तोड़कर खाया और अपने पति** [आदम] **को भी दिया, और उस ने भी खाया।**''*

*1. यह संसार के इतिहास में मनुष्य को दी गई परमेश्वर की इच्छा का **पहली बार तोड़ा जाना** था।*

*क. इस प्रकार से **पाप** संसार में आया, ''**जो कोई पाप करता है, वह व्यवस्था का विरोध करता है**'' (1 यूहन्ना 3:4)।*

*2. ''[13]तब **यहोवा** परमेश्वर ने स्त्री से कहा, तू ने यह क्या किया है? स्त्री ने कहा, सर्प ने मुझे बहका दिया तब मैं ने खाया। [14]तब **यहोवा** परमेश्वर ने सर्प से कहा, तू ने जो यह किया है इसलिये तू सब घरेलू पशुओं, और सब बनैले पशुओं से अधिक शापित है; तू पेट के बल चला करेगा, और जीवन भर मिट्टी चाटता रहेगा: [15]और मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूंगा, वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डंसेगा। [16]फिर स्त्री से उस ने कहा, मैं तेरी पीड़ा और तेरे गर्भवती होने के दुःख को बहुत बढ़ाऊंगा; तू पीड़ित होकर बालक उत्पन्न करेगी; और तेरी लालसा तेरे पति की ओर होगी, और वह तुझ पर प्रभुता करेगा। [17]और आदम से उस ने कहा, तू ने जो अपनी पत्नी की बात सुनी, और जिस वृक्ष के फल के विषय मैं ने तुझे आज्ञा दी थी कि तू उसे न खाना उसको तू ने खाया है, इसलिये भूमि तेरे कारण शापित है: तू उसकी उपज जीवन भर दुःख के साथ खाया करेगा: [18]और वह तेरे लिए कांटे और ऊंटकटारे उगाएगी, और तू खेत की उपज खाएगा; [19]और अपने माथे के पसीने की रोटी खाया करेगा, और अन्त में मिट्टी में मिल जाएगा; क्योंकि तू उसी में से निकाला गया है, तू मिट्टी तो है और मिट्टी ही में फिर मिल जाएगा'' (उत्पत्ति 3:13-19)।*

*3. ''इसलिए ... एक मनुष्य (अर्थात आदम) के द्वारा **पाप जगत में आया,** और **पाप के द्वारा मृत्यु** आई, और इस रीति से **मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई,** ...'' (रोमियों 5:12)।*

क. ''व्यवस्था के (सीनै पहाड़ पर) दिए जाने तक पाप जगत में तो था, परन्तु जहां व्यवस्था नहीं, वहां पाप गिना नहीं जाता'' (आयत 13)।

ख. ''तौभी आदम से लेकर मूसा तक मृत्यु ने उन लोगों पर भी राज किया, जिन्होंने उस आदम ... के अपराध के समान पाप न किया'' (आयत 14)।

*ग. इस प्रकार मनुष्य के **पाप ने उस के और परमेश्वर के बीच जुदाई** पैदा कर दी (यशायाह 59:1-2)।*

1. उसे अदन की वाटिका में से निकाल दिया गया (उत्पत्ति 3:22-24)

2. मनुष्य बलिदान भेंट करता रहा परन्तु वे उसके पाप को मिटा नहीं सके।

क. *''[3]परन्तु उनके (अर्थात दिए जाने वाले बलिदानों) द्वारा प्रति वर्ष पापों का स्मरण हुआ करता है। [4]क्योंकि **अनहोना है, कि बैलों और बकरों का लोहू पापों को दूर करे**'' (इब्रानियों 10:3-4)।*

घ. ***मनुष्य को अपने साथ मिलाने** के लिए मनुष्य के पाप के लिए प्रायश्चित के रूप में परमेश्वर ने अपने ही पुत्र यीशु को भेज दिया।*

1. *''क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने **अपना एकलौता पुत्र दे दिया**'' (यूहन्ना 3:16)।*
2. *''[8]परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी **मसीह हमारे लिए मरा।** [9]सो जब कि हम, अब **उसके लोहू के कारण धर्मी** ठहरे, तो **उसके द्वारा क्रोध से क्यों न बचेंगे**? [10]क्योंकि बैरी होने की दशा में तो उसके पुत्र की **मृत्यु** के द्वारा **हमारा मेल** परमेश्वर के साथ हुआ फिर **मेल** हो जाने पर उसके **जीवन** के कारण हम **उद्धार** क्यों न पाएंगे? [11]और केवल यही नहीं, परन्तु हम **अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा जिस के द्वारा हमारा मेल हुआ है,** परमेश्वर के विषय में घमण्ड भी करते हैं'' (रोमियों 5:8-11)।*

ङ *इस प्रकार यीशु मसीह का आना **परमेश्वर की सनातन मंशा के अनुसार** था।*

1. *''[11]उस सनातन मंशा के अनुसार, जो उस ने हमारे प्रभु मसीह यीशु में की थी। [12]जिस में हम को उस पर विश्वास रखने से हियाव और भरोसे से निकट आने का अधिकार है'' (इफिसियों 3:11-12)।*

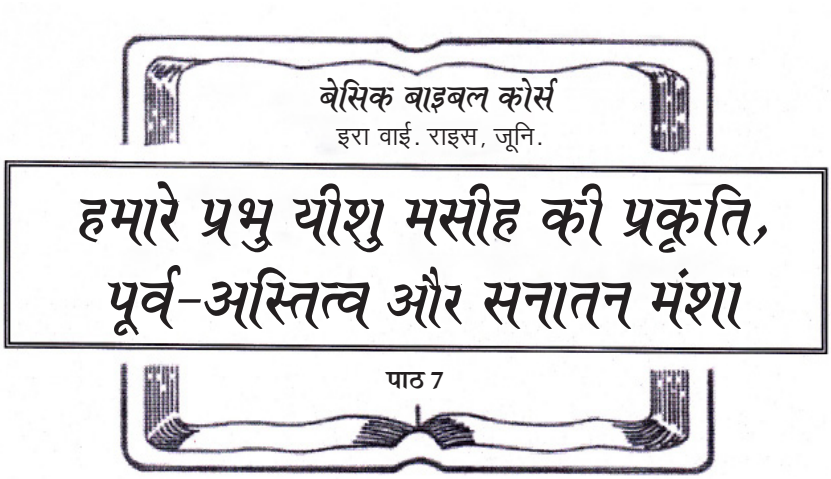

पाठ 7 के प्रश्न

Registration No..... Grade .....

Name.....

Address.....

.....

Pin.....Mobile No.....

e-mail.....

(कृपया पता अंग्रेजी के बड़े अक्षरों में ही लिखें।)

1. यीशु मसीह के सम्बन्ध में, संसार में आने का यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का क्या उद्देश्य था? .....

2. संसार में जब यीशु का जन्म यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से लगभग छह महीने **बाद** हुआ तो फिर यूहन्ना ने क्यों कहा कि ''वह **मुझ से पहले** था?'' .....

   .....

3. क्या बाइबल यीशु को ''केवल एक मनुष्य'' के रूप में या ''मनुष्य से बढ़कर'' दिखाती है? .....

4. पृथ्वी पर रहते समय, स्पष्ट रूप में स्वर्ग में परमेश्वर की बात करते हुए यीशु ने घोषणा की, ''मैं और पिता **एक** हैं।'' **दो** जन **एक** कैसे हो सकते हैं? .....

   .....

5. रिक्त स्थान भरें: ''जैसा ..... का स्वभाव था, वैसा ही तुम्हारा भी ..... हो; जिसने..... के ..... में होकर भी ..... के .....होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा।''
   (..... बाइबल की आयत बताएं)

6. फिलिप्पियों 2 कहता है कि परमेश्वर ने मसीह यीशु को **अति महान** भी किया और उसको वह नाम दिया **जो सब नामों में श्रेष्ठ** है। 7 से 9 आयतों में से बताएं कि परमेश्वर ने ऐसा क्यों किया: .....

   .....

7. आयत 10 से, **स्वर्ग में**, और **पृथ्वी पर**, और **पृथ्वी के नीचे** हर घुटना यीशु के नाम में क्यों झुकना आवश्यक है? .....

   .....

8. आयत 11 से, हर जीभ को परमेश्वर पिता की महिमा के लिए क्या अंगीकार करना चाहिए?

.....

9. यूहन्ना 5 अध्याय में हमें पता चलता है कि यहूदी लोग यीशु से इतने दुखी हुए कि उन्होंने उसे मार डालना चाहा। क्यों? .....

10. इब्रानियों 1:8-9 में परमेश्वर ने, जिसने संसार को बनाया अपने पुत्र (यीशु) को एक विशेष नाम से बुलाया। उसने उसे किस नाम से बुलाया? .....

11. क्या यीशु का अस्तित्व बैतलहम नगर में उसके जन्म के साथ हुआ? .....

12. यदि नहीं तो यीशु का अस्तित्व कब से था? .....

13. यूहन्ना 17:5 बताता है कि यीशु के पास **जगत के आरम्भ से पहले** कुछ था। वह क्या था?

.....

14. इफिसियों 3 अध्याय बताता है कि परमेश्वर ने सब कुछ ..... के द्वारा बनाया।

15. ''सब वस्तुएं'' किस में ''स्थिर रहती हैं''? .....

16. परमेश्वर ने किस के द्वारा सारी सृष्टि की रचना की? .....

17. यीशु मसीह के बिना क्या उत्पन्न हुआ? .....

18. क्या यीशु मसीह ''बदलने वाला'' है या ''न बदलने वाला''? .....

अपने उत्तर के प्रमाण के लिए बाइबल का रेफरेंस दें: .....

19. पाप क्या है? .....

20. पाप जगत में कैसे आया? .....

21. पाप के द्वारा क्या आया? .....

22. पाप ने परमेश्वर और मनुष्य के बीच क्या किया? .....

.....

23. क्या बैलों और बकरों का लहू पाप को दूर कर सकता था? .....

24. रोमियों 5:9 के अनुसार हम किसी चीज़ के कारण धर्मी ठहरते हैं। वह चीज़ क्या है?

.....

25. परमेश्वर ने यीशु को क्यों भेजा? .....

आपका कोई प्रश्न है तो उसे यहां लिखें .....

.....

.....

.....

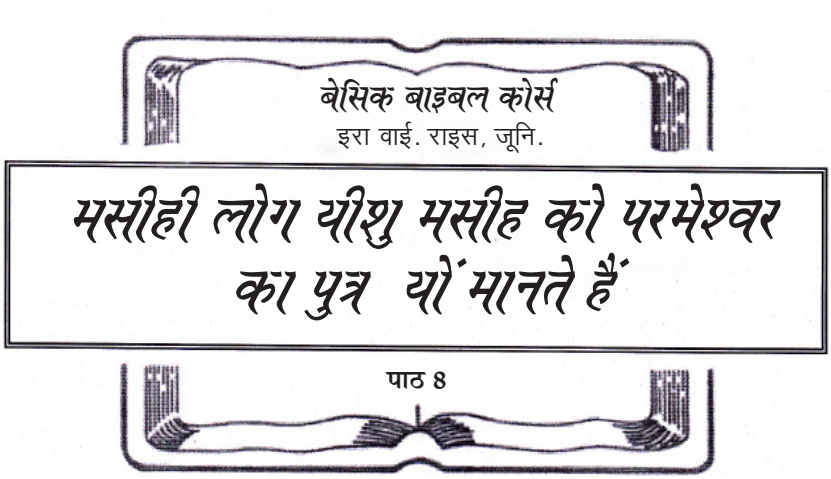

परिचय: बाइबल की यह शिक्षा पहले ही साबित कर लेने के बाद कि यीशु मसीह सनातनकाल से परमेश्वर *के साथ* था और उसमें परमेश्वर की *सनातन मंशा* की पेशकश की गई, पिछले पाठ में हमने देखा कि वह मनुष्य के पापों के लिए परमेश्वर के सामने *प्रायश्चित* का काम करने के लिए आया, जिससे मनुष्य को परमेश्वर के साथ मिलाया गया, जो अपने **पाप के द्वारा उससे अलग हो गया था।**

इस पाठ में हम उन माध्यमों और ढंग को देखेंगे, जिनके कारण परमेश्वर को अपने पुत्र को संसार में भेजना अच्छा लगा और उन प्रमाणों को भी देखेंगे जिनके द्वारा यीशु का दावा साबित हुआ कि वह *परमेश्वर का इकलौता पुत्र* था (है) ...

I. यीशु का कुंवारी से जन्म लेना

''[18]यीशु मसीह का जन्म इस प्रकार से हुआ कि जब उस की माता मरियम की मंगनी यूसुफ के साथ हो गई, तो **उन के इकट्ठे होने से पहिले ही** वह पवित्र आत्मा की ओर से गर्भवती पाई गई। [19]अत: उसके पति यूसुफ ने जो धर्मी था और उसे बदनाम करना नहीं चाहता था, उसे चुपके से त्याग देने का विचार किया। [20]जब वह इन बातों की सोच ही में था तो **प्रभु का स्वर्गदूत** उसे स्वप्न में दिखाई देकर कहने लगा, 'हे यूसुफ! दाऊद की सन्तान, तू अपनी पत्नी मरियम को अपने यहां ले आने से मत डर, **क्योंकि जो उसके गर्भ में है,** वह पवित्र आत्मा की ओर से है। [21]वह पुत्र जनेगी और तू उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा।' [22]यह सब कुछ इसलिए हुआ कि जो वचन प्रभु ने भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा था, वह पूरा हो: [23]'देखो, एक कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी और उसका नाम इम्मानुएल रखा जाएगा,' जिस का अर्थ है– परमेश्वर हमारे साथ। [24]तब यूसुफ नींद से जागकर प्रभु के दूत की आज्ञा अनुसार अपनी

पत्नी को अपने यहां ले आया; [25]और **जब तक वह पुत्र न जनी तब तक वह उसके पास न गया** और उसने उसका नाम यीशु रखा'' (मत्ती 1:18-25)।

''[26]छठवें महीने में परमेश्वर की ओर **जिब्राईल स्वर्गदूत** गलील के नासरत नगर में [27]एक **कुंवारी** के पास भेजा गया। जिस की मंगनी यूसुफ नाम दाऊद के घराने के एक पुरुष से हुई थी: उस कुंवारी का नाम मरियम था। [28]और स्वर्गदूत ने उसके पास भीतर आकर कहा; आनन्द और जय तेरी हो, जिस पर ईश्वर का अनुग्रह हुआ है, प्रभु तेरे साथ है। [29]वह उस वचन से बहुत घबरा गई, और सोचने लगी, कि यह किस प्रकार का अभिवादन है? [30]स्वर्गदूत ने उस से कहा, हे मरियम; भयभीत न हो, क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है। [31]और देख, तू गर्भवती होगी, और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा; तू उसका नाम यीशु रखना। [32]वह महान होगा; और परमप्रधान का पुत्र कहलाएगा; और प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उस को देगा। [33]और वह याकूब के घराने पर सदा राज करेगा; और उसके राज्य का अन्त न होगा। [34]मरियम ने स्वर्गदूत से कहा, यह क्योंकर होगा? **मैं तो पुरुष को जानती ही नहीं।** [35]स्वर्गदूत ने उस को उत्तर दिया; **कि पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परमप्रधान की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी इसलिए वह पवित्र जो उत्पन्न होने वाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा**'' (लूका 1:26-35)।

''[1]उन दिनों में औगुस्तुस कैसर की ओर से आज्ञा निकली, कि सारे जगत के लोगों के नाम लिखे जाएं। [2]यह पहिली नाम लिखाई उस समय हुई, जब क्विरिनियुस सीरिया का हाकिम था। [3]और सब लोग नाम लिखवाने के लिए अपने-अपने नगर को गए। [4]और यूसुफ भी इसलिए कि वह दाऊद के घराने और वंश का था, गलील के नासरत नगर से यहूदिया में दाऊद के नगर बैतलहम को गया [5]कि अपनी मंगेतर मरियम के साथ जो गर्भवती थी नाम लिखवाए। [6]उन के वहां रहते हुए उसके जनने के दिन पूरे हुए। [7]और अपना पहिलौठा पुत्र जनी और उसे कपड़े में लपेटकर चरनी में रखा; क्योंकि उन के लिए सराय में जगह न थी'' (लूका 2:1-7)।

''जब आठ दिन पूरे हुए, और उसके खतने का समय आया, तो उसका नाम यीशु रखा गया, जो स्वर्गदूत ने उसके पेट में आने से पहिले कहा था'' (लूका 2:21)।

संसार भर के मसीही लोग तथ्य के रूप में और अपने पूरे मन से मानते हैं कि **यीशु मनुष्य से, या केवल एक नबी होने से** बढ़कर है, यानी वह वास्तव में (जैसा कि पीछे बाइबल की आयतों में हमने देखा है) परमेश्वर का ईश्वरीय रूप में **इकलौता पुत्र** है। मत्ती और लूका दोनों ने ही उसके मरियम के पुरुष के साथ मेल से नहीं बल्कि ''**परमप्रधान की सामर्थ**'' की ''**छाया**'' उस पर होने के द्वारा जन्म लेने का दावा किया है (लूका 1:35)। किसी को लगता हो कि ऐसा कैसे हो सकता है तो याद रखें कि यहोवा ने अब्राहम से क्या कहा था जब 90 साल की होने पर सारा को अपने बच्चा जनने की सम्भावना पर हंसी आई थी। परमेश्वर ने कहा था, ''**क्या यहोवा के लिए कोई काम कठिन है?**'' (उत्पत्ति

18:14)। बेशक जिस परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी और सब चीज़ों को बनाया है यदि वह चाहता तो किसी कुंवारी की कोख में अपने ईश्वरीय बीज को रखकर अपनी संतान को उत्पन्न कराने के लिए कोई विशेष कठिनाई नहीं होनी चाहिए था! यदि वह मरियम को बना सकता था (जैसा कि निश्चित रूप से उसने हव्वा को बनाया जिसमें से वह निकली थी) तो क्या वह उतनी ही आसानी से मरियम को गर्भवती नहीं कर सकता था? अपनी स्वयं की सामर्थ से, न कि किसी मनुष्य की सामर्थ से? इसे छोड़ किसी और बात पर विश्वास करना परमेश्वर को सीमित करने का प्रयास होगा। परन्तु जैसा कि यीशु ने कहा था (लूका 18:27 में), **''जो मनुष्य से नहीं हो सकता, वह परमेश्वर से हो सकता है।''**

हमें यीशु के ईश्वरीय होने के और प्रमाणों रहित केवल दावे के साथ नहीं छोड़ा गया। परन्तु दावा करना एक बात है जबकि यीशु के ईश्वरीय होने की बात उसके ईश्वरीय होने को साबित करने से बिल्कुल अलग है। पवित्र शास्त्र में और अतिरिक्त प्रमाण क्या है जिसे मसीही लोग अपने विश्वास का आधार बनाएं?

II. पूरी हुई भविष्यवाणियां साबित करती हैं कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है:

क. यह दावा किया जाता है कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है:

1. **जिब्राईल स्वर्गदूत** द्वारा (जैसा हम देख चुके हैं) (लूका 1:32-35)।
2. यीशु के बपतिस्मे के समय **''आकाशवाणी के द्वारा''** (मत्ती 3:13-17; मरकुस 1:1-11; लूका 3:1-22)।
3. **''बादल में से आवाज''** के द्वारा यीशु के रूपांतर के समय (मत्ती 17:1-18; मरकुस 9:2-8; लूका 9:28-36)।
4. **स्वयं यीशु** द्वारा (मत्ती 11:25-27; यूहन्ना 5:17-25; यूहन्ना 9:30-38; यूहन्ना 10:24-38; मत्ती 26:63-64; मरकुस 14:60-62; लूका 22:66-71),
5. **दुष्टात्माओं** के द्वारा (लूका 4:40-41; ।8:28-34; लूका 8:26-40; मरकुस 5:1-20)।
6. **यीशु के चेलों** के द्वारा (मत्ती 14:22-33)।
7. **यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले** के द्वारा (यूहन्ना 1:15-18; यूहन्ना 1:29-34)।
8. **नतनएल** के द्वारा (यूहन्ना 1:45-51)।
9. **पतरस** के द्वारा (मत्ती 16:13-20; यूहन्ना 6:66-69)।
10. **रोमी अधिकारी** (सूबेदार) और यीशु के क्रूस पर चढ़ाने के इंचार्ज के साथ **दूसरे लोगों** द्वारा (मत्ती 27:45-54)।

नोट: वास्तव में इस दावे के कारण यहूदियों ने यीशु को मार डाला! रोमी हाकिम पिलातुस को भी यीशु में कोई दोष नहीं मिला और उसने उसे छोड़ देने का सोच लिया था (यूहन्ना 18:28-40)। उसने तो यीशु या बरअब्बा (जो एक डाकू था) में से एक को छोड़ देने की पसन्द भी पूछ ली थी। उन्होंने यह कहते हुए कि *''हमारी भी व्यवस्था है और उस व्यवस्था के अनुसार वह मारे जाने*

के योग्य है, क्योंकि उसने अपने आपको परमेश्वर का पुत्र बनाया'' बरअब्बा को छोड़ देने और यीशु को क्रूस देना (यूहन्ना 19:1-7—मत्ती 27:11-43 भी पढ़ें)। जैसा कि हम जानते हैं कि कुछ लोग हैं जो इस बात का इनकार करते हैं कि यीशु ने कभी परमेश्वर का पुत्र होने का दावा किया। इसलिए वे उसके क्रूस पर चढ़ाए जाने का और क्या कारण बताएं, क्योंकि कोई और कारण दिया ही नहीं गया है।

ख. पूरी हुई कम से कम 38 भविष्यवाणियां यीशु को विश्वसनीय बनाती हैं।

यह मान लेना **तर्कसंगत** नहीं है कि **परमेश्वर** ने किसी फ्रेब में विश्वास दिलाने के लिए भविष्यवाणी को पूरा होना था। यीशु या तो वही था जो होने का (परमेश्वर) उसने दावा किया या वह पृथ्वी पर चलने वाला सबसे बड़ा धोखेबाज था। नीचे दी गई (पुराने नियम की) भविष्यवाणियों पर विचार करें। पुराने नियम की सबसे अंतिम पुस्तक मलाकी द्वारा मसीह के $4^{1/2}$ सदियों पहले लिखी गई थी इसलिए इसका अर्थ है कि इनमें से सबसे नई भविष्यवाणी पूरा होने के समय 400 से अधिक साल पुरानी थी। इनमें से कुछ तो 600, 800, 1,000, 1,500 साल तक पुरानी थीं और इनमें से कुछ भविष्यवाणियां पूरे होने के समय अधिक पुरानी थी। इसका जिस भी किसी ने भविष्यवाणी की उसका इनके पूरा होने के साथ किसी भी प्रकार से कोई नियन्त्रण या सम्बन्ध नहीं था। ध्यान दें:

	भविष्यवाणियां	**पूरी हुई**
1.	मसीह का स्त्री की संतान होना (3:15)।	''परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो **स्त्री से जन्मा,** ...'' (गलातियों 4:4—लूका 2:7; प्रकाशितवाक्य 12:5 भी देखें)।
2.	**अब्राहम का प्रतिज्ञा की हुई संतान** होना (उत्पत्ति 18:18—उत्पत्ति 12:3 भी देखें)।	''तुम भविष्यवक्ताओं की सन्तान और उस वाचा के भागी हो जो परमेश्वर ने तुम्हारे बापदादों से बान्धी, जब उसने अबाहम से कहा, कि **तेरे वंश** के द्वारा पृथ्वी के सारे घराने आशीष पाएंगे'' (प्रेरितों 3:25—मत्ती 1:1; लूका 3:34; गलातियों 3:16 भी देखें)।
3.	इसहाक की **प्रतिज्ञा की हुई संतान** होना (उत्पत्ति 17:19)।	अब्राहम से इसहाक उत्पन्न हुआ, **इसहाक** से याकूब उत्पन्न हुआ, याकूब से यहूदा और उसके भाई उत्पन्न हुए'' (मत्ती 1:1-2 से—लूका 3:34 भी देखें)।
4.	**याकूब की प्रतिज्ञा की हुई संतान** होना (गिनती 24:17; उत्पत्ति 28:14)।	''और वह **याकूब** का, और वह इसहाक का, और वह अब्राहम का, और वह तिरह का, और वह नाहोर का'' (लूका 3:34—मत्ती 1:2)।
5.	यहूदा के गोत्र में से होना (उत्पत्ति 49:10)।	''और वह अम्मीनादाब का, और वह अरनी का, और वह हिस्रोन का, और वह फिरिस का, और वह **यहूदाह** का'' (लूका 3:33—तुलना करें मत्ती 1:2-3)।
6.	**दाऊद के सिंहासन** का **वारिस** होना (यशाशाह 9:7— यशायाह 11:1-5;	''अब्राहम की सन्तान, दाऊद की सन्तान, यीशु मसीह की वंशावली'' (मत्ती 1:1—आयत 6 भी देखें)।

2 शमुएल 7:12-13 भी देखें)।

7. **बैतलहम में जन्म** होना (मीका 5:2)।	''हेरोदेस राजा के दिनों में जब यहूदिया के **बैतलहम** में यीशु का **जन्म** हुआ, तो पूर्व से कई ज्योतिषी यरूशलेम में आकर पूछने लगे'' (मत्ती 2:1—लूका 2:4-7 भी देखें)
8. उसका आना **कठिन समय** में होना (दानिय्येल 9:25)।	''उन दिनों में औगुस्तुस कैसर की ओर से आज्ञा निकली, कि **सारे जगत के लोगों के नाम लिखे जाएं।**'' ऐसे ''कठिन समयों'' के बीच यीशु का जन्म हुआ (देखें लूका 2:1-7)।
9. **कुंवारी से जन्म** होना (यशायाह 7:14)।	''यीशु मसीह का जन्म इस प्रकार से हुआ कि जब उस की माता मरियम की मंगनी यूसुफ के साथ हो गई, तो उन के इकट्ठे होने से पहिले ही वह पवित्र आत्मा की ओर से गर्भवती पाई गई'' (मत्ती 1:18—लूका 1:26-35 भी देखें)।
10. **नवजात शिशुओं के नरसंहार की भविष्यवाणी** (यिर्मयाह 31:15)।	''जब हेरोदेस ने यह देखा, कि ज्योतिषियों ने उसके साथ धोखा किया है, तब वह क्रोध से भर गया और लोगों को भेजकर ज्योतिषियों द्वारा ठीक-ठीक बताए गए समय के अनुसार बैतलहम और उसके आस-पास के स्थानों के सब लड़कों को जो दो वर्ष के या उससे छोटे थे, मरवा डाला'' (मत्ती 2:16— आयतें 17-18 भी देखें)।
11. परमेश्वर के पुत्र का **मिस्र** में होना (होशे 11:1)।	''तब वह रात ही को उठकर बालक और उसकी माता को लेकर मिस्र को चल दिया'' (मत्ती 2:14-15)।
12. **गलील** में उसकी सेवकाई (यशायाह 9:1-2)।	''जब उसने यह सुना कि यूहन्ना बन्दी बना लिया गया है, तो वह गलील को चला गया'' (मत्ती 4:12-16)।
13. जिसके **नबी** होने की भविष्यवाणी हुई (मत्ती 18:15)।	''तब जो आश्चर्यकर्म उसने कर दिखाया उसे वे लोग देखकर कहने लगे, वह भविष्यवक्ता जो जगत में आने वाला था निश्चय यही है'' (यूहन्ना 6:14—यूहन्ना 1:45; प्रेरितों 3:19-26 भी देखें)।
14. **मलकिसिदक के समान याजक** होना (भजन संहिता 110:4)।	''जहां यीशु मलिकिसिदक की रीति पर सदा काल का महायाजक बनकर, हमारे लिए अगुआ की रीति पर प्रवेश हुआ'' (इब्रानियों 6:20—इब्रानियों 5:5-6; 7:15-17)।
15. ठुकराया जाना (यशायाह 53:3 —मत्ती 2:2 भी देखें)।	''वह अपने घर आया और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया'' (यूहन्ना 1:11—यूहन्ना 5:43; लूका 4:19; 17:25; 23:18 भी देखें)।
16. उसकी कुछ **विशेषताओं** की भविष्यवाणी (यशायाह 11:2— भजन	''और यीशु बुद्धि और डील-डौल में और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया'' (लूका 2:52—लूका 4:18 भी देखें)।

संहिता 45:7; यशायाह 11:3-4 भी देखें)।

17. यीशु के *गदही* पर सवार होकर यरूशलेम में **विजयी प्रवेश** की भविष्यवाणी (जकर्याह 9:9)।

[13]''इसलिए उन्होंने खजूर की, डालियां लीं, और उससे भेंट करने को निकले, और पुकारने लगे, 'होशाना! धन्य इस्राएल का राजा, जो प्रभु के नाम से आता है।' [14]जब यीशु को गदहे का वह बच्चा मिला, तो उस पर बैठ गया, जैसा लिखा है'' (यूहन्ना 12:13-14; मत्ती 21:1-11; यूहन्ना 12:12)।

18. एक **मित्र के द्वारा पकड़वाया** जाना (भजन संहिता 41:9)।

''तब यहूदा इस्करियोती जो बारह में से एक था, महायाजकों के पास गया, कि उसे उन के हाथ पकड़वा दे'' (मरकुस 14:10—मत्ती 26:14-16; मरकुस 14:43-45)।

19. **चांदी के तीस सिक्कों** के लिए बेचा जाना (जकर्याह 11:12-13)।

''यदि मैं उसे तुम्हारे हाथ पकड़वा दूं, तो मुझे क्या दोगे? उन्होंने उसे तीस चान्दी के सिक्के तौलकर दे दिए'' (मत्ती 26:15; मत्ती 27:3-10)।

20. **पकड़वाए जाने** की कीमत **लौटाया** जाना और उससे **कुम्हारा का खेत** खरीदा जाना (जकर्याह 11:13)।

''**प्रधानयाजकों** ने उन सिक्कों को लेकर कहा, इन्हें भण्डार में रखना उचित नहीं, क्योंकि यह लोहू का दाम है। [7]अत: उन्होंने सम्मति करके उन सिक्कों से परदेशियों के गाड़े जाने के लिए कुम्हार का खेत मोल ले लिया'' (मत्ती 27:6-7; आयतें 3-10)।

21. यहूदा की **जल्दी-जल्दी मौत** और **उसके पद का किसी दूसरे द्वारा लिया जाना** (भजन संहिता 109:7-8)।

[18]''उसने अधर्म की कमाई से एक खेत मोल लिया; और सिर के बल गिरा, और उसका पेट फट गया, और उसकी सब अन्तड़ियां निकल पड़ीं। [19]और इस बात को यरूशलेम के सब रहने वाले जान गए, यहां तक कि उस खेत का नाम उसकी भाषा में हकलदामा अर्थात् लोहू का खेत पड़ गया। [20]क्योंकि भजन संहिता में लिखा है, कि उसका घर उजड़ जाए, और उसमें कोई न बसे और उसका पद कोई दूसरा ले ले'' (प्रेरितों 1:18-20; आयतें 16-17)।

22. **झूठे गवाहों** ने यीशु पर आरोप लगाना था (भजन संहिता 27:12—भजन संहिता 35:11)।

''[60]परन्तु बहुत से झूठे गवाहों के आने पर भी न पाई। अन्त में दो जनों ने आकर कहा, [61]कि इसने कहा है; कि मैं परमेश्वर के मन्दिर को ढा सकता हूं और उसे तीन दिन में बना सकता हूं'' (मत्ती 26:60-61)।

23. यीशु का अपने आरोप लगाने वालों को **उत्तर न देना** (यशायाह 53:7—भजन संहिता 38:13-14)।

''[62]तब महायाजक ने खड़े होकर उससे कहा, क्या तू कोई उत्तर नहीं देता? ये लोग तेरे विरोध में क्या गवाही देते हैं? [63]परन्तु यीशु चुप रहा: महायाजक ने उस से कहा। मैं तुझे जीवते परमेश्वर की शपथ देता हूं, कि तू परमेश्वर का पुत्र मसीह है, तो हम से कह दे'' (मत्ती 26:62-63; देखें मत्ती 27:12-14)।

24. **थप्पड़ मारा जाना** और **मुंह पर थूका**

''तब कोई उस पर थूकने, और कोई उसका मुंह ढांपने और उसे

जाना (यशायाह 50:6)।

घूसे मारने, और उस से कहने लगा, कि भविष्यवाणी कर: और प्यादों ने उसे लेकर थप्पड़ मारे'' (मरकुस 14:65—मरकुस 15:17; यूहन्ना 19:1-3; यूहन्ना 18:22)।

25. बिना कारण घृणा किया जाना (भजन संहिता 69:4; भजन संहिता 109:3-5)।

''[23]जो मुझ से बैर रखता है, वह मेरे पिता से भी बैर रखता है। [24]यदि मैं उन में वे काम न करता, जो और किसी ने नहीं किए तो वे पापी नहीं ठहरते, परन्तु अब तो उन्होंने मुझे और मेरे पिता दोनों को देखा, और दोनों से बैर किया। [25]और यह इसलिए हुआ, कि वह वचन पूरा हो, जो उन की व्यवस्था में लिखा, है, कि उन्होंने मुझ से व्यर्थ बैर किया'' (यूहन्ना 15:23-25)।

26. **हमारी** खातिर **यीशु का दुख** सहना (यशायाह 53:4-5—आयतें 6, 12 भी पढ़ें)।

''[16]जब संध्या हुई तब वे उसके पास बहुत से लोगों को लाए जिनमें दुष्टात्माएं थीं और उसने उन आत्माओं को अपने वचन से निकाल दिया, और सब बीमारों को चंगा किया, [17]ताकि जो वचन यशायाह भविष्यवक्ता के द्वारा कहा गया था वह पूरा हो: 'उसने आप हमारी दुर्बलताओं को ले लिया और हमारी बीमारियों को उठा लिया' '' (मत्ती 8:16-17— देखें रोमियों 4:25; 1 कुरिन्थियों 15:3)।

27. **अपराधियों के साथ गिना** जाना (यशायाह 53:12)।

''तब उसके साथ दो डाकू एक दाहिने और एक बाएं क्रूसों पर चढ़ाए गए'' (मत्ती 27:38—मरकुस 15:27-28; लूका 23:33)।

28. उसके **हाथों** और **पांवों** का **बेधा** जाना (जकर्याह 12:10)।

''[24]परन्तु बारहों में से एक व्यक्ति अर्थात थोमा जो दिदुमुस कहलाता है, जब यीशु आया तो उनके साथ न था। [25]जब और चेले उससे कहने लगे कि हम ने प्रभु को देखा है: तब उसने उनसे कहा, जब तक मैं उस के हाथों में कीलों के छेदों में देख लूं, और किलों के छेदों में अपनी उंगली न डाल लूं और उसके पंजर में अपना हाथ न डाल लूं, तब तक मैं प्रतीति नहीं करूंगा। [26]आठ दिन के बाद उस के चेले फिर घर के भीतर थे, और थोमा उनके साथ था, और द्वार बन्द थे, तब यीशु ने आकर और बीच में खड़े होकर कहा, तुम्हें शान्ति मिले। [27]तब उसने थोमा से कहा, अपनी उंगली यहां लाकर मेरे हाथों को देख और अपना हाथ लाकर मेरे पंजर में डाल और अविश्वासी नहीं परन्तु विश्वासी हो। [28]यह सुन थोमा ने उत्तर दिया, हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर'' (यूहन्ना 20:24-28— देखें यूहन्ना 19:37)।

29. **ठट्ठा** और **अपमानित** किया जाना (भजन संहिता 22:6-8)।

''[39]आने जाने वाले सिर हिला हिलाकर उसकी निन्दा करते थे, [40]और यह कहते थे, 'हे मन्दिर के ढाहने वाले और तीन दिन में बनाने वाले, अपने आप को तो बचा। यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो क्रूस पर से उतर आ' '' (मत्ती 27:39-40; देखें आयतें 41-44; और मत्ती 15:29-32)

30. पीने को **इंद्राइन** (पित्त) और **सिरका**

''वहां एक सिरके से भरा बर्तन धरा था, सो उन्होंने सिरके में भिगोए

दिया जाना (भजन संहिता 69:21)।

हुए स्पंज को जूफे पर रखकर उसके मुंह से लगाया'' (यूहन्ना 19:29— देखें 27:34, 48)।

31. भविष्यवाणी की बातें **मज़ाक** करते हुए दोहराई गई हैं (भजन संहिता 69:21)।

''उस ने परमेश्वर पर भरोसा रखा है, यदि वह इस को चाहता है, तो अब इसे छुड़ा ले, क्योंकि इस ने कहा था, 'मैं परमेश्वर का पुत्र हूं' '' (मत्ती 27:43)।

32. अपने शत्रुओं के लिए यीशु का **प्रेम** और **प्रार्थना** (भजन संहिता 109:4— यशायाह 53:12 भी देखें)।

''तब यीशु ने कहा; हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं? और उन्होंने चिट्ठियां डालकर उसके कपड़े बांट दिए'' (लूका 23:34)।

33. यीशु की पसली का बेधा जाना (जकर्याह 12:10)।

''परन्तु सिपाहियों में से एक ने बरछे से उसका पंजर बेधा और उस में से तुरन्त लोहू और पानी निकला'' (यूहन्ना 19:34)।

34. यीशु के कपड़ों पर **चिट्ठी डाला जाना** (भजन संहिता 22:18)।

''तब उन्होंने उस को क्रूस पर चढ़ाया, और उसके कपड़ों पर चिट्ठियां डालकर, कि किस को क्या मिले, उन्हें बांट लिया'' (मरकुस 15:24— देखें यूहन्ना 19:24)।

35. **एक भी हड्डी का न टूटना** (भजन संहिता 34:20—निगर्मन 12:46 भी पढ़ें)।

''परन्तु जब यीशु के पास आकर देखा कि वह मर चुका है, तो उसकी टांगें न तोड़ीं'' (यूहन्ना 19:33)।

36. **धनवान** के साथ **दफ़नाया जाना** (यशायाह 53:9)।

''[57]जब सांझ हुई तो यूसुफ नाम अरिमतियाह का एक धनी मनुष्य, जो आप ही यीशु का चेला था, आया। [58]उस ने पीलातुस के पास जाकर यीशु की शव मांगा। इस पर पीलातुस ने दे देने की आज्ञा दी। [59]यूसुफ ने शव लिया, उसे उज्वल चादर में लपेटा, [60]और उसे अपनी नई कब्र में रखा, जो उस ने चटान में खुदवाई थी, और कब्र के द्वार पर बड़ा पत्थर लुढ़काकर चला गया'' (मत्ती 27:57-60)।

37. यीशु का जी **उठना** (यशायाह 16:10)।

''तब यीशु उन्हें मिला। और कहा, 'सलाम' उन्होंने पास आकर और उसके पांव पकड़कर उसको दण्डवत किया'' (मत्ती 28 :9—लूका 24:36-48)।

38. यीशु का **ऊपर उठाया जाना** (भजन संहिता 68:18)।

''[50]तब वह उन्हें बैतनिय्याह तक बाहर ले गया, और अपने हाथ उठाकर उन्हें आशीष दी। [51]और उन्हें आशीष देते हुए वह उन से अलग हो गया और स्वर्ग पर उठा लिया गया'' (लूका 24:50-51— प्रेरितों 1:9)।

यीशु के विषय में की गई ये भविष्यवाणियां पृथ्वी पर रहते समय यीशु मसीह के जीवन काल के दौरान भी कही गई होती तो न केवल सामान्य रूप में बल्कि विस्तार से उनका पूरा होना किसी भी विचारवान, तर्कसंगत और सूझवान व्यक्ति के लिए यीशु मसीह [क्योंकि उसने परमेश्वर का पुत्र होने का दावा किया] की विश्वसनीयता (कि वह परमेश्वर है) यकीन दिलाने वाली होनी चाहिए थी।

परन्तु पुराने नियम की इन भविष्यवाणियों को जो कई लेखकों द्वारा लिखी गई थीं, जिनसे अधिकतर लेकर मूसा के समय (मसीह के जन्म से 1,500 पहले) और मलाकी के समय तक (मसीह के जन्म से 400 अधिक साल पहले) लिखा था, इस कारण एक दूसरे से अलग अलग सदियों में लिखने के कारण न केवल उन व्यक्तित्व एक दूसरे से लेकर बल्कि अलग अलग लेखकों के यीशु के जीवन को अलग-अलग पड़ावों की भविष्यवाणी करना कोई साठ गांठ या फरेब नहीं हो सकता।'' न केवल ये पूरी हुई भविष्यवाणियां निर्णायक ढंग से साबित करती हैं कि यीशु मसीह परमेश्वर की ओर से आया और वास्तव में परमेश्वर का इकलौता पुत्र था जैसा कि उसने दावा किया, बल्कि वे यह भी साबित करती हैं कि प्राचीनकाल की भविष्यवाणियों के लेखक अपने ही मन से नहीं लिख रहे थे बल्कि जैसा कि 2 पतरस 1:20-21 में कहा गया है, ''पर पहिले यह जान लो कि पवित्र शास्त्र की कोई भी भविष्यवाणी किसी के अपने ही विचारधारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती। क्योंकि कोई भी भविष्यवाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे।'' इसलिए उन पुराने लेखों को पढ़कर हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि वे आम पुस्तकों की तरह मनुष्य की खोज हैं बल्कि वे ईश्वरीय प्रकाशन की ईश्वरीय उपज हैं इस कारण वे परमेश्वर का वचन हैं!

पर केवल पूरी हुई भविष्यवाणियां ही वे प्रमाण नहीं हैं जिन पर परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु मसीह में विश्वास आधारित है। यीशु के जीवन काल में उसने कई सामर्थ के काम किए जो बिना अलौकिक शक्ति की सहायता के कोई आम आदमी कभी नहीं कर सकता था। लोगों की भीड़ जो इन आश्चर्यकर्मों को देखती थी वह परमेश्वर पुत्र होने के उसके दावे को मानने से रूक न सकी। उन अतुलनीय कामों को जो उसने किए बताने का कोई और तरीका ही नहीं था। मत्ती, मरकुस और लूका और यूहन्ना नामक लेखकों ने इन ईश्वरीय प्रदर्शनों को बड़े ही विस्तार से लिखने के लिए बड़ी गहराई तक चले जाते हैं। इसलिए इन पुस्तकों की समीक्षा करने के लिए हमें इस पर विचार करना चाहिए।

III. यीशु के अपने आश्चर्यकर्म उसके परमेश्वर के पुत्र होने को साबित करते हैं।

क. उसके इकतालीस लिखित आश्चर्यकर्म इस प्रकार हैं:

1. गलील के काना में विवाह के भोज में पानी को दाखरस में बदलना (यूहन्ना 2:1-11)।
2. राजकर्मचारी के पुत्र को चंगा करना (यूहन्ना 4:46-54)।
3. मछलियों की कमी (लूका 5:1-11)।
4. अशुद्ध आत्मा को निकालना (मरकुस 1:23-27; लूका 4:33-36)।
5. शमौन पतरस की सास को चंगा करना (मत्ती 8:14-15; मरकुस 1:30- 31;

लूका 4:38-39)।

6. कोड़ी को चंगा करना (मत्ती 8:2-4; मरकुस 1:40-45; लूका 5:12-13)।
7. लकवे के रोगी को चंगा करना (मत्ती 9:2-8; मरकुस 2:1-12; लूका 5:17-26)।
8. अड़तीस वर्ष के रोगी को चंगा करना (यूहन्ना 5:1-16)।
9. सूखे हाथ वाले आदमी को चंगा करना (मत्ती 12:10-14; मरकुस 3:1-6; लूका 6:6-11)।
10. सूबेदार के सेवक को चंगा करना (मत्ती 8:5-13; लूका 7:1-10)।
11. नाइन नामक नगर की विधवा के पुत्र को मुर्दों में से जिलाना (लूका 7:11-17)।
12. अंधी और गूंगी दुष्टात्मा से ग्रस्त आदमी को बोलने और देखने लगाना (मत्ती 12:22)। नोट: मरकुस 3:22 की इसी आश्चर्यकर्म का संकेत देते हुए लगता है; परन्तु यह इसे पूरी तरह से स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त तथ्य नहीं देता।
13. तूफ़ान को शांत करना (मत्ती 8:23-27; मरकुस 4:35-41; लूका 8:22-25)।
14. दुष्टात्माओं को निकालना (मत्ती 8:28-34; लूका 8:26-40; मरकुस 6:1-20)।
15. याईर जो हाकिम था, की बोटी को मुर्दों में से जिलाना (मत्ती 9:18-19, 23-26; मरकुस 5:21-24, 35-42; लूका 8:40-41, 49-56)।
16. लहू बहने वाली स्त्री को चंगा करना (मत्ती 9:20-22; मरकुस 5:25-34; लूका 8:43-48)।
17. दो अंधों को चंगा करना (मत्ती 9:27-32)।
18. दुष्टात्मा से ग्रस्त और गुंगे को चंगा करना (मत्ती 9:32-33)।
19. पांच हज़ार को खिलाना (मत्ती 14:13-23; मरकुस 6:30-46; लूका 9:10-17; यूहन्ना 6:1-14)।
20. पानी के ऊपर चलना (मरकुस 6:47-56; यूहन्ना 6:16-21)।
21. कनानी स्त्री की बेटी को चंगा करना (मत्ती 15:21-28; मरकुस 7:24-30)।
22. लंगडों, अंधों, गुंगों, टुंडों और अन्य बहुत को चंगाई देना (मत्ती 15:29-31)।
23. बहरे और हकले को चंगा करना (मरकुस 7:31-37)।
24. चार हज़ार पुरुषों (स्त्रियों और बच्चों को छोड़) खिलाना (मत्ती 15:32-38; मरकुस 8:1-9)।
25. बैतसैदा के निकट एक अंधे को चंगा करना (मरकुस 8:22-26)।
26. दुष्टात्मा से ग्रस्त एक लड़के को चंगा करना (मत्ती 17:14-21; मरकुस 9:17-29; लूका 9:37-43)।
27. कर चुकाने के लिए धन सुरक्षित करने का आश्चर्यकर्म का ढंग (मत्ती 17:24-27)।
28. जन्म के अंधे को चंगा करना (यूहन्ना, 9 अध्याय)।
29. गूंगी दुष्टात्मा को निकालना (मरकुस 9:17-29)।
30. 18 साल से कुबड़ी औरत को चंगा करना (लूका 13:10-17)।

31. जलंधर के रोगी को चंगा करना (लूका 14:1-6)।
32. लाज़र को मुर्दों में से जिलाना (यूहन्ना, 11 अध्याय)।
33. दस कोढ़ियों को चंगा करना (लूका 17:11-19)।
34. यरीहो के निकट दो अंधों को चंगा करना (मत्ती 20:29-34) नोट: मरकुस के विवरण में इनमें से केवल एक अंधे बरतिमाई का उल्लेख है (मरकुस 10:46-52)। लूका 18:35-43 में भी ऐसा ही है।
35. अंजीर के वृक्ष को सुखा देना (मत्ती 21:17-22; मरकुस 11:12-14, 20-24)।
36. काटा गया कान जोड़ देना (लूका 22:47-51)।
37. यीशु का अपना जी उठना (। 28:1-10; मरकुस 16:1-11; लूका 24:1-11; यूहन्ना 20:1-18)।
38. मृत्यु से थोड़ी देर पहले अपने साथियों के साथ चलते और बातें करते हुए अपनी पहचान बताने से रोकना (लूका 24:13-31)।
39. अपने चेलों के बीच दिखाई देना (लूका 24:32-43)।
40. बंद दरवाजों में से अंदर आना (यूहन्ना 20:19-23)।
41. यीशु का स्वर्ग में उठा लिया जाना (मरकुस 16:19; लूका 24:50-51; प्रेरितों 1:9-11)।

नोट: आवश्यक नहीं कि यीशु के परमेश्वर होने के पृथ्वी पर किए गए ये इकतालीस प्रदर्शन सारे प्रदर्शन हों। जैसा यूहन्ना 20:30-31 कहता है, *''यीशु ने और भी बहुत चिह्न चेलों के साम्हने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए। परन्तु ये इसलिए लिखे गए हैं, कि तुम विश्वास करो, कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है: और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ।''* *''और भी बहुत से काम हैं, जो यीशु ने किए; यदि वे एक एक करके लिखे जाते, तो मैं समझता हूं, कि पुस्तकें जो लिखी जातीं वे जगत में भी न समातीं''* (यूहन्ना 21:25)।

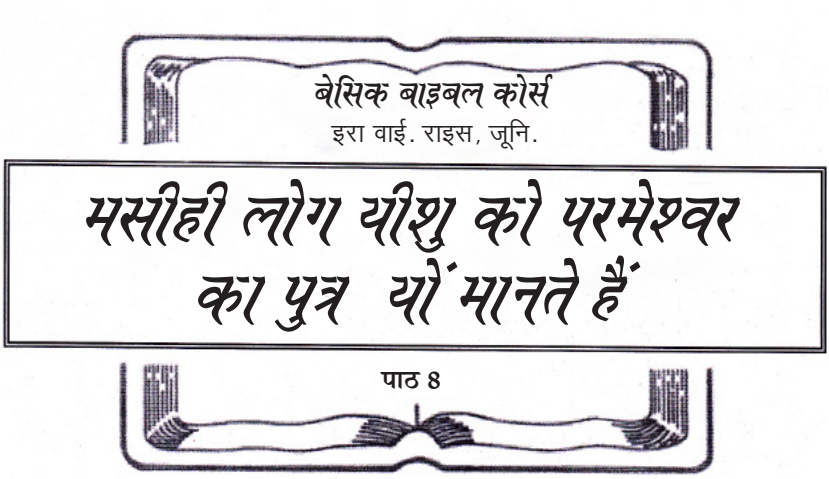

पाठ 8 पर प्रश्न

Registration No..... Grade .....

Name.....

Address.....

.....

Pin.....Mobile No.....

e-mail.....

(कृपया पता अंग्रेजी के बड़े अक्षरों में ही लिखें।)

1. मत्ती और लूका दोनों लिखते हैं कि यीशु की माता मरियम की जिब्राइल स्वर्गदूत के उसे दर्शन देने से पहले एक आदमी से ''मंगनी'' हो रखी थी जिसका नाम यूसुफ था। फिर भी उसने जिब्राइल से कहा, ''मैं तो पुरुष को जानती ही नहीं।'' समझाएं कि यह कैसे हो सकता है कि उसकी ''मंगनी'' तो यूसुफ के साथ हो चुकी थी फिर भी वह ''पुरुष को जानती नहीं'' थी।

   .....

   .....

2. जहां तक अपने पहलौठे पुत्र यीशु को जन्म देने तक पुरुष और स्त्री के शारीरिक ज्ञान की बात है, पुरुष को जाने बिना उसके लिए यीशु को जन्म देने के लिए **गर्भधारण** करना कैसे सम्भव था?
   .....

   .....

3. स्वर्गदूत ने मरियम को बताया, ''पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परम प्रधान की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी,'' इसलिए इस छाया से जन्म लेने वाला ''पवित्र'' कहलाने वाला क्या था।

   .....

4. मरियम के पहलौठे का सही सही नाम क्या होना था?

   .....

5. उसने इस नाम से क्यों जाना जाना था?

   .....

6. मनुष्य के लिए चाहे कठिन है पर क्या परमेश्वर के लिए कोई बात कठिन है?

   .....

7. नये नियम में क्या **यीशु मसीह** परमेश्वर का पुत्र होने का **दावा करता है**? .....

8. बाइबल का **एक वचन** बताएं जहां उसने यह दावा किया:.....

.....

9. उसके अलावा 4 और लोगों के नाम बताएं, जिन्होंने यीशु के परमेश्वर का पुत्र होने का दावा किया ?

.....

.....

10. रोमी हाकिम पिलातुस के यहूदियों को अपनी पसन्द बताने पर उन्होंने बरअब्बा को जो एक डाकू था छोड़ देने और उसके स्थान पर यीशु मसीह को क्रूस पर चढ़ाने के लिए क्यों कहा ?

.....

11. यीशु मसीह के परमेश्वर का पुत्र होने का **दावा** करने के लिए कौन सी 38 बातें **विश्वसनीयता** देती हैं ?

.....

12. क्या यह मान लेना तर्कसंगत है कि परमेश्वर किसी छलिए में विश्वास दिलाने के लिए भविष्यवाणी को पूरा करेगा ?

.....

13. पूरी हुई भविष्यवाणियों की आपकी समीक्षा में कितनी **भविष्यवाणियां** नये नियम में से हैं ?

.....

14. यदि वे **सभी पुराने** नियम में से हैं तो पूरा होने के समय इनमें से सबसे **ताज़ा** भविष्यवाणी कितनी पुरानी थी ?

.....

.....

.....

15. यदि पुराने नियम का अन्तिम नबी संसार में यीशु मसीह के जन्म लेने से 400 साल पहले मरा तो क्या भविष्यवक्ताओं में से किसी के लिए भी पुराने नियम की इन भविष्यवाणियों में से किसी को पूरा करने पर कोई वश था?

.....

16. यीशु मसीह का जन्म कहां हुआ था?

.....

17. इससे पुराने नियम की कौन सी भविष्यवाणी पूरी हुई? (बाइबल का वचन बताएं) .....

18. क्या यीशु का जन्म **मिस्र**में हुआ था?.....

19. क्या परमेश्वर का पुत्र मिस्र में गया था? ..... (बाइबल का वचन बताएं)। क्या यह भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई?

.....

20. यीशु के यरूशलेम में विजयी प्रवेश के सम्बन्ध में भविष्यवक्ता ने क्या भविष्यवाणी की थी कि वह किस पर सवार होगा?

.....

21. बाइबल का वह वचन बताएं जो इस भविष्यवाणी के पूरा होने को दिखाता है?
.....

22. क्या यीशु को पकड़वाने की कीमत की भविष्यवाणी हुई थी? .....
(बाइबल का वचन बताएं)?

23. वह कीमत कितनी थी? ..... वह पूरी हुई? .....

24. क्या यीशु ने अपराधियों के संग गिना जाना था? .....
यदि हां तो बताएं कि यह किस प्रकार पूरा हुआ।
.....

25. क्या यीशु को थप्पड़ मारे जाने और उस पर थूका जाना था ?.....

    क्या यह पूरा हुआ ? ..... (बाइबल का रेफरेंस बताएं).....

26. क्या यीशु ने **अपने आप के लिए** दुख उठाना था या **हमारे लिए ?**

    .....

27. यीशु को पीने के लिए क्या दिया जाना था ? .....

    क्या यह पूरा हुआ था ? .....

28. क्या यीशु के बेधे जाने की भविष्यवाणी हुई थी ? किसी भविष्यवक्ता के द्वारा ? .....

29. यह भविष्यवाणी कैसे पूरी हुई ?.....

30. सिपाहियों ने यह निर्णय कैसे लिया कि यीशु के कौन से वस्त्र कौन ले जाएगा ?.....

    .....

    वह भविष्यवाणी क्या थी, जो पूरी हुई:.....

31. क्या सिपाहियों ने यीशु के साथ क्रूस पर चढ़ाए गए दो डाकुओं की टांगे तोड़ीं ? .....

    क्यों ? .....

    .....

32. क्या उन्होंने यीशु की भी टांगें तोड़ीं ? ..... क्यों ?.....

    .....

33. क्या इससे कोई भविष्यवाणी पूरी हुई ? ..... कौन सी ? .....

    .....

34. क्या यीशु को धनवान के साथ दफ़नाया जाना था? यदि हां, तो कृपया बताएं कि यह भविष्यवाणी कैसे पूरी हुई?

    .....

35. क्या नया नियम बताता है कि यीशु मुर्दों में से जी उठा? .....
    बाइबल का हवाला बताएं?

    .....

36. क्या यह भविष्यवाणी के अनुसार था? ..... किस भविष्यवाणी?

37. स्वर्ग में यीशु के उठाए जाने के समय उसे चेलों की नज़रों से ओझल किसने किया?

    .....

    क्या उसके ऊपर उठाए जाने की भविष्यवाणी की गई थी? .....

38. क्या पुराने नियम की ये भविष्यवाणियां मनुष्य की इच्छा से हुई थीं? .....यदि नहीं

    तो वह कैसे हुईं? .....

    .....

39. क्या परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु मसीह में विश्वास करने का आधार **केवल पूरी हुई भविष्यवाणियां** ही हैं?..... यदि नहीं तो और प्रमाण क्या हैं?

40. हमने यीशु के लिखित कितने आश्चर्यकर्म दोहराए हैं? .....

41. यीशु के आश्चर्यकर्मों को लिखने वाले प्रमुख लेखक कौन हैं?.....

42. यीशु का पहला लिखित आश्चर्यकर्म कौन सा था?.....

43. उस वचन को दोहराएं जो साबित करता है कि यह आश्चर्यकर्मों का आरम्भ था: .....

    .....(वचन बताएं)?

44. क्या शमौन पतरस शादीशुदा था ? यदि हां, तो यीशु ने शमौन पतरस की सास के साथ क्या किया ? .....

45. क्या यीशु के पास प्राकृतिक वस्तुओं पर भी अधिकार है ? .....

    यदि हां तो कोई उदाहरण बताएं जहां उसने इस शक्ति का प्रयोग किया:

    .....

46. यीशु के लोगों को मुर्दों में से जिलाने के कितने लिखित उदाहरण हैं ? .....

    उनके नाम बताएं ?.....

47. यीशु ने पांच हज़ार लोगों को क्या खिलाया ?..... चार हज़ार को क्या खिलाया ? .....

48. क्या यीशु स्वर्ग में उठा लिया गया ? किसने कहा ? .....

49. क्या ये 41 आश्चर्यकर्म ही वह चिह्न हैं, जो यीशु ने दिखाए ?

    .....

50. यदि नहीं तो इन आश्चर्यकर्मों को क्यों लिखा गया है ?

    .....

    आपका कोई प्रश्न है ?.....

    .....

    .....

    .....

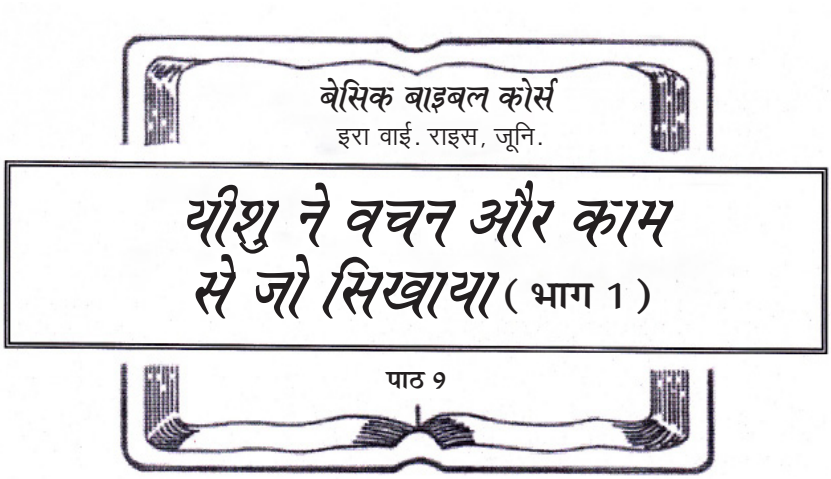

परिचय: यीशु मसीह के व्यक्तित्व के सम्बन्ध में अपने पिछले पाठों में हमने उसकी **प्रकृति**, **पूर्व अस्तित्व**, **सनातन मंशा**, **प्रथम आगमन** और **परमेश्वर होने के उसके प्रमाणों** पर विचार किया है। स्वाभाविक है कि ऐसे गहन अध्ययन में हमें उन कुछ बातों पर विचार करना आवश्यक था, जो उसने पहले ही स्वयं कहीं और कीं। इस कारण इस पाठ में हमारा उद्देश्य इस कोर्स में पहले ही पढ़े जा चुके बातों पर विचार करना नहीं होगा। इसके बजाय हमारा उद्देश्य इस पाठ में विशेषकर यीशु द्वारा अपने कामों के नमूने के द्वारा दिखाने के साथ-साथ वचन के द्वारा अपने चेलों को बताया गया कि उसने चेले कैसे होने चाहिए। इस प्रकार हमें यह निर्णय लेने के योग्य होना चाहिए कि हम उसके चेले बनना चाहते हैं या नहीं।

I. यीशु के बालकपन से सीखे गए नियम

क. 12 वर्ष की आयु में उसका मन्दिर में जाना (लूका 2:41-50)।

1. अपने जाने से पहले बड़ा होते हुए वह ''बढ़ता, और बलवन्त होता, और बुद्धि से परिपूर्ण होता गया; और परमेश्वर का अनुग्रह उस पर था'' (आयत 40)।
2. अपने माता-पिता की वापसी के समय वह ''यरूशलेम में रह गया'' का तथ्य उसके धार्मिक बातों में दिलचस्पी लेने को दिखाता है (आयत 43)।
3. तीन दिनों के बाद अपने माता पिता को मिलने के समय वह ''मन्दिर में उपदेशकों के बीच में बैठा, उन की सुनता और उन से प्रश्न कर'' रहा था (आयत 46)। उसने दिखाया कि वह
   क. एक **अच्छा सुनने वाला** था
   ख. उसका **मन जांच करने वाला** था।
4. उसने सुनने वाले सब लोग चकित थे

क. उसकी **समझ** से

ख. उसके **उत्तरों** से (ज्ञान को दिखाने) (आयत 47)।

5. जब उसकी माता ने उसके पीछे रह जाने के बारे में पूछा तो उसने यह कहते हुए कि ''तुम तुझे क्यों क्यों ढूंढ़ते थे ? क्या नहीं जानते थे, कि **मुझे अपने पिता के भवन में होना अवश्य है** ?'' (आयत 49) **परमेश्वर के प्रति जिम्मेदारी** की अपनी पहले से ही **भावनाओं** को दिखाया।

ख. तौभी उसने **अपने सांसारिक माता पिता के प्रति** अपनी **जिम्मेदारी** को भी माना (आयत 51)।

1. वह उनके साथ नासरत में लौट गया।
2. वह उनके ''**वश में**'' रहा (यानी उनकी **आज्ञा मानता** रहा)।

ग. ''और यीशु

1. **बुद्धि** में (मानसिक रूप में)
2. और **डील डौल** में (शारीरिक रूप में)
3. और **परमेश्वर** के (आत्मिक रूप में)
4. और **मनुष्यों के** (सामाजिक रूप में) **अनुग्रह में** बढ़ता गया।

नोट: लूका की पुस्तक में से पर दी गई जानकारी ही यीशु के उसके माता पिता द्वारा पहली बार उसे मिस्र से नासरत में ले जाने और उसके 30 वर्ष का होने के बीच के समय के बारे में है।

II. यीशु की आरम्भिक सेवकाई से सीखे गए नियम

क. निष्पाप होने के बावजूद यीशु ने **जैसे भी** बपतिस्मा दिए जाने पर **ज़ोर दिया** (मत्ती 3:13-15; मरकुस 1:9; लूका 3:21)।

1. **कारण:** ''क्योंकि **हमें** इसी रीति से **सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है**।''
2. बपतिस्मा लेने के बाद यीशु ने **प्रार्थना की** (लूका 3:21)।
3. यह सब स्पष्ट रूप में परमेश्वर को पसन्द आ रहा था (मत्ती 3:16-17; मरकुस 1:10-11; लूका 3:21-22)।

ख. यह कहते हुए कि ''**लिखा है,**'' यीशु ने **परीक्षा का सामना** और **परीक्षा पर जय** पाने के लिए **परमेश्वर के वचन** का इस्तेमाल किया (मत्ती 4:1-11)

1. मनुष्य **परमेश्वर के वचन से जीवित** रहेगा (आयत 4)।
2. मनुष्य **परमेश्वर की परीक्षा न करे** (आयत 7)।
3. मनुष्य **केवल परमेश्वर को ही प्रणाम और उसी की ही उपासना** करे (आयत 10)।

नोट: मरकुस 1:12-13 और लूका 4:1-13 भी पढ़ें।

ग. यीशु ने **जिज्ञासा को शांत किया, चुनौती को ललकारा** और **आतिथ्य को स्वीकारा**।

1. यूहन्ना के दो चेलों ने जब उसने यीशु को ''परमेश्वर का मेमना'' मानते हुए सुना तो वे यीशु के पीछे हो लिए (यूहन्ना 1:35-37)।
2. जब यीशु ने उन्हें अपने पीछे आते देखा तो उसने पूछा कि वे क्या चाहते हैं

(आयत 38)।

क. उन्होंने पूछा कि वह कहां रहता है (आयत 38)।

ख. उसने कहा, ''चलो, तो देख लोगे'' (आयत 39)।

घ. कई लोगों को अपने चेले बनने के लिए बुलाते हुए यीशु ने कहा, ''**मेरे पीछे हो ले,**'' इस प्रकार उसने **अपने ही नमूने की सामर्थ** से सिखाया।

1. उसने फिलिप्पुस से कहा, ''**मेरे पीछे हो ले**'' (यूहन्ना 1:43)।
2. मत्ती को उसने यह कहते हुए बुलाया, ''**मेरे पीछे हो ले**'' (मत्ती 9:9; मरकुस 2:13-14; लूका 5:27-28)।
3. एक चेले ने कहा, ''हे प्रभु, मुझे पहले जाने दे कि अपने पिता को गाड़ दूं'' (मत्ती 8:21)।

   क. पर ''यीशु ने उससे कहा, 'तू मेरे पीछे हो ले, और मुर्दों को अपने मुर्दे गाड़ने दे' '' (आयत 22)।
4. जवान हाकिम से जिसने पूछा था कि ''अब मुझ में किस बात की घटी है?'' यीशु ने कहा, ''यदि तू सिद्ध होना चाहता है; तो जा, अपना माल बेचकर कंगालों को दे; और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा; *और* आकर **मेरे पीछे हो ले**'' (मत्ती 19:20-21; मरकुस 10:21; लूका 18:22)।
5. **मसीह के पीछे चलने** का अर्थ है **अपना इनकार** और **बलिदान** करना (मत्ती 16:24; मरकुस 8:34; लूका 9:23)।
6. ''और जो अपना क्रूस लेकर मेरे **पीछे** न चले वह मेरे योग्य नहीं'' (मत्ती 10:38)।
7. ''[27]इस पर पतरस ने उससे कहा, 'देख, हम तो सब कुछ छोड़ के **तेरे पीछे हो लिए** हैं: तो हमें क्या मिलेगा?' [28]यीशु ने उन से कहा, 'मैं तुम से सच कहता हूं, कि नई सृष्टि में जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा के सिंहासन पर बैठेगा, तो तुम भी जो **मेरे पीछे हो लिए** हो, बारह सिंहासनों पर बैठकर इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करोगे। [29]और जिस किसी ने घरों या भाइयों या बहिनों या पिता या माता या बाल बच्चों या खेतों को मेरे नाम के लिए छोड़ दिया है, उस को सौ गुना मिलेगा: और वह अनन्त जीवन का अधिकारी होगा'' (मत्ती 19:27-29; मरकुस 10:23-20; लूका 22:28-30)।

ङ: यीशु ने जहां चाहिए था वहां आवश्यकता के अनुसार किसी की **तारीफ़ की:**

1. **नतनएल** की: ''देखो, यह सचमुच इस्राएली है: इसमें कपट नहीं'' (यूहन्ना 1:47)।
2. **सूबेदार** की: ''मैंने इस्राएल में भी ऐसा विश्वास नहीं पाया'' (मत्ती 8:5-8,10, 13; लूका 7:1-30)।

च. यीशु के **कठिन परिश्रम** से चेलों में और भी **जोश** आना चाहिए। उसके प्रचार और चंगाई की यात्राओं के बारे में *थोड़ा सा* बताना भी प्रभावशाली है:

1. ''[12]जब उसने यह सुना कि यूहन्ना बन्दी बना लिया गया है, तो वह **गलील को चला गया** और वह **नासरत को छोड़कर कफरनहूम में**, ... [13]जाकर रहने

लगा'' (मत्ती 4:12-13)।

2. ''गलील की झील के किनारे फिरते हुए उस ने ...'' (मत्ती 4:18)।
3. ''यीशु **सारे गलील में फिरता हुआ** उनके आराधनालयों में **उपदेश करता**, और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को **दूर करता** रहा'' (आयत 23)।
4. ''जब वह उस **पहाड़ से उतरा**, तो एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली'' (मत्ती 8:1)।
5. ''जब वह क**फरनहूम में आया** ...'' (मत्ती 8:5)।
6. ''यीशु जब **पतरस के घर आया** ...'' (मत्ती 8:14)।
7. ''[18]यीशु ने जब अपने चारों ओर एक बड़ी भीड़ देखी तो **झील के उस पार जाने** की आज्ञा दी। ... [23]जब वह नाव पर चढ़ा, तो उसके चेले उसके पीछे हो लिए। ... [28]जब वह **उस पार गदरेनियों के देश में पहुंचा**, ...'' (मत्ती 8 :18, 23, 28)।
8. ''**वहां से आगे बढ़कर** यीशु ने ... '' (मत्ती 9:9)।
9. ''[18]वह उनसे ये बातें कर ही रहा था, कि देखो, एक सरदार ने आकर उसे प्रणाम किया और कहा, 'मेरी पुत्री अभी मरी है, परन्तु चलकर अपना हाथ उस पर रख तो वह जीवित हो जाएगी।' [19]यीशु **उठकर अपने चेलों समेत उसके पीछे हो लिया ...** [23]यीशु **उस सरदार के घर में पहुंचा**'' (मत्ती 9:18-19, 23)।
10. ''यीशु **सब नगरों और गांवों में फिरता रहा** और उनकी आराधनालयो में **उपदेश करता**, और राज्य का सुसमाचार **प्रचार करता**, और हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को **दूर करता** रहा'' (मत्ती 9:35)।
11. ''जब यीशु अपने बाहर चेलों को आज्ञा दे चुका, तो वह **उनके नगरों में उपदेश और प्रचार करने को वहां से चला गया**'' (मत्ती 11:1)।

नोट: और इस प्रकार यह दिखाते हुए कि उसने लोगों के अपने पास आने की प्रतीक्षा नहीं की बल्कि भले कामों के अपने अभियान को तेजी से लोगों तक ले जाता रहा, उसी सेवकाई के बढ़ने को बताया गया है।

छ. यीशु ने अपने आपको **धर्म के *व्यापारीकरण* के विरुद्ध** दिखाया।

1. वह यरूशलेम में यहूदियों का फसह नामक पर्व मनाने के लिए गया (यूहन्ना 2:13)।
2. वहां ''उसने मन्दिर में बैल और भेड़ और कबूतर के बेचने वालों और सर्राफों को बैठे हुए पाया'' (आयत14)।
   क. उसने **सब भेड़ों और बैलों को मन्दिर से निकाल दिया** (आयत 15)।
   ख. उसने **सर्राफों के पैसे बिखेर दिए** (आयत 15)।
   ग. उसने **पीढ़ों को उलट दिया** (आयत 15)।
   घ. कबूतर बेचने वालों से उसने कहा, ''इन्हें यहां से ले जाओ। मेरे पिता के

घर को व्यापार का घर मत बनाओ'' (आयत 16)।

ज. यीशु ने बताया कि हमें शारीरिक रूप से नहीं बल्कि आत्मिक रूप से ''**नये सिरे से जन्म**'' लेना आवश्यक है (यूहन्ना 3)।

1. ''यदि कोई नये **सिरे से** न **जन्मे** तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता'' (आयत 3)।
2. ''जब तक कोई मनुष्य **जल और आत्मा से** न **जन्मे** तो वह **परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता**'' (आयत 5)।
3. निकुदेमुस के यह पूछने पर कि ''ये बातें कैसे हो सकती हैं?'' यीशु ने
   क. *उसके प्रश्न का उत्तर प्रश्न में दिया:* ''तू इस्राएलियों का गुरु हो कर भी क्या इन बातों को नहीं समझता?'' (आयत 10)।
   ख. *उसे प्रेम से डांटा:* ''हम जो जानते हैं वह कहते हैं, और जिसे हम ने देखा है उसकी गवाही देते हैं, और तुम हमारी गवाही ग्रहण नहीं करते'' (आयत 11)। ''जब मैंने तुम से पृथ्वी की बातें कहीं, और तुम विश्वास नहीं करते, तो यदि मैं तुम से स्वर्ग की बातें कहूं, तो फिर कैसे विश्वास करोगे?'' (आयत 12)।

झ. **मसीह में विश्वास करने वाले नाश नहीं होंगे** बल्कि **अनन्त जीवन पाते हैं** (आयतें 15–18)।

1. परमेश्वर ने अपने इकलौते पुत्र (यीशु) को दे दिया।
   क. क्योंकि उसे संसार से प्रेम था (आयत 16)।
   ख. संसार को दोषी ठहराने के लिए नहीं (आयत 17)।
   ग. बल्कि इसलिए कि संसार उसके द्वारा उद्धार पाए (आयत 17)।

ञ. इस कारण यदि लोगों को दण्ड मिलता है तो इसके लिए उन्हें यीशु को नहीं बल्कि अपने आपको दोष देना चाहिए (यूहन्ना 3:18–21)।

1. जो कोई **मसीह पर विश्वास लाए** उस पर **दण्ड की आज्ञा नहीं होती** (आयत 18)।
2. परन्तु जो विश्वास **न** करे वह **दोषी ठहर चुका,** क्योंकि उसने परमेश्वर के इकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया (आयत 18)।
3. दण्ड की आज्ञा का कारण यह है कि
   क. ज्योति जगत में आई (आयत 19); परन्तु
   ख. मनुष्यों ने अंधकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना (आयत 19)।
4. बुराई करने वाले लोग
   क. ज्योति से बैर रखते हैं (आयत 20)।
   ख. ज्योति के निकट नहीं आते, ऐसा न हो कि उनके कामों पर दोष लगाया जाए (आयत 20)।
5. सच्चाई से प्रेम करने वाला व्यक्ति
   क. ज्योति के निकट आता है ताकि उसके काम प्रगट हों कि वह परमेश्वर की

ओर से किए गए हैं (आयत 21)।

ट. यीशु **बपतिस्मा देता** था (यूहन्ना 3:22)।

1. यूहन्ना के चेलों ने उसे बताया कि यीशु बपतिस्मा देता है (आयत 26)।
2. यूहन्ना ने इस पर आनन्द किया (आयतें 27-36)।
3. यीशु यूहन्ना से अधिक लोगों को चेले बनाता और उन्हें बपतिस्मा देता था (यूहन्ना 4:1)।
4. यीशु अपने अपने चेलों से बपतिस्मा दिलवाता था (आयत 2)।

ठ. यीशु ने **थक जाने पर आराम किया** (यूहन्ना 4:4-5)। परन्तु इस अवसर का भी इस्तेमाल उसने सामरी स्त्री को सिखाने के लिए किया (आयतें 7-27)।

1. यह स्त्री पानी लेने याकूब के कुंवें पर आई थी (आयत 7)।
2. यीशु ने जो कुंवे पर बैठा हुआ था, उससे कहा, ''मुझे पानी पिला'' (आयतें 6-7)।
3. यहूदी लोग सामरियों से कोई लेन देन नहीं रखते थे इसलिए उसने यीशु से पूछ लिया कि वह उसे पानी पिलाने को क्यों कहता है (आयत 9)।
4. यीशु ने कहा कि यदि उसे पता होता कि मैं कौन हूं तो वह उससे कहती और वह उसे ''**जीवन का जल**'' दे देता (आयत 10)।
   क. जो भी कोई याकूब के कुंवे का पानी पीता उसने फिर से प्यासा होना था (आयत 13)।
   ख. परन्तु यीशु ने कहा कि ''जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूंगा, वह फिर **अनन्त काल तक प्यासा न** होगा'' (आयत 14)।
   ग. ''जो जल मैं उसे दूंगा, वह एक **सोता बन जाएगा जो अनन्त जीवन के लिए उमड़ता रहेगा**'' (आयत 14)।
5. यीशु ने उस स्त्री को बताया कि ''**उद्धार यहूदियों में से है**'' (आयत 22)।
6. **सच्चे आराधक परमेश्वर की आराधना ''आत्मा** और **सच्चाई से'' करते हैं** (आयतें 23-24)।
7. यीशु ने बताया कि वह ''**मसीह**'' है ''जो **ख्रिस्तुस** कहलाता है, जिसने आकर ''**सब बातें बता**'' देनी थीं (आयतें 25-26)।

ड. यीशु ने अपने चेलों को एक विशेष प्रकार के ''**भोजन**'' की बात बताई (आयतें 31-34)।

1. उसने कहा, ''मेरे पास खाने के लिए ऐसा भोजन है जिसे तुम नहीं जानते।''
2. ''मेरा भोजन यह है कि **अपने भेजने वाले की इच्छा के अनुसार चलूं** और **उसका काम पूरा करूं।**''

ढ. **बोने** और **काटने** पर (आयतें 35-38)।

1. ''क्या तुम नहीं कहते, कटनी होने में अब भी चार महीने पड़े हैं।''
2. ''**अपनी आंखें उठाकर खेतों पर दृष्टि डालो** कि **वे कटनी के लिए पक चुके हैं।**''

3. **अनन्त जीवन के लिए काटो, मजदूरी लो, फल इकट्ठा करो।**
4. **बोने वाले** और **काटने वाले मिलकर आनन्द करते हैं।**
   क. एक बोता है
   ख. दूसरा काटता है
   ग. जब एक वहां काटता है जहां दूसरे ने बोया था तो वह उसके परिश्रम ''में भागी'' होता है।

ण. यीशु ने अपने आपको **पवित्र शास्त्र के पूरा होने** के रूप में दिखाया (लूका 4:16-21)।

1. वह नासरत में आया, जहां पला बढ़ा था (आयत 16)।
2. अपनी रीति के अनुसार वह सब्त के दिन आराधनालय में गया और पढ़ने के लिए खड़ा हो गया (आयत 16)।
   क. वहां उसे यशायाह नबी की पुस्तक पढ़ने को दी गई
   ख. ''और उस ने पुस्तक खोलकर, वह जगह निकाली जहां यह लिखा था कि **प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इस लिए कि उस ने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है, और मुझे इसलिए भेजा है, कि बन्धुओं को छुटकारे का और अन्धों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूं और कुचले हुओं को छुड़ाऊं। और प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करूं**'' (आयतें 17-19)।
3. उसने पुस्तक बंद की, इसे फिर से सेवक को पकड़ा दिया और बैठ गया (आयत 20)।
   क. आराधनालय में सब की नज़रें उसी पर टिकी थीं (आयत 20)।
   ख. उसने कहा, ''आज ही यह लेख तुम्हारे सामने पूरा हुआ है'' (आयत 21)
   ग. फिर उसने बताया, ''**कोई भविष्यवक्ता अपने देश में मान सम्मान नहीं पाता**'' (आयत 24—यूहन्ना 4:44 भी देखें)।

त. यीशु का इरादा अपने चेलों को ''**मनुष्यों के पकड़ने वाले**'' बनाना था।

1. इसके प्रमाण में उसने शमौन और अन्द्रियास को बुलाया— (मत्ती 4:18-20; मरकुस 1:16-18)।
   क. वे मछुआरे थे।
   ख. यीशु ने कहा, ''मेरे पीछे चले आओ तो मैं उनको मनुष्यों के पकड़ने वाले बनाऊंगा।''
   ग. वे अपने जाल छोड़कर उसके पीछे हो लिए।

थ. यीशु यह प्रचार करने लगा कि ''**स्वर्ग का राज्य**'' **निकट आया** है (मत्ती 4:17)।

1. इसे ध्यान में रखते हुए उसने लोगों से कहा ''**मन फिराओ**'' (आयत 17)।
2. और ''**सुसमाचार पर विश्वास**'' भी करो (मरकुस 1:14-15)।

द. यीशु का **वचन सामर्थ के साथ** था (लूका 4:32; मरकुस 1:22)।

1. इसलिए लोग उसकी **शिक्षा** पर चकित होते थे।
   क. सब कहते थे, ''यह तो कोई नया उपदेश है! वह **अधिकार** और **सामर्थ**

के साथ अशुद्ध आत्माओं को भी **आज्ञा देता है**, और वे उस की आज्ञा मानती हैं'' (मरकुस 1:27; लूका 4:36)।

ध. **यीशु ने केवल एक स्थान पर ठहरने से इनकार कर दिया** (लूका 4:42-43)।

1. लोगों ने उसे ठहराने की कोशिश की
2. पर उसने कहा, ''मुझे **अन्य नगरों में भी परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाना** आवश्यक है, क्योंकि **मैं इसी लिए भेजा गया हूं**'' (मरकुस 1:38 भी देखें)।
3. जिस कारण वह पूरे गलील में घूमा (मत्ती 4:22-24; मरकुस 1:39; लूका 4:44)।
   - क. उनके आराधनालयों में **सिखाते हुए**
   - ख. राज्य का सुसमाचार **सुनाते हुए**
   - ग. हर प्रकार के रोगियों और बीमारों को **चंगा करते हुए**

न. आम तौर पर किसी के साथ **भलाई करते** समय वह उसे **निर्देश देता** कि **किसी से न कहना**!

1. उदाहरण के लिए, कोढ़ी की चंगाई ही लें (मत्ती 8:1-4; मरकुस 1:40-44; लूका 5:12-14)।
   - क. यीशु ने उसे स्पर्श करते हुए यह कहकर चंगा किया, ''मैं चाहता हूं, तू शुद्ध हो जा।''
   - ख. फिर उसने उससे कहा कि किसी को न बताए पर
   - ग. अपने आपको याजक को दिखाए और
   - घ. मूसा की आज्ञा के अनुसार अपने शुद्ध होने की भेंट चढ़ाए (यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले तक उसके जीवनकाल के दौरान पुराना नियम अभी भी प्रभावी था)।

नोटः- यह **अपमान** का अपने आप को छोटा करना हो सकता है या यह **यीशु की मनुष्य के स्वभाव की गहराई से समझ भी हो सकता** है। क्योंकि यदि आप किसी बात को फैलाना चाहते हैं तो किसी के पास इसे न कहना ही काफी होगा! चंगाई पाने वाले इस कोढ़ी ने अपने आपको याजक को दिखाने के बजाय अपनी चंगाई की बात इतने लोगों को बता दी कि भीड़ के कारण यीशु का नगर में खुलेआम जाना बंद हो गया (मरकुस 1:45; लूका 5:15)। वह जंगलों में रहने लगा पर लोग फिर भी हर तरफ से उसके पास आते रहे।

प. यीशु ने **बुरी सोच वाले** लोगों को डांट लगाई (मत्ती 9:4; मरकुस 2:8; लूका 5:22)।

फ. उसने दिखाया कि उसके पास **पाप क्षमा करने की शक्ति** थी (मत्ती 9:4-6; मरकुस 2:8-11; लूका 5:22-24)।

ब. तारीफ़ पाने की इच्छा करने बजाय यीशु अपने आपको तुच्छ बनाता रहा। उदाहरण के लिए:

1. यीशु ने एक अपंग व्यक्ति को चंगा किया (यूहन्ना 5:2-9)।
2. तारीफ़ पाने के लिए रुकने के बजाय यीशु इस आश्चर्यकर्म के बाद वहां से निकल

गया (आयत 13)।

3. बाद में उसने उस व्यक्ति को मन्दिर में पाया और कहा, ''इन बातों के बाद वह यीशु को मन्दिर में मिला, यीशु ने उससे कहा, देख, तू चंगा हो गया है; **फिर से पाप मत करना**, ऐसा न हो कि इस से कोई भारी विपत्ति तुझ पर आ पड़े'' (आयत 14)।

भ. यीशु ने **काम को सम्मान दिया।**

1. उसने कहा, ''**मेरा पिता** अब तक **काम करता है**, और **मैं भी काम करता** हूं'' (आयत 17)।

म. यहूदियों ने यीशु को और भी मार डालना चाहा क्योंकि **वह अपने आपको परमेश्वर के तुल्य ठहराता था** (आयत 18)। यीशु ने उत्तर दिया:

1. ''**पुत्र** आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो **पिता** को करते देखता है, क्योंकि जिन जिन कामों को वह करता है उन्हें **पुत्र** भी उसी रीति से करता है'' (आयत 19)।
2. ''**पिता** पुत्र से प्रीति रखता है और **जो जो काम वह आप करता है, वह सब उसे दिखाता है**'' (आयत 20)।
3. ''और वह इन से भी बड़े काम उसे दिखाएगा, ताकि तुम अचम्भा करो'' (आयत 20)।
4. ''जैसा **पिता** मरे हुओं को उठाता और जिलाता है, वैसा ही **पुत्र** भी जिन्हें चाहता है उन्हें जिलाता है'' (आयत 21)।
5. ''**पिता** किसी का न्याय नहीं करता, परन्तु **न्याय करने का सब काम पुत्र को सौंप दिया है** कि **सब** *लोग* **जैसे पिता का आदर करते हैं वैसे ही पुत्र का भी आदर करें**'' (आयतें 22-23)।
6. ''**जो पुत्र का आदर नहीं करता, वह पिता का** जिसने उसे भेजा है, **आदर नहीं करता**'' (आयत 23)।
7. ''जो मेरा वचन **सुनकर मेरे भेजने वाले पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है,** और उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है'' (आयत 24)।
8. ''वह समय आता है, और अब है, जिसमें **मृतक परमेश्वर के पुत्र का शब्द सुनेंगे, और जो सुनेंगे वे जीएंगे**'' (आयत 25)।
9. ''जिस रीति से **पिता अपने आप में जीवन रखता है,** उसी रीति से उसने पुत्र को भी यह अधिकार दिया है कि **अपने आप में जीवन रखे**'' (आयत 26)।
10. ''वरन उसे न्याय करने का भी **अधिकार** दिया है, इसलिए कि वह मनुष्य का पुत्र है'' (आयत 27)।
11. ''इस से अचम्भा मत करो, क्योंकि वह समय आता है, कि **जितने कब्रों में हैं, वे उसका शब्द सुनकर निकल आएंगे।** जिन्होंने **भलाई की है** वे **जीवन के पुनरुत्थान के लिए** जी उठेंगे और **जिन्होंने बुराई की है** वे **दण्ड के पुनरुत्थान** के लिए जी उठेंगे'' (आयतें 28-29)।

12. ''मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता'' (आयत 30)।
13. ''जैसा **सुनता हूं, वैसा न्याय करता हूं**'' (आयत 30)।
14. ''**मेरा न्याय सच्चा है; क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं,** परन्तु अपने भेजने वाले की इच्छा चाहता हूं'' (आयत 30)।
15. ''यदि मैं आप ही अपनी गवाही दूं; तो मेरी गवाही सच्ची नहीं'' (आयत 31)।
16. ''**एक और** है जो **मेरी गवाही देता है,** और मैं जानता हूं कि मेरी जो गवाही वह देता है वह सच्ची है'' (आयत 32)।
17. ''**तुम ने** यूहन्ना से पुछवाया और उसने सच्चाई की गवाही दी है'' (आयत 33)।
18. ''**मैं अपने विषय में मनुष्य की गवाही नहीं चाहता;** तौभी मैं ये बातें इसलिए कहता हूं, कि तुम्हें उद्धार मिले'' (आयत 34)।
19. '' वह [यूहन्ना] तो जलता और चमकता हुआ दीपक था'' (आयत 35)।
20. ''तुम्हें कुछ देर तक उसकी ज्योति में मगन होना अच्छा लगा'' (आयत 35)।
21. ''**परन्तु मेरे पास जो गवाही है वह यूहन्ना की *गवाही से* बड़ी है: क्योंकि जो काम पिता ने मुझे पूरा करने को सौंपा है अर्थात् यही काम जो मैं करता हूं, वे मेरे गवाह हैं, कि पिता ने मुझे भेजा है**'' (आयत 36)।
22. ''**पिता** जिसने मुझे भेजा है, **उसी ने मेरी गवाही दी है**''
    क. ''तुम ने न कभी उसका शब्द सुना, और न उसका रूप देखा है'' (आयत 37)।
    ख. ''और उसके वचन को मन में स्थिर नहीं रखते क्योंकि **जिसे उसने भेजा** तुम उसका विश्वास नहीं करते'' (आयत 38)।
23. ''तुम **पवित्रशास्त्र में ढूंढ़ते हो**, क्योंकि समझते हो कि उस में अनन्त जीवन तुम्हें मिलता है'' (आयत 39)।
    क. ''और यह वही है, जो **मेरी गवाही देता** है'' (आयत 39)।
24. ''फिर भी तुम **जीवन पाने के लिए मेरे पास आना नहीं चाहते**'' (आयत 40)।
25. ''**मैं मनुष्यों से आदर नहीं चाहता**'' (आयत 41)।
26. ''मैं तुम्हें जानता हूं, कि तुम में **परमेश्वर का प्रेम** नहीं'' (आयत 42)।
27. ''**मैं अपने पिता के नाम से आया हूं,** और तुम मुझे ग्रहण नहीं करते'' (आयत 43)।
28. ''यदि अन्य कोई और अपने ही नाम से आए, तो उसे ग्रहण कर लोगे'' (आयत 43)।
29. ''तुम जो **एक दूसरे से आदर चाहते** हो और **वह आदर जो एकमात्र परमेश्वर की ओर से है, नहीं चाहते, किस प्रकार विश्वास कर सकते हो** ?'' (आयत 44)।
30. ''यह न समझो, कि मैं पिता के साम्हने तुम पर दोष लगाऊंगा: तुम पर दोष लगाने

वाला तो है, *अर्थात्* **मूसा** जिस पर तुम ने भरोसा रखा है'' (आयत 45)।

क. ''यदि तुम **मूसा का विश्वास** करते, तो **मेरा विश्वास भी करते**, इसलिए कि उसने **मेरे विषय में लिखा** है'' (आयत 46)।

ख. ''परन्तु यदि तुम **उसकी लिखी हुई बातों** पर विश्वास नहीं करते, तो **मेरी बातों** पर कैसे विश्वास करोगे'' (आयत 47)।

नोट :- मोटे तौर पर कहें तो यहां पर हम यीशु की सेवकाई के मध्य में आ पहुंचे हैं। जो कुछ उसने सिखाया उस पर हमारा अध्ययन बेकार में कहीं बोझ न बन जाए, इस कारण जैसे हमने व्यवस्था और ''यीशु के परमेश्वर होने के प्रमाणों'' के अपने अध्ययन को दो ''भागों'' में बांटा था, इसे भी बांट लेते हैं। **अगले** पाठ में हम देखेंगे कि **बाद की** अपनी **सेवकाई** में यीशु क्या सिखाता रहा। अभी के लिए हम **पाठ के प्रश्नों** पर चलते हैं और देखते हैं कि उनके क्या उत्तर दिए जा सकते हैं। याद रखें कि **जब तक हम** हर बात **के लिए पवित्र शास्त्र का हवाला नहीं देखते** तब तक **व्यावहारिक रूप में पूरे पूरे अंक लेना सम्भव नहीं** है। सो **इन प्रश्नों के उत्तर** अपनी **बाइबल में से ही** दें।

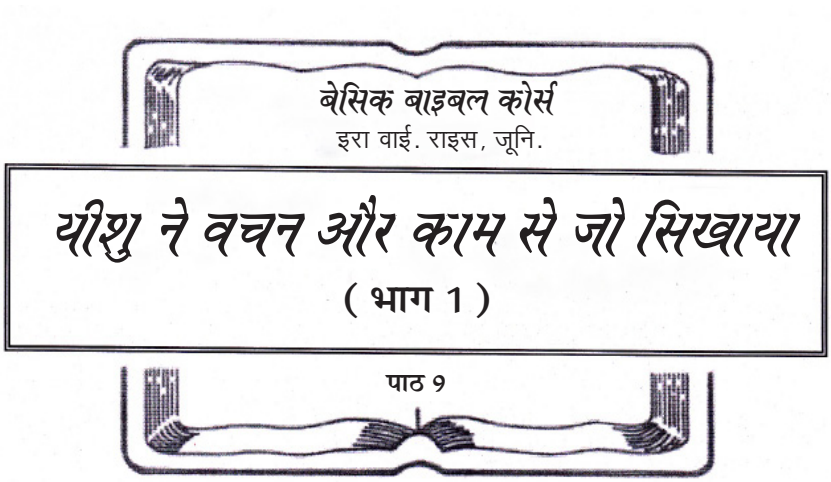

पाठ 9 के प्रश्न

Registration No..... Grade .....

Name.....

Address.....

.....

Pin.....Mobile No.....

e-mail.....

(कृपया पता अंग्रेजी के बड़े अक्षरों में ही लिखें।)

1. पिछले पाठ में यीशु मसीह के **व्यक्तित्व** के बारे में हम पहले कौन से पांच मुख्य विषय देख चुके हैं ? उसका (1) ..... (2) .....

   (3) .....(4) ..... (5) .....

2. इस पाठ का **उद्देश्य** क्या है ? .....

   .....

3. यीशु ने अपने माता पिता के मन्दिर से घर लौटने पर उन्हें यरूशलेम में पीछे रह जाने का क्या **कारण** बताया ? .....

   .....

4. नासरत से लौटने के बाद यीशु किन **चार बातों** में ''बढ़ा'' ?

   (1) ..... (2) ..... (3) .....

   (4).....

5. **बपतिस्मा** लेने पर जोर देने के यीशु के **कारण** का बाइबल का हवाला बताएं।

   .....

6. यीशु ने **परीक्षा का सामना करने** और उस पर **काबू पाने के लिए** किसका **इस्तेमाल** किया ?

   .....

7. **हम से अपने जैसे बनने की उम्मीद** को दिखाते हुए यीशु ने किन **शब्दों** का इस्तेमाल किया ? .....क्या **उसके पीछे चलने वालों को** प्रतिफल मिलेगा ?.....

8. वे **तीन बातें** बताएं जो यीशु ने सारे नगरों और गांवों में जाते हुए **कीं**:

   (1) ..... (2).....

   (3).....

9. यीशु ने क्या **किया** जिसे हम जानते हैं कि उसने **धर्म के व्यापारीकरण का विरोध किया** ?

(1).....

(2).....

(3).....

10. क्या **परमेश्वर के राज्य** में प्रवेश करने के लिए ''**नये सिरे से जन्म**'' लेना आवश्यक है ?

..... यह **नया जन्म जल** से है या **आत्मा से** या **दोनों से** ? .....

11. क्या परमेश्वर ने यीशु को संसार को **दण्ड देने** के लिए भेजा ? .....

यदि नहीं तो क्यों ? .....

12. कौन अधिक चेले **बनाता** और **बपतिस्मा देता** था- यीशु या यूहन्ना ?.....

13. क्या यीशु अपने चेलों को **आप बपतिस्मा** देता था ? ..... यदि नहीं, तो उसके स्थान पर कौन बपतिस्मा देता था ? .....

14. यीशु के पास देने के लिए किस **प्रकार** का जल है ? .....

15. इस जल का इसे पाने वाले पर क्या प्रभाव होता है ? .....

.....

16. क्या आराधना के स्थान से तय होता है कि आराधना स्वीकार होगी या नहीं ? .....

यदि नहीं तो सच्चाई से आराधना करने में क्या बातें आवश्यक होती हैं ? .....

.....

17. यीशु ने शमौन और अन्द्रियास को क्या बनाने की बात की ? .....

18. ''स्वर्ग का राज्य'' निकट होने का प्रचार किए जाने में यीशु ने कौन सी दोबातें कीं ?

1) ..... 2) .....

19. किस आयत में यीशु को यह कहते हुए दिखाया गया है कि ''तुम लोग अपने अपने मन में बुरा विचार क्यों कर रहे हो ?'' .....

20. यीशु ने किस प्रकार दिखाया कि उसके पास पाप क्षमा करने की सारी शक्ति थी ?

.....

.....

21. यहूदियों ने यीशु को और भी मार डालना क्यों चाहा ?

.....

22. क्या सब लोगों को चाहिए कि यीशु का आदर परमेश्वर के पुत्र के रूप में करें ?

.....

23. यदि हम यीशु का आदर परमेश्वर के पुत्र के रूप में नहीं करते हैं तो क्या हम परमेश्वर का आदर करते हैं ? .....

24. पवित्र शास्त्र में ढूंढ़ना क्यों आवश्यक है ?

.....

25. यदि हमने **मूसा** पर विश्वास किया तो क्या हमें यीशु पर भी विश्वास करना चाहिए ?

.....

आपका कोई प्रश्न है तो उसे यहां लिखें .....

.....

.....

.....

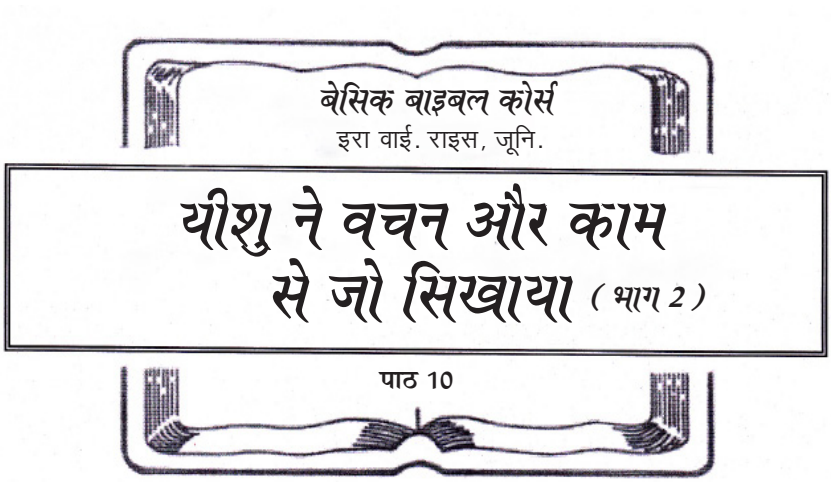

परिचय: इस शीर्षक के पहले पाठ में हमने यीशु द्वारा अपने बालकपन अर्थात बारह वर्ष की आयु से पृथ्वी पर उसकी सेवकाई के लगभग सिखाए गए नियमों पर विचार किया था। इस पाठ में हम उन बातों पर अपनी वर्तमान जांच खत्म करेंगे, जिन्हें स्वीकार करने की उम्मीद यीशु अपने चेलों से करता है और कि उनका जीवन किस प्रकार का हो। जहां से हमने पिछली बार छोड़ा था वहीं से आगे बढ़ते हुए विचार करते हैं।

I. यीशु की बाद की सेवकाई से सीखे गए नियम।

क. यीशु ने **सब्त** के सम्बन्ध में फरीसियों (उसके समय का यहूदी गुट) के अंधेपन की निंदा की (मत्ती 12:1-8; मरकुस 2:23-28; लूका 6:1-5)।

1. अपने चेलों के साथ यीशु सब्त के दिन अनाज के खेतों में से जा रहे थे जो कि व्यवस्था के अधीन पवित्र दिन था।

   क. भूख लगने पर उसके चेले ने अनाज की बालें तोड़कर खाने लगे

2. फरीसियों ने उस पर आरोप लगाया कि उसके चेलों ने वह काम किया है जिसे सब्त के दिन करना उचित नहीं है।

3. यीशु ने अपने चेलों का बचाव यह कहते हुए किया:

   क. ''क्या तुम ने नहीं पढ़ा कि दाऊद ने, जब वह और उस के साथी भूखे हुए तो क्या किया? वह कैसे परमेश्वर के घर में गया, और भेंट की रोटियां खाईं, जिन्हें खाना न तो उसे और न उसके साथियों को पर केवल याजकों को उचित था?''

   ख. ''या क्या तुमने व्यवस्था में नहीं पढ़ा कि याजक सब्त के दिन मन्दिर में सब्त के दिन की विधि को तोड़ने पर भी निर्दोष ठहरते हैं?''

   ग. ''पर मैं तुमसे कहता हूं, कि यहां वह है, जो मन्दिर से भी *बड़ा* है।''

   घ. ''यदि तुम *इसका* अर्थ जानते कि मैं दया से प्रसन्न हूं, बलिदान से नहीं, तो

तुम निर्दोष को दोषी न ठहराते।''

ङ ''मनुष्य का पुत्र तो सब्त के दिन का भी प्रभु है।''

नोट : मरकुस 2:27 यीशु के शब्दों को जोड़ देता है कि ''सब्त का दिन मनुष्य के लिए बनाया गया है न कि मनुष्य सब्त के दिन के लिए।''

4. अपनी शिक्षा को और दिखाते हुए यीशु ने **सब्त के दिन** सूखे हाथ वाले एक आदमी को **चंगा किया** (मत्ती 12:9-13; मरकुस 3:1-5; लूका 6:6-10)।
   क. यीशु खेत से चला गया।
   ख. वह उन्हीं फरीसियों की आराधनालय में गया।
   ग. वहां वह एक सूखे हाथ वाले आदमी से मिला।
   घ. फरीसियों ने यीशु से पूछा, ''**क्या सब्त के दिन चंगा करना उचित है?**''
   ङ अपनी आदत के अनुसार यीशु ने प्रश्न का उत्तर एक और प्रश्न के साथ किया, ''तुम में ऐसा कौन है जिसकी एक ही भेड़ हो, और वह सब्त के दिन गड्ढे में गिर जाए, तो वह उसे पकड़कर न निकाले?''
   च. अपने आस-पास के सब लोगों की ओर नज़र घुमाते हुए फिर उसने उस आदमी से कहा, ''अपना हाथ बढ़ा।''
   छ. उस आदमी ने हाथ बढ़ाया और वह दूसरे हाथ की तरह ही बिल्कुल चंगा हो गया।

नोट : मरकुस 3:4 और लूका 6:9 उनसे किए यीशु के प्रश्न पर ज़ोर देते हैं, ''क्या सब्त के दिन भला करना उचित है या बुरा करना? प्राण को बचाना या मारना?'' मरकुस 3:5 इसमें और जोड़ देता है कि ''उसने उनके मन की कठोरता से उदास होकर, उनको क्रोध से चारों ओर देखा।'' लूका 6:6 भी कहता है कि यीशु ने आराधनालय में ''उपदेश'' दिया। लूका 6:8 कहता है, ''वह उनके विचार जानता था।'' उसने यह भी कहा, ''उठ, बीच में खड़ा हो।'' मरकुस 3:3 भी ''खड़ा हो'' उसके शब्दों को लिखता है।

ख. यीशु ने अपना नमून देकर प्रार्थना सिखाई: **उसने पूरी रात प्रार्थना की** (लूका 6:12)।
नोट: मत्ती 10 और लूका 10 में यीशु ने ''बारह'' को और ''सत्तर'' को ''लिमिटेड कमीशन'' दिए। पूरा पाठ ही इन दोनों लिमिटेड कमीशनों पर है, इस कारण हम दूसरे पाठ में छोड़ दी गई कुछ बातों को छोड़ उन पर विचार नहीं करेंगे।

ग. **चेलों** और **सेवकों** के सम्बन्ध में (मत्ती 10:24-25)।
   1. चेला अपने स्वामी से बड़ा नहीं है और न ही दास अपने स्वामी से।
   2. चेले के लिए अपने गुरु जैसा बन जाना और दास के लिए अपने स्वामी जैसा बन जाना ही काफ़ी है।

घ. यीशु ने उसमें विश्वास के अंगीकार की बात सिखाई (मत्ती 10:32-33)।

1. ''जो कोई मुनष्यों के सामने मुझे **मान लेगा,** उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने **मान लूंगा।**''
2. ''पर जो कोई मनुष्यों के सामने मेरा इन्कार करेगा उसका मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने इन्कार करूंगा।''

ङ यीशु चाहता है कि उसके चेले उसको प्राथमिकता दें (मत्ती 10:37-39)।

1. ''जो माता या पिता को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं; और जो बेटा या बेटी को मुझ से अधिक प्रिय जानता है वह मेरे योग्य नहीं।''
2. ''और जो अपना क्रूस लेकर मेरे पीछे न चले वह मेरे योग्य नहीं।''
3. ''जो अपना प्राण बचाता है, वह उसे खोएगा; और जो मेरे कारण अपना प्राण खोता है, वह उसे पाएगा।''

च. **यीशु** के **भेजे** हुए को ग्रहण करना स्वयं यीशु को स्वीकार करना माना जाता है।

1. अपने 12 प्रेरितों से उसने कहा, ''जो तुम्हें ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है'' (मत्ती 10:40)।
2. ''और जो मुझे ग्रहण करता है, वह मेरे भेजने वाले को ग्रहण करता है''
3. ''जो भविष्यवक्ता को भविष्यवक्ता जानकर ग्रहण करे, वह भविष्यवक्ता का बदला पाएगा'' (आयत 41)।
4. ''और जो धर्मी को धर्मी जानकर ग्रहण करे, वह धर्मी का बदला पाएगा'' (आयत 41)।
5. ''जो कोई इन छोटों [यानी प्रेरितों] में से एक को चेला जानकर केवल एक कटोरा ठण्डा **पानी पिलाए,** ...वह किसी रीति से अपना प्रतिफल न खोएगा'' (आयत 42)।

छ. पहाड़ी उपदेश

(नोट: यीशु द्वारा अपने चेलों को बताए जीने के सामान्य नियमों में से सबसे विस्तृत मत्ती के अध्याय 5, 6 और 7, और लूका 6:20-49 में पाया जाने वाला यह उपदेश है)। मत्ती इस उपदेश का परिचय यह कहते हुए करवाता है कि ''वह इस भीड़ को देखकर पहाड़ पर चढ़ गया, और जब बैठ गया तो उसके चेले उसके पास आए। और वह अपना मुंह खोलकर उन्हें यह उपदेश देने लगा-''

1. दीनता (''मन के दीन'') (मत्ती 5:3; लूका 6:20)।
2. शोक करना (मत्ती 5:4; लूका 6:21)।
3. विनम्रता (मत्ती 5:5)।
4. धार्मिकता की इच्छा (मत्ती 5:6; लूका 6:21)।
5. दया (मत्ती 5:7)।
6. आत्मिक शुद्धता (मत्ती 5:8)।
7. मेल करवाना (मत्ती 5:9)।
8. धार्मिकता की खातिर सताव सहना (मत्ती 5:10; लूका 6:22)।

9. यीशु की खातिर बिना कारण दुख सहना (मत्ती 5:11; लूका 6:22)।

नोट: मसीह के लिए दुख सहने पर हमें **आनन्द** करना चाहिए (मत्ती 5:12; लूका 6:23)। लूका 6:24-26 इसमें जोड़ देता है, ''परन्तु हाय तुम पर; जो धनवान हो, क्योंकि तुम अपनी शान्ति पा चुके। हाय, तुम पर; जो अब तृप्त हो, क्योंकि भूखे होगे: हाय, तुम पर; जो अब हंसते हो, क्योंकि शोक करोगे और रोओगे। हाय, तुम पर; जब सब मनुष्य तुम्हें भला कहें, क्योंकि उन के बापदादे झूठे भविष्यवक्ताओं के साथ भी ऐसा ही किया करते थे।''

10. यीशु ने अपने चेलों को ''पृथ्वी का नमक'' कहा (मत्ती 5:13), पर नमक अपना स्वाद खो दे (बिगड़ जाए)तो
    क. यह किसी काम का नहीं
    ख. बाहर फैंक दिया जाएगा
    ग. पैरों तले रौंदा जाएगा।
11. यीशु ने कहा कि उसे चेले ''जगत की ज्योति हैं'' (आयत 14)। उन्हें मनुष्यों के सामने अपनी ज्योति को चमकाना है-
    क. पहाड़ पर बसे नगर की तरह (मत्ती 5:14)।
    ख. दीवट पर रखे दीये की तरह (आयत 15)।

नोट: यह मनुष्यों के सामने अपने अच्छे कामों को इस तरह दिखाकर किया जाता है जिससे वे ''परमेश्वर की बड़ाई करें'' (मत्ती 5:16)।

12. यीशु व्यवस्था या भविष्यवक्ताओं को **नष्ट** करने के लिए नहीं बल्कि उन्हें पूरा करने के लिए आया (मत्ती 5:17)।
    क. जब तक ''सारा पूरा न हो जाता तब तक कुछ भी टलना नहीं था'' (आयत 18)।
    ख. छोटी से छोटी आज्ञा को तोड़ना और दूसरों को उसे तोड़ना सिखाना स्वर्ग के राज्य में सबसे **छोटा** कहलाना है।
    ग. छोटी से छोटी आज्ञा को मानना और दूसरों को मानना सिखाना स्वर्ग के राज्य में बड़ा कहलाने के लिए है (आयत 19)।
    घ. हमारी धार्मिकता शास्त्रियों और फरीसियों की धार्मिकता से बढ़कर होनी आवश्यक है नहीं तो हम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकते (आयत 20)।
13. फिर यीशु ने यह दिखाने के लिए कि धार्मिकता के लिए **उसकी** शर्तें किस प्रकार से **पुराने नियम** अर्थात **दस आज्ञाओं वाली व्यवस्था** से **अधिक की मांग** करती हैं, **छह विपरीत उदाहरण** दिए।

ये चार्ट में बताए अनुसार है:

''पूर्व काल के लोगों से'' कहा गया था	परन्तु		यीशु ने कहा कि ''मैं तुम से यह कहता हूं''
''पूर्व काल के लोगों से'' कहा गया था	1) ''**हत्या न करना**'' नोटः मत्ती 5:21 में यीशु द्वारा निर्गमन 20:23 में से दोहराया गया।	''**परन्तु मैं** तुम से यह कहता हूं''	1) क. बिना कारण **क्रोधित** न हो (मत्ती 5:22)। ख. ''**निक मा या राका**'' न कहो (आयत 22)। ग. ''**अरे मूर्ख**'' न कहो (आयत 22)। घ. परमेश्वर के सामने भेंट लाने से पहले **सुलह** कर लो (आयतें 23–24)। ङ. मुद्दई के साथ झट से सुलह कर लो (आयतें 25–26)।
''पूर्व काल के लोगों से'' कहा गया था	2) ''**व्यभिचार न करना**'' नोटः मत्ती 5:27 में यीशु द्वारा निर्गमन 20:14 में से दोहराया गया।	''**परन्तु मैं** तुम से यह कहता हूं''	2) क. स्त्री को कामुक दृष्टि से देखना मन में उस के साथ व्यभिचार कर लेना है (मत्ती 5:28)। ख. ठोकर खिलाने वाले अंग को काट कर फैंक दिया जाए (आयतें 29–30)। ग. पूरी देह के नष्ट होने से एक अंग का काटा जाना बेहतर (आयतें 29–30)।
''**पूर्व काल** के लोगों से'' कहा गया था	3) ''जो कोई अपनी पत्नी को तलाक देना चाहे, उसे **त्यागपत्र दे**'' (मत्ती 5:31)	''**परन्तु मैं** तुम से यह कहता हूं''	3) क. व्यभिचार को छोड़ किसी और कारण से तलाक, उससे व्यभिचार करवाना है (मत्ती 5:32)। ख. तलाकशुदा से विवाह करना व्यभिचार है (आयत 32)।

''**पूर्व काल** के लोगों से'' कहा गया था	4) ''झूठी शपथ न खाना परन्तु प्रभु के लिए अपनी **शपथ** को पूरी करना'' (मत्ती 5:33)	''**परन्तु मैं** तुम से यह कहता हूं''	4) क. शपथ खाना ही नहीं (मत्ती 5:34–36)। ख. बातचीत में ''हां की जगह हां'' और ''न की जगह न'' हो (आयत 37)।
''**पूर्व काल** के लोगों से'' कहा गया था	5) ''**आंख के बदले आंख**, और **दांत के बदले दांत**'' (मत्ती 5:38)	''**परन्तु मैं** तुम से यह कहता हूं''	5) क. बुराई का सामना न करो (आयत 39)। ख. दूसरा गाल फेर दो (मत्ती 5:39; लूका 6:29)। ग. जितना जबर्दस्ती से मांगा गया हो उससे बढ़कर दो (मत्ती 5:40; लूका 6:29)। घ. दान और उधार दो (मत्ती 5:42; लूका 6:30, 35)। ङ) दोबारा मांगो मत (लूका 6:30–35)।
''**पूर्व काल** के लोगों से'' कहा गया था	6) ''अपने **पड़ोसी से प्रेम रखना**, और अपने **बैरी से बैर**'' (मत्ती 5:43)	''**परन्तु मैं** तुम से यह कहता हूं''	6) क. अपने शत्रुओं से प्रेम करो (मत्ती 5:44; लूका 6:27, 35)। ख. जो तुम्हें शाप दें उन्हें आशीष दो (मत्ती 5:44; लूका 6:28)। ग. जो तुम से घृणा करें उन के साथ भलाई करो (मत्ती 5:44; लूका 6:27)। घ. जो अपमानजनक ढंग से तुम्हें इस्तेमाल करें उनके लिए प्रार्थना करो।

नोटः यीशु ने परमेश्वर की संतान बनने के लिए आवश्यक पूर्वशर्त के रूप में अपने छठे अंतर का अर्थ समझाया। उदाहरण के लिए परमेश्वर **बुरे** और **भले** दोनों पर अपना सूरज चमकाता है। वह **अधर्मियों** और **धर्मियों** दोनों पर वर्षा भेजता है। यीशु ने केवल उनसे प्रेम करने का कोई प्रतिफल नहीं बताया जो हम से प्रेम रखते हैं। केवल अपने भाइयों को नमस्कार या सलाम करना हमें दूसरों से बेहतर नहीं बनाता है। परमेश्वर की तरह कृपालु और दयालु बनने के लिए हमें उसके जैसे काम करने आवश्यक हैं (मत्ती 5:46–48; लूका 6:32–36)।

14. **दान देने** पर— दान लोगों को प्रभावित करने के लिए नहीं बल्कि सच्चे दिल से परमेश्वर को दें (मत्ती 6:1-4)।
15. **प्रार्थना** पर
    क. प्रार्थना लोगों को प्रभावित करने के लिए नहीं बल्कि सच्चे मन से परमेश्वर से करें (मत्ती 6:5-6)।
    ख. बार-बार व्यर्थ शब्दों का इस्तेमाल करके नहीं(मत्ती 6:7-8)।
    ग. हमारी प्रार्थनाएं नमूने की यीशु की प्रार्थना जैसी होनी चाहिए (मत्ती 6:9-13)।
    घ. यदि हम क्षमा पाना चाहते हैं तो दूसरों को क्षमा करना आवश्यक है (आयतें 12, 14-15)।
16. **उपवास रखने** पर
    क. सच्चे मन से हो (मत्ती 6:16)।
    ख. चेहरा उतरा हुआ न हो (आयत 16)।
    ग. मनुष्यों को न लगे कि उपवास रखा है (आयतें 16-18)।
    घ. परमेश्वर के लिए उपवास हो (आयत 18)।
17. **धन जमा करने** पर
    क. पृथ्वी पर नहीं (मत्ती 6:19)।
    ख. बल्कि स्वर्ग में (आयत 20)।
    ग. जहां तेरा धन है वहां मेरा मन होगा (आयत 21)।
    घ. दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकते (आयतें 22-24)।
    ङ प्राण, भोजन, पानी, कपड़ों या आकार की चिंता न करें (आयतें 25-32)।
    च. यदि हम पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करें तो ये सब चीज़ें हमें दी जाएंगी (आयत 33)।
    छ. कल की चिंता न करें (आयत 34)।
18. **दूसरों पर दोष लगाने** पर
    क. यदि हम नहीं चाहते कि दूसरे लोग हम पर दोष न लगाएं, तो हम भी उन पर दोष न लगाएं (मत्ती 7:1; लूका 6:37-38)।
    ख. जिस प्रकार से हम दूसरों पर दोष लगाते हैं वैसे ही वे हम पर दोष लगाएंगे (मत्ती 7:2)।
    ग. जिस प्रकार से हम दूसरों के साथ व्यवहार करते हैं वैसे ही वे हमारे साथ करेंगे (मत्ती 7:2; लूका 6:38)। उदाहरण के लिए, दिया करो तो तुम्हें भी दिया जाएगा।
    घ. दूसरों पर दोष लगाने और उनकी गलतियां निकालने से पहले हमें पहले अपने ऊपर दोष लगाकर अपनी गलतियां निकाल लेनी चाहिए (मत्ती 7:3-5; लूका 6:39, 41-42)।

ङ. नहीं तो हम कपटी हैं (मत्ती 7:5)।

19. कीमती प्रयास उन लोगों पर न गवाओ जो इनका मज़ाक उड़ाते हैं (मत्ती 7:6)।
20. परमेश्वर की सहायता पाने के लिए हमें अच्छी बातों के लिए प्रार्थना करनी आवश्यक है (आयत 11)।
21. दूसरों के साथ वैसा ही बर्ताव करो जैसा तुम चाहते हो कि वे तुम्हारे साथ करें (मत्ती 7:12; लूका 6:31, 38)।
22. सच्चाई के पीछे चलो, भीड़ के नहीं (मत्ती 7:13-14)।
    क. **बहुतेरे** लोग **चौड़े फाटक** में से जाते हैं और चौड़े मार्ग पर चलते हैं- परन्तु ये विनाश की ओर ले जाते हैं।
    ख. **थोड़े हैं** जो **तंग फाटक** को पाकर **तंग मार्ग** में से जाते हैं- परन्तु ये जीवन की ओर ले जाते हैं।
    ग. यदि हम जीवन को चाहते हैं तो हमें **अनुशासन का कठोर मार्ग** चुनना आवश्यक है।
23. **झूठे नबियों** से सावधान (मत्ती 7:15)।
    क. बाहर से भेड़ों जैसे
    ख. अन्दर से भेड़ियों जैसे
    ग. उनके फलों से उन्हें पहचान लो (मत्ती 7:16-20; लूका 6:43-45)।
    घ. अच्छा फल न देने वाले वृक्षों को काटकर आग में झोंक दिया जाता है (मत्ती 7:19)।
24. यीशु मसीह की **चापलूसी** करना काफी नहीं है; **परमेश्वर की इच्छा** को मानना आवश्यक है (मत्ती 7:21-23)।
    क. चापलूस ''कुकर्म करने वाले'' कहा गया है (आयत 23)।
25. यीशु की बातों को **करने के लिए केवल सुनना** आवश्यक **नहीं** है (मत्ती 7:24-27; लूका 6:46-49)।
    क. सुनकर और करके हम समझदारी पर चट्टान पर बनाते हैं
    ख. केवल सुनकर हम मूर्खता से रेत पर बनाते हैं, तो गिर जाते हैं
26. यीशु **अधिकार वाले की नाईं** सिखाता था (मत्ती 7:28-29)।

ज. **सेवा करने की इच्छा** का उदाहरण- यीशु ने सूबेदार को बताया कि उसका सेवक लकवे का रोगी था, ''मैं आकर उसे चंगा करूंगा'' (मत्ती 8:5-13; लूका 7:2-10)।

झ. **स्वर्ग का राज्य पूर्व** और **पश्चिम** के लिए **मिलन स्थान** है। यीशु ने कहा, ''और मैं तुम से कहता हूं, कि पूर्व और पश्चिम से बहुत से लोग आकर अब्राहम और इसहाक और याकूब के साथ स्वर्ग के राज्य में बैठेंगे'' (मत्ती 8:11)।

ञ. **परमेश्वर के बालक के खोने की सम्भावना** (मत्ती 8:12)।

ट. **करुणा का** एक उदाहरण- विधवा के पुत्र को मुर्दों में से जिलाना (लूका 7:12-16)।

ठ. यीशु की शिक्षा **बातों ही से नहीं,** बल्कि **कामों से** दी गई

1. जब यूहन्ना ने दो चेलों को यह पूछने के लिए भेजा, ''क्या आने वाला तू ही है या हम किसी दूसरे की बाट जोहें ?''
2. यीशु ने उत्तर दिया, ''जो कुछ तुम **सुनते** और **देखते** हो वह सब जाकर यूहन्ना से **कहना**''
   क. अंधे देखते हैं
   ख. लंगड़े चलते फिरते हैं
   ग. कोढ़ी शुद्ध किए जाते हैं
   घ. बहरे सुनते हैं
   ङ मुर्दे जिलाए जाते हैं
   च. कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है
   छ. धन्य हैं वह जो मेरे कारण ठोकर न खाए (मत्ती 11:2-6; लूका 7:18-23)।

नोट: लूका 6:7 दिखाता है कि यीशु ने यूहन्ना के चेलों के वहां रहते समय आश्चर्यकर्म किए।

ड. उसने **यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले** के विषय में कहा (मत्ती 11:7-19; लूका 7:24-28)।

1. कि यूहन्ना ''**भविष्यवक्ता से भी बड़ा**'' था।
2. जो स्त्रियों से जन्मे हैं (उनमें से यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से कोई बड़ा नहीं था)
3. पर जो स्वर्ग के राज्य में **छोटे से छोटा** है वह **यूहन्ना से बड़ा** है।
4. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के दिनों से अब तक स्वर्ग के राज्य में बलपूर्वक प्रवेश होता रहा है।

नोट: ''अब'' शब्द यहां पर यीशु के बोलने के समय के सम्बन्ध में है

5. यूहन्ना तक सारे भविष्यवक्ता और व्यवस्था भविष्यवाणी करते रहे।
6. यूहन्ना ''एलिय्याह जो आने वाला है'' था।

ढ. यीशु ने **डांटा** (मत्ती 11:20-24)।

1. खुराजीन, बैतसैदा और कफरनहूम में सामर्थ के काम (आश्चर्यकर्म) किए गए थे।
2. इन सामर्थ के कामों को ध्यान में रखते हुए यीशु ने कहा कि उन्हें मन फिरा लेना चाहिए था।
3. उन्होंने मन नहीं फिराया था जिस कारण यीशु ने उनके विरुद्ध ''हाय'' कह दी।

नोट: यीशु मसीह की शिक्षा और व्यवहार की एक आम गलत अवधारणा है कि उसने कभी नकारात्मक ढंग का इस्तेमाल नहीं किया यानी उसने ''सकारात्मक बातें ही कहीं।'' इस सोच की इच्छा की जाती है। यह सच नहीं है। चाहे उसने बीमारों, दुखियों, दलितों और निर्धनों पर दया और करुणा दिखाई परन्तु वह कपटियों, दण्ड पाकर भी न सुधरने वालों और अत्याचारियों के साथ वह उतना ही कठोर भी था। कुछ आयतें पहले ही जो इस बात को सिखाती हैं। मत्ती 6:1-4, 6, 16; 7:3-5 और मत्ती 23 का पूरा अध्याय है कई और आयतें जोड़ी जा सकती हैं।

यह इसलिए नहीं लिखी गईं कि यीशु हर समय सब लोंगों के साथ ऐसा ही था बल्कि इसलिए कि वह किसी समय कुछ लोगों के साथ अर्थात जब कोई ऐसा होता था; और इसके उलट कोई भी शिक्षा गलत है। यीशु के नमूने का पालन करने के लिए हमें अलग अलग परिस्थितियों में उसकी प्रतिक्रियाओं में अन्तर का अध्ययन करके उसी के अनुसार चलना चाहिए।

ण. यीशु ने सिखाया कि लोगों को पसंद आए या न पर हम बुद्धि की ही मानें (लूका 7:33-35)।

1. उसने दिखाया कि लोगों को प्रसन्न करने की कोशिश करना मूर्खता है।
   क. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला न तो रोटी खाता और न दाखरस पीता था , लोगों ने कहा कि ''उसमें दुष्टात्मा है।''
   ख. यीशु खाता भी था और पीता भी और लोग कहते थे, ''देखो, पेटू और पियक्कड़ मनुष्य, चुंगी लेने वालों का और पापियों का मित्र।''
2. परन्तु इस पर परेशान होने के बजाय उसने कहा कि ''ज्ञान अपनी सब संतानों द्वारा सच्चा ठहराया गया है।''

सारांश: जैसा कि यूहन्ना 21:25, ''और भी बहुत से काम हैं, जो यीशु ने किए; यदि वे एक एक करके लिखे जाते, तो मैं समझता हूं, कि पुस्तकें जो लिखी जातीं वे जगत में भी न समातीं।'' जो कुछ कोर्स में हमने सीखा है वह उसकी शिक्षा और कामों की सामान्य प्रवृति बताने के लिए काफ़ी है ''कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ'' (यूहन्ना 20:31)। आइए अब पाठ के प्रश्नों की ओर चलते हैं और देखते हैं कि हमने ऊपर दिए गए अध्ययन से क्या समझ आई है।

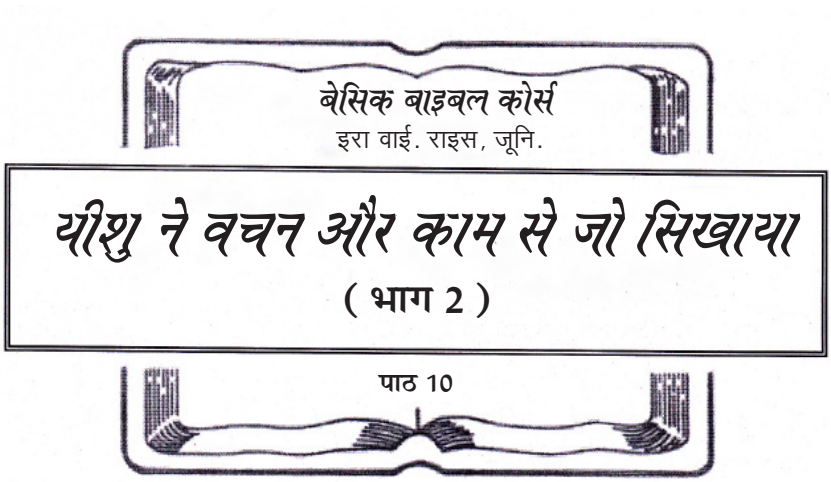

पाठ 10 के प्रश्न

Registration No..... Grade .....

Name.....

Address.....

.....

Pin.....Mobile No.....

e-mail.....

(कृपया पता अंग्रेजी के बड़े अक्षरों में ही लिखें।)

1. सब्त के दिन अनाज के खेत में से बालें तोड़ कर खाने में यीशु ने अपने चेलों का **बचाव किया/नहीं किया** (जो गलत है उसे काट दें) .....

2. बाइबल की किस आयत में यीशु को कहते हुए दिखाया गया है, ''सब्त का दिन मनुष्य के लिए बनाया गया है न कि मनुष्य सब्त के दिन के लिए'' ? .....

3. सब्त के दिन उचित रूप से किए जाने वाले काम पर मत्ती 12:12 में से यीशु की बात को दोहराएं: .....

   .....

4. रिक्त स्थानों को भरें: ''..... के लिए अपने ..... जैसा बन जाना और ..... के लिए अपने ..... जैसा बन जाना ही काफ़ी है।''

5. यीशु ने अपने स्वर्गीय पिता के सामने किसका अंगीकार करने का वचन दिया?

   .....

6. जो व्यक्ति अपने पिता या माता, अपने बेटे या बेटी को यीशु से अधिक प्रेम करता है, उसके लिए यीशु ने क्या कहा? .....

7. कुछ लोग ऐसे हैं, जो उन बातों को तो मानते हैं जो यीशु ने स्वयं सिखाई हैं, परन्तु उन प्रेरितों के द्वारा, जिन्हें उसने भेजा था, बताई बातें मानने से **इनकार** करते हैं। मत्ती 10:40 के अपने अध्ययन में आपने जो सीखा है, क्या यह यीशु की शिक्षा से मेल खाता है?

   .....

8. जब लोग मसीह के कारण उसके चेलों की निंदा करें, उन्हें सताएं और झूठ बोल बोल कर उनके विरोध में सब प्रकार की बातें कहें, तो चेलों को चाहिए कि ..... और .....हों।

9. यीशु व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों को **लोप करने/पूरा करने** आया। (जो गलत है उसे काट दें)। .....

10. पुराने नियम में जो आवश्यक था और जिसकी मांग यीशु करता है, उनमें अन्तर करने के लिए यीशु ने ''**मैं तुम से कहता हूं**'' शब्दों का इस्तेमाल किया। इन शब्दों से हमें पता चलता है कि यीशु भी उन्हीं बातों की मांग करता है जिनकी मांग पुराने नियम में की जाती थी? या फिर अलग बातों की? .....

11. मत्ती 5:44 में यीशु के चेलों को दो बातें सिखाई गई हैं। उनके नाम बताएं:

    1) ..... 2) .....

12. **प्रार्थना** पर अपनी शिक्षा में (मत्ती 6:5-15) यीशु ने अपने चेलों को 9-13 आयतों वाली प्रार्थना बार-बार दोहराने को कहा। (सही या गलत) .....

13. **दो स्वामियों** की सेवा करने पर यीशु ने क्या कहा? .....

    .....

14. दूसरों पर दोष लगाने और उनमें गलतियां निकालने से पहले, यीशु ने अपने चेलों को क्या करने को कहा? .....

15. मत्ती 7:12 से, यीशु क्या बताता है कि हम दूसरों के साथ किस प्रकार व्यवहार करें?

    .....

16. बहुतेरे लोग चौड़े फाटक में से जाते हैं और चौड़े मार्ग पर चलते हैं। वे अपने साथ असहमत होने वालों को ''तंग सोच'' वाले बताते हैं। यीशु ने जीवन की ओर जाने वाला मार्ग किसे बताया है? .....

17. मत्ती 7:15 में यीशु ने माना कि हर कोई जो नबी होने का दावा करता है, वह सही है और बिना संदेह किए उसकी मान ली जानी चाहिए। (सही या गलत).....

18. केवल मुंह से परमेश्वर की सेवा करने वाले लोग ..... हैं।

19. चट्टान पर अपना घर बनाने वाले बुद्धिमान के साथ यीशु ने किसे मिलाया?

.....

20. यीशु ने पूर्व और पश्चिम के लोगों के कहां आने की बात की थी?

.....

21. लूका 7:12-16 से यीशु ने विधवा के प्रति अपनी करुणा कैसे दिखाई?

.....

22. यीशु ने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के लिए अपनी पहचान का क्या प्रमाण भेजा?

.....

23. क्या यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला केवल एक भविष्यवक्ता था?

.....

24. परमेश्वर, यीशु और पवित्र आत्मा के अलावा यूहन्ना से बड़ा और कौन है?

.....

25. क्या यीशु ने कभी किसी को डांटा था?

.....

आपका कोई प्रश्न है तो उसे यहां लिखें .....

.....

.....

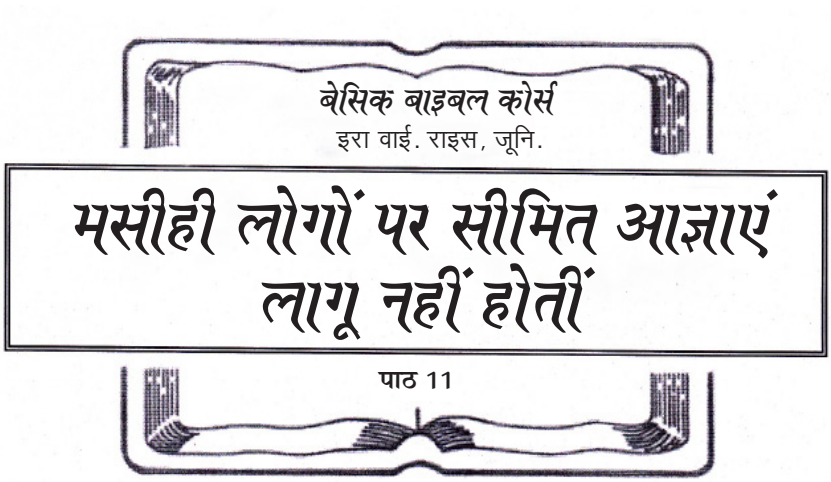

परिचय: बहुत से लोगों की अधिकतर शिक्षा यही रही है कि ऐसा नहीं है। बाइबल के छात्रों से यह स्पष्ट समझ रखने की उम्मीद करने से पहले कि बाइबल का कौन सा भाग मसीही लोगों पर **लागू होता** है, .. उस किसान की तरह जो अपने खेत में हल चलाने और बीज बोने से पहले ठूंठों को निकालता और ईंट-रोड़े को और झाड़ियों को साफ़ कर देता है, हमें भी उन भागों से सम्बन्धित गलत धारणाओं को दूर करना आवश्यक है कि कौन सा भाग **लागू नहीं होता** है। हमें अच्छी तरह से सिखाए हुए, सच्चाई को समझने वाले, बाइबल का प्रशिक्षण पाए हुए छात्रों के इस कोर्स को पूरा करने पर अच्छी फसल की तैयारी के लिए **पहले** अपने अध्ययन के इस नकारात्मक पहलू की ओर ध्यान देने की आवश्यकता को समझना आवश्यक है।

इसका अर्थ यह नहीं है कि हम पुराने नियम या यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के प्रचार व बपतिस्मे को ठूंठ, झाड़ियां और ईंट पत्थर कहते हैं, परन्तु उनसे सम्बन्धित दी गई बहुत सी भ्रमित शिक्षा इसी श्रेणी में आती है।

सकारात्मक पहलू में जाने से पहले, नकारात्मक अर्थ, यह दिखाने के लिए है कि कलवरी पर अपनी मृत्यु से पूर्व पृथ्वी पर रहते समय, यीशु मसीह ने **दो आज्ञाएं** दी थीं जो पूरी तरह से सीमित थीं। जिन्हें स्पष्ट रूप में उसने कभी भी बाद में आने वाले मसीही युग के मसीही लोगों के लिए नहीं दिया था। चलिए ''सीमित आज्ञाओं के अपने अध्ययन की बात करते हैं ... ।''

I. **बारह प्रेरितों को सीमित आज्ञा—**मत्ती 10 (मरकुस 6:7-13 और लूका 9:1-6 की तुलना करें)।

नोट: बाइबल की शिक्षा की थोड़ी (या बहुत बड़ी) गलत अवधारणा को आम तौर पर केवल थोड़ा सा अधिक ध्यान से पढ़ कर बचा जा सकता है। धार्मिक शिक्षा देने वाले बहुत से लोग, आज यह साबित करने के लिए कि मसीही लोगों के पास दुष्ट आत्माओं के विरुद्ध शक्ति होनी आवश्यक है, अलौकिक ढंग से चंगाई देने, कोढ़ियों को शुद्ध करने, मुर्दों को जिलाने

और ऐसे ऐसे काम करने के योग्य होने को, मत्ती 10 अध्याय में से निकालकर दिखाते हैं। परन्तु मत्ती 10 (और समानांतर वचनों) में दी गई आज्ञा को थोड़ा ध्यान से पढ़ें और ध्यान दें कि यह शक्ति सब को नहीं, बल्कि केवल 12 प्रेरितों को दी गई थी।

क. मत्ती 10 अध्याय की आयत 1 में लिखा है, ''फिर उसने अपने **बारह चेलों** को *पास* बुलाकर, **उन्हें** अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार दिया, कि उन्हें निकालें और सब प्रकार की बीमारियों और सब प्रकार की दुर्बलताओं को दूर करें।'' ध्यान दें कि यह आयत यहां पर ''अधिकार'' केवल *बारह* को दिए जाने की बात दिखाती हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि **बारह** चेलों को (हर किसी को नहीं) अधिकार दिया गया था।

1. अशुद्ध आत्माओं को निकालने का
2. बीमारियों और दुर्बलताओं को दूर करने का

ख. जैसे बिल्कुल पक्का करने के लिए हो कि किसी को गलतफहमी न रहे कि यह आज्ञा किन लोगों तक सीमित थी, पवित्र शास्त्र की अगली तीन आयतें (2 से 4) **नाम** लेकर बताती हैं कि यीशु ने *किन बारह* लोगों को यह अधिकार दिया था:

''इन **बारह प्रेरितों** के नाम ये हैं:''

1. **शमौन,** जो पतरस कहलाता है।
2. उसका भाई **अन्द्रियास**
3. जबदी का पुत्र **याकूब**
4. उसका भाई **यूहन्ना**
5. **फिलिप्पुस**
6. **बरतुलमै**
7. **थोमा**
8. महसूल लेने वाला **मत्ती**
9. हलफई का पुत्र **याकूब**
10. **तद्दै**
11. **शमौन** कनानी,जो जेलोतेस भी कहलाता है
12. **यहूदा** इस्करियोती

ग. आयत 5 कहती है, ''*इन बारहों* [दूसरों को नहीं] को यीशु ने यह आज्ञा देकर भेजा:

1. अन्यजातियों की ओर न जाना
2. और सामरियों के *किसी* नगर में प्रवेश न करना परन्तु
3. इस्राएल के घराने ही की खोई हुई भेड़ों के पास जाना।

नोट: अभी तक दी गई सीमाओं पर ध्यान से विचार करें।

पहला, आज्ञा केवल बारह तक सीमित थी;

दूसरा, इस आज्ञा के द्वारा उन बारहों को अन्यजातियों के पास जाने की मनाही थी। (इस सीमा से केवल वही बाहर हैं, जो यहूदी नहीं हैं);

तीसरा, उन **बारहों को सामरियों के पास जाने की मनाही की गई थी** (सामरी लोग मिश्रित जाति थे जो कुछ तो दस गोत्रों से थे और कुछ मूर्तिपूजक अप्रवासियों में से);

चौथा, बारहों को केवल ''**इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ों**'' (पीछे मुड़ चुके यहूदियों) **के पास जाने तक सीमित** किया गया था।

घ. इन पीछे मुड़ चुके यहूदियों (''इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ों'') के पास; बारह प्रेरितों को यहां पर कुछ खास काम करने को भेजा गया था–

1. प्रचार करो कि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है (आयत 7)।
2. बीमारों को चंगा करो (आयत 8)।
3. मरे हुओं को जिलाओ (आयत 8)।
4. कोढ़ियों को शुद्ध करो (आयत 8)।
5. दुष्टात्माओं को निकालो (आयत 8)।
6. सेंत-मेंत दो (आयत 8)।

नोट: इस आज्ञा के द्वारा ये छह काम करने के लिए केवल बारह प्रेरितों को (आपको या मुझे नहीं) भेजा गया था।

ङ. इस सीमित आज्ञा को पूरा करते हुए उन बारहों ने

1. अपने पटकों में न तो सोना, न रुपया, और न तांबा (यानी कोई पैसा साथ नहीं) लेना था (आयत 9)
2. अपने सफ़र के लिए कोई ''झोला'' (अर्थात सफ़री थैला) नहीं लेना था (आयत 10)
3. न दो कुर्ते (आयत 10)
4. न जूते (आयत 10)
5. न लाठी लेनी थी

नोट: हम ने यह देखा है कि जो प्रचारक आज बड़े ज़ोर-शोर से इस बात का दावा करते हैं कि आयतें 7 और 8 आज हमारे लिए हैं, लगता है वे आयतें 9 और 10 की अन्य शर्तों पर ध्यान नहीं देते हैं। वही सीमित आज्ञा जिसमें उस समय प्रेरितों को प्रचार करने का अधिकार दिया गया था कि स्वर्ग का राज्य ''निकट आ गया है'' उसमें उन्हें किसी पैसे की आवश्यकता नहीं थी। आज के ये प्रचारक (जिन्हें यह आज्ञा **नहीं दी गई** थी, परन्तु जो इसे अपने ऊपर लागू करने की कोशिश करते हैं) पैसा चाहते हैं जिसमें शायद कोई अपवाद नहीं है। वे **दावा करते** हैं कि उन्हें ''बीमारों को चंगा करना'' आवश्यक है; परन्तु आप देखेंगे कि सफ़र में उन सब के पास किसी न किसी प्रकार का ''झोला'' रहता है। वे **दावा करते** हैं कि वे ''कोढ़ियों को शुद्ध'' कर सकते हैं; परन्तु लगभग सभी के पास एक से अधिक कुर्ते हैं। वे **दावा करते** हैं कि उन्हें ''मरे हुओं को जिलाना'' और ''दुष्टात्माओं को निकालना'' आवश्यक है; परन्तु आप ने उनमें से कितनों को बिना जूतों के देखा है? यदि वे 7 और 8 आयतों का दावा करते हैं तो निरन्तरता की मांग है कि वे 9 और 10 आयतों को भी मानें। यदि वे कहते हैं कि 9 और 10 आयतें उन के लिए नहीं हैं तो 7 और 8 आयतें भी उन के लिए नहीं हैं। सीधी सी बात यह है कि **इन में से कोई भी आयत** उन बारहों को छोड़ किसी पर भी लागू नहीं होती है।

च. बारह प्रेरितों को दी गई इस सीमित आज्ञा की कुछ **अतिरिक्त विशेषताएं** इस प्रकार हैं:

1. किसी नगर या गांव में पहुंचने पर उन्हें यह पता लगाना आवश्यक था कि कौन योग्य है; और वहां से आगे जाने तक उसी के पास रहना था (आयत 11)।

2. किसी घर में जाने पर उन्हें उसे आशीष देना आवश्यक था (आयत 12)।
   क. यदि वह घर योग्य होता, तो उन्हें इस पर अपना ''कल्याण'' देना था (आयत 13)।
   ख. यदि घर योग्य न होता तो उन्होंने अपना कल्याण यानी शांति वापस ले लेनी थी (आयत 13)।
3. यदि कोई घर या नगर उन्हें ''ग्रहण'' न करता तो उन्हें वहां से निकलने पर अपने पांवों की धूल झाड़ देनी थी (आयत 14)।
4. उन्हें ''सांपों के समान बुद्धिमान और कबूतरों के समान भोले'' बनना था (आयत 16)।
5. उन्हें उन ''लोगों से सावधान'' रहना था, जिन्होंने उन्हें महासभाओं को सौंप देना था (आयत 17)।
6. प्रेरितों को महासभाओं के सामने सौंप दिया जाने पर, उन्हें यह चिंता नहीं करनी थी कि किस प्रकार से या क्या बोलेंगे (आयत 19)।
   क. परमेश्वर ने उन्हें आवश्यकता के अनुसार बोलने के लिए शब्द दे देने थे (आयत 19)।
   ख. इसका अर्थ यह हुआ कि उन में बोलने वाला परमेश्वर का आत्मा होना था न कि प्रेरितों ने अपनी ओर से कुछ कहना था (आयत 20)।

नोट: इन आयतों का विशेषकर उन कुछ लोगों द्वारा बहुत दुरुपयोग किया गया है जो झूठ-मूठ अध्ययन और तैयारी की अपनी स्पष्ट कमी को सही ठहराने का दावा करते हैं। जैसा कि हम ने देखा है कि पिछली आयतों की तरह 19 और 20 आयतें केवल बारह प्रेरितों के लिए कही गई थीं।

7. बारह प्रेरितों को एक नगर में सताया जाने पर उन्हें दूसरे नगर में भाग जाने की आज्ञा दी गई थी (आयत 23)।

नोट: इसी आयत 23 में यीशु की कही बात बारहों को दी गई इस सीमित आज्ञा की सेवा के साथ-साथ इसकी अवधि का भी संकेत देती है: ''तुम इस्राएल के सब नगरों में न फिर चुकोगे, कि मनुष्य का पुत्र आ जाएगा।'' इस विचार को अगले अध्याय की पहली आयत के साथ जोड़ें: ''जब यीशु अपने चेलों को आज्ञा दे चुका, तो वह उनके नगरों में उपदेश और प्रचार करने को वहां से चला गया।''

8. प्रेरितों को आज्ञा दी गई थी कि न ''डरो'' (आयतें 26, 28, 31)।
9. जो कुछ यीशु ने उन्हें ''अंधियारे'' में बताया था, उसी को उन्हें उसने ''उजियाले में'' बताने की आज्ञा दी (आयत 27)।
10. जो कुछ यीशु ने उन्हें ''कानों कान'' बताया था, उसका प्रचार उन्होंने ''छतों'' पर से करना था (आयत 27)।
11. उन्हें मनुष्यों से चाहे न डरने की आज्ञा दी गई थी पर उन्हें परमेश्वर से डरना आवश्यक था (आयत 28)।

12. प्रेरितों को यह सोचने की आवश्यकता नहीं थी कि यीशु संसार में मिलाप कराने नहीं, बल्कि तलवार चलाने आया था (आयत 34)।

छ. इसी सीमित आज्ञा के मरकुस के विवरण में एक-दो बिन्दु ऐसे दिए गए हैं जो मत्ती के विवरण में नहीं हैं। उदाहरण के लिए देखें मरकुस 6:7-13. मरकुस दिखाता है कि
1. बारहों को ''*दो-दो* करके'' भेजा गया था (आयत 7)।
2. मत्ती ने जहां यह दिखाया है कि वे ''लाठियां'' नहीं ले सकते थे, वहीं मरकुस दिखाता है कि ''लाठी'' (एकवचन) की अनुमति थी (आयत 8)।
3. मत्ती ने *मार्ग में* खाना ले जाने की कोई बात नहीं लिखी, परन्तु मरकुस संकेत देता है कि उन्हें सफ़र के लिए ''रोटी'' लेने की अनुमति नहीं थी (आयत 8)।
4. मत्ती के विवरण में ''जूते'' लेने की मनाही है परन्तु मरकुस के विवरण में ''जूतियां'' लेने की अनुमति है (आयत 9)।

ज. इसी सीमित आज्ञा का लूका का विवरण लूका 9:1-6 में मिलता है। अपने स्वयं के सुधार के लिए आपको इसे पढ़ना चाहिए ताकि आप इस विषय पर नये नियम की हर बात को पढ़ सकें; परन्तु लूका ने मत्ती और मरकुस की बात का जो पहले कही जा चुकी है, समर्थन ही किया है (परन्तु उसमें कुछ जोड़ा नहीं)।

II. सत्तर को दी गई सीमित आज्ञा (लूका 10:1-20)।

क. ''बारह प्रेरितों'' को सीमित आज्ञा देने के अलावा यीशु ने ''और सत्तर'' भी ठहराए जिन्हें उस ने ऐसी ही आज्ञा दी थी (आयत 1)।
1. उसने इन 70 को ''दो-दो करके'' भेजा था।
2. उन्हें हर उस नगर और गांव में जाना था जहां यीशु आने वाला था।

ख. इन 70 को यह प्रार्थना करने के लिए कहा था कि परमेश्वर अपनी फसल की कटाई में मज़दूरों को भेजे (आयत 2)।

ग. 70 को दिए गए सामान्य निर्देश:
1. अपने साथ बटुआ, झोली या जूते न लो (आयत 4)।
2. मार्ग में किसी को नमस्कार (सलाम) न कहो (आयत 4)।
3. किसी घर में जाने पर, इन 70 को कहा गया था कि पहले कहो कि ''इस घर का कल्याण हो'' (आयत 5)।

क. यदि वहां कल्याण के योग्य कोई होता तो उन का कल्याण यानी शांति उन्हें मिल जानी थी (आयत 6)।

ख. न होने पर उनका कल्याण वापस उन्हें मिल जाना था (आयत 6)।

4. उन्हें उसी घर में रहना था (आयत 7)।
5. उन्हें जो कुछ मिले वही खाना और पीना था (आयत 7)।
6. उन्हें ''घर-घर नहीं फिरना'' था (आयत 7)।

नोट: आजकल बहुत से लोग, जो इस आज्ञा के **भाग** का दावा करने की कोशिश करते हैं, एकदम ऊपर के 2

और 6 प्वांयटों को नज़रअन्दाज़ करते हुए प्रतीत होते हैं। वे हर किसी को नमस्कार (यानी सलाम) कहने की कोशिश करते हैं और अपनी शिक्षाओं को लेकर ''*घर-घर*'' जाते हैं। यदि कोई भी व्यक्ति इस आज्ञा के *भाग* को लागू करने की कोशिश करता है तो उसे *सारी* आज्ञा को मानना चाहिए। यदि कोई इसके *भाग को नकारता* है, तो वह वास्तव में *सारी आज्ञा को नकारता* है। परन्तु यह पहले ही स्पष्ट हो जाना चाहिए कि यह आज्ञा आज हमारे लिए नहीं है या उन बारह प्रेरितों के लिए भी नहीं थी; बल्कि यह केवल ''सत्तर'' के लिए थी।

7. उन सत्तर को किसी नगर में ''ग्रहण'' किए जाने पर, जो कुछ उनके सामने परोसा गया हो, उसे खाना आवश्यक था (आयत 8)।

नोट: आज हम विशेषकर इस बात से प्रसन्न हैं कि यह आज्ञा हमारे लिए नहीं है; क्योंकि कुछ नगरों में जहां हमें ''ग्रहण किया'' जाता है, हम देखते हैं कि हमारे सामने परोसी गई कई चीज़ें ऐसी होती हैं जो शायद खाने के लायक न हों (हमारे अपने दृष्टिकोण से) या साफ़ सुथरी न हों! परन्तु हम जो खाना चाहें उसे उठाकर खाने को स्वतन्त्र हैं। यह दी गई आज्ञा उन सत्तर पर लागू होती थी, किसी दूसरे पर नहीं (जिस में हम भी आते हैं।)

8. सत्तर ने बीमारों को चंगा करना था (आयत 9)।

नोट: जहां तक इस आज्ञा की बात है, इस आयत से यह अधिकार उन सत्तर तक सीमित हो गया। आज किसी को भी बीमारों को चंगा करने के अधिकार के लिए इस आयत को देखने का कोई भी अधिकार नहीं है; क्योंकि वे सत्तर जिन्हें यह अधिकार दिया गया था, सब मर चुके हैं।

9. चंगाई पाने वालों को उन सत्तर ने कहना था, ''परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ पहुंचा है।''
10. जिस भी नगर में उन सत्तर को ''ग्रहण'' न किया जाता उसमें उन्होंने उस नगर की गलियों में जाकर कहना था, ''तुम्हारे नगर की धूल भी, जो हमारे पांवों में लगी है, हम तुम्हारे सामने झाड़ देते हैं, तौभी यह जान लो, कि परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ पहुंचा है'' (आयतें 10-11)।

घ. यीशु ने उन नगरों पर जिन्होंने उसके चेलों को स्वीकार नहीं करना था, श्राप दिया (आयतें 12-15)।
   1. यीशु ने कहा कि जिसने उन सत्तर को ''सुना'' उसने उसे भी सुना (आयत 16)।
   2. उसने कहा कि जिसने सत्तर को तुच्छ जाना उसने उसको भी तुच्छ जाना (आयत 16)।
   3. उसने कहा, ''जो मुझे तुच्छ जानता है, वह मेरे भेजने वाले को तुच्छ जानता है'' (आयत 16)।

ङ: उन्हें दी गई इस सीमित आज्ञा को पूरा करके वे सत्तर ''लौटे'' और उन्होंने रिपोर्ट दी (आयत 17)।

च. यीशु ने उन्हें और अधिकार दिया (आयत 19)।
   1. सांपों और बिच्छुओं को रौंदने का
   2. शत्रु पर

छ. यीशु ने उन्हें आनन्द करने की आज्ञा दी, इस कारण नहीं कि उन्हें ऐसा अधिकार मिला है, बल्कि इस कारण कि उनके नाम स्वर्ग में लिखे गए हैं (आयत 20)।

नोट: अध्ययन की अब तक की शृंखला में हम ने इन तथ्यों को स्थापित किया है:

1. वे आज्ञाएं जो परमेश्वर ने मूसा से पहले लोगों और परिवारों को दी थीं केवल उन्हीं पर लागू होती हैं जिन्हें मूल में दी गई थीं; इस कारण जब वे मर गए तो कही गई उन आज्ञाओं का ज़ोर भी उन के साथ मर गया।
2. व्यवस्था, जिसमें दस आज्ञाएं भी थीं, परमेश्वर द्वारा मूसा को सीनै पहाड़ पर दी गई थी, केवल इस्राएल की संतान पर लागू होती थीं और इसका ज़ोर कलवरी पर खत्म हो गया था (ईस्वी 33), जब इसे सांकेतिक रूप में मसीह के साथ ''क्रूस पर कीलों से ठोक दिया'' गया था।
3. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का प्रचार और बपतिस्मा दोनों ही क्रूस पर खत्म हो गए।
4. विशेष आज्ञा (मत्ती 10) बारह प्रेरितों के लिए ही थी, जिन्होंने ''मनुष्य के पुत्र के आने तक'' इस्राएल के नगरों में जाना था।
5. दूसरी विशेष आज्ञा (लूका 10) उन ''सत्तर'' के लिए थी जिन्हें प्रभु ने पहले ''जिस जिस नगर और जगह पर वह आप आने पर था,'' भेजा था।

इन सत्तर ने इस आज्ञा को पूरा किया, जो केवल उन्हीं के लिए थी और वापस आकर रिपोर्ट दी। यीशु जहां-जहां वह स्वयं जाने वाला था वहां जाने का काम उनके हर नगर और गांव में जाने से पूरा हो गया। तब क्रूस पर चढ़ाया जाना हुआ, यह तथ्य कि उन्हें उससे पहले जाना था, उनके कमीशन को पूरा करने का प्रमाण है।

पहले की किसी भी आज्ञा के साथ *एक भी* आज्ञा *मसीही युग में हमारे विवेक पर लागू नहीं होती* है। सचमुच पुरखाओं की आज्ञाओं, यहूदी व्यवस्था, यहून्ना के प्रचार और बपतिस्मा के साथ-साथ सीमित आज्ञाओं का अध्ययन करने पर हमें काफ़ी ज्ञान मिल सकता है (रोमियों 15:4; 2 कुरिन्थियों 10:11)। परन्तु हम किसके अधीन हैं उसे जानने के लिए अगले पाठ में देखें।

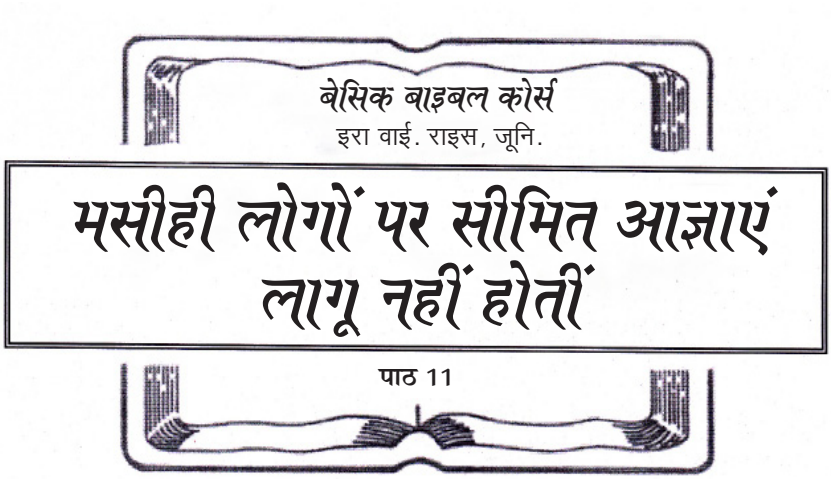

पाठ 11 के प्रश्न

Registration No.....

Grade .....

Name.....

Address.....

.....

Pin.....Mobile No.....

e-mail.....

(कृपया पता अंग्रेजी के बड़े अक्षरों में ही लिखें।)

1. यीशु ने कितनी ''सीमित'' आज्ञाएं दी थीं? .....
2. इन सीमित आज्ञाओं में से पहली आज्ञा किसे दी गई थी? .....
3. इस पहली आज्ञा के अनुसार (मत्ती 10), यीशु ने कुछ लोगों को अशुद्ध आत्माओं (या दुष्टात्माओं) को निकालने, बीमारों को चंगा करने, कोढ़ियों को शुद्ध करने और मरे हुओं को जिलाने का अधिकार दिया। बताएं कि ऐसा अधिकार **किन को** दिया गया था:

   .....
4. यीशु ने यह पूरी तरह से कैसे सुनिश्चित किया कि हमें इस बात में गलती न लगे कि यह आज्ञा किन लोगों तक सीमित थी? .....

   .....
5. क्या इस सीमित आज्ञा के अधीन रहने वाले लोगों ने अन्यजातियों के पास जाना था?.....

   .....क्या समारियो के पास जाना था? .....
6. यदि नहीं तो उन्होंने किसके पास जाना था? .....
7. ''इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ें'' कौन थीं? .....
8. क्या कोई व्यक्ति जो इस सीमित आज्ञा के अधीन हो अपने साथ कोई पैसा ले जा सकता था? .....यदि नहीं तो क्यों नहीं? .....

   .....
9. सफ़री थैला, दो कुर्ते, जूते और लाठियां ले जा सकता था? .....
10. कोई व्यक्ति इस आयत से बीमारों को चंगा करने का दावा करके पैसा लेने की कोशिश करके आज निरन्तरता को बनाए रख सकता है? ..... समझाएं कि कैसे: .....

11. किसी नगर में जाने पर प्रेरितों को किसके साथ रहना था? .....

12. किसी घर या नगर के उन्हें ''ग्रहण'' न करने पर यीशु ने उन्हें क्या करने की आज्ञा दी थी?

.....

13. किन लोगों को कैसे या क्या बोलने की चिंता न करने को कहा गया था? .....

किस परिस्थिति में? .....

14. क्या यह आयत बताती है कि किसी ने ऐसा किया? .....

15. बोलने के लिए यदि शब्द दिए जाने थे तो बताई गई परिस्थिति में बोलने वाला कौन होना था? .....

16. क्या यह आज्ञा आज पवित्र आत्मा के सीधे कार्य के द्वारा बोलने का दावा करने वाले लोगों को सही ठहराती है? .....

समझाएं कि कैसे: .....

17. प्रेरितों को किससे डरने की आज्ञा दी गई थी- मनुष्य से या परमेश्वर से? .....

18. यीशु पृथ्वी पर मिलाप कराने के लिए आया या तलवार चलाने के लिए?

.....

19. इसको ध्यान में रखते हुए कितने लोगों को इकट्ठे सफ़र करना चाहिए? .....

बारह प्रेरितों को दी गई सीमित आज्ञा और ''अन्य सत्तर'' को दी गई सीमित आज्ञा में क्या समानता थी? .....

.....

20. सत्तर को कहां तक जाने को कहा गया था? .....

.....

21. क्या सत्तर को मार्ग में आने वाले हर किसी को सलाम करना आवश्यक था?

.....

22. क्या सत्तर को घर-घर जाने को कहा गया था? .....

23. उन सत्तर ने क्या खाना था? .....

24. लूका 10 अध्याय में सीमित आज्ञा में सत्तर को छोड़ और किसे बीमारों को चंगा करने का अधिकार दिया गया था? .....

.....

25. क्या इन दोनों सीमित आज्ञाओं में से कोई भी **आज** किसी पर लागू होती है? .....

आपका कोई प्रश्न है तो उसे यहां लिखें .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

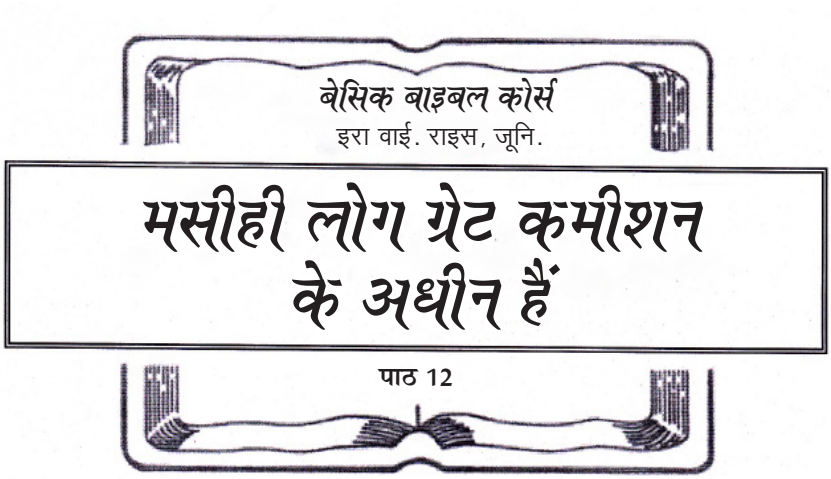

परिचय: पिछले पाठों में जो कुछ हमने सीखा है, उससे हमने जाना:

1) कि परमेश्वर ने मनुष्य पर अपनी इच्छा को धर्म के तीन अलग, पृथक ''प्रबन्धों'' में प्रकट किया है;
2) कि *पहले* प्रबन्ध में जो बातें ''पुरखाओं'' पर लागू होती थीं, वे *दूसरे* प्रबन्ध में इस्राएल की संतान पर लागू नहीं होती थीं;
3) जो बातें दूसरे प्रबन्ध (अर्थात *दस आज्ञाओं सहित* ''मूसा की व्यवस्था'') में इस्राएल की संतान पर लागू होती थीं वे *तीसरे* प्रबन्ध में मसीही लोगों पर या किसी भी दूसरे व्यक्ति पर लागू नहीं होती हैं।

दूसरे (यानी यहूदी) प्रबन्ध के अन्त में हमने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के प्रचार और बपतिस्मे को और दो बहुत ही सीमित आज्ञाओं को भी देखा, जो मसीह के क्रूस पर, पुराने नियम के साथ-साथ जल्द ही खत्म होने वाली थीं (ईस्वी 33)।

अब जब कि हमारे मनों में बिल्कुल साफ है कि हम में से **किसी पर** जो क्रूस के **बाद से** रहा हो, वह **कोई भी** बात लागू नहीं होती जो क्रूस से **पहले** के लोगों पर लागू होती थी, तो अगला प्रश्न जिसका उत्तर दिया जाना है, वह यह है कि **यदि आज इन में से कोई भी बात लागू नहीं होती तो फिर आज मनुष्य के लिए परमेश्वर की इच्छा का कौन सा भाग लागू होता है?**

इस अध्ययन का बोझ यह दिखाना रहेगा कि मृत्यु, दफ़नाए जाने और पुन: जी उठने के **बाद**, यीशु ने एक आज्ञा दी, जो अपने आप में इतनी व्यापक थी कि इसमें पिन्तेकुस्त के दिन से (ईस्वी 33) लेकर **जगत के अन्त तक आने वाले सारे समय** के लिए, **सारे संसार** के **हर व्यक्ति** और **हर जाति** का ध्यान था।

I. **मत्ती 28:18-20 के अनुसार—**

क. अपनी मृत्यु, दफ़नाए जाने और जी उठने के बाद यीशु ने घोषणा की कि स्वर्ग और पृथ्वी दोनों में **सारा अधिकार** उसे दिया गया है (आयत 18)।

ख. इसलिए उसने अपने प्रेरितों को

1. **जाकर** सब जातियों के लोगों को **चेला बनाने**
2. उन्हें
   क. पिता
   ख. और पुत्र
   ग. और पवित्र आत्मा के नाम से (आयत 19) बपतिस्मा देने और
3. उन्हें वे ''**सब बातें मानना**'' *सिखाने* की आज्ञा दी, जिनकी उसने उन्हें आज्ञा दी थी (आयत 20)।

ग. ऐसा होने पर यीशु ने सदा तक, यहां तक कि जगत के अन्त तक उनके ''संग'' रहने का वचन दिया।

नोट: पृथ्वी पर रहते और क्रूस पर अपनी मृत्यु से पहले यीशु ने चाहे बहुत सी बातें **सिखाई** (या उनकी ''**आज्ञा दी**'') थीं, परन्तु वे पुराने नियम की शर्तों से **अलग** थीं। परन्तु जैसा कि हम ने पिछले पाठ से सीखा था, ये आज्ञाएं जिन में उसका नया नियम होना था, उसकी मृत्यु होने से पहले *प्रभावी* नहीं हो सकती थीं (इब्रानियों 9:15-17)। इसलिए यीशु ने अपनी मृत्यु, दफ़नाए जाने और दोबारा जी उठने से पहले प्रेरितों को सब जातियों को चेला बनाने और बपतिस्मा देने, बपतिस्मा पाने वालों को ''सब बातें, जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है'' देने का अधिकार नहीं दिया।

II. *मरकुस 16:15-16 के अनुसार*

क. यीशु ने आज्ञा दी कि

1. सारे जगत में जाकर
2. सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो

ख. यीशु ने प्रतिज्ञा की कि जो

1. *विश्वास करे* और
2. *बपतिस्मा ले*
3. उसी का *उद्धार होगा*

ग. यीशु ने चेतावनी दी कि

1. *विश्वास न करने* वाले लोग *दण्ड पाएंगे* (यानी दोषी ठहराए जाएंगे)।

III. *लूका 24:47-49 के अनुसार*

क. यीशु ने यह कहते हुए भविष्यवाणी को उद्धृत किया, ''यों लिखा है कि मसीह दुख उठाएगा, और तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठेगा, और

1. *मन फिराव* का और
2. *पापों की क्षमा* का प्रचार

क. यरूशलेम से लेकर
ख. उसी के नाम में
ग. सब जातियों में किया जाएगा।

ख. यीशु के प्रेरितों ने इस आज्ञा को तुरन्त लागू नहीं करना था; बल्कि उन्हें ऊपर से ''सामर्थ'' पाने तक यरूशलेम में ''ठहरे'' रहना था।

नोट: यहां हमारे पास यीशु मसीह द्वारा अपनी मृत्यु, दफ़नाए जाने और जी उठने के बाद दिए गए महान विश्वव्यापी, सदा तक रहने वाले कमीशन यानी आज्ञा के तीन अलग-अलग विवरण हैं। मत्ती, मरकुस, लूका ने जो कुछ यीशु ने आज्ञा दी, उसका भाग लिखा है; परन्तु उन में से किसी ने भी इसे सम्पूर्ण नहीं लिखा है। इसे सम्पूर्ण रूप में पाने के लिए तीनों को इकट्ठे मिलाना होगा। नीचे दिए गए इस मेल के लिए हमारा तैयार किया चार्ट देखें। ध्यान दें कि समान लगने वाली बातें एक ही कॉलम में एक-दूसरे के सामने रखी गई हैं; प्रत्येक लेखक की बात को एक-दूसरे के सामने रखा गया है। चार्ट के नीचे ''कुल'' शब्द के सामने हमने इस कमीशन से सम्बन्धित मत्ती, मरकुस, और लूका के कुल जोड़ को

ग्रेट कमीशन

मत्ती 28	*जाओ* आयत 19	*चेले बनाओ* आयत 19		*सब जातियों के लोगों को* आयत 19			*बपतिस्मा दो* आयत 19	
मरकुस 16	*जाकर* आयत 15	*प्रचार करो* आयत 15	*सुसमाचार* आयत 15	*सारी सृष्टि के लोगों को* आयत 15	*जो विश्वास करे* आयत 16		*बपतिस्मा ले* आयत 16	*उद्धार होगा* आयत 16
लूका 24		*प्रचार* आयत 47		*सब जातियों में* आयत 47		*मन फिराव* आयत 47		*पापों की क्षमा* आयत47
कुल	*जाओ*	*चेले बनाओ और प्रचार करो*	*सुसमाचार सुनाओ*	*सारे संसार की सब जातियों के सब लोगों में*	*जो विश्वास करे*	*मन फिराए*	*और बपतिस्मा ले*	*उसका उद्धार होगा; पापों की क्षमा मिलेगी*

(इस प्रकार पश्चात्तापी, बपतिस्मा लिए हुए विश्वासियों को अपने प्रेरितों को सिखाई गई यीशु की ''सब बातें मानना'' सिखाना था)।

नोट: याद रखें कि उन्होंने इस ग्रेट कमीशन के अधीन अपना काम तुरन्त आरम्भ नहीं करना था; इसके बजाय उन्हें ऊपर से सामर्थ पा लेने तक यरूशलेम में ठहरे रहना आवश्यक था। इस कमीशन का यरूशलेम से आरम्भ होना भी आवश्यक था (लूका 24:47)। लूका ने प्रेरितों के काम की पुस्तक भी लिखी है। लूका रचित सुसमाचार को ''पहली पुस्तिका'' कहते हुए वह (लूका) आयत 1 में अपने पाठकों को यह याद दिलाते हुए कि यीशु ने अपने प्रेरितों को आज्ञा दी थी कि

''यरूशलेम को न छोड़ो, परन्तु पिता की प्रतिज्ञा के पूरे होने की बाट जोहते रहो'' दोनों पुस्तकों को इकट्ठा मिला देता है। यह वायदा करते हुए कि उन्हें ''पवित्र आत्मा से बपतिस्मा'' मिलेगा (आयत 5) उसने कहा, ''जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा, तब तुम सामर्थ पाओगे और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे'' (आयत 8)।

इसलिए यरूशलेम में ''बाट जोहते'' हुए ही उन्हें अगले अध्याय (प्रेरितों 2) में पिन्तेकुस्त के दिन ''ऊपर से सामर्थ'' मिलनी थी। ''आरम्भ में यरूशलेम में'' जो कुछ हुआ (नीचे चार्ट देखें) उसे जो कुछ उन्हें ग्रेट कमीशन में आज्ञा दी गई थी (ऊपर चार्ट देखें), से मिलाएं।

''यरूशलेम से लेकर''

यरूशलेम में आयत 5	*पतरस खड़ा हुआ* आयत 14	*उसने सुसमाचार सुनाया* आयतें 14–36	*हर एक जाति में से भक्त* आयत 5	*''हृदय छिद गए''* आयत 37	*''मन फिराने'' को कहा गया* आयत 38	*बपतिस्मा लो* आयत 38	*पापों की क्षमा के लिए*

नोट: सीधी तुलना के लिए दिए गए इन दोनों चार्टों का महत्व कम नहीं आंका जा सकता। मत्ती, मरकुस और लूका द्वारा लिखे ग्रेट कमीशन का चार्ट दिखाता है कि इस कमीशन के अधीन इसकी आज्ञा देने वाले के द्वारा क्या किए जाने और सिखाने के लिए अधिकृत किया गया था। ''यरूशलेम से लेकर'' (प्रेरितों 2 अध्याय) वाला चार्ट दिखाता है कि इसे नये (मसीही) के प्रबन्ध से ही अधिकृत किया गया और सिखाया गया, जिसका आरम्भ पिन्तेकुस्त के दिन हुआ था (ईस्वी 33)। अब प्रेरितों 2 अध्याय पर विस्तार से ध्यान देते हैं:

IV. *प्रेरितों 2 बताता है कि ''आरम्भ'' में क्या हुआ और क्या सिखाया गया:*

क. आयत 1 बताती है कि यह ''पिन्तेकुस्त के दिन'' हुआ था।

ख. आयतें 2–4 दिखाती हैं कि पवित्र आत्मा प्रेरितों पर उतरा था।

ग. आयत 5 घटनाओं के दृश्य को ''यरूशलेम'' में दिखाती है।
नोट: याद रखें कि लूका 24:47 में कहा गया था कि इस कमीशन के अधीन प्रचार का आरम्भ यरूशलेम में होगा और ''सब जातियों में'' होगा। ''आकाश के नीचे की हर जाति'' का प्रतिनिधित्व उस दिन यरूशलेम में किया गया था।

घ. आयत 6 भीड़ लग जाने और उनके घबरा जाने का वर्णन करती है क्योंकि हर एक को अपनी-अपनी भाषा समझ आ रही थी।

ङ. आयतें 9–11 में वहां बोली गई भाषाओं की सूची है।

च. आयतें 12–13 भीड़ के मन की उलझन को दिखाती हैं क्योंकि अलग-अलग लोगों ने यह समझने की कोशिश की थी कि 12 अनपढ़ गलीली एक ही समय में 15 अलग-अलग भाषाओं को इस प्रकार से कैसे बोल सकते हैं कि उनकी समझ सब को आ जाए।

छ. आयतें 14-36 में बताया गया है कि पतरस ने ग्रेट कमीशन के अधीन दिए गए सबसे पहले सुसमाचार संदेश को सुनाने के लिए उनकी दिलचस्पी और उलझन से अवसर का लाभ उठाया।

नोट: यहां से आगे (पिन्तेकुस्त के दिन—प्रेरितों 2 अध्याय) ''नया दिन'' लूका और बाइबल के बाद के लेखकों द्वारा स्पष्ट रूप में ''प्रभावी'' बताया गया है।

ज. आयत 37 से पता चलता है कि पिन्तेकुस्त के दिन यहूदियों की एकत्र हुई भीड़ पतरस के प्रचार से इतनी कायल हो गई कि उनके ''हृदय छिद गए'' अर्थात उन्होंने उस पर जो कुछ उसने कहा था, विश्वास किया या उससे निरुत्तर हो गए, जिस कारण वे पूछने लगे कि, ''हे भाइयो, *हम क्या करें?*''

झ. आयत 38 बताती है कि पतरस का उत्तर क्या था, उसने उन्हें आज्ञा दी।

1. *मन फिराओ* और
2. *बपतिस्मा* लो

नोट: इन विश्वास करने वालों को यानी उन में से हर किसी को, 1) यीशु मसीह के नाम में, 2) पापों की क्षमा के लिए, और 3) पवित्र आत्मा का दान पाने के लिए दोनों बातें करनी आवश्यक थीं

आयत 40 भी दिखाती है कि ये बातें उद्धार के लिए थीं। पतरस ने उन्हें समझाया कि ''अपने आपको *बचाओ।*''

ञ. आयत 41 ध्यान दिलाती है कि जिन्होंने पतरस का ''वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया।'' लगभग 3,000 आत्माएं ''उन में मिलाई गईं'' (आयत 47 दिखाती है कि उन्हें मिलाने का काम प्रभु ने किया था और यह कि उन्हें ''जिसमें मिलाया'' गया था उसे ''कलीसिया'' कहा गया।

नोट: ध्यान दें कि स्थापित तथ्य के रूप में होने के रूप में नये नियम की कलीसिया का यह पहला हवाला है। कलीसिया के पहले हवाले इसके भविष्य में होने की ओर आगे की ओर संकेत करते थे। परन्तु प्रेरितों 2 में पिन्तेकुस्त के दिन से आगे पूरी बाइबल में, इसे कहीं भी भविष्य के रूप में नहीं, बल्कि वर्तमान अस्तित्व के रूप में देखा गया है। इसके अलावा ध्यान दें कि इस ''कलीसिया'' की सदस्यता (किसी मानवीय कार्य) में इसे ''शामिल करके'' नहीं पाई जाती थी, बल्कि प्रभु ही उद्धार पाने वालों को इसमें ''मिला'' देता था (एक ईश्वरीय कार्य)।

मनुष्य की बनाई कलीसियाएं जिनमें मनुष्यों के बनाए संस्कार के द्वारा ''सदस्यता'' दी जा सकती है वह कलीसिया नहीं है जिसे प्रेरितों 2 अध्याय में यीशु ने बनाया था; क्योंकि उद्धार पाने वालों को उस कलीसिया में केवल प्रभु ही ''मिला'' सकता है। बेशक यीशु ने उस कलीसिया को छोड़ जिसे उसने स्वयं बनाया किसी और कलीसिया के अस्तित्व का अधिकार कभी नहीं दिया, सब को यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि नए नियम में कोई भी और कलीसिया, जिसके बारे में नये नियम में नहीं बताया गया है, उसे अस्तित्व में रहने का कोई अधिकार नहीं है। मनुष्यों की संगठित की गई सब कलीसियाएं जिनका उल्लेख नये नियम में नहीं हैं बिना किसी ईश्वरीय अधिकार के हैं। उद्धार पाए हुओं को प्रभु द्वारा

अपनी ही कलीसिया में मिलाया जाता है वरना इसका अर्थ यह हुआ कि उद्धार पाए हुए किसी भी व्यक्ति को मनुष्यों की बनाई हुई कलीसिया की सदस्यता लेने के लिए छोड़ा नहीं जाता। ''प्रभु उन्हें बचाता है, जो उसकी आज्ञा मानते हैं'' (इब्रानियों 5:9) इसलिए जो लोग प्रभु की आज्ञा मानते हैं, उनका उद्धार प्रभु द्वारा होता है। बल्कि उन्हें प्रभु के द्वारा ही प्रभु की कलीसिया में मिलाया जाता है। इस कारण वह कलीसिया जिसका आरम्भ प्रेरितों के काम के दूसरे अध्याय में हुआ था, ही वह कलीसिया है जो किसी प्रकार प्रभु के सामने टिक सकती है और सब लोग जो नये नियम की शर्तों के अनुसार ''उद्धार पाए हुए'' हैं, वे इससे डरते हैं।

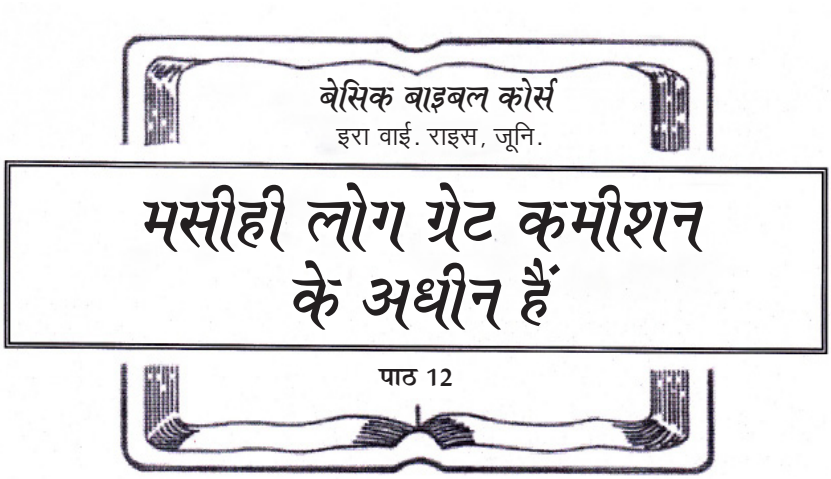

पाठ 12 के प्रश्न

Registration No.....

Grade .....

Name.....

Address.....

.....

Pin.....Mobile No.....

e-mail.....

(कृपया पता अंग्रेजी के बड़े अक्षरों में ही लिखें।)

1. क्या उन आज्ञाओं में से कोई, जिसे परमेश्वर ने मूसा से पहले पुरखाओं को दिया था, मसीही युग में हमारे विवेकों पर लागू होती है ? .....

2. क्या मसीही लोगों के लिए सीनै पहाड़ पर मूसा के द्वारा परमेश्वर की ओर से दी गई दस आज्ञाएं मानना आवश्यक है ? .....

3. क्या यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले द्वारा कही गई या अधिकृत किसी बात को मसीही प्रबन्ध के दौरान मानना आवश्यक है ? .....

4. ''बारह'' और ''सत्तर'' को दी गई अलग-अलग दो सीमित आज्ञाएं कौन सी हैं ? क्या ये आज्ञाएं आज भी प्रभावी हैं ? ..... समझाएं: .....

   .....

5. यदि इन में से कोई भी ईश्वरीय शर्त क्रूस के बाद प्रभावी नहीं रही तो हमारे ऊपर जो आज मसीही प्रबन्ध में रहते हैं, कौन सी आज्ञाएं लागू होती हैं ?.....

   .....

6. उन आयतों को बताएं जिनसे इस आज्ञा या कमीशन की शर्तें तय होती हैं: .....

   .....

7. यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने, दफ़नाए जाने और जी उठने के बाद, पिता ने उसे कितना अधिकार दिया ? .....

   .....

8. क्या यीशु ने इस नये मिले अधिकार का इस्तेमाल किया ? .....
   यदि हां तो उसने इसका क्या इस्तेमाल किया ? .....

   .....

9. यीशु के *ग्रेट कमीशन* देते हुए कही गई बातें लिखते हुए क्या मत्ती, मरकुस और लूका सभी ने पूरा-पूरा इसे लिखा? .....

10. यदि परमेश्वर की प्रेरणा पाए हर लेखक ने ग्रेट कमीशन देते हुए यीशु द्वारा कही बात का केवल एक *भाग* लिखा, तो हमें इसे *पूरा* जानने के लिए क्या करना होगा?.....

.....

11. किन लेखकों ने दिखाया कि यीशु ने आज्ञा दी कि ''जाओ?''.....

.....

12. कौन से लेखक यह दिखाते हैं कि सिखाना और प्रचार करना आवश्यक था?.....

.....

13. किस लेखक ने हमें बताया कि ''सुसमाचार'' सुनाया जाना था?.....

.....

14. जो कुछ इन सभी लेखकों ने लिखा है उसे मिलाने पर सुसमाचार किन्हें सुनाया जाना था?

.....

15. किस लेखक ने कहा कि *विश्वास* आवश्यक है? .....

किस लेखक ने कहा कि *मन फिराव* आवश्यक है? .....

16. किन लेखकों ने कहा कि *बपतिस्मा* आवश्यक है। .....

17. इस ग्रेट कमीशन की शर्तों के अनुसार *विश्वास करने, मन फिराने* और *बपतिस्मा* लेने वालों को कौन सी आशीष (या आशिषें) दी जानी थीं? .....

.....

18. क्या ग्रेट कमीशन केवल प्रेरितों के लिए था या दूसरों के लिए भी है? .....

.....

वे दूसरे कौन से लोग हैं ? .....

19. क्या प्रेरितों 2 अध्याय वाला पिन्तेकुस्त का दिन, यरूशलेम से लेकर ग्रेट कमीशन में दी गई प्रभु की आज्ञा से मेल खाता है ? .....

20. उस दिन कितने लोग कलीसिया के ''सदस्य'' बने थे ? .....

.....

आपका कोई प्रश्न है तो उसे यहां लिखें .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

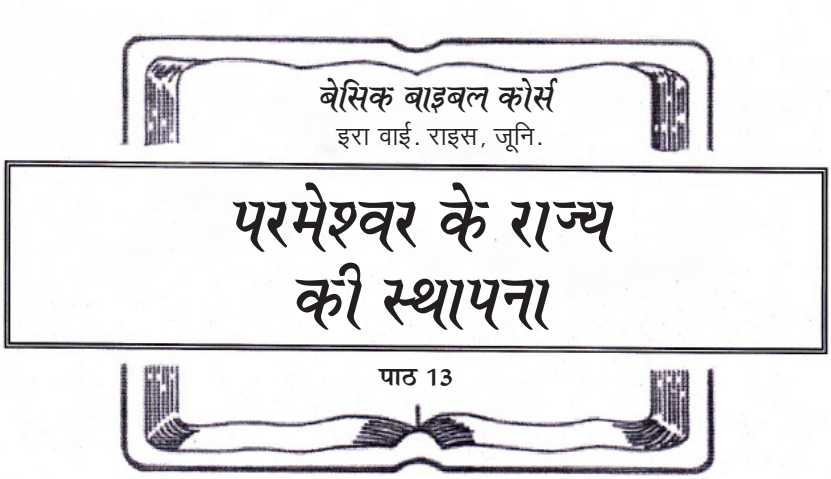

परिचय: पहले यह दिखाकर कि **कलवरी से पहले** परमेश्वर द्वारा दी गई **सभी आज्ञाएं यीशु मसीह के** क्रूस पर चढ़ाए जाने के समय **तुरन्त बंद हो गईं,** पाठ 12 में हमने जाना था कि अपनी मृत्यु, दफ़नाए जाने और जी उठने के बाद उसके द्वारा एक **नई** आज्ञा दी गई। यह नई, महान और सब को समेटने वाली, विश्वव्यापी आज्ञा यीशु ने **स्वर्ग** और **पृथ्वी का सारा अधिकार** पाने के बाद दी। लागू हो जाने के बाद इसे **जगत के अन्त तक** प्रभावी रहना था। हमने देखा कि पहली बार यह **प्रेरितों के काम 2 अध्याय** में पिन्तेकुस्त वाले दिन से लागू हुई थी। उस दिन के बाद से **नया नियम** जिसकी तैयारी पृथ्वी पर रहने के समय से यीशु कर रहा था, प्रभावी हो गया। इसके बाद लोगों को मूसा या यहां तक कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के पीछे चलने के लिए नहीं बल्कि यीशु मसीह के पीछे चलने को कहा जाता था।

इस कारण हमें यह निष्कर्ष निकालना पड़ेगा कि मनुष्यजाति को परमेश्वर की प्रकट इच्छा का द्वार प्रेरितों 2 वाले पिन्तेकुस्त के उस बड़े और प्रसिद्ध दिन से खुला। वह दिन **कितना** बड़ा और प्रसिद्ध था इसे हम शीघ्र ही देखेंगे। क्योंकि जैसा हम इस पाठ से सीखेंगे, **इसी दिन, परमेश्वर का राज्य,** जिसकी भविष्यवाणी नबियों के द्वारा की गई थी और यूहन्ना और यीशु द्वारा उसके निकट होने का प्रचार किया गया था, अन्ततः स्थापित हो गया।

परन्तु इस तथ्य का **दावा करना** एक बात है जबकि इसे **साबित** करना बिल्कुल अलग बात। इस अध्ययन का डिज़ाइन निर्णायक ढंग से यह दिखाना रहेगा कि प्रेरितों 2 अध्याय वाले पिन्तेकुस्त के दिन से पहले परमेश्वर के राज्य से सम्बन्धित हर वचन में इसके आने की भविष्यवाणी थी कि इसके आने की पवित्र शास्त्र की हर शर्त उसी दिन पूरी हुई और उसी दिन से लेकर पवित्र शास्त्र में राज्य को अब **भविष्य की नहीं,** बल्कि **आ चुके** राज्य के रूप में माना जाता है। इस कारण परमेश्वर के राज्य से सम्बन्धित पवित्र शास्त्र की भविष्यवाणी अचानक यहां पर इतिहास में बन जाती है ...

I. *नबूकदेस्सर के स्वप्न की दानिय्येल नबी की व्याख्या* (पढ़े दानिय्येल 2:1-44)।

क. मसीह से लगभग 600 साल पहले *बाबुल यानी बेबिलोन का राजा* हुआ था, जिसका नाम नबूकदनेस्सर था (दानिय्येल 1:1)।

1. बाबुल यानी बेबिलोन का शासन उस समय संसार भर में फैला हुआ था।
   क. इस कारण नबूकदनेस्सर को छोड़ संसार के सब राजा उसके अधीन थे।
   ख. नबूकदनेस्सर *राजाओं का राजा* था।

ख. उसके अपने शासन के दूसरे वर्ष में नबूकदनेस्सर को स्वप्न आने लगे जिससे उसका मन परेशान रहता था और **उसे नींद न** आती थी (दानिय्येल 2:1)।

1. उसने अपने जादूगरों, ज्योतिषियों, तंत्रियों, और टोनहों और कसदियों से अपने स्वप्नों को बताने का निर्णय लिया (आयत 2)।
2. उन्हें अपने सामने बुलाकर नबूकदनेस्सर ने शर्त रखी कि वे उसे बताएं कि
   क. उसका स्वप्न क्या था और
   ख. उसका अर्थ क्या था (आयतें 2-9)।
3. कसदियों ने तर्क दिया कि पृथ्वी भर में ऐसा कोई नहीं जो ऐसी शर्त को पूरा कर सके (आयतें 10-11)।
4. क्रोध में नबूकदनेस्सर ने आदेश दिया कि बाबुल के सभी पंडितों का नाश कर दिया जाए (आयतें 12-13)।
5. इस्राएल का एक बालक दानिय्येल था, जिसे परमेश्वर ने ज्ञान और हर प्रकार की विद्या और समझ दी थी जिससे उसे *दर्शनों* और *स्वप्नों* के *अर्थ* मालूम हो जाएं (देखें दानिय्येल 1:17)।
6. दानिय्येल ने राजा से *समय मांगा* और कहा कि वह उसके *स्वप्न का अर्थ* बताएगा (2:14-18)।
7. रात को दर्शन में दानिय्येल पर *भेद प्रकट* हो गया (आयत 19)।
   क. इसके लिए दानिय्येल ने परमेश्वर का धन्यवाद किया (आयतें 20-23)।
8. दानिय्येल ने विनती की कि पण्डितों को नाश न किया जाए क्योंकि वह राजा को स्वप्न का अर्थ बताएगा (आयत 24)।
9. दानिय्येल को स्वप्न बताने के लिए *राजा के सामने लाया गया* (आयतें 25-30)।

ग. *दानिय्येल ने बताया कि नबूकदनेस्सर ने क्या स्वप्न देखा था* (आयतें 31-35)।

1. उसने कहा कि राजा ने एक *''बड़ी मूर्ति''* देखी थी
2. इस मूर्ति का *सिर सोने* का था
3. उसकी छाती और *भुजाएं* चांदी की
4. उसका *पेट* और *जांघें* पीतल की
5. उसकी *टांगें लोहे* की और उसके *पांव कुछ तो लोहे* के और *कुछ मिट्टी* के
6. एक *पत्थर बिना किसी के खोदे* आप ही आप *उस मूर्ति के पांवों पर लग कर* जो लोहे और मिट्टी के थे, उनको *चूर-चूर कर डाला।*
7. फिर लोहा, मिट्टी, पीतल, चांदी और सोना भी *सब चूर-चूर हो गए।*

क. वे भूसे के समान हो गए

ख. हवा ने उन्हें उड़ा दिया

8. जो *पत्थर* मूर्ति पर लगा था वह *बड़ा पहाड़ बनकर सारी पृथ्वी में फैल गया।*

घ. दानिय्येल स्वप्न का फल बताता है (आयतें 36-45)। उसने भविष्यवाणी की कि एक के बाद *एक चार बड़े साम्राज्य* होंगे।

1. इन राज्यों में से *पहला* नबूकदनेस्सर का अपना बाबुल का साम्राज्य था

   क. वह नबूकदनेस्सर को ''*महा राजाधिराज*'' बताता है।

   ख. उसका राज्य इतना बड़ा था कि ''जहां कहीं मनुष्य पाए जाते हैं, और मैदान के जीव जन्तु, और आकाश के पक्षी'' रहते थे, उन सब को परमेश्वर ने उसके हाथ में देकर उसे उन सब का अधिकारी बना दिया था।

   ग. नबूकदनेस्सर ''*सोने का सिर*'' था (आयत 38)।

2. नबूकदनेस्सर के *बाद* ''एक राज्य'' होना था जो उससे छोटा होना था (आयत 39) ... ''छाती और भुजाएं चांदी की''।

   नोट: विश्व इतिहास से पता चलता है कि नबूकदनेस्सर के *बाबुल (बेबिलोन)* के साम्राज्य के बाद *अगला राज्य मादा फारस* का साम्राज्य था।

3. ''एक और *तीसरा* राज्य'' आने वाला था, ''जिसमें सारी पृथ्वी आ जाएगी'' (आयत 39)। ... ''पीतल'' ...

   नोट: मादा फारस के पतन के बाद विश्व इतिहास से पता चलता है कि यूनानी साम्राज्य आया जिसने सिकंदर महान की अगुआई में इससे कब्जा लिया।

4. *चौथा* राज्य (लोहे की तरह) मज़बूत होना था (आयत 40); परन्तु पांव कुछ लोहे के और कुछ मिट्टी के थे इस कारण यह थोड़ा मज़बूत और थोड़ा कमज़ोर होना था (आयतें 41-43)।

   नोट: विश्व इतिहास से पता चलता है कि चौथा और अंतिम विश्वव्यापी राज्य रोमी साम्राज्य था जोकि यूनान के बाद आया।

5. दानिय्येल कहता है कि ''*उन राजाओं के दिनों में*'' (अर्थात चौथे राज्य, रोमी साम्राज्य के दिनों में) *स्वर्ग का परमेश्वर* ''*एक राज्य*'' *खड़ा करेगा* (आयतें 44)।

   क. स्थापित हो जाने के बाद इस राज्य ने *कभी नष्ट नहीं* होना था।

   ख. परमेश्वर ने इस राज्य को ''दूसरे लोगों'' के हाथ नहीं देना था।

6. इस नये राज्य ने अन्य सभी राज्यों को, जिनका ऊपर जिक्र किया गया है चूर-चूर कर देना और उनका अन्त कर डालना था।

7. इस राज्य ने *सदा स्थिर* रहना था।

नोट: इस प्रकार मसीह से छह सदियां पहले दानिय्येल द्वारा स्पष्ट भविष्यवाणी कर दी गई कि परमेश्वर *रोमी साम्राज्य* के दिनों में ''*एक राज्य*'' *खड़ा* करने वाला है। रोमी साम्राज्य का आरम्भ मसीह से पहले की सदी के साथ ही हुआ था, इसकी मुख्य शक्ति अगली पांच सदियों तक रही, जो इसके 395 ईस्वी में इसके पूर्वी साम्राज्य और पश्चिमी साम्राज्य में विभाजित होने के बाद

धीरे-धीरे कम होकर अंत में खत्म हो गई। 100 ई. पू. और 395 ईस्वी के बीच के काल में कहीं । हमें परमेश्वर के राज्य की स्थापना की बात को पवित्र शास्त्र में से ढूंढ़ना होगा। बेशक इसी काल के दौरान यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला यह प्रचार करते हुए आया, '' 'मन फिराओ' क्योंकि स्वर्ग का *राज्य निकट* है'' (मत्ती 3:2)।

II. *राज्य की स्थापना भविष्य में 30 ईस्वी होनी थी।*
   क. इसी वर्ष यूहन्ना ने प्रचार किया था कि राज्य ''निकट'' है (मत्ती 3:2)।
   ख. ''निकट है'' की परिभाषा ''पास ही है'' या ''आने ही वाला है'' के रूप में की जाती है।

III. *यीशु मसीह ने भी उसी वर्ष प्रचार किया कि राज्य ''निकट है''* (मत्ती 4:17)।
   क. अपनी आदर्श प्रार्थना में उसने अपने चेलों से यह प्रार्थना करने को कहा कि *''तेरा राज्य आए''* (मत्ती 6:10)।
   नोट: यदि यह पहले ही आ चुका था तो उन्हें इस प्रकार प्रार्थना नहीं करनी चाहिए थी। यीशु ने उन्हें इसके आने के लिए प्रार्थना करने को कहा, इसका अर्थ यह है कि यह स्पष्ट है कि उस समय राज्य अभी भविष्य में होने वाली बात थी।
   ख. यीशु ने कहा कि मत्ती 16:28 में जिन लोगों की उसने बात की, उन में से कुछ लोगों ने तब तक नहीं मरना था जब तक *मनुष्य के पुत्र* (अर्थात मसीह) को ''अपने राज्य में आते'' हुआ देख न लेते।
   ग. मरकुस 9:1 वाले लोगों से यीशु ने कहा कि उन में से कुछ लोग तब तक नहीं मरेंगे जब तक वे *परमेश्वर के राज्य को आया हुआ न देख* लें।
      1. इस ने ''*सामर्थ के साथ*'' आना था (मरकुस 9:1)।
      2. ''सामर्थ'' *यरूशलेम में* आनी थी (लूका 24:49)।
      3. उन्हें ''*सामर्थ*'' तब मिलनी थी, जब *पवित्र आत्मा* ने उन पर आना था (प्रेरितों 1:8)।

IV. *राज्य की स्थापना से सम्बन्धित सभी भविष्यवाणियां प्रेरितों 2 अध्याय में पिन्तेकुस्त के दिन पूरी हो गईं।*
   क. राज्य की स्थापना *चौथे विश्वव्यापी राज्य* अर्थात *रोमी साम्राज्य* के दिनों में हो गई थी; *प्रेरितों 2* की घटना को ही उन दिनों में कहा गया था।
   ख. यहूदा ने तो फंदा लगा लिया था, परन्तु दूसरे लोग जिनसे यीशु ने बात की अन्य प्रेरितों सहित *अभी जीवित* थे।
   ग. *पिन्तेकुस्त का दिन* पूरी तरह से आ जाने पर *पवित्र आत्मा* प्रेरितों के ऊपर उतरा (प्रेरितों 2:1-4)।
      1. यह तथ्य यह साबित करने के लिए काफ़ी है कि *कुछ लोग अभी मरे नहीं* थे (मत्ती 16:28 और मरकुस 9:1)।

घ. *पवित्र आत्मा के उनके ऊपर उतरने* पर उन्हें ''*सामर्थ*'' दी गई थी।

1. वे अन्य-अन्य भाषाओं में बोल सकते थे,जो उन्होंने सीखी नहीं थीं (प्रेरितों 2:4, 6, 8)।

ङ. इस ''*सामर्थ*'' ने उन्हें *यरूशलेम* नगर में भर देना था।

1. ऐसा होने पर वे वहीं थे (तुलना प्रेरितों 2:5 से लूका 24:49)।

नोट: इसलिए आगे की घटनाओं से पता चलता है कि 600 साल से अधिक पहले जिस *राज्य की भविष्यवाणी दानिय्येल द्वारा की गई* थी वह अन्त में *प्रेरितों 2 अध्याय* में *पिन्तेकुस्त के दिन यरूशलेम में आरम्भ होकर ''स्थापित हो गया''* था।

V. *प्रेरितों 2 अध्याय वाले पिन्तेकुस्त से लेकर उसके बाद कभी भी राज्य को भविष्य में आने वाली किसी चीज़ के रूप में नहीं बल्कि अस्तित्व में बताया गया है, क्योंकि यह स्थापित हो चुका है।*

क. पौलुस ने कुलुस्से की कलीसिया के लोगों से कहा कि परमेश्वर ने उन्हें ''अंधकार के वश में से ... अपने प्रिय पुत्र के *राज्य* में'' *पहुंचा दिया* (कुलुस्सियों 1:13)।
नोट: यह बात 62-63 ईस्वी में अपने कारावास के दौरान पौलुस द्वारा लिखी गई थी। पौलुस और कुलुस्सियों को *राज्य में नहीं पहुंचाया जा सकता था यदि उस समय राज्य अस्तित्व में नहीं था।*

ख. आसिया की सात कलीसियाओं के नाम यूहन्ना ने (प्रकाशितवाक्य 1:4) उन्हें बताया कि वह ''*राज्य में*'' और ''कलेश में'' उनका भाई और सहभागी है (देखें आयत 9)
।

नोट: यहां फिर से असम्भव बात है, जो *जब तक राज्य उस समय पहले से स्थापित न हुआ हो, सही नहीं हो सकती* (ईस्वी 96)।

VI. *प्रेरितों 2 अध्याय वाले पिन्तेकुस्त में वापस चलते हुए यह स्पष्ट है कि वह राज्य जिसे परमेश्वर ने ''खड़ा किया'' और वह कलीसिया जिसे यीशु ने ''बनाया'' एक ही थे।*

क. मत्ती 16:18-19 में यीशु ने पतरस को यह बताने के बाद कि ''इस पत्थर पर मैं अपनी *कलीसिया* बनाऊंगा'' अगली आयत में उसे ''स्वर्ग के *राज्य* की कुंजियां'' देने का वचन दिया।

ख. प्रेरितों 2 अध्याय में *राज्य* की स्थापना के समय (ऊपर साबित किया गया है) लोगों के पतरस का संदेश मान लेने, उनके बपतिस्मा लेने पर उन्हें किसी चीज़ में ''*मिला लिया गया*'' था (आयत 41)।

ग. वह कोई चीज़ जिसमें वे *मिलाए गए* थे ''*कलीसिया*'' कहलाती है (आयत 47)।

सारांश: इसलिए इसका अर्थ यह है कि वह कलीसिया जिसे यीशु ने बनाया राज्य ही है जिसे स्वर्ग के परमेश्वर ने ''खड़ा करना'' था।

घ. दानिय्येल ने कहा था कि राज्य ''*कभी नष्ट नहीं*'' होगा; यीशु ने कहा कि कलीसिया पर ''*अधोलोक के फाटक प्रबल नहीं हो सकते*''

1. अभिव्यक्ति पर समानता क्यों,
2. क्योंकि दोनों एक ही बात हैं।

ङ यीशु *कलीसिया* का ''*सिर*'' है जोकि कलीसिया के लोगों से बनी ''देह'' है (इफिसियों 1:22-23; 1 कुरिन्थियों 12:12-27); बल्कि वह ''*राजाओं का राजा*'' भी है (प्रकाशितवाक्य 19:16)।

1. ''*राजा*'' है तो उसका *राज्य* होना आवश्यक है (कुलुस्सियों 1:13; प्रकाशितवाक्य 1:9)।
2. *कलीसिया के लोगों* से राज्य बनता है (इब्रानियों 12:28)।
3. *कलीसिया के लोग* ''*राजा*'' हैं (1 पतरस 2:9; प्रकाशितवाक्य 1:6)।
4. यीशु को अपने राज्य पर तब तक राज या शासन करना है जब तक मृत्यु का नाश नहीं हो जाता (1 कुरिन्थियों 15:24-28)। फिर वह राज्य को परमेश्वर पिता को सौंप देगा।

नोट: जब तक आपको यकीन न आए कि आप चार्ट और पाठ दोनों को समझते हैं तब तक पाठ से जोड़कर इस चार्ट का अध्ययन करते रहें।

बहुत जरूरी है ...

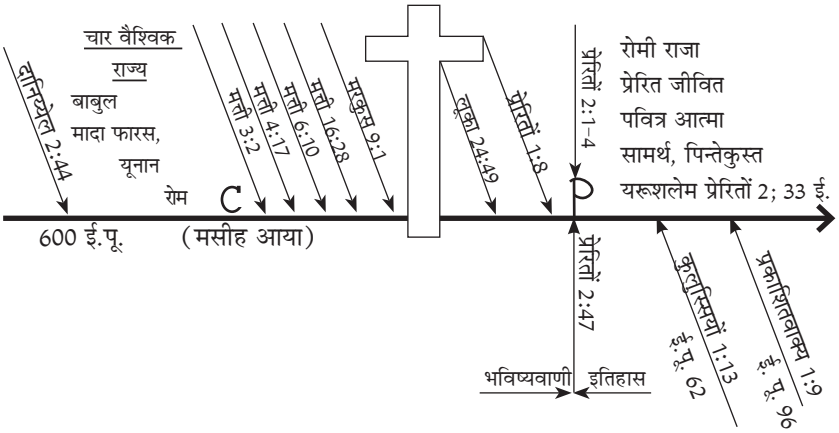

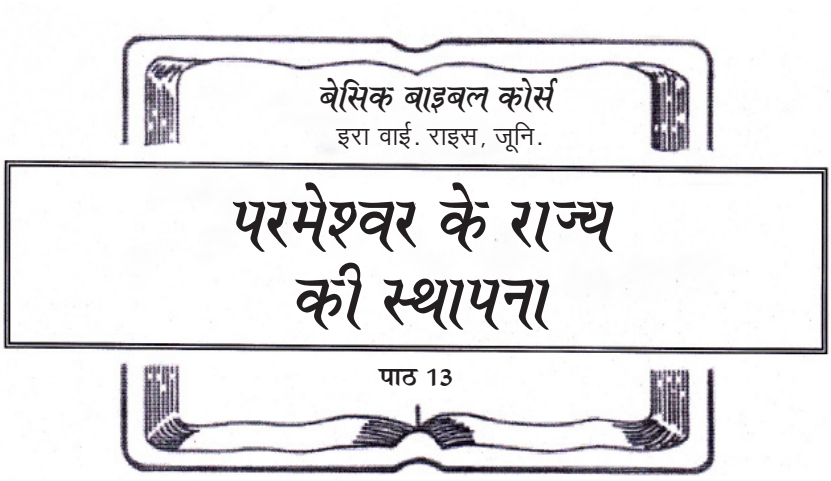

पाठ 13 के प्रश्न

Registration No.....

Grade .....

Name.....

Address.....

.....

Pin.....Mobile No.....

e-mail.....

(कृपया पता अंग्रेजी के बड़े अक्षरों में ही लिखें।)

1. स्वर्ग के परमेश्वर ने कितने राज्य "*स्थापित*" करने थे ? (दानिय्येल 2).....

2. *परमेश्वर का* राज्य किस विश्व राज्य के दौरान स्थापित होना था ?.....

3. स्थापित हो जाने के बाद क्या परमेश्वर का राज्य कभी नष्ट होना था ?.....

4. दानिय्येल द्वारा वर्णित संसार के राज्यों पर परमेश्वर के राज्य का क्या प्रभाव होना था ?

   .....

5. दानिय्येल ने परमेश्वर के राज्य के कितनी देर तक रहने की बात कही ?

   .....

6. यह संकेत देने के लिए कि उसके बात करने के समय अभी यह भविष्य में था यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने राज्य के विषय में क्या कहा ?.....

   .....

7. "*निकट आ गया है*" शब्दों से क्या अभिप्राय है ?.....

   .....

8. अपने चेलों को बताई गई यीशु की आदर्श प्रार्थना में आपको क्या पता चलता है कि उस समय परमेश्वर का राज्य अभी भविष्य में आने वाला था ?

   .....

9. मत्ती 16:18 और मरकुस 9:1 में यीशु ने बताया कि उसका राज्य आने पर उसके सुनने वालों में से कुछ लोगों ने अभी जीवित होना था। इसके लिए कहे गए उसके शब्दों को दोहराएं: .....

   .....

   .....

10. यीशु ने राज्य के आने के साथ और कौन सी बात बताई जो होने वाली थी ? (मरकुस 9:1)

.....

11. ''सामर्थ'' *कब* आनी थी ? (प्रेरितों 1:8).....

.....

12. ''सामर्थ'' *कहां* पर आनी थी ?.....

.....

13. प्रेरितों 2 अध्याय में जब पवित्र आत्मा उन पर उतरा तो क्या उन्हें सामर्थ मिली यदि हां तो *कौन सी* सामर्थ ?.....

.....

14. जब सामर्थ आई तो यह कौन सा दिन था ?.....

.....

15. प्रेरितों को जब यह सामर्थ मिली तो वे *कहां* थे ?.....

.....

16. दानिय्येल की भविष्यवाणी में बताए गए राजाओं ''के दिनों में'' क्या था ?

.....

17. क्या प्रेरितों 2 अध्याय में पिन्तेकुस्त के दिन स्थापित होने वाले परमेश्वर के राज्य की भविष्यवाणियां पूरी हो गईं ?.....

18. क्या प्रेरितों 2 अध्याय के *बाद* के पवित्र शास्त्र के हवाले राज्य के अभी भविष्य में आने का संकेत देते हैं या उसके *पहले से अस्तित्व* में होने का ?.....

.....

.....

19. यदि राज्य का अस्तित्व ही नहीं था तो पौलुस और यूहन्ना राज्य में हो सकते थे ?

    यदि हां तो कैसे ? .....

    .....

20. प्रेरितों 2 अध्याय में स्वर्ग के परमेश्वर द्वारा स्थापित किया गया राज्य क्या है ?

    .....

    .....

    आपका कोई प्रश्न है तो उसे यहां लिखें .....

    .....

    .....

    .....

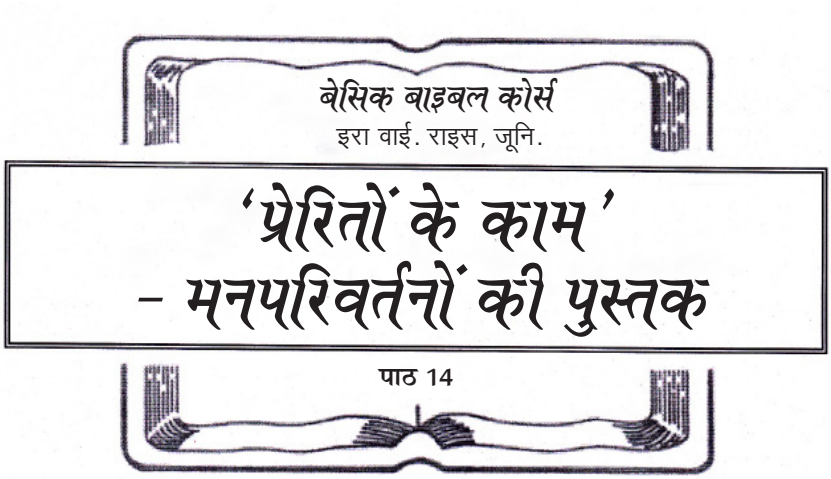

परिचय: प्रेरितों 2 अध्याय में पिन्तेकुस्त के दिन **कलीसिया** की स्थापना के बाद से, सदियों से कई कथित, ''मसीही'' कलीसियाओं में कई खतरनाक खाामियां आ गई हैं। इन में से कुछ खामियां, जो बहुत कम हैं, ''व्याख्या'' के द्वारा आई हैं। परन्तु अधिकतर खामियां या तो किसी ऐसी शिक्षा से आई हैं जो नया नियम में नहीं है या किसी ऐसी शिक्षा को न मानने के कारण हैं जो नया नियम बताता है।

नये नियम के कुछ सरल नियमों को ध्यान से देखने से ऐसी गलतियों से आसानी से बचा (या उन्हें सुधारा) जा सकता है। सुधारने के लिए 1 पतरस 4:11 एक बढ़िया ढंग होगा: ''यदि कोई बोले, तो *ऐसा बोले* **मानो परमेश्वर का वचन** है।'' इस प्रकार, जहां बाइबल **बोलती** है वहां बोलकर (और जहां बाइबल नहीं बोलती वहां न बोलकर), हम किसी बात को सिखाने के लिए न तो ''परमेश्वर के वचन'' में जोड़ें और न इसमें से निकालें ... व्याख्या की खामियों के सम्बन्ध में, हम याद रखें कि ''पवित्र शास्त्र की कोई भी भविष्यद्वाणी किसी की अपनी ही विचारधारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती'' (2 पतरस 1:20)। अपनी बनाई शिक्षाओं की किसी भी ''मनुष्य की इच्छा'' को, और ध्यान से ''कठिन'' हवालों का आमतौर पर उसी विषय पर अन्य वचनों से मिलान करने पर, हम अच्छी समझ पा सकते हैं।

परमेश्वर के लोगों में बाइबल के किसी भी और विषय को शायद ''कनवर्शन'' (या मनपरिवर्तन) से बढ़कर मानवीय गलती से तोड़ा मरोड़ा नहीं गया है। अपने अपने निजी कारणों के लिए सभी साम्प्रदायिक कलीसियाएं इस पर परमेश्वर के वचन से या तो **अधिक**, या **कम** या **कुछ और** शिक्षा देती हैं। मनपरिवर्तन पर बाइबल की शिक्षा के **भाग** से जुड़े होने का दावा करने वाले भी लगभग इसकी सब बातों को मानने से इनकार करते हैं। वे पक्षपात करते हैं जबकि नया नियम कोई पक्षपात नहीं करता, परिणाम यह होता है कि वे शिक्षा के एक भाग को ''अनिवार्य'' परन्तु किसी दूसरे भाग को ''अनावश्यक'' बताकर उसे नकार देते हैं। परन्तु जंगल में परीक्षा के समय जो कुछ प्रभु ने शैतान से कहा था उसके आधार पर हमें ऐसे तर्क की मूर्खता को समझना

चाहिए। यीशु ने कहा, ''मनुष्य केवल रोटी से ही नहीं परन्तु **हर एक वचन** से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है, जीवित रहेगा'' (मत्ती 4:4)।

मनपरिवर्तन के विषय की पूरी समझ की बात हो तो हम **मनपरिवर्तनों की पुस्तक** यानी **''प्रेरितों के काम''** की पुस्तक से बेहतर ध्यान, और कहां लगा सकते हैं! इस पुस्तक में चाहे **सभी** प्रेरितों के **सब** काम नहीं हैं, परन्तु इसमें **कुछ** प्रेरितों के **कुछ** काम हैं, जिनमें मुख्यतया **पतरस** (अध्याय 1 से 12) और **पौलुस** हैं (अध्याय 13 से 28)। लूका, जिसे पौलुस ने अपना ''प्रिय वैद्य'' कहा, द्वारा लिखित **परमेश्वर के वचन में दर्ज मनपरिवर्तन के सारे मामले इसी पुस्तक में मिलते हैं।**

इस कारण **प्रेरितों के काम** की पुस्तक के हमारे इस अध्ययन का विषय परमेश्वर के वचन में इस प्रकार से लिखित मनपरिवर्तन के हर मामले के **तथ्यों**, **प्रतिज्ञाओं**, **चेतावनियों** और **आज्ञाओं** को तय करने के लिए होगा। इस के तय हो जाने पर (वे चाहे जो भी हों) यदि हम **उन्हीं तथ्यों** पर **विश्वास करें**, **उन्हीं चेतावनियों** पर **ध्यान दें** और **उन्हीं आज्ञाओं** को **मानें** (**उन्हीं उद्देश्यों** के लिए जिनके लिए उन्हें माना गया), तो **उसी प्रकार से** मसीह में **''परिवर्तित''** होकर हम **उन्हीं प्रतिज्ञाओं** का **आनन्द** लेंगे, जिनका आनन्द उन्होंने लिया था। मनपरिवर्तन के मामले को अलग-अलग करके देखते हुए अलग जाने से पहले हम हर मामले पर विस्तार से अध्ययन करेंगे। अपने आप किसी भी मामले का सामान्य निष्कर्ष नहीं निकाला जाएगा। परन्तु हर मामले की बात पर ध्यान दिया जाएगा और दिखाया जाएगा। सो हम मनपरिवर्तन के सभी 11 मामलों को देखेंगे, जिन्हें प्रेरितों के काम की पुस्तक स्पष्टता से तय करती है।

फिर सभी ग्यारह मामलों के अपने अध्ययन के अन्त में हम प्रेरितों के काम की पुस्तक में से मनपरिवर्तन के विषय पर उन **सभी का** एक चार्ट और एक सार बनाएंगे। ''हर वचन को मानकर, न कि केवल एक या दो शब्दों को, यहां-वहां से लेकर, हमें यीशु मसीह में परिवर्तित होने के ढंग की ''सच्चाई का ज्ञान'' होना चाहिए।'' आइए पहले मामले पर विचार करते हैं:

I. **ग्रेट कमीशन पुनरुत्थान के बाद दिया गया।**

नोट: यह याद रखा जाए कि क्रूसों के ऊपर मरने वाले डाकुओं की तरह, यीशु मसीह भी दस आज्ञाओं की व्यवस्था के अधीन, एक यहूदी के रूप में रहा और मरा था। न तो यीशु और न ही वे लोग मसीही थे; क्योंकि मसीही बनाने वाली व्यवस्था अभी लागू नहीं हुई थी (इब्रानियों 9:15-17)। मरने के बाद, यीशु को तीन दिन और तीन रात पृथ्वी के हृदय में रखा गया, जिसमें तीसरे दिन की भोर को वह मुर्दों में से जी उठा। इसके बाद अगले 40 दिनों तक वह अपने चेलों के साथ मिलता रहा और स्वर्ग पर उठाए जाने से थोड़ा पहले उसने उन्हें वे ग्रेट कमीशन दिया जिसे मत्ती, मरकुस और लूका ने लिखा है।

क. मत्ती के अनुसार (देखें मत्ती 28:18-20)।

ख. मरकुस के अनुसार (देखें मरकुस 16:15-16)।

ग. लूका के अनुसार (देखें लूका 24:46-49)।

1. लूका के विवरण में विशेषकर, हमें पता चलता है कि इस नये और ग्रेट कमीशन

का आरम्भ **यरूशलेम में** हुआ था (देखें आयत 47)।

2. इसके अलावा प्रेरितों ने तुरन्त आरम्भ नहीं कर देना था, बल्कि ''यरूशलेम नगर में ठहरे'' रहना था, ''जब तक तुम्हें ऊपर से सामर्थ न मिले।''

II. कमीशन के दिए जाने और पिन्तेकुस्त के बीच के अन्तर को मिटाना।

नोट: बाइबल के सभी विद्वानों द्वारा आम तौर पर माना जाता है कि जिस ने ''लूका रचित सुसमाचार'' लिखा उसी लूका ने ''प्रेरितों के काम'' को भी लिखा। इस सहमति को प्रेरितों के काम की पुस्तक के लेखक द्वारा अपनी पुस्तक का आरम्भ ''पहली पुस्तिका'' की बात करने से इस सहमति को बल मिलता है-विशेषकर तब जबकि प्रेरितों के काम का आरम्भ वहीं से होता है जहां लूका की पुस्तक खत्म होती है।

क. ''पहली पुस्तिका'' में लूका ने वह सब बताते हुए ''जो यीशु आरम्भ से करता और सिखाता रहा, उस दिन तक जब तक वह ... ऊपर उठाया न गया'' (प्रेरितों 1:1-2) थियुफिलुस को लिखा (लूका 1:3 की तुलना प्रेरितों 1:1 करें)।

ख. उसके ऊपर उठाए जाने के पहले कुछ घटनाएं घटीं।

1. पवित्र आत्मा के द्वारा यीशु ने उन प्रेरितों को जिन्हें उसने चुना था, **आज्ञाएं दीं** (आयत 2)।
2. उसने कलवरी पर मरने के बाद **प्रेरितों को अपने आपको जीवित दिखाया** (आयत 3)।
   क. उसने बहुत से प्रमाणों के द्वारा दिखाया कि वह फिर से जीवित है (आयत 3)।
   ख. ये प्रमाण पक्के थे (आयत 3)।
3. स्वर्ग पर उठाए जाने से पहले वह अपने पुनरुत्थान के बाद चालीस दिन तक **उन्हें** (प्रेरितों को) **दिखाई देता रहा** (आयत 3)।
4. उसने ''परमेश्वर के राज्य की बातें'' कीं (आयत 3)।
5. **प्रेरितों से मिलकर** उसने **उन्हें** आज्ञा दी कि **वे** यरूशलेम को न छोड़ें बल्कि पिता की प्रतिज्ञा के पूरा होने की राह देखें, जिसकी चर्चा, उसने कहा कि उन्होंने उससे सुनी थी (आयत 4)।
   क. प्रेरितों के लिए पिता की यह प्रतिज्ञा पवित्र आत्मा का बपतिस्मा था (आयत 5)।
   ख. ध्यान दें कि **यह** ''**प्रतिज्ञा**'' ''**प्रेरितों**'' के लिए थी (फिर से आयतें 1-5 धीरे धीरे और ध्यान से पढ़ें); यह सब के लिए नहीं थी, केवल उन्हीं के लिए थी।
6. प्रेरित **राज्य** के सम्बन्ध में और जानना चाहते थे।
   क. स्पष्टतया उन्हें लगा कि यह इस्राएल की संतान द्वारा पहले मिले राज्य जैसा ही होगा, इसी कारण उन्होंने पूछा, ''हे प्रभु, क्या तू इसी समय इस्राएल को राज्य फेर देगा?'' (आयत 6)।
7. यीशु ने कहा कि यह बताना उसका नहीं बल्कि पिता का काम है, परन्तु

''पवित्र आत्मा'' के उन पर आ जाने पर उन्हें ''सामर्थ'' मिलनी थी (आयतें 7-8)। इस सामर्थ से उन्होंने उसके गवाह होना था

क. यरूशलेम में

ख. यहूदिया में

ग. सामरिया में, और

घ. पृथ्वी की छोर तक

8. उसके यह कह लेने के बाद एक बादल ने उसे उठा लिया और उनकी आंखों से ओझल कर दिया (आयत 9)।

ग. यीशु के ऊपर जाने को ''देखते हुए'' प्रेरित जब ''आकाश की ओर ताक रहे थे'' (आयतें 9-10) तो श्वेत वस्त्र पहने दो पुरुष उनके पास आ खड़े हुए:

1. वे पूछने लगे, ''हे गलीली पुरुषो, तुम क्यों खड़े आकाश की ओर देख रहे हो?''
2. उन्होंने भविष्यद्वाणी की, ''यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग को जाते देखा है उसी रीति से वह फिर आएगा।''

घ. उसके बाद प्रेरित यरूशलेम को लौट गए (आयत 12)।

1. यरूशलेम में, वे अटारी वाले कमरे में चले गए, जहां वे रहते थे (आयत 13)।
2. वहां रह रहे केवल 11 प्रेरितों के नाम बताए गए हैं (आयत 13), क्योंकि लगभाग 43 दिन पहले मूल बारहों में से एक ने यीशु मसीह के साथ विश्वासघात करने के कारण पछतावे में आत्महत्या कर ली थी (मत्ती 27:3-5; प्रेरितों 1:18-19)।
3. ये सभी 11, एक चित्त होकर प्रार्थना और विनती करते रहे (आयत 14)।
   क. यीशु की माता मरियम सहित कुछ और स्त्रियां भी उनके साथ थीं (आयत 14)।
   ख. यीशु के भाई भी उनके साथ थे (आयत 14 की तुलना मत्ती 13:55 से करें)।
   ग. कुल मिलाकर सब लगभग 120 लोग थे (आयत 15)।

ङ. प्रेरित और अन्य चेले जब उस ''सामर्थ'' की, जिस की लूका 24:49 में प्रतिज्ञा की गई और प्रेरितों 1:8 में उसे दोहराया गया, ''बाट जोहते'' हुए यरूशलेम में ''प्रतीक्षा'' कर रहे थे, तो पतरस ने वहां इकट्ठे हुए सब लोगों का ध्यान कुछ तथ्यों की ओर लगाया (आयतें 15-22)।

1. यीशु को यहूदा के पकड़वाने की बात करते हुए (भजन संहिता 41:9), दाऊद की एक भविष्यद्वाणी को उद्धृत करके पतरस ने समझाया कि यहूदा का कृत्य आवश्यक था ताकि पवित्र-शास्त्र की बात पूरी हो सके (आयत 16)।
   क. यह वचन वास्तव में दाऊद के मुख से पवित्र आत्मा के द्वारा कहा गया था (आयत 16)।
2. यहूदा ने चाहे यीशु के साथ विश्वासघात किया था पर उसके सम्बन्ध में दो बातें सच थीं (आयत 17)।
   क. वह प्रेरितों में ''गिना गया'' था।
   ख. वह ''प्रेरितों की'' सेवकाई का भागीदार बना था

3. भजन संहिता 69:25 में निर्देश दिया गया था, ''उस [यानी यहूदा] का घर उजड़ जाए, उस में कोई न बसे, और उस का पद [रुतबा] कोई दूसरा ले ले'' (भजन संहिता 109:8 भी देखें)।
   क. इसलिए यहूदा के स्थान पर प्रेरित बनने के लिए किसी को नियुक्त करना आवश्यक था (आयतें 21-22)।
   ख. नियुक्त किए जाने वाले के लिए **पुरुष** होना आवश्यक था (आयत 21)।
   ग. वह यूहन्ना के बपतिस्मा से लेकर (देखें मत्ती 3) उस दिन तक जब यीशु स्वर्ग में उठा लिया गया था, उस के साथ आने और जाने के समय चेलों के साथ रहा होना आवश्यक था (आयतें 21-22 को प्रेरितों 1:9-11 से मिलाएं)।
   घ. इस नियुक्त का उद्देश्य यीशु के पुनरुत्थान के अन्य गवाहों के साथ ''गवाह'' होना था (आयत 22)।

   नोट: ध्यान से विचार करें कि ''गवाह'' होने के लिए क्या योग्यता होनी आवश्यक थी (आयत 21-22)।

च. उन अन्य पुरुषों में से जो प्रेरितों के साथ थे, दो पुरुषों को इस काम के लिए उचित पाने पर निकाला गया, उनके नाम थे यूसुफ और मत्तियाह (आयत 23)।
   1. प्रार्थना की गई जिसमें परमेश्वर से कहा गया कि वह दिखाए कि इन दोनों में से उसने किसे चुना है (आयत 24)।
   2. जो भी था उसने ''सेवकाई और प्रेरिताई का पद'' लेना था जिससे यहूदा गिर गया था (आयत 25)।
   3. चिट्ठियां डालने पर चिट्ठी मत्तियाह के नाम थी (आयत 26)।
   4. इस प्रकार मत्तियाह कुल 11 प्रेरितों के साथ गिना गया (आयत 26)।

   नोट: इस प्रकार से मत्तियाह के ग्यारह के साथ प्रेरित चुना जाने पर प्रेरितों की संख्या बारह पूरी हो गई।

III. पिन्तेकुस्त का दिन

क. जब पिन्तेकुस्त का दिन आया तो वे सब एक जगह इकट्ठे हुए (आयत 1)।

नोट: सर्वनाम ''वे'' पूर्वपद के रूप में इस वचन के छात्रों को बहुत विरोध में परेशान कर रखा है। कई लोग तर्क देते हैं कि ''वे'' यहां पर ''मत्तियाह'' और ''ग्यारह प्रेरितों'' के लिए है; अन्य जिनका कहना है कि ''वे'' सभी ''एक सौ बीस'' चेले शामिल हैं। प्रेरितों 1:15 में पहले आए चेलों की बात करते हैं। जबकि लूका ने इतना ही कहा था, ''... और चिट्ठी मत्तियाह के नाम पर निकली अत: वह उन ग्यारह प्रेरितों के साथ गिना गया। जब पिन्तेकुस्त का दिन आया तो वे सब एक जगह इकट्ठे हुए,'' इससे लगता है कि बाद वाली स्थिति के बजाय पहले वाली स्थिति सही है। परन्तु ''बेटों'' और ''भविष्यद्वाणी करने'' ''दासों'' और

''दासियों'' दोनों पर उण्डेले जाने की बात करते हुए जो कुछ पतरस ने प्रेरितों 2:14-18 में कही, पूरी ईमानदारी के साथ उसका निष्कर्ष यह निकाला जाना चाहिए कि आयत 1 में ''वे'' सर्वनाम वास्तव में ''एक सौ बीस'' के लिए *हो सकता* है। बेशक ''एक सौ बीस'' की गिनती उन कुछ बेटियों और ''दासियों'' में शामिल लगती है (देखें 1:14-15), जो कि ''मत्तियाह ... [और] ... ग्यारह प्रेरितों के लिए नहीं कहा जा सकता।'' और पतरस ने कहा कि जो कुछ हुआ था वह योएल की भविष्यद्वाणी का पूरा होना था यानी किसी भी हालत में पिन्तेकुस्त के दिन चाहे प्रेरित अकेले हों या सभी एक सौ बीस, ''वे सब एक जगह इकट्ठे थे। ...''

ख. अचानक आकाश से एक बड़ी गूंज सुनाई दी (आयत 2)।
   1. यह आवाज़ एक बड़ी तेज आंधी थी जैसी
   2. आवाज़ से वह घर जहां वे बैठे हुए थे, भर गया

ग. वहां उन्हें फटती हुई जीभें दिखाई दीं (आयत 3)।
   1. जीभें दिखने में आग जैसी थीं।
   2. जीभें उन में से हर एक के ऊपर ठहर गईं।

घ. वहां इकट्ठा हुए सब लोग पवित्र आत्मा से भर गए थे (आयत 4)।
   1. सभी अन्य ''भाषाएं'' बोलने लगे।
   2. उनके अपने शब्दों को चुनने के बजाय ''आत्मा ने उन्हें बोलने'' के शब्द दिए।

ङ. जब इस घटना से ''शब्द हुआ'' (आयत 6), तो यह देखने के लिए कि क्या हुआ है लोगों की बड़ी भीड़ लग गई।
   1. वे सभी ''आकाश के नीचे की हर एक जाति में से'' यहूदी थे (आयत 5)।
   2. वे सब ''हक्के बक्के रह गए'' क्योंकि हर किसी को अपनी ही भाषा में उनकी बातें सुनाई दी थीं (आयत 6)।
   3. वे सब चकित और अचम्भित थे (आयत 7)।
   4. वे एक दूसरे से पूछ रहे थे कि ये सभी गलीली (जो विद्वान नहीं थे) इन सभी अलग-अलग भाषाओं को कैसे बोल रहे थे (आयतें 7-8)।
   5. आए हुए लोगों को, जहां से वे आए थे, उसी के अनुसार बताया गया है:
      क. पारथी
      ख. मेदी
      ग. एलामी
      घ. मेसोपोटामिया वासी
      ङ. यहूदिया वासी
      च. कप्पदूकिया वासी
      छ. पुन्तुस वासी
      ज. आसिया वासी
      झ. फ्रूगिया वासी
      ञ. पम्फूलिया वासी

ट. मिस्री
ठ. लीबिया वासी
ड़ कुरेने वासी
ढ क्रेती
ण. अरबी

6. उन्होंने सब ने एक दूसरे से पूछा कि इसका क्या अर्थ है ? (आयत 12)।
7. कुछ ने यह कहते हुए कि उन्होंने पी रखी है इसका मज़ाक उड़ाया, ठट्ठे में लिया (आयत 13)।

च. परन्तु पतरस ने ग्यारहों के साथ खड़े होकर इस आश्चर्यकर्म को भविष्यद्वाणी के पूरा होने के रूप में बताते हुए मतवालेपन के आरोप को खारिज किया (आयतें 14-16)।

1. उसने योएल नबी को उद्धृत किया (पढ़ें योएल 2:28-32; प्रेरितों 2:17-21 से तुलना करें)।
   क. उसने कहा, ''यह वह बात है'' जो योएल के द्वारा कही गई थी (आयत 16)।
2. उसने यीशु नासरी की उनकी याद को ताजा किया (आयत 22से)।
   क. उसने यीशु को आश्चर्यकर्मों और अद्‌भुत कामों और चिह्नों के द्वारा उनके बीच परमेश्वर की ओर से प्रमाणित होने की घोषणा की (आयत 22)।
   ख. उसने कहा कि ये बातें परमेश्वर की ओर से यीशु के द्वारा की गई।
   ग. उसने कहा कि उसके सुनने वाले भी इसे सच मानते हैं।
3. फिर पतरस ने लोगों पर यीशु को क्रूस पर चढ़ाने और उसे घात करने का आरोप लगाया (आयत 23)।
4. परन्तु उसने घोषणा की कि परमेश्वर ने यीशु को मुर्दों में से जिला दिया है (आयत 24)।
   क. उसने इस बात से इनकार किया कि मृत्यु के लिए यीशु को वश में रख पाना असम्भव था।
   ख. उसने दाऊद की भविष्यद्वाणी से उद्धृत किया (आयतें 25-28 की तुलना भजन संहिता 16:8-11 से करें)।
   ग. उसने दिखाया कि यह भविष्यद्वाणी दाऊद के लिए व्यक्तिगत नहीं हो सकती क्योंकि दाऊद स्वयं ''मर गया और गाड़ा भी गया और उसकी कब्र आज तक हमारे यहां विद्यमान है'' (आयत 29)।
   घ. उसने समझाया कि दाऊद एक नबी था और भजन संहिता 16 की यह भविष्यद्वाणी मसीह के पुनरुत्थान और राज्य अभिषेक की है (आयत 30-31)।

नोट: यीशु मसीह दाऊद के पेट का फल था; इसलिए मसीह की बात करते हुए जो उसकी अपनी संतान है, दाऊद ने ऐसे बात की जैसे वह अपने लिए कह रहा हो। इस कारण वास्तव में यह दाऊद का प्राण नहीं बल्कि उसकी संतान मसीह का प्राण था जो ''अधोलोक में'' छोड़ा नहीं गया था और जिसकी

देह ''सड़ने नहीं'' पाई।

ङ. पतरस ने दावा किया कि वह और सभी प्रेरित इस बात के गवाह थे कि मसीह मरे हुओं में से जी उठा था।

5. न केवल मसीह मरे हुओं में से जी उठा था बल्कि परमेश्वर ने उसे अपने दाहिने हाथ सिंहासन पर बिठा दिया था (आयत 33)।
6. इसके अलावा परमेश्वर ने मसीह को अपना पवित्र आत्मा दिया था (आयत 33)।
7. बदले में मसीह ने पवित्र आत्मा को भेज दिया था (आयत 33)।
8. पतरस ने कहा, उस पल में जो कुछ लोगों की भीड़ ने देखा था वह यही है।
   क. उसने आगे इस बात का इनकार किया कि दाऊद स्वयं स्वर्ग में चढ़ा था (आयत 34)।
   ख. उसने दाऊद को अपने ''प्रभु'' की बात करते हुए उद्धृत किया (आयत 34 की तुलना भजन संहिता 110:1 से करें)।
9. पतरस ने यह कहते हुए कि परमेश्वर ने ''उसी यीशु को'' जिसे उन्होंने क्रूस पर चढ़ाया था ''प्रभु भी ठहराया और मसीह भी'' अपनी बात खत्म की।

छ. जब लोगों की भीड़ ने यह सुना तो अपने ही प्रभु को क्रूस पर चढ़ाने के लिए उन के विवेक हिल गए (आयत 37)।

1. वे प्रेरितों से पूछने लगे, ''हे भाइयो, हम क्या करें?'' (आयत 37)।

ज. पतरस ने आज्ञा दी, ''मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे'' (आयत 38)।

1. उसने कहा कि पवित्र आत्मा देने की परमेश्वर की प्रतिज्ञा उनके लिए और उनके बच्चों के लिए (यानी यहूदियों के लिए), और उन सब दूर-दूर के लोगों (अर्थात अन्यजातियों) के लिए भी है, जिनको परमेश्वर ने बुलाना था (आयत 39)। (2 थिस्सलुनीकियों 2:14; ''परमेश्वर सुसमाचार के द्वारा भी बुलाता है।'')।
2. उसने उन्हें और भी बातों के साथ ''अपने आपको इस टेड़ी जाति से बचाओ'' (आयत 40) कहते हुए उन्हें गवाही भी दी और समझाया भी।

झ. जिन्होंने पतरस की बात मानकर (आयत 38) ''उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया'' (आयत 41)।

1. उस दिन तीन हज़ार मनुष्यों के लगभग कलीसिया में मिल गए (आयत 41)।
2. आयत 47 से पता चलता है कि उन्हें ''कलीसिया में मिला'' लिया गया और उन्हें मिलाने वाला प्रभु था।

ञ. बपतिस्मा लेने के बाद नये बने ये मसीही ''लौलीन रहे''

1. प्रेरितों की शिक्षा में (आयत 42)।
2. संगति रखने में (आयतें 42, 44-45)।
3. रोटी तोड़ने में (आयत 42)।

4. प्रार्थना करने में (आयत 42)।
5. वे इकट्ठे रहते थे (आयत 44)।
6. वे प्रतिदिन मन्दिर में आराधना करते थे (आयत 46)।
7. वे घर घर (यानी एक दूसरे के साथ खाते) रोटी तोड़ते (आयत 46)।
8. वे आनन्दित थे (आयत 46)।
9. वे एक मन थे (आयत 46)।
10. वे परमेश्वर की स्तुति करते थे (आयत 47)।
11. लोग उनका आदर करते थे (आयत 47)।

ट. प्रभु नये बनने वाले मसीही लोगों को ''प्रतिदिन'' उन में मिला देता था (आयत 47)।

नोट: मनपरिवर्तन (या बदलाव) के समय यीशु मसीह के विरोध करने वालों से उसके चेले बनने के समय ध्यान दें कि क्या हुआ था:

पहले तो इकट्ठे होने के बाद पतरस का प्रचार सुना था (आयत 37)। दूसरा, उन के ''हृदय छिद गए'' (जो कुछ पतरस ने प्रचार किया था उससे उनके विवेक इतने आहत हुए कि उन्होंने विश्वास किया) तीसरा, इस आत्मिक स्थिति में उन्होंने पूछा कि वे क्या करें (आयत 37)। चौथा, उन्हें ''मन फिराने'' और ''बपतिस्मा लेने'' की आज्ञा दी गई (आयत 38)।

1. यह काम पापों की क्षमा पाने के लिए किया जाना था (आयत 38)।
2. यह उन्हें अपने आपको ''बचाने'' के लिए भी था (आयत 40)।

पांचवां, वचन का सामना न करके इसे ''आनन्द से ग्रहण'' करने वालों ने वैसा ही किया जैसा पतरस ने आज्ञा दी थी: उन्होंने बपतिस्मा लिया।

छठा, उस पहले दिन ''तीन हज़ार मनुष्यों के लगभग'' उन में मिल गए।

1. यह प्रेरितों 2 अध्याय में पिन्तेकुस्त का दिन था।

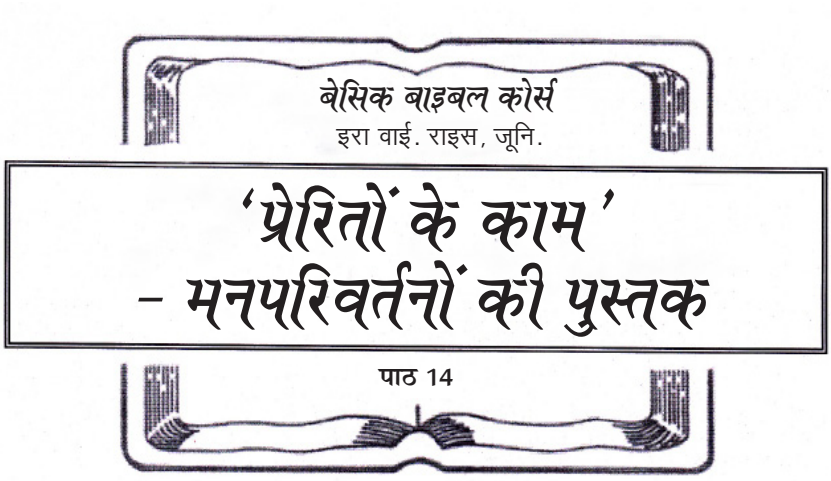

पाठ 14 के प्रश्न

Registration No.....

Grade .....

Name.....

Address.....

.....

Pin.....Mobile No.....

e-mail.....

(कृपया पता अंग्रेजी के बड़े अक्षरों में ही लिखें।)

1. वे तीन ढंग बताएं जिन के द्वारा मसीही लोगों द्वारा दी जाने वाली शिक्षा में गलत शिक्षा घुस सकती है ? 1. .....

   2. .....

   3. .....

   2. वे तीन ढंग बताएं जिन से गलत शिक्षा से बचा जा सकता है या उसे सुधारा जा सकता है ? .....

   .....

   .....

3. पवित्र शास्त्र के कठिन हवालों की अच्छी समझ कैसे मिल सकती है ?

   .....

   .....

4. क्या परमेश्वर के वचन का कोई भाग अनावश्यक है ? .....

   समझाएं कि कौन सा। .....

5. नये नियम की किस पुस्तक में परमेश्वर के वचन में लिखित मनपरिवर्तन के सभी मामले हैं ?.....

   .....

6. ''प्रेरितों के काम'' के हवाले इस अध्ययन में हमारा उद्देश्य क्या है ?

   .....

   .....

7. क्या आप इस बात से सहमत हैं कि यदि बाइबल के सभी छात्र उन्हीं तथ्यों पर विश्वास

करें, उन्हीं चेतावनियों पर ध्यान दें ओर उन्हीं उद्देश्यों के लिए जैसे ''मन परिवर्तनों की पुस्तक'' में लिखे गए हैं, उन्हीं आज्ञाओं को मानें तो क्या हमें उन्हीं प्रतिज्ञाओं का आनन्द मिलेगा जिनका आनन्द उन्हें मिला था? .....

क्या इस कारण हमें उसी प्रकार से मसीह में परिवर्तन होना चाहिए? .....

.....

8. यीशु द्वारा अपनी मृत्यु, दफ़नाए जाने और जी उठने के बाद दिए जाने वाले ग्रेट कमीशन को किन लेखकों ने लिखा? .....

.....

9. क्या यीशु के चेले को इस आज्ञा को तुरन्त पूरा करना आरम्भ करना था या उन्हें प्रतीक्षा करनी थी? .....

यदि उन्हें प्रतक्षा करनी थी तो उन्हें कहां और कितनी देर तक बाट जोहनी थी?.....

.....

10. जब ''ऊपर से सामर्थ मिली'' तो उन्हें उसकी ''गवाही'' कहां देनी थी?

.....

11. क्या प्रेरितों ने यीशु को स्वर्ग में उठाए जाते देखा? .....

क्या वह उसी प्रकार से आएगा जैसे उन्होंने उसे जाते देखा था?.....

.....

12. प्रेरितों के अलावा सामर्थ पाने की राह देखते हुए उनके यरूशलेम में रुकने के समय उनके साथ साथ और कौन थे? .....

.....

.....

13. उनके साथ किनते लोग इकट्ठा हुए थे? .....

.....

14. उनके इकट्ठे होकर बाट जोहते समय पतरस ने क्या किया जाना आवयक बताया (आयतें 21 और 22)। .....

.....

15. प्रेरित नियुक्त किए जाने के समय किस योग्य का होना आवश्यक था। .....

.....

16. प्रेरित होने के लिए यहूदा इस्करियोती के स्थान पर किसे चुना गया? .....

.....

17. जब वे पिन्तेकुस्त के दिन यरूशलेम में सब एक जगह इकट्ठा हुए तो उनके साथ तीन कौन सी बातें हुईं? .....

.....

18. पवित्र आत्मा ने उन्हें क्या करने दिया? .....

.....

19. इसके कारण जब भीड़ इकट्ठी हो गई तो पतरस ने उन्हें कैसे समझाया कि यह क्या हो रहा है। .....

.....

20. जब लोग मान गए और पूछने लगे कि वे क्या करें तो पतरस ने उन्हें क्या करने को कहा? क्यों? .....

.....

आपका कोई प्रश्न है तो उसे यहां लिखें .....

.....

.....

.....

.....

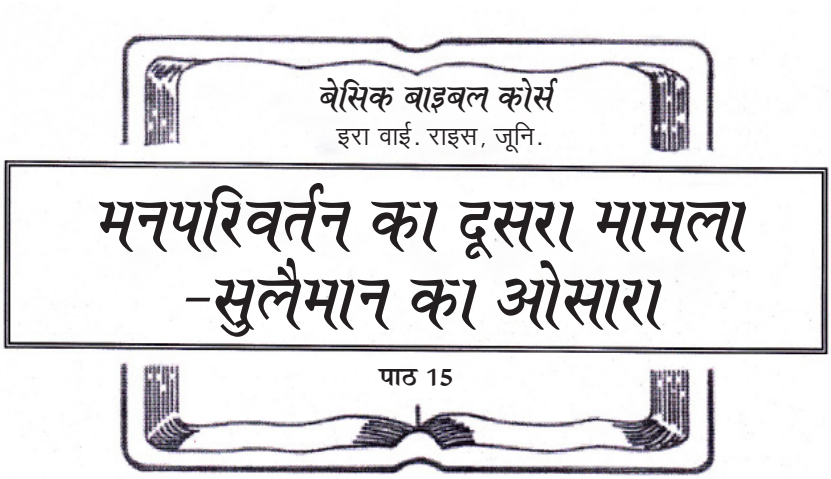

परिचय: पिछले पाठ में हमने '' प्रेरितों के कामों का वर्णन'' (छोटा रूप : ''प्रेरितों'') नामक पुस्तक का अध्ययन **मनपरिवर्तनों की पुस्तक** के रूप में किया था। हमने पुस्तक में स्पष्ट वर्णित मन परिवर्तन के सभी ग्यारह मामलों से सम्बन्धित तथ्यों, प्रतिज्ञाओं, चेतावनियों और आज्ञाओं का अध्ययन करने का प्रस्ताव किया था। **प्रेरितों के काम की पुस्तक** में परमेश्वर के वचन में लिखित **सभी मनपरिवर्तनों** का वर्णन है, इस कारण हमने तर्क दिया था कि यदि हम **उन्हीं उद्देश्यों** के लिए प्रेरितों के काम में बदलने वालों की तरह **उन्हीं तथ्यों** पर **विश्वास** करें, **उन्हीं चेतावनियों** पर **ध्यान दें** और **उन्हीं आज्ञाओं** को **मानें,** तो हम **उसी प्रकार** से **मसीह में परिवर्तित** होंगे और **उन्हीं प्रतिज्ञाओं** का आनन्द लेंगे जो उन्हें मिली थीं।

प्रेरितों के काम की पुस्तक के अपने **आरम्भिक अध्ययन** में हमने प्रेरितों 2 में **पिन्तेकुस्त** के दिन **मनपरिवर्तन के पहले मामले** पर विचार किया था। भीड़ द्वारा पतरस के प्रचार पर **विश्वास** कर लेने पर (यानी ''उनके हृदय छिद'' जाने पर) उन्होंने उससे और शेष प्रेरितों से पूछा था, ''हे भाइयो, हम क्या **करें**?'' तब पतरस ने उनसे कहा था ''**मन फिराओ** और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से **बपतिस्मा ले**; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे'' (आयतें 37- 38)। ''जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया'' (आयत 41)। उसी दिन ''तीन हज़ार मनुष्यों के लगभग उनमें मिल गए'' (आयत 41)। ''और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु उनमें (यानी कलीसिया में) मिला देता था'' (आयत 47; देखें केजेवी)।

मनपरिवर्तन के पहले मामले के इन विवरणों को ध्यान में रखते हुए आइए अब सुलैमान के ओसारे में मनपरिवर्तन के दूसरे मामले पर अपना ध्यान लगाते हैं।

कृपया, प्रेरितों 3:1 से 4:4 के पूरे विवरण को पढ़ें।

I. पतरस और यूहन्ना प्रार्थना के समय मन्दिर में गए (आयत 1)।

क. ''तीसरे पहर'' की बात है

नोट: याद रखें कि यहूदियों का दिन प्रात: 6 बजे आरम्भ होता था, हमारे समय के हिसाब से। इस प्रकार ''तीसरा पहर'' शाम के तीन बजे होगा।

II. एक लंगड़े भिखारी ने भीख मांगी (आयत 2-3)।
   क. पतरस ने मना करते हुए कहा कि उसके पास सोना या चांदी नहीं है (आयत 4-6)।
   ख. परन्तु उसने भिखारी को वह देने की पेशकश की जो उसके पास था (आयत 6)।
   ग. फिर उसने भिखारी को आज्ञा दी, ''यीशु मसीह नासरी के नाम से चल फिर'' (आयत 6)।
      1. याद रखें कि यह आदमी ''जन्म से लंगड़ा'' था (आयत 2)।
      2. स्पष्टतया वह चल नहीं सकता था, क्योंकि लोग रोज उसे मन्दिर के सुन्दर नाम फाटक के पास ''बैठा देते थे'' (आयत 2)।
      3. फिर भी जब पतरस ने उसे दाहिने हाथ से पकड़कर उठाया, तो ''तुरन्त उसके पांवों और टखनों में बल आ गया'' (आयत 7)।
      4. भिखारी अब लंगड़ा नहीं रहा था, वह
         क. उछलकर
         ख. खड़ा हो गया
         ग. चलने-फिरने लगा
         घ. चलता, और कूदता और परमेश्वर की स्तुति करता हुआ उनके साथ मन्दिर में गया (आयत 8)।

III. सब लोगों ने उसे चलते-फिरते और परमेश्वर की स्तुति करते हुए देखा (आयत 9)।
   क. उन्हें मालूम था कि मन्दिर के सुन्दर नामक फाटक के पास वर्षों से वे उसी को भीख मांगते देखते थे (आयत 10)।
   ख. वे इस बात से बहुत अचम्भित और चकित हुए कि वह अब चल सकता था (आयत 10)।
   ग. सब लोग पतरस, यहून्ना और सुलैमान के ओसारे में चंगाई पाने वाले व्यक्ति की ओर भागे (आयत 11)।

IV. पतरस ने लोगों को उत्तर दिया (आयत 12)।
   क. उसने पूछा कि वे चंगाई पाने वाले व्यक्ति के चलने पर आश्चर्य क्यों करते हैं? (आयत 12)
   ख. उसने पूछा कि वे इस आश्चर्यकर्म का श्रेय उसे और यूहन्ना को क्यों देते हैं (आयत 12)।
      1. उसने इस बात से इनकार किया कि उनकी अपनी सामर्थ या पवित्रता के कारण यह चंगाई हुई थी।
   ग. उसने कहा कि अब्राहम, इसहाक और याकूब के परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु को

महिमा देने के लिए इसे चंगा किया है (आयत 13)।

घ. उसने बताया कि उन्होंने यीशु को सौंपकर, पिलातुस के सामने इनकार किया था और मार डाला था (आयतें 13-15)।

ङ उसने घोषणा कि परमेश्वर ने यीशु को जिला दिया है (आयत 15)।

1. उसने कहा कि वह और यूहन्ना इस तथ्य के गवाह थे (आयत 15)।

च. उसने कहा कि **मसीह के नाम** ने उसके नाम में **विश्वास** के द्वारा इस व्यक्ति को मजबूत बना दिया था (आयत 16)।

छ. उसने इस बात को माना कि लोगों और उनके हाकिमों ने अज्ञानता से मसीह को क्रूस पर चढ़ा दिया था (आयत 17)।

ज. परन्तु उसने दिखाया कि उनकी अज्ञानता से यीशु को दु:ख उठाना पड़ा, जो भविष्यवाणी को पूरा करता है (आयत 18)।

झ. उनके पापों को **मिटाने** के लिए पतरस ने उन्हें आज्ञा दी

1. **मन फिराओ**
2. **लौट आओ** (आयत 19)।

ञ. यदि वे ऐसा करते तो न केवल उनके **पाप मिटाए** जाने थे, बल्कि प्रभु के सम्मुख से ''विश्रांति के दिन'' भी आने थे (आयत 19)।

ट. मसीह की वापसी की प्रतिज्ञा की गई (आयत 20)।

1. प्रमाण के रूप में भविष्यवाणियों को दोहराया गया (आयतें 21-24)।

ठ. मसीह के लिए बताते हुए मूसा ने समझाया था, ''प्रभु परमेश्वर तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे लिए मुझ सा एक भविष्यवक्ता [मसीह] उठाएगा, जो कुछ वह तुम से कहे, **उसकी सुनना।** *परन्तु* प्रत्येक मनुष्य जो उस भविष्यवक्ता की **न सुने,** लोगों में से नाश किया जाएगा'' (आयतें 22-23)।

ड. पतरस ने इस बात पर जोर दिया कि सुलैमान के ओसारे में उसके सुनने वाले लोग ''भविष्यवक्ताओं की सन्तान और उस वाचा के भागी [थे], जो परमेश्वर ने [उनके] बाप-दादों से बांधी'' थी (आयत 25)।

1. परमेश्वर ने अब्राहम से कहा था, ''तेरे वंश के द्वारा पृथ्वी के सारे घराने आशीष पाएंगे'' (आयत 25)।
2. इस प्रकार परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु को जिलाकर उसे पहले भविष्यवक्ताओं और वाचा की इसी ''सन्तान'' के पास भेजा था (आयत 26)।
   क. यीशु को उन्हें ''आशीष'' देने के लिए भेजा कि (उन) में से हर एक अपनी बुराइयों से फिर जाए।

V. यीशु के मरे हुओं में से जी उठने के पतरस और यूहन्ना के प्रचार तथा शिक्षा से याजक, मन्दिर के सरदार और सदूकी परेशान हो गए (आयतें 1-2)।

क. उन्होंने उन्हें पकड़ लिया (आयत 3)।

ख. उन्होंने उन्हें रातभर जेल में रखा (आयत 3)।

VI. परन्तु पतरस का प्रचार सुनने वाले बहुतों ने विश्वास किया (आयत 4)।
   क. उन्होंने ''वचन सुना।''
   ख. उन्होंने ''विश्वास किया।''
   ग. विश्वास करने वाले पुरुषों की संख्या पांच हज़ार के लगभग थी।

VII. बाद में सुलैमान के ओसारे पर ही ''विश्वासियों'' को प्रभु के साथ और ''मिलाया गया'' (5:12-14)।
   क. ''मिलाए'' गए लोगों में ''पुरुष और स्त्रियां बड़ी संख्या'' में थे। (आयत 14)।

नोट : पतरस ने जो उन्हें पिन्तेकुस्त के दिन कहा था (प्रेरितों 2:38) उसे सुलैमान के ओसारे में (प्रेरितों 3:19) जो कुछ लोगों से कहा गया था, मिलाएं:

> ''**मन फिराओ,** और तुम में से हर एक अपने-अपने **पापों की क्षमा** के लिए यीशु मसीह के नाम से **बपतिस्मा ले;** तो तुम **पवित्र आत्मा का दान** पाओगे।'' —प्रेरितों 2:38, पिन्तेकुस्त के दिन पतरस।
>
> ''इसलिए **मन फिराओ** और लौट आओ कि तुम्हारे **पाप मिटाए जाएं,** जिस से प्रभु के सन्मुख से **विश्रान्ति के दिन** आएं।''—प्रेरितों 3:19, सुलैमान के ओसारे में पतरस।

आपको क्या लगता है कि पतरस केवल इन आयतों में दोनों जगह एक ही बात कहने के लिए शब्दों के दो अलग-अलग चयनों का इस्तेमाल कर रहा था? दोनों समूहों को पतरस ने आज्ञा दी कि ''मन फिराओ।'' पिन्तेकुस्त के दिन उसने और आज्ञा दी, ''बपतिस्मा लो।'' जबकि सुलैमान के ओसारे में उसने कहा, ''लौट आओ।'' स्पष्टतया उसके मन में एक ही बात थी। पिन्तेकुस्त के दिन मन फिराना और बपतिस्मा लेना ''पापों की क्षमा के लिए '' था और सुलैमान के ओसारे में मन फिराना और लौट आना इसलिए था ''कि तुम्हारे पाप मिटाए जाएं।''

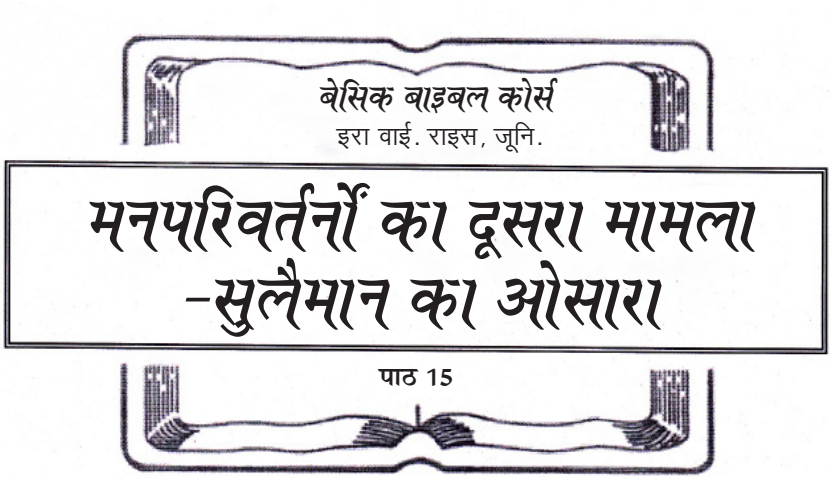

पाठ 15 के प्रश्न

Registration No.....

Grade .....

Name.....

Address.....

.....

Pin.....Mobile No.....

e-mail.....

(कृपया पता अंग्रेजी के बड़े अक्षरों में ही लिखें।)

1. प्रेरितों के काम की पुस्तक में दिए गए मनपरिवर्तन के 11 मामलों में से हर मामले से जुड़ी किन चार बातों का हम अध्ययन कर रहे हैं ?.....

   .....

   .....

2. यदि आज हम प्रेरितों के काम की पुस्तक में दी गई शिक्षा और स्वीकृत कार्य को ही मानें तो क्या हमें वही परिणाम मिलेंगे ? .....

   .....

3. पिन्तेकुस्त के दिन कलीसिया में कितनी आत्माएं मिलाई गई थीं ?.....

   .....

4. प्रेरितों 3 में पतरस और यूहन्ना दिन के किस समय गए थे ?.....

   .....

5. उनके मन्दिर में जाते हुए किस विशेष व्यक्ति ने उन्हें देखा ?.....

   .....

6. इस लगड़े आदमी के स बन्ध में प्रेरितों 3 के अपने अध्ययन में जिन पांच तथ्यों का आपको पता चला है उन्हें लिखें: .....

   .....

   .....

7. लगड़े आदमी ने पतरस और यूहन्ना से क्या मांगा था ?.....

8. क्या पतरस और यूहन्ना ने उस लगड़े को वही दे दिया जो उसने मांगा था ?.....

   यदि नहीं तो उन्होंने से क्या दिया ?.....

.....

9. पतरस ने लगड़े आदमी को किस के नाम से (किसके अधिकार से) ''उठकर चलने'' की आज्ञा दी ? .....

10. पतरस के उससे यह कहने के बाद लगड़े को क्या हुआ ?.....

.....

11. लोगों पर इसका क्या असर हुआ जब उन्होंने चंगाई पाए हुए लगड़े को चलते-फिरते और परमेश्वर की स्तुति करते देखा ?.....

.....

12. भीड़ उनकी ओर कहां भागी थी ? .....

.....

13. पतरस ने लोगों को क्या बताया था कि उस आदमी को किसने चलाया है ? .....

.....

14. उसे (लगड़े को) चलाकर परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु के लिए क्या किया था ? .....

.....

15. पतरस ने कहा कि परमेश्वर ने अपने पुत्र के लिए कुछ और किया था, जिसके पतरस और यूहन्ना गवाह थे, वह क्या था ? .....

.....

16. इस लंगड़े को तगड़ा करने के लिए परमेश्वर ने किस साधन का इस्तेमाल किया ?

.....

.....

17. परमेश्वर ने लोगों और उनके हाकिमों को यीशु को मार डालने की अनुमति क्यों दी ?

.....

.....

18. उन्होंने जान-बूझकर या अनजाने में उसे मार डाला ? .....

19. उनके पापों को मिटाने के लिए पतरस ने उन्हें क्या करने की आज्ञा दी ? .....

.....

20. यदि वे ऐसा करते तो पतरस ने उन्हें प्रभु की उपस्थिति से और कौन सी प्रतिज्ञा मिलने की बात की ? .....

.....

21. यीशु मसीह के दोबारा आने से पहले, स्वर्ग उसे कब तक रखेगा ? .....

.....

22. मूसा ने यीशु के सम्बन्ध में क्या भविष्यद्वाणी की थी ? .....

.....

यीशु के स बन्ध में लोगों को क्या करना आवश्यक था ? .....

.....

23. अपने पुत्र को भेजने के द्वारा परमेश्वर ने लोगों को आशीष देने का इरादा कैसे किया ?

.....

.....

24. याजकों, मन्दिर के सरदार और सदूकियों ने पतरस और यूहन्ना को जेल में क्यों डाला ?

.....

.....

25. सुलैमान के ओसारे में कितने लोगों ने विश्वास किया और वे प्रभु से मिलाए गए?

.....

.....

आपका कोई प्रश्न है तो उसे यहां लिखें .....

.....

.....

.....

.....

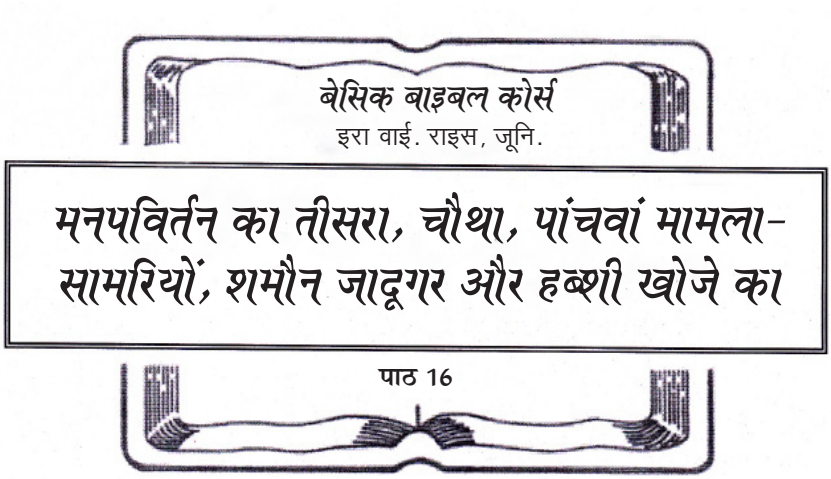

परिचय: अब तक नये नियम के अनुसार मनपरिवर्तन के अपने अध्ययन में हमने प्रेरितों के काम पुस्तक में मनपरिवर्तन के **पहले दो मामलों** के **तथ्यों, चेतावनियों, आज्ञाओं, उद्देश्यों** और **प्रतिज्ञाओं** की समीक्षा की है-(1) पिन्तेकुस्त के दिन ''लगभग तीन हज़ार आत्माओं'' के मनपरिवर्तन और (2) सुलैमान के ओसारे में ''लगभग पांच हज़ार'' पुरुषों (और बाद में ''पुरुषों और स्त्रियों दोनों की भीड़'') (प्रेरितों 3, 4, 5) ... अब जबकि हम मनपरिवर्तन के **तीसरे, चौथे** और **पांचवें** मामले में पहुंच गए है... तो कृपया इस अध्ययन से पहले प्रेरितों 8 अध्याय पूरा पढ़ लें...

मनपरिवर्तन का तीसरा मामला- सामरियों का

I. पहले मसीही शहीद स्तिफनुस की मृत्यु के बाद यरूशलेम की कलीसिया पर बड़ा सताव होने लगा (आयत 1)।
   क. प्रेरितों को छोड़ यरूशलेम की सारी कलीसिया यहूदिया और समारिया के इलाकों में तितर-बितर हो गई।
   ख. स्तिफनुस को भक्तों ने दफ़ना दिया (आयत 2)।
   ग. शाऊल (जो बाद में प्रेरित पौलुस बन गया) ने कलीसिया को उजाड़ दिया (आयत 3)।
      1. वह घर-घर घुसता था।
      2. वह पुरुषों और स्त्रियों को (मसीही होने के कारण!) गिरफ़्तार करता था।
      3. वह उन्हें जेल में डाल देता था।
   घ. सताव के बावजूद तितर-बितर होने वाले लोग हर जगह वचन का प्रचार करते रहे

(आयत 4)।

II. सताव के कारण फिलिप्पुस यरूशलेम से चला गया, सामरिया में बस गया और उनमें मसीह का प्रचार करता रहा (आयत 5)।

नोट: अब तक (41 ईस्वी) पिन्तेकुस्त के दिन यीशु द्वारा बनाई गई कलीसिया 8 साल की हो चुकी थी। फिर भी यरूशलेम नगर के बाहर प्रचार किए जाने का हमें यह पहला रिकॉर्ड मिलता है।

क. समारियों ने फिलिप्पुस के प्रचार पर ''मन लगाया'' (आयत 6)।
   1. उन्होंने उन आश्चर्यकर्मों के बारे में **सुना** जो फिलिप्पुस ने किए थे।
   2. उन्होंने उन आश्चर्यकर्मों को **देखा** जो फिलिप्पुस ने किए थे।

ख. समारिया नगर में बड़ा आनंद छा गया (आयत 8) जिसके निम्न कारण थे:
   1. अशुद्ध आत्माएं निकाली गई थीं (आयत 7)।
   2. बहुत से लकवे के रोगी चंगे हुए थे (आयत 7)।
   3. बहुत से लंगड़े अच्छे किए गए थे (आयत 7)।

III. इस समय से पहले सामरिया के लोगों ने शमौन नामक एक जादूगर पर मन लगाया था (आयत 9)।
   क. शमौन ने जादू-टोने से समारिया के लोगों को भरमाया हुआ था।
   ख. शमौन अपने आप को बड़ा व्यक्ति बताता था।
   ग. छोटे से बड़ा हर सामरी शमौन को मानता था (आयत 10)।
   घ. शमौन के लिए सामरियों का कहना था, ''यह मनुष्य परमेश्वर की वह शक्ति है, जो महान कहलाती है'' (आयत 10)।
   ङ शमौन का बड़ा नाम था, क्योंकि वह लम्बे समय से जादू-टोने से लोगों को भरमाता था (आयत 11)।

IV. परन्तु जब सामरियों ने फिलिप्पुस द्वारा परमेश्वर के राज्य और यीशु मसीह के नाम से सम्बन्धित वचन को सुना तो उन्होंने विश्वास किया।
   क. उन्होंने बपतिस्मा लिया।
   ख. पुरुषों और स्त्रियों सब ने (आयत 12)।

नोट: वचन क्या कहता है कि उन्होंने क्या किया? उन्होंने ''विश्वास किया'' और ''बपतिस्मा लिया।'' ध्यान दें कि यह बात आम हो गई है कि ''केवल विश्वास'' के द्वारा उद्धार या मनपरिवर्तन का प्रचार होता है; परन्तु ध्यान दें कि यह प्रेरितों के काम में लिखित मनपरिवर्तन

के वास्तविक मामलों से मेल नहीं खाता है। पिन्तेकुस्त के दिन जिनके ''हृदय छिद गए'' थे उन्हें ''मन फिराकर बपतिस्मा लेने'' की आज्ञा दी गई थी। सुलैमान के ओसारे में भी यही हुआ था कि उनसे कहा गया था कि ''मन फिराओ और लौट आओ।'' यहां फिर, ऐसा नहीं है कि समारियों ने केवल ''विश्वास किया''; उन्होंने यानी पुरुषों और स्त्रियों दोनों ने बपतिस्मा लिया।

मनपरिवर्तन का चौथा मामला- शमौन जादूगर

I. शमौन ने स्वयं विश्वास किया (प्रेरितों 8:13)।

II. शमौन ने बपतिस्मा लिया (आयत 13)।

III. शमौन फिलिप्पुस के साथ काम करता रहा (आयत 13)।

क. वह उन आश्चर्यकर्मों और चिह्नों से, जो हो रहे थे, चकित था।

नोटः यह वही शमौन है जिसकी बात मनपरिवर्तन के तीसरे मामले में की गई है कि ''एक मनुष्य'' जो पहले सामरिया के लोगों को मोहित करता था। बाद में इस अध्याय में जब शमौन ने देखा कि प्रेरितों के हाथ रखने से पवित्र आत्मा दिया जाता था, तो उसने पैसे से इस सामर्थ को खरीदने की कोशिश की (आयतें 14-20)। पतरस ने उसे ऐसा करने के लिए यह कहते हुए खूब डांट लगाई कि ''तेरे रुपए तेरे साथ नष्ट हों।'' उसके भ्रष्ट कार्य को ''बुराई'' कहकर पतरस ने उसे आज्ञा दी कि ''मन फिराकर प्रभु से प्रार्थना कर, स भव है तेरे मन का विचार क्षमा किया जाए'' (आयतें 21-22)। पाश्चातापी शमौन ने पतरस ने कहा, ''तुम मेरे लिए प्रभु से प्रार्थना करो'' (आयत 24)।

शमौन अपने मनपरिवर्तन के लगभग तुरन्त बाद ही अनुग्रह से गिर गया था, इस कारण कुछ लोगों द्वारा यह तर्क दिया जाता है कि उसका ''उद्धार'' कभी नहीं हुआ। फिर भी उसका उद्धार ''पित्त की सी कड़वाहट और अधर्म के बन्धन'' में लौटने से पहले हो गया था (आयत 23), इस कारण संदेह करने का कोई उचित कारण नहीं है। मरकुस 16:16 में यीशु ने वचन दिया था ''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले, उसी का उद्धार होगा।'' प्रेरितों 8:12 में हम देखते हैं कि सामरियों ने यही किया था, इस कारण उनके उद्धार पर कोई सवाल ही नहीं है। आयत 13 कहती है कि शमौन ने भी यही किया था।
निम्न आयतों पर ध्यान दें:

मरकुस 16:16, ''जो **विश्वास करे** और **बपतिस्मा ले** उसी का उद्धार होगा''
प्रेरितों 8:12, सामरिया के पुरुषों और स्त्रियों दोनों ने **विश्वास किया** और **बपतिस्मा लिया।**

प्रेरितों 8:13, शमौन ने भी **विश्वास किया** और **बपतिस्मा लिया।**

शमौन का विश्वास करना और बपतिस्मा लेना उसके इस गिरने के बाद पतरस के उससे ''मन फिराकर प्रार्थना'' करने को कहने से भी सही होने से पता चलता है। यूहन्ना 9:31 बताता है कि ''परमेश्वर पापियों की नहीं सुनता,'' परन्तु यदि कोई उसकी आराधना करने वाला है और ''उसकी इच्छा पर चलता है, तो वह उसकी सुनता है।'' स्पष्टतया पतरस द्वारा शमौन को ऐसा की आराधक माना गया, नहीं तो, **मन फिराकर प्रार्थना** करने को कहने के बजाय वह उससे कहता कि **विश्वास कर और बपतिस्मा ले।** पतरस ने शमौन के विश्वास **या** उसके बपतिस्मे पर सवाल नहीं उठाया; उसका यह उल्लंघन दोनों के बाद था। यहां हम पहली बार देखते हैं कि मसीही लोगों को बपतिस्मा लेने के **बाद** किए गए पापों के लिए कैसे क्षमा लें। बार-बार बपतिस्मा लेने के बजाय नये नियम के अनुसार एक बार बपतिस्मा लेने के बाद गलत चल रहे चेलों को मन फिराकर परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह उन्हें क्षमा कर दे।

मनपरिवर्तन का पांचवां मामला- हब्शी खोजा

I. यहोवा के दूत ने फिलिप्पुस को यरूशलेम से गाजा की ओर जाने वाले राजमार्ग की ओर दक्षिण में जाने की आज्ञा दी (आयत 26)
   क. फिलिप्पुस उठकर चला गया (आयत 27)।
   ख. उसने हब्शी खोजे को अपने रथ में बैठे यशायाह नबी की किताब पढ़ते देखा (आयत 27)।
      1. खोजा एक बड़ा अधिकारी था (आयत 27)।
      2. वह इथोपिया (कूश देश) की रानी कंदाके के सारे खजाने का मंत्री था।
      3. वह यरूशलेम आराधना करने के लिए गया था।
      4. वह इथोपिया को वापस जा रहा था।

II. आत्मा ने फिलिप्पुस को आज्ञा दी ''निकट जाकर इस रथ के साथ हो ले'' (आयत 29)।
   क. फिलिप्पुस रथ की ओर भागा (आयत 30)।
   ख. फिलिप्पुस ने खोजे को यशायाह नबी की पुस्तक में से पढ़ते हुए सुना (यशायाह 53)।
   ग. फिलिप्पुस ने खोजे से पूछा, ''जो तू पढ़ रहा है क्या उसे समझता भी है?'' (आयत 30)।
   घ. खोजे ने उत्तर दिया, ''जब तक मुझे कोई न समझाए तो मैं कैसे समझूं?'' (आयत 31)।
   ङ फिर उसने फिलिप्पुस को ऊपर आकर रथ में उसके साथ बैठने का कहा (आयत 31)।

III. खोजे द्वारा उसका अर्थ पूछने पर (आयत 34) फिलिप्पुस ने उसी शास्त्र से आर भ किया

जिसमें से खोजा पढ़ रहा था (आयतें 32-33) और उसे यीशु का वचन सुनाया (आयत 35)।

क. चलते-चलते मार्ग में वे ऐसी जगह पहुंचे जहां पानी था।
ख. खोजे ने कहा, ''देख यहां जल है, अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है?'' (आयत 36)।

नोट: स्पष्टतया खोजे को ''यीशु'' का वचन सुनाने में यह अवश्य जोड़ा गया होगा, जिसमें बपतिस्मा भी शामिल था! आयतें 35 और 36 इकट्ठे पढ़ें और देखें कि ऐसा ही है कि नहीं।

ग. फिलिप्पुस ने कहा, ''यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो (बपतिस्मा) ले सकता है'' (आयत 37)।
घ. खोजे ने उत्तर दिया, ''मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है'' (आयत 37)।
ङ खोजे ने रथ खड़ा करने की आज्ञा दी (आयत 38)।
च. फिलिप्पुस और खोजा दोनों ''जल में उतर पड़े'' (आयत 38)।
छ. फिलिप्पुस ने खोजे को बपतिस्मा दिया (आयत 38)।
ज. वे ''जल में से निकलकर ऊपर आए'' (आयत 39)।
झ. प्रभु का आत्मा फिलिप्पुस को उठा ले गया (आयत 39)।
ञ. खोजा आनन्द करता हुआ अपने मार्ग पर चला गया (आयत 39)।

नोट: मनपरिवर्तन के इस पांचवें मामले की कुछ बातें अनोखी हैं। उदाहरण के लिए उस तैयारी पर ध्यान दें जिससे फिलिप्पुस ने ''स्वर्गदूत'' (आयतें 26-27) और ''आत्मा'' की आज्ञा मानी (आयतें 29-30)। फिर उसकी उत्सुकता पर भी विचार करें जिससे खोजे ने प्रभु के निर्देशों को ग्रहण किया। बपतिस्मा देने के लिए समझाते रहने के बजाय, जैसे ही खोजे को पता चला कि प्रभु इसे चाहता है, उसने जानना चाहा कि बपतिस्मा लेने के लिए उसे क्या करना आवश्यक है।

फिलिप्पुस के उत्तर से सब को यह स्पष्ट हो जाए कि बपतिस्मे के लिए केवल नवजात योग्य नहीं हो सकते थे। फिलिप्पुस ने कहा, ''यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो ले सकता है'' (आयत 37)। क्या कोई नवजात विश्वास कर सकता है? फिलिप्पुस की बात से स्पष्ट है कि जब तक कोई विश्वास नहीं करता तब तक वह बपतिस्मा नहीं ले सकता। इसका अर्थ यह हुआ कि अयोग्य (दिमागी तौर पर) लोगों की तरह नवजात शिशु भी इससे बाहर होंगे।

खोजे के उत्तर से यह स्पष्ट है कि बपतिस्मे के समय हमें अंगीकार क्या करना है। पापों का नहीं (जैसा कि कुछ लोग करवाते हैं) बल्कि अपने विश्वास का अंगीकार। खोजे ने उत्तर देकर कहा, ''मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है।'' (पहले से बपतिस्मा ले चुका व्यक्ति यदि पाप करता है, तो बाद की आयतें उसे अपनी गलतियों

का अंगीकार करने का बताती हैं; परन्तु बपतिस्मा लेने के समय गलतियों का नहीं बल्कि मसीह में अपने विश्वास का अंगीकार करना आवश्यक है जैसा कि वचन में स्पष्ट बताया गया है)।

आयत 38 में बताए गए बपतिस्मे से मिलाने पर ''बपतिस्मा'' के लिए छिड़काव या उण्डेलने के आधुनिक विकल्प कितने बाहरी हैं! छिड़काव और उण्डेले जाने में न तो बपतिस्मा देने वाला और न बपतिस्मा लेने वाला ''जल में से निकलकर'' आते हैं, क्योंकि कोई ''जल में उतरता'' ही नहीं है। इफिसियों 4:5 बताता कि ''एक ही बपतिस्मा है'' न कि तीन बपतिस्मे। आयत 38 में हम ''एक बपतिस्मा'' को दिखाया जाना देखते हैं। फिलिप्पुस और खोजा ''दोनों जल में उत्तर पड़े''; उसने उसे बपतिस्मा दिया; फिर आयत 39 दिखाती है कि वे दोनों ''जल में से निकलकर ऊपर आए।'' केवल ऐसा विवरण ही डुबकी के साथ मेल खाता है जो कि जल में दफ़नाया जाना है (रोमियों 6:4 और कुलुस्सियों 2:12 की तुलना करें)। छिड़काव या उण्डेलना किसी भी सूरत में डुबकी नहीं है, क्योंकि उसमें कोई भी पानी में नहीं उतरता है।

अन्त में अपने आप से यह प्रश्न पूछते हैं कि खोजे ने आनन्द कब किया-बपतिस्मा लेने से पहले या बाद में? (देखें आयत 39)। पिन्तेकुस्त के दिन पतरस के प्रचार से, जैसा कि हम पहले देख चुके हैं कि बपतिस्मा ''पापों की क्षमा के लिए'' था। आज बहुत से लोग बपतिस्मा लेने से पहले आनन्द करते हैं जबकि खोजे ने बपतिस्मा लेने के बाद आनन्द किया था। आखिर जब तक किसी के पाप मिटाए नहीं जाते तब तक वह आनन्द कैसे कर सकता है!

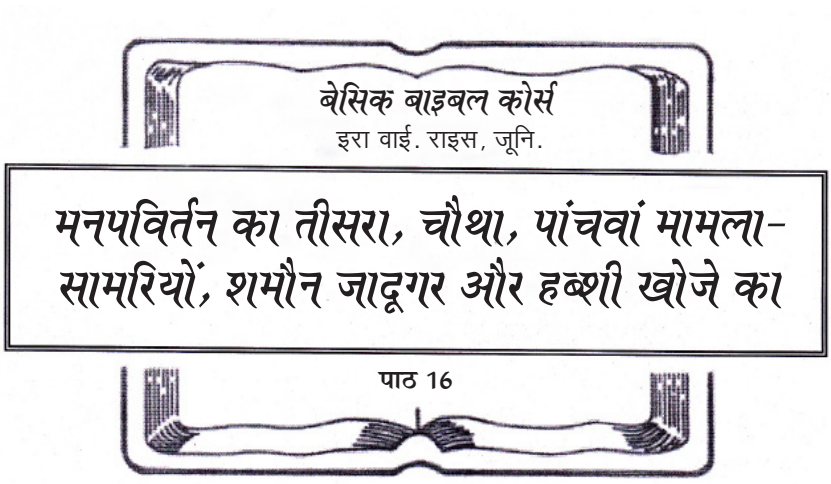

पाठ 16 के प्रश्न

Registration No.....

Grade .....

Name.....

Address.....

.....

Pin.....Mobile No.....

e-mail.....

(कृपया पता अंग्रेजी के बड़े अक्षरों में ही लिखें।)

1. स्तिफनुस की मृत्यु के बाद यरूशलेम की कलीसिया पर क्या होने लगा था?

.....

.....

2. यरूशलेम की कलीसिया पर सताव आने से सुसमाचार के फैलने का ज़बर्दस्त परिणाम क्या हुआ? .....

.....

3. यरूशलेम से जाने के बाद फिलिप्पुस कहां गया?

.....

.....

4. सामरिया जाकर फिलिप्पुस ने क्या किया?

.....

.....

5. फिलिप्पुस के वहां आने से पहले सामरी क्या रहे थे?

.....

.....

6. फिलिप्पुस के आने के बाद सामरियों ने उसके प्रचार का क्या किया?

.....

.....

7. प्रेरितों 8:13 में यह शमौन कौन था?

.....

8. शमौन पर फिलिप्पुस के प्रचार का क्या असर हुआ?

.....

.....

9. शमौन के मन परिवर्तन में क्या उसने भी वही किया जो अन्य सामरियों ने किया था?

.....

.....

10. यदि हां, तो उसने क्या-क्या किया?

.....

.....

11. बाद में अपने मन परिवर्तन के बाद जब शमौन ने पाप किया तो क्या पतरस ने से विश्वास करके फिर से बपतिस्मा लेने को कहा?

.....

12. यदि नहीं तो पतरस ने उससे क्या करने का कहा?

.....

13. प्रेरितों 8 में फिलिप्पुस ने और किसे वचन सुनाया?

.....

.....

14. गाज़ा की ओर जाने वाले मार्ग पर फिलिप्पुस द्वारा परिवर्तित किए गए व्यक्ति का विवरण दें।.....

.....

15. जब फिलिप्पुस गाज़ा राजमार्ग पर पहुंच गया तो आत्मा ने उसे क्या करने की आज्ञा दी?

.....

.....

16. जब फिलिप्पुस ने खोजे से पूछा जो वह पढ़ रहा है उसे समझता भी है तो खोजे ने क्या उत्तर दिया?.....

.....

17. फिलिप्पुस ने खोजे को क्या (या किसका) वचन सुनाया?

.....

18. इस वचन के सुनने के बाद खोजे ने क्या पूछा?

.....

19. ''यीशु'' का वचन सुनाने में क्या फिलिप्पुस ने बपतिस्मे का प्रचार भी किया? ..... विस्तार से बताएं?.....

.....

.....

20. खोजे के मन परिवर्तन से हमें कैसे पता चलता है कि उसका बपतिस्मा पानी में हुआ था?

.....

.....

21. खोजे के बपतिस्मा लेने से पहले फिलिप्पुस ने क्या बताया, जो उसके बपतिस्मा लेने में रुकावट थी?.....

.....

22. यदि बपतिस्मा लेने से पहले व्यक्ति के लिए विश्वास करना आवश्यक है तो क्या नवजात या मानसिक रूप से अक्षम व्यक्ति बपतिस्मा ले सकता है ?.....

समझाएं, कैसे ?.....

.....

23. आयत 37 में खोजे के अंगीकार से क्या हमें यह निष्कर्ष निकालना चाहिए कि बिना बपतिस्मा पाए व्यक्ति को बपतिस्मा लेने से पहले अपने पापों का अंगीकार करना चाहिए या अपने विश्वास का ? .....

.....

24. आयतें 38-39 में खोजे के बपतिस्मे से क्या आप यह निष्कर्ष निकालेंगे कि उस पर छिड़काव हुआ, पानी उण्डेला गया या डुबकी दी गई ? .....

.....

25. खोजे ने आनन्द कब किया-बपतिस्मा लेने से पहले या बाद में ?

.....

.....

आपका कोई प्रश्न है तो उसे यहां लिखें .....

.....

.....

.....

.....

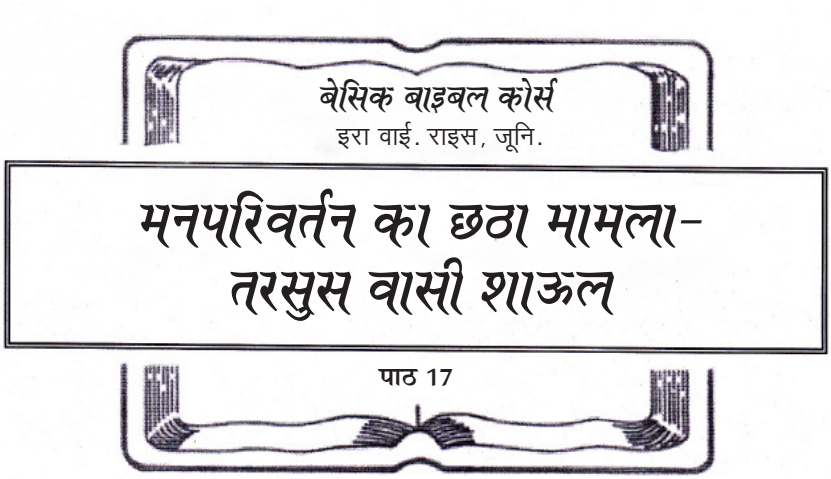

परिचय: इस पाठ के अध्ययन से हम प्रेरितों के काम में वर्णित मनपरिर्वतन के मामलों की अपनी जांच में मध्य में पहुंच चुके हैं। इस पाठ के बाद इस समझ से कि हम एक सही काम के पूरा करने के निकट पहुंच रहे हैं, मनोवैज्ञानिक सुकून का आनन्द ले सकते हैं। और बेशक अब तक के हमारे कुछ प्रयास अधूरे हैं पर हम सब को यह मानना पड़ेगा कि ऐसे अध्ययन के द्वारा परमेश्वर के वचन का हमारा ज्ञान बहुत हद तक बढ़ गया है।

(प्रेरितों 8 में) मनपरितर्वन के तीसरे, चौथे, पांचवें मामले के अध्ययन से हमें काफी जानकारी मिल गई थी। सामरियों के मामले से हमें पता चला कि फिलिप्पुस के प्रचार के कारण लोगों ने विश्वास किया और बपतिस्मा लिया (आयत 12)। शमौन जादूगर (या टोना करने वाले) के मामले से हमें समझ आया कि उसने भी विश्वास किया और बपतिस्मा लिया था (आयत 13) । और हब्शी खोजे के मामले से हमें पता चला कि उसे भी फिलिप्पुस के प्रचार के द्वारा विश्वास हुआ था और उसने बपतिस्मा लिया था (आयतें 35-39)।

मनपरिवर्तन के मामलों में जिनका अभी तक हमने अध्ययन किया है, विश्वास और बपतिस्मा एक दूसरे से जुड़े हुए हैं, या तो विश्वास या बपतिस्मा संयोग से हो सकते हैं (जैसा कि कुछ लोग बपतिस्मे के लिए चाहते हैं कि हम ऐसा मानें) परमेश्वर का वही वचन जो बात एक को सिखाता है वही दूसरे को सिखाता है-और उसी उद्देश्य के लिए सिखाता है। इसके अलावा जैसा कि हमने ग्रेट कमीशन के अपने पहले अध्ययन में से सीखा कि प्रेरितों को भेजते समय यीशु मसीह ने भी उन्हें आज्ञा दी कि इस प्रकार से सिखाया जाए और प्रचार किया जाए और कार्य किया जाए।

हमारे अध्ययन की कुछ बातें निराली थीं, विशेषकर हब्शी खोजे के मनपरिवर्तन की:

1) उसे बपतिस्मा लेने के लिए मनाए जाने के बजाय उसने स्वयं ही उत्सुकता से बपतिस्मा लेने की इच्छा की।
2) फिलिप्पुस ने उसे बताया कि बपतिस्मे से पहले विश्वास करना आवश्यक है (जिसका

अर्थ यह होगा कि मानसिक रूप में विश्वास करने के अयोग्य लोगों, जैसे बच्चों मंदबुद्धि लोगों, पशुओं इत्यादि को बपतिस्मे की आवश्यकता नहीं।)

3) खोजे ने बपतिस्मा लेने से पहले अपने पापों का नहीं बल्कि मसीह में अपने विश्वास का अंगीकार किया था।

4) खोजे के बपतिस्मे के समय फिलिप्पुस और खोजा दोनों जल में उतरे थे, जिसमें उसे बपतिस्मा दिया गया, उसके बाद दोनों जल में से ऊपर आए थे। (रोमियों 6:4 और कुलुस्सियों 2:12 से, जिसमें बपतिस्मे का विवरण दिया गया है, हमने निष्कर्ष निकाला था कि वहां दफनाया जाना (डुबकी) हुआ होगा, जो दिए गए विवरण से मेल खाता है। इफिसियों 4:5 सिखाता है कि ''एक ही बपतिस्मा'' है। यदि वह ''एक'' ही बपतिस्मा जल में दफन होना है, तो पवित्र शास्त्र के अनुसार इन दोनों कथित '' बपितस्मों'' या छिड़काव और उण्डेलने के लिए क्या कारण हैं!

5) अन्त में खोजे का आनन्द करना उसके बपतिस्मा लेने के बाद में हुआ था (न कि पहले)। अब हम तरसुस वासी शाऊल के मामले पर आते हैं, जो बाद में पौलुस प्रेरित के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उसके मनपरिवर्तन का वर्णन प्रेरितों 9:1-22 में मिलता है। परन्तु बाद में पौलुस ने यरूशलेम में अपने मनपरिवर्तन की बात को याद किया जिसका वर्णन प्रेरितों 22:1-16 में मिलता है। अगला अध्ययन करने से पहले कृपया दोनों विवरणों को ध्यान से पढ़ लें।

I. शाऊल ने दमिश्क के आराधनालयों में जाकर जो भी मसीही मिलें उन्हें दण्ड देने के लिए यरूशलेम में लाने की स्वीकृति ले ली (प्रेरितों 9:1-2; प्रेरितों 22:4-5)।

क. दमिश्क की ओर जाते हुए, नगर के पास पहुंचने पर उसके आस-पास आकाश से एक ज्योति चमकी (प्रेरितों 9:3; प्रेरितों 22:6)।

ख. शाऊल भूमि पर गिर गया (प्रेरितों 9:4; प्रेरितों 22:7)।

ग. शाऊल ने एक आवाज़ को यह कहते हुए सुना ''हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है?'' (प्रेरितों 9:4; प्रेरितों 22:7)।

घ. प्रभु ने कहा, ''मैं यीशु हूं जिसे तू सताता है। पैने पर लात मारना तेरे लिए कठिन है'' (प्रेरितों 9:5; प्रेरितों 22:8; 26:14)।

नोट: बाइबल के छात्र आमतौर पर परेशान हो जाते हैं कि इस अन्तिम वाक्य ''पैने पर लात मारना तेरे लिए कठिन है'' का क्या अर्थ है। जो लोग बैलों के हांकने से परिचित हैं उनके लिए दूसरों की अपेक्षा इसे समझना अधिक आसान होगा। जैसा कि हम जानते हैं कि बैल को छड़ी या रुकावट से चलाया जाता है। बैलगाड़ी चलाने वाला पीछे बैठ जाता है और उनको मालूम होता है कि वह उन्हें जिधर ले जाना चाहता है उधर ले जाने के लिए छड़ी चुभोता है। स्पष्टतया यीशु शाऊल के विवेक की बात कर रहा था, जैसे बैल अपने मालिक का विरोध करता हो, जिस प्रकार से बैल के लिए रुकावट पर लात मारना कठिन होता है वैसे शाऊल के विवेक के लिए उन प्रमाणों का सामना

कठिन था कि यीशु वही था जो होने का दावा उसने किया था–यानी परमेश्वर का पुत्र। इन प्रमाणों ने उसके विवेक को ''चुभन दी।'' उसके लिए ''चुभनों'' को ''लात'' मारना ''कठिन'' था।

ङ कांपते हुए आश्चर्यचकित शाऊल ने कहा, ''हे प्रभु, मैं क्या करूं?'' (प्रेरितों 9:6; प्रेरितों 22:10)।

च. प्रभु ने कहा, ''उठकर दमिश्क में जा, और जो कुछ तेरे करने के लिए ठहराया गया है वहां तुझे सब बता दिया जाएगा'' (प्रेरितों 9:6; प्रेरितों 22:10)।

छ. शाऊल के साथी अवाक खड़े रहे (प्रेरितों 9:7)।

ज. वे डर गए थे (प्रेरितों 22:9)।

झ. शाऊल के साथियों ने आवाज़ तो सुनी पर किसी को देखा नहीं (प्रेरितों 9:7)।

नोट: प्रेरितों 22:9 कहता है कि उन्होंने ''ज्योति तो देखी, परन्तु जो ... बोलता था, उसका शब्द न सुना।'' प्रेरितों 9:7 के साथ लगने वाला विरोधाभास वास्तव में विरोधाभास नहीं हो सकता, ''सुना'' शब्द के कई अर्थ हैं। कई बार इसका अर्थ कानों के पर्दे पर प्रभाव डालने वाले स्वर के लिए होता है। कई बार इसका अर्थ आज्ञा मानना होता है। कई बार इसका अर्थ समझना आदि होता है। इस कारण शाऊल के साथियों के लिए इनमें से एक अर्थ में ''सुना'' होगा (प्रेरितों 9:7) परन्तु एक बिल्कुल अलग अर्थ में ''न सुना'' होगा (प्रेरितों 22:9)। उदाहरण के लिए उन्होंने इस अर्थ में सुना होगा कि उनके कानों के पर्दे पर तो पड़ा परन्तु जो कुछ कहा गया था उसे समझने के अर्थ में उन्होंने न सुना था।

ञ. शाऊल भूमि पर से उठा (प्रेरितों 9:8)।

ट. जब शाऊल ने आंखें खोलीं तो उसे कुछ दिखाई न दिया (प्रेरितों 9:8; प्रेरितों 22:11)।

ठ. उसके साथियों ने हाथ पकड़कर उसे दमिश्क में पहुंचा दिया (प्रेरितों 9:8; प्रेरितों 22:11)।

ड. शाऊल तीन दिन तक अन्धा रहा (प्रेरितों 9:9)।

ढ. इन तीन दिनों तक उसने न कुछ खाया और न पिया (प्रेरितों 9:9)।

II. प्रभु हनन्याह को शाऊल के पास यह बताने के लिए भेजता है कि वह क्या करे।

क. हनन्याह यीशु का एक चेला था जो दमिश्क मे रहता था, जिसका यहूदियों में बड़ा नाम था (प्रेरितों 9:10; प्रेरितों 22:12)।

ख. प्रभु हनन्याह को एक दर्शन में दिखाई दिया (प्रेरितों 9:10)।

ग. प्रभु ने कहा, ''हे हनन्याह!'' (प्रेरितों 9:10)।

घ. हनन्याह ने कहा, ''हां, प्रभु'' (प्रेरितों 9:10)।

ङ. ''उठकर उस गली में जा जो सीधी कहलाती है, और यहूदा के घर में शाऊल नाम एक तारसी को पूछ ले; क्योंकि देख, वह प्रार्थना कर रहा है। और उस ने हनन्याह

नामक एक पुरुष को भीतर आते, और अपने ऊपर हाथ रखते देखा है; ताकि फिर से दृष्टि पाए'' (प्रेरितों 9:11- 12)।

च. मसीही लोगों को सताने वाले के रूप में शाऊल का नाम होने के कारण, लगा कि हनन्याह जाने से कतरा रहा है। उसने कहा ''हे प्रभु मैंने इस मनुष्य के विषय में बहुतों से सुना है, कि इस ने यरूशलेम में तेरे पवित्र लोगों के साथ बड़ी-बड़ी बुराइयां की हैं। और यहां भी इसको महायाजकों की ओर से अधिकार मिला है कि जो लोग तेरा नाम लेते हैं उन सब को बान्ध ले'' (प्रेरितों 9:13-14)।

छ. परन्तु प्रभु ने हनन्याह को फिर भी जाने को कहा, ''क्योंकि यह, तो अन्यजातियों और राजाओं, और इस्राएलियों के सा हने मेरा नाम प्रगट करने के लिए मेरा चुना हुआ पात्र है। और मैं उसे बताऊंगा, कि मेरे नाम के लिए उसे कैसा-कैसा दुख उठाना पड़ेगा'' (प्रेरितों 9:15-16)।

ज. सो हनन्याह प्रभु की बात मानकर जैसे उसे कहा गया था, चला गया और घर में दाखिल हुआ (प्रेरितों 9:17)।

झ. हनन्याह ने शाऊल के पास जाकर, उसके ऊपर हाथ रखे और कहने लगा, ''हे भाई शाऊल, प्रभु, अर्थात् यीशु, जो उस रास्ते में, जिससे तू आया तुझे दिखाई दिया था, उसी ने मुझे भेजा है कि तू फिर दृष्टि पाए और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाए'' (प्रेरितों 9:17)।

ञ. हनन्याह ने कहा ''हे भाई, शाऊल फिर देखने लग'' (प्रेरितों 22:13)।

ट. तुरन्त शाऊल की आंखों से छिलके से गिरे (प्रेरितों 9:18)।

ठ. और उसकी नज़र लौट आई (प्रेरितों 9:18)।

ड. शाऊल ने हनन्याह को देखा (प्रेरितों 9:18)।

ढ. इसके बाद हनन्याह ने शाऊल को वचन सुनाया, ''हमारे बापदादों के परमेश्वर ने तुझे इसलिए ठहराया है कि तू उसकी इच्छा को जाने, और उस धर्मी को देखे, और उसके मुंह से बातें सुने। क्योंकि तू उसकी ओर से सब मनुष्यों के साम्हने उन बातों का गवाह होगा, जो तूने देखी और सुनी हैं। अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर पापों को धो डाल'' (प्रेरितों 22:14-16)।

ण. ''उठकर बपतिस्मा लिया'' (प्रेरितों 9:18)।

नोट: सब यह मानते हैं कि शाऊल का मनपरिवर्तन बहुत ही विशेष मामला था, जिसमें यीशु मसीह उसे केवल अपना ''चेला'' बनाने के लिए ही नहीं बल्कि ''प्रेरित'' बनाने के लिए भी चुन रहा था। उसके प्रेरित चुने जाने की बात का ''विशेष'' होना स्पष्ट है, जब हम याद करते है कि अन्य प्रेरितों के लिए ''जितने दिन तक प्रभु यीशु हमारे साथ आता-जाता रहा अर्थात यूहन्ना के बपतिस्मे से लेकर उसके हमारे पास से उठाए जाने तक ... उसके साथ'' रहना आवश्यक था (देखें प्रेरितों 1:21-22)। निश्चय ही यह बात तरसुस वासी शाऊल के लिए नहीं कही जा सकती थी, जिसने बाद में घोषणा की कि मसीह ''सब के बाद मुझ को भी दिखाई दिया, जो मानो अधूरे दिनों का जन्मा हूं। क्योंकि

मैं प्रेरितों में सब से छोटा हूं, वरन प्रेरित कहलाने के योग्य भी नहीं, क्योंकि मैंने परमेश्वर की कलीसिया को सताया था'' (1 कुरिन्थियों 15:8-9)।

पौलुस को यीशु के मुख से स्वर सुनने के साथ-साथ देखने की अनुमति मिलने का कारण हनन्याह ने बताया, यह था ताकि वह उस सबका जो उसने देखा और सुना था सब लोगों में गवाह हो सके। (यह उससे कितना अलग है, जो आज अपने आप को ''यहोवा के साक्षी'' (जहोवा'ज़ विटनेस) कहते हैं! शाऊल ने जो कुछ देखा और सुना था, उसकी गवाही के लिए उसे यीशु को देखना और सुनना दोनों आवश्यक था। आज के इन नकली ''गवाहों'' ने न तो यीशु को देखा और न सुना है पर फिर भी वे उसके ''गवाह'' होने का दावा करते हैं। कुछ साक्षी! वे उसकी ''पुष्टि'' करते हैं जिसे उन्होंने न तो देखा न सुना है यानी वे उसकी ''साक्षी'' देते हैं, जिसके वे साक्षी हैं नहीं!)

कुछ लोग गलत सिखाते हैं कि शाऊल के पाप तब क्षमा हो गए थे, जब स्वर्ग से उसके आस-पास ज्योति चमकी थी और यीशु ने दमिश्क के मार्ग पर उससे बात की थी। यह भावनात्मक शिक्षा कुछ लोगों को विश्वास दिलाने वाली लगती है परन्तु समस्या यह है कि ऐसा नहीं है।

पहले तो ऐसी शिक्षा देना सम्भव है क्योंकि परमेश्वर का वचन इस पर कुछ नहीं कहता है। दूसरा प्रभु के उसे तब और वहां क्षमा करने के बजाय, उसने उसे आज्ञा दी, ''अब उठकर नगर में जा और जो तुझे करना है वह तुझसे कहा जाएगा'' (प्रेरितों 9:6)। यीशु ने शाऊल को सीधे सुसमाचार भी नहीं सुनाया बल्कि उसने हनन्याह के द्वारा सुनवाया। यह 2 कुरिन्थियों 4:7 से मेल खाता है, जहां पौलुस घोषणा करता है ''हमारे पास वह धन [सुसमाचार] मिट्टी के बर्तनों [यानी मानवीय जीवों] में रखा है।''

तीसरा, तीन दिन बाद दमिश्क नगर में, जब हनन्याह शाऊल को वचन सुना चुका तो उसने यह कहते हुए समाप्त किया, ''उठ, बपतिस्मा ले और ... अपने पापों को धो डाल।''

कुछ लोग कितने धोखे में हो सकते हैं! शाऊल के मनपरिवर्तन में उसका बपतिस्मा लेना स्पष्ट रूप में उसके पाप धोए जाने से जुड़ा हुआ है। यही कारण है कि उसने ''उठकर बपतिस्मा लिया'' (प्रेरितों 9:18), और उसके बाद भोजन किया (आयत 19)।

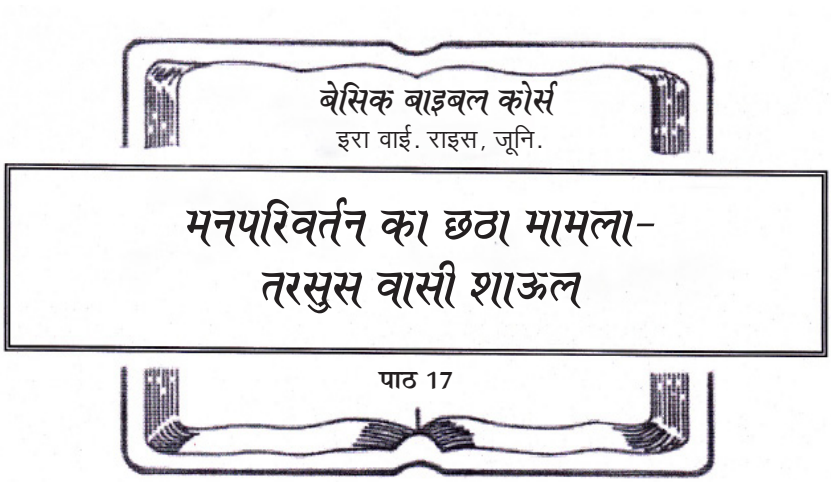

पाठ 17 के प्रश्न

Registration No.....

Grade .....

Name.....

Address.....

.....

Pin.....Mobile No.....

e-mail.....

(कृपया पता अंग्रेजी के बड़े अक्षरों में ही लिखें।)

1. सामरियों, शमौन जादूगर और हब्शी खोजे के मनपरिवर्तनों के अपने पिछले अध्ययनों से तीनों मामलों में कौन सी दो बातें साझी हैं ? .....

2. हब्शी खोजे के मनपरिवर्तन के पांच तथ्यों को लिखें।

.....

.....

.....

.....

.....

3. जैसा कि प्रेरितों 9 और प्रेरितों 22 में बताया गया है, दमिश्क में जाने का शाऊल का मूल उद्देश्य क्या था?.....

.....

4. दमिश्क के मार्ग पर शाऊल के साथ क्या हुआ?

.....

5. उसके मार्ग पर उसके गिर्द चमकने वाली वह ज्योति कितनी चमकदार थी (देखें प्रेरितों 26:13) ? .....

6. यीशु की बात अर्थ बताएं जिसमें उसने शाऊल से कहा, ''पैने पर लात मारना तेरे लिए कठिन है।'' .....

.....

.....

7. शाऊल के मनपरिवर्तन को दोहराते हुए क्या पवित्र शास्त्र के मार्ग पर उसके पाप क्षमा किए जाने की कोई बात बताई ? ..... यदि हां तो वह कौन सी बात है ?.....

8. यदि उस समय उसके पाप क्षमा किए जाने की कोई बात नहीं कही गई तो क्या हम यह मानकर सही होते हैं कि उसके पाप क्षमा हो गए थे ?.....

.....

9. प्रभु ने शाऊल के उठकर नगर में जाने के बाद क्या होने की बात कही ?

.....

.....

10. शाऊल को दमिश्क नगर में जो भी बताया जाना था, क्या उसके लिए इसे करना आवश्यक था या अनावश्यक ? .....

11. प्रेरितों 9:7 में कहा गया है कि शाऊल के साथ जाने वाले लोग ''जो शब्द सुनते थे'' उससे अवाक रह गए, परन्तु उन्होंने किसी को देखा नहीं। प्रेरितों 22:9 कहता है कि ''उन्होंने ज्योति तो देखी, परन्तु जो... बोलता था उसका शब्द न सुना।'' इस विरोधाभासी लगने वाली आयतों को समझाएं ? .....

.....

12. शाऊल दमिश्क नगर में कितने दिन तक अन्धा रहा ?.....

13. इन तीन दिनों के दौरान होने वाले शाऊल के व्यवहार और कार्यों को बताएं ?.....

.....

.....

14. दमिश्क में तीन दिन रहने के बाद शाऊल के पास किस विशेष व्यक्ति को भेज गया था ..... उसके बारे में बताएं ?

.....

.....

15. प्रभु ने हनन्याह को क्या करने की आज्ञा दी ?

.....

.....

16. हनन्याह हिचकिचा क्यों रहा था ?

.....

.....

17. यीशु ने हनन्याह को क्या बताया कि उसने शाऊल को क्यों चुना है ?

.....

.....

18. शाऊल दोबारा कब देखने लगा।

.....

19. हनन्याह के शाऊल को वचन सुनाने के बाद उसने उसे क्या करने को कहा ?

.....

.....

20. शाऊल ने बपतिस्मा क्यों लिया ?.....

आपका कोई प्रश्न है तो उसे यहां लिखें .....

.....

.....

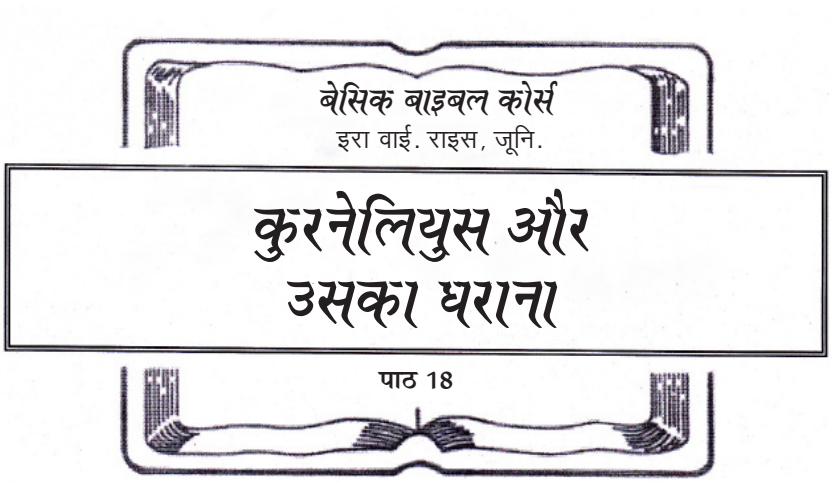

परिचय: अब हम संसार के हर अन्यजाति के लिए व्यापक महत्व वाली घटना पर आते हैं। हमारे पाठ का समय 41 ईस्वी यानी मसीह के बाद है। 33 ईस्वी में यीशु ने यरूशलेम में अपनी कलीसिया बनाई थी। पतरस ने प्रचार किया था (जिस प्रकार पवित्र आत्मा ने उसे बोलने दिया) कि ''यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी संतानों और उन सब दूर-दूर के लोगों के लिए भी है'' (प्रेरितों 2:39)। इस प्रकार पिन्तेकुस्त के दिन जिन लोगों को सम्बोधित किया गया था और उनकी संतान, सब या तो यहूदी थे (प्रेरितों 2:5) या फिर यहूदी वे ''मत धारण करने वाले'' थे (प्रेरितों 2:10)। ''दूर-दूर के लोग'' अन्यजातियों यानी गैर यहूदियों को कहा गया था (इफिसियों 2:11-13)। इसके बावजूद 33 से लेकर 41 ईस्वी तक आठ वर्ष बीत चुके थे परन्तु अभी तक एक भी अन्यजाति मसीह में परिवर्तित नहीं हुआ था।

स्पष्टतया पतरस को स्वयं भी उन शब्दों के अर्थ की समझ नहीं थी, जो पवित्र आत्मा ने पिन्तेकुस्त के दिन ''सब दूर-दूर के लोगों'' के लिए प्रतिज्ञा के सम्बन्ध में, उससे बुलवाए थे। इस पाठ में हम देखेंगे कि उसे यह यकीन दिलाने के लिए कि परमेश्वर ने अन्यजातियों के लिए भी उद्धार की अनुमति दे दी थी, इसलिए आश्चर्यकर्म की आवश्यकता पड़ी। यह, जैसा कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में मिलता है, मनपरिवर्तन का सातवां मामला है। दृश्य प्रेरितों 10 अध्याय में कुरनेलियुस नामक एक अन्यजाति के घर का है।

I. कुरनेलियुस का विवरण दिया जाता है (आयतें 1-2)।

क. वह कैसरिया में रहता था।

ख. वह एक ''सूबेदार'' था।

नोट: सूबेदार रोमी अधिकारी को कहा गया है, जिसकी कमान में 100 सिपाही होते थे।

1. उसकी कमान को ''इतालियानी पलटन'' कहा जाता था।

ग. वह भक्त मनुष्य था।

घ. वह अपने सारे घराने समेत परमेश्वर से डरता था।
ङ वह दान दे देकर निर्धन लोगों की सहायता करता था।
च. वह परमेश्वर से प्रार्थना करता रहता था।

नोट: कुरनेलियुस नामक इस व्यक्ति के ज़िम्मेदारी वाले पद के साथ-साथ उसके श्रेष्ठ स्वभाव, संजीदा धार्मिक स्वभाव पर विचार करें। मानवीय तर्क के हर पहलू से हम में से अधिकर लोग इस विवरण को देखकर यही कहेंगे कि यदि स्वर्ग में जाने का किसी को अधिकार था तो निश्चय वह कुरनेलियुस ही होगा! परन्तु आगे बढ़ते हुए हम इस पाठ में देखेंगे तो आप पाएंगे कि इस व्यक्ति को भी कुछ करना पड़ा था। यानी वही सब जो उन सब को करना पड़ा था जिनका अभी तक हमने अध्ययन किया है।

II. कुरनेलियुस दर्शन में एक स्वर्गदूत को देखता है (आयतें 3-6)।

क. दिन के ''तीसरे पहर'' के लगभग की बात है।
नोट: उस जमाने में दिन की गणना सूर्योदय के साथ यानी समय के हमारे आधुनिक विचार के साथ लगभग प्रात: 6 बजे से की जाती थी (3-3 घंटे का पहर होने के हिसाब से 24 घंटे में 8 पहर हुए)। इस प्रकार ''तीसरा पहर'' दोपहर के तीन बजे का समय होगा।

ख. एक स्वर्गदूत आकर उससे कहने लगा, ''हे कुरनेलियुस।''
ग. कुरनेलियुस स्वर्गदूत को देखकर डर गया।
घ. उसने पूछा, ''हे प्रभु, क्या है?''
ङ स्वर्गदूत ने उत्तर दिया, ''तेरी प्रार्थनाएं और तेरे दान स्मरण के लिए परमेश्वर के सामने पहुंचे हैं; और अब याफा में मनुष्य भेजकर शमौन को, जो पतरस कहलाता है, बुलवा ले। वह शमौन चमड़े का धंधा करने वाले के यहां अतिथि है, जिसका घर समुद्र के किनारे है। वह तुझे बताएगा कि तुझे क्या करना है।''

नोट: इस विवरण से आगे हम में से अधिकतर लोगों को लगेगा कि जो कुछ करना चाहिए था, वह तो कुरनेलियुस पहले ही कर रहा था। परन्तु क्या परमेश्वर भी चीज़ों को वैसे ही देखता है जैसे मनुष्य देखता है। और परमेश्वर के मन में उसके करने के लिए, उससे जो कुरनेलियुस ने पहले ही किया था, कुछ और था। अपनी बाइबल को खोले रखें और आगे देखें।

III. स्वर्गदूत बातें करने के बाद चला गया (आयतें 6-7)।

क. कुरनेलियुस ने तीन जनों को बुलाया।
   1. दो तो उसके घर के सेवक थे और
   2. एक भक्त सिपाही था, जो उसके पास उपस्थित रहा करते थे।
ख. उसने उन्हें वे सब बातें बता दीं।
ग. उसने उन्हें याफा को भेजा।

IV. इन तीनों के याफ़ा नगर के निकट पहुंचने पर, अगले दिन, दोपहर के निकट पतरस प्रार्थना करने के लिए (आयतें 9-11) छत पर गया।

क. उसे बहुत भूख लगी थी।

ख. उसने खा लिया होता, परन्तु उनका खाना तैयार होने तक वह प्रार्थना में बेसुध हो गया।

ग. इस बेसुधी में पतरस ने स्वर्ग को खुले हुए और अपने ऊपर एक पात्र को उतरते हुए देखा।

1. यह पात्र चारों कोनों वाली एक बड़ी चादर सा था।
2. यह चादर नीचे की ओर नीचे को उतारी गई।
3. इसमें पृथ्वी के सब प्रकार के चौपाये, रींगने वाले जन्तु और आकाश के पक्षी थे।

घ. एक आवाज़ ने उसे आज्ञा दी, ''हे पतरस उठ, मार और खा।''

ङ. पतरस ने उत्तर दिया, ''नहीं प्रभु, कदापि नहीं; क्योंकि मैंने कभी कोई अपवित्र या अशुद्ध वस्तु नहीं खाई है।''

च. उस आवाज़ ने दूसरी बार कहा, ''जो कुछ परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है तू उसे अशुद्ध मत कह।''

छ. ऐसा तीन बार हुआ। फिर वह पात्र आकाश में उठा लिया गया।

V. अब तक कुरनेलियुस के दूत कैसरिया से शमौन के घर में पहुंच चुके थे (आयतें 17-18)।

क. वे द्वार पर खड़े थे।

ख. उन्होंने आवाज देकर पूछा कि शमौन जो पतरस कहलाता है, यहीं मेहमान है ?

VI. तभी आत्मा ने पतरस से कहा, ''देख तीन मनुष्य तेरी खोज में हैं। अत: उठकर नीचे जा, और नि:संकोच उनके साथ हो ले; क्योंकि मैं ही ने उन्हें भेजा है'' (आयतें 19-23)।

क. पतरस उतरकर उन लोगों के पास गया।

ख. उसने कहा, ''देखो, जिसकी खोज तुम कर रहे हो, वह मैं ही हूं; तुम्हारे आने का क्या कारण है ?''

ग. ''उन्होंने कहा; कुरनेलियुस सूबेदार जो धर्मी और परमेश्वर से डरने वाला और सारी यहूदी जाति में सुनाम मनुष्य है, उस ने एक पवित्र स्वर्गदूत से यह चेतावनी पाई है, कि तुझे अपने घर बुलाकर तुझ से वचन सुने।''

घ. पतरस ने उन्हें अंदर बुलाया और रात वहीं पर रुकवाया।

नोट: अगले अध्याय, प्रेरितों 11:1-14 में जब पतरस से यहूदी भाइयों ने उससे ''खतनारहित लोगों'' (अर्थात अन्यजातियों) के पास जाने का कारण पूछा तो उसने ''उन्हें आरम्भ से क्रमानुसार कह सुनाया।'' उसने आश्चर्यकर्म के द्वारा बेसुधी में उसे जिसे परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया था, ''अशुद्ध'' न कहने के बीच सम्बन्ध और उसे कुरनेलियुस के घर जाने के लिए

उन तीन अन्यजाति पुरुषों के साथ जाने की आज्ञा के बीच स्पष्ट सम्बन्ध बताया। ऐसा प्रतीत होता है कि पतरस को पिन्तेकुस्त के दिन कहे उसके शब्दों का अर्थ पहली बार समझ में आया था कि ''यह प्रतिज्ञा ... दूर-दूर के लोगों के लिए ही है।'' इससे यह अनुमान लगाना सुसंगत लगता है कि आवश्यक नहीं आत्मा के द्वारा बोलने वाले लोगों को उन शब्दों के अर्थ की समझ होती हो, जो उन्हें बोलने की प्रेरणा दी जाती थी। ध्यान दें कि पतरस को भी यह यकीन दिलाने के लिए कि पिन्तेकुस्त के दिन आठ साल पहले जो कुछ उसने कहा था, वह सच था, आश्चर्यकर्म की आवश्यकता पड़ी।

VII. अगले दिन ''कुछ भाइयों'' को साथ लेकर पतरस याफ़ा से उन लोगों के साथ चला गया (आयतें 23-25)।

क. अगले दिन, वे कैसरिया पहुंचे।

ख. कुरनेलियुस उनकी राह देख रहा था।

1. उसने अपने कुटुम्बियों और प्रियजनों को बुला रखा था।

ग. जैसे ही पतरस आया वह उनके स्वागत के लिए आगे गया।

1. वह पतरस के कदमों में गिरकर उसे प्रणाम करने लगा।

घ. पतरस ने उसे यह कहते हुए उठाया, खड़ा हो, मैं भी तो मनुष्य हूं।
नोट: यह पतरस के कथित ''उत्तराधिकारियों'' से कितना अलग है!

ङ. उनके बातें करते-करते पतरस अंदर गया और उसने वहां बहुत से लोगों को इकट्ठे पाया।

VIII. पतरस ने सभा को यह कहते हुए सम्बोधित किया।

''तुम जानते हो, कि अन्यजाति की संगति करना या उसके यहां जाना यहूदी के लिए अधर्म है, परन्तु परमेश्वर ने मुझे बताया है, कि किसी मनुष्य को अपवित्र या अशुद्ध न कहूं। इसीलिए मैं जब बुलाया गया; तो बिना कुछ कहे चला आया: अब मैं पूछता हूं कि मुझे किस काम के लिए बुलाया गया है?'' (आयतें 28-29)।

IX. कुरनेलियुस ने उत्तर दिया,

इस घड़ी पूरे चार दिन हुए; कि मैं अपने घर में तीसरे पहर को प्रार्थना कर रहा था; कि देखो, एक पुरुष चमकीला वस्त्र पहिने हुए, मेरे सामने आ खड़ा हुआ और कहने लगा, हे कुरनेलियुस, तेरी प्रार्थना सुन ली गई, और तेरे दान परमेश्वर के सामने स्मरण किए गए हैं। इसलिए किसी को याफ़ा भेजकर शमौन को जो पतरस कहलाता है बुला; वह समुद्र के किनारे शमौन चमड़े का धन्धा करने वाले के घर में पाहुन है। तब मैंने तुरन्त तेरे पास लोग भेजे, और तू ने भला किया, जो आ गया: अब हम सब यहां परमेश्वर के सामने हैं, ताकि जो कुछ परमेश्वर ने तुझ से कहा है, उसे सुनें'' (आयतें 30-33)।

X. पतरस ने अन्यजातियों में पहला सुसमाचार संदेश सुनाया (आयतें 34-43)।

क. ''अब मुझे निश्चय हुआ, कि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता, वरन् हर जाति में जो

उस से डरता और धर्म के काम करता है, वह उसे भाता है।''

ख. ''जो वचन उसने इस्राएलियों के पास भेजा, जबकि उसने यीशु मसीह के द्वारा जो सब का प्रभु है, शान्ति का सुसमाचार सुनाया। वह बात तुम जानते हो जो यूहन्ना के बपतिस्मा के प्रचार के बाद गलील से आरम्भ करके सारे यहूदियों में फैल गई।''

1. ''परमेश्वर ने किस रीति से यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ से अभिषेक किया''
2. ''वह भलाई करता, और सबको जो शैतान के सताए हुए थे, अच्छा करता फिरा; क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था।''

ग. ''हम उन सब कामों के गवाह हैं; जो उस ने यहूदिया के देश और यरूशलेम में भी किए।''

घ. ''और उन्होंने उसे काठ पर लटकाकर मार डाला।''

ङ ''उस को परमेश्वर ने तीसरे दिन जिलाया।''

च. परमेश्वर ने यीशु मसीह को उसके जी उठने के बाद सरेआम दिखाया।

1. यीशु सब लोगों को दिखाई नहीं दिया था।
2. बल्कि वह उन गवाहों को दिखाई दिया था जिन्हें, परमेश्वर ने पहले से चुना था। ''अर्थात हमको जिन्होंने उसके मरे हुओं में से जी उठने के बाद उसके साथ खाया पीया'' (आयत 41)।

छ. यीशु ने ''आज्ञा दी कि लोगों में प्रचार करो; और गवाही दो, कि यह वही है; जिसे परमेश्वर ने जीवतों और मरे हुओं का न्यायी ठहराया है'' (आयत 42)।

ज. ''उस की सब भविष्यद्वक्ता गवाही देते हैं, कि जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उस को उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी'' (आयत 43)।

X. पतरस के प्रचार करते-करते पवित्र आत्मा उन सब पर उतरा जिन्होंने वचन सुना था (आयत 44)।

क. यहूदी चेले, जो याफ़ा से पतरस के साथ आए थे, चकित रह गए कि अन्यजातियों पर भी पवित्र आत्मा का दान बहाया गया था (आयत 45)।

1. उन्होंने उन्हें भिन्न-भिन्न भाषा बोलते और
2. परमेश्वर की बढ़ाई करते सुना (आयत 46)।

ख. तब पतरस ने पूछा, ''क्या कोई जल को रोक सकता है कि ये बपतिस्मा न पाएं, जिन्होंने हमारी नाईं पवित्र आत्मा पाया है?'' (आयत 47)।

ग. ''और उस ने **आज्ञा दी** कि उन्हें यीशु मसीह के नाम में **बपतिस्मा दिया जाए**'' (आयत 48)।

नोट: प्रेरितों 11:1-18 फिर से पढ़ें और इसे पिछली बातों के साथ मिलाएं। विशेषकर हर अन्यजाति व्यक्ति के लिए यह पाठ अत्यधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि कुरनेलियुस और इसके घराने के मनपरिवर्तन से पूर्व सुसमाचार केवल यहूदियों तक पहुंचा था। इसके बाद से पवित्र शास्त्र में इसका संदेश बिना भेदभाव के यहूदियों के साथ-साथ अन्यजातियों को

भी दिया गया। मत्ती 16:19 पतरस को दी गई ''राज्य की कुंजियां'' का इस्तेमाल उसके द्वारा पहले यहूदियों के लिए (प्रेरितों 2) और आठ साल बाद अन्यजातियों के लिए (प्रेरितों 10) कलीसिया के द्वार खोलने के बीच किया गया। सुसमाचार की इन दोनों बड़ी घटनाओं में आश्चर्यकर्म साथ-साथ हुए (प्रेरितों 11:15-18)। बाइबल में हर बात का आरम्भ आश्चर्यकर्म के प्रदर्शन के साथ हुआ है।

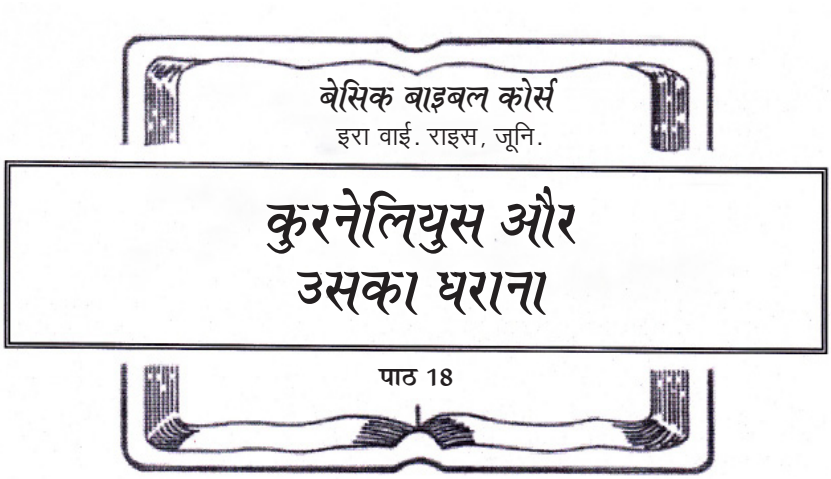

पाठ 18 के प्रश्न

Registration No.....

Grade .....

Name.....

Address.....

.....

Pin.....Mobile No.....

e-mail.....

(कृपया पता अंग्रेजी के बड़े अक्षरों में ही लिखें।)

1. कुरनेलियुस और उसके घराने का मनपरिवर्तन विशेषकर किन लोगों के लिए विशेष महत्व का है ? .....

2. पिन्तेकुस्त के दिन नये नियम का युग आरम्भ होने और इस पाठ के बीच कितने वर्ष का अन्तर था ? .....

3. प्रेरितों 10 अध्याय से पहले कितने अन्यजातियों बदले था ? .....

4. नये नियम में ''दूर-दूर'' शब्द किस पर लागू होता है ? .....

   अपने उदाहरण देकर समझाएं .....

5. पवित्र शास्त्र में कुरनेलियुस के विवरण के लिए कौन सी पांच बातें बताई गई हैं ?

   .....

   .....

6. क्या कुरनेलियुस अत्यंत सदाचारी और धार्मिक स्वभाव का व्यक्ति था ?

   .....

7. पतरस को बुलाने से पहले क्या कुरनेलियुस ''उद्धार पाया हुआ'' व्यक्ति था ?

   .....

8. क्या कुरनेलियुस का उद्धार पतरस के आने से पहले हो गया था ? बाइबल में से साबित करें .....

   यदि आप कहते हैं कि उसका उद्धार पतरस के आने से पहले नहीं हुआ था तो उसे वचन में से साबित करें। .....

   .....

. कुरनेलियुस ने याफ़ा में पतरस को बुलाने के लिए लोगों को क्यों भेजा ?

   .....

10. जो कुछ हम ने प्रेरितों 10:6 और प्रेरितों 11:14 से सीखा है उससे वे दो कारण बताएं जो स्वर्गदूत ने कुरनेलियुस को पतरस की बातें सुनने के लिए उसे बुलाने के लिए बताए थे।

    1. .....

    2. .....

11. पतरस को कैसे यकीन हुआ कि उस (जो कि एक यहूदी था) के लिए कुरनेलियुस और उसके घराने (अन्यजातियों) को सुसमाचार सुनाना सही था। .....

    .....

12. पतरस को कैसे यकीन हुआ कि उसे कैसरिया से आए तीन लोगों के साथ जाना चाहिए?

    .....

13. मसीही युग में क्या प्रभु के सामने कोई व्यक्ति ''शुद्ध'' या ''अशुद्ध'' (इन शब्दों के यहूदी अर्थ में) है? (हां या नहीं) .....

14. पतरस ने कुरनेलियुस के घर में जिन बातों का प्रचार किया वे उसकी अपनी थीं या प्रभु ने उसे उन्हें सुनाने की आज्ञा दी थी? .....

15. क्या परमेश्वर ''किसी का पक्ष'' करता है? .....

    .....

16. यदि परमेश्वर ''किसी का पक्ष'' नहीं करता है तो क्या उनके उद्धार के सम्बन्ध में उसे अलग अलग लोगों के साथ वही बातें करनी चाहिए या अलग अलग?

    .....

    .....

17. जब पतरस ने देखा कि पवित्र आत्मा अन्यजातियों को भी दिया गया है तो उसने उन्हें क्या करने की आज्ञा दी? (देखें आयत 48) .....

.....

18. इस अवसर पर पतरस द्वारा कही गई बातें क्या उद्धार के लिए आवश्यक थीं ? (हां या नहीं)

..... अपने जवाब को साबित करें। .....

.....

19. हमें कैसे मालूम कि कुरनेलियुस के घर में किसी नवजात शिशु को बपतिस्मा नहीं दिया गया था ? .....

आपका कोई प्रश्न है तो उसे यहां लिखें .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

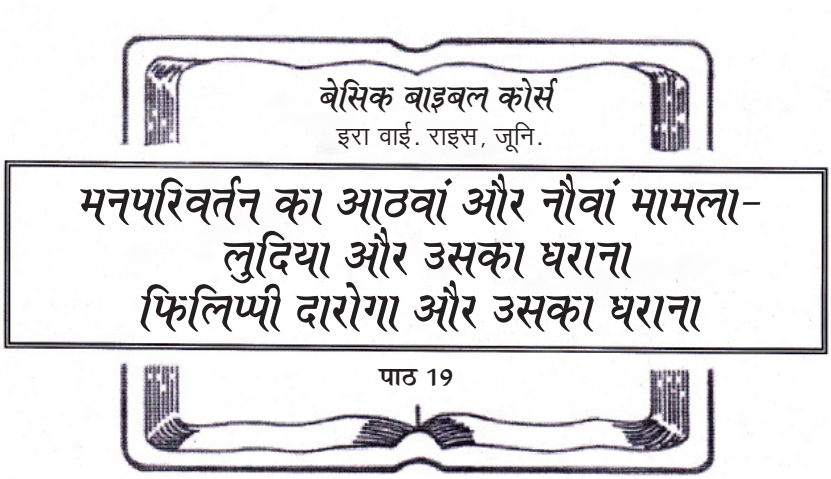

परिचय: जैसा कि हमने देखा है कि प्रेरितों के काम की पुस्तक के पहले बारह अध्यायों में मुख्य पात्र पतरस प्रेरित है। स्वर्ग में हमारे प्रभु के ऊपर उठा लिए जाने के बाद पतरस ने ही (प्रेरितों 1), प्रेरिताई के यहूदा के स्थान (जो उसके आत्महत्या कर लेने से खाली हो गया था) को भरने के लिए मत्तियाह का चयन करने में दूसरों की अगुआई की थी। पतरस ने ही पवित्र आत्मा के बहाए जाने का कारण बताया था और यहूदियों में से आने वालों को पिन्तेकुस्त के दिन कलीसिया में मिलाने के लिए राज्य की कुंजियों का इस्तेमाल किया था (प्रेरितों 2)। सुलैमान के ओसारे में एक ही बार पांच हज़ार लोगों के मनपरिवर्तन के समय बोलने वाला पतरस ही था (प्रेरितों 3 और 4)। जब उसे और यूहन्ना को कैद में डाल दिया गया था (प्रेरितों 4) तो पतरस ने ही बचाव में प्रमुख भूमिका निभाई थी। प्रेरितों 5 अध्याय में पतरस ने ही हनन्याह और सफीरा को डांटा था और झूठ बोलने पर परमेश्वर द्वारा उन्हें मार डाला जाने पर उन्हें दफ़नाया गया था। प्रेरितों 8 में पतरस और यूहन्ना ने सामरियों को पवित्र आत्मा दिलाया था। और पतरस ने शमौन को परमेश्वर का दान पैसे से खरीदने की सोचने पर डांटा था। प्रेरितों 9 में लुद्दा और याफा में पतरस ने ही आश्चर्यकर्म किए थे। और प्रेरितों 10 और 11 के हमारे पिछले अध्ययन में कलीसिया को अन्यजातियों से परिवर्तित होने वालों को कलीसिया में मिलाने के लिए फिर से राज्य की कुंजियों का इस्तेमाल किया था।

पतरस के फिर से कैद होने की बात लिखने और प्रेरितों 12 में उसके बाद उसकी रिहाई के बाद, तरसुसवासी शाऊल का उद्देश्य स्पष्ट है, जो बाद में पौलुस कहलवाया। प्रेरितों 9 में अपने मनपरिवर्तन के बाद प्रेरितों 13 तक शाऊल के बारे में बहुत कम सुनने को मिलता है। परन्तु उस अध्याय से लेकर प्रेरितों के काम के अन्त तक सामान्य दृश्य पर शाऊल (या पौलुस) ही छाया रहता है। इस प्रकार हम इस प्रेरित और इसके साथी के पास आते हैं, जो प्रेरितों के काम की पुस्तक में वर्णित लुदिया और उसके घराने के मनपरिवर्तन के आठवें मामले के सूत्रधार थे।

मनपरिवर्तन का आठवां मामला

लुदिया और उसका घराना

I. पौलुस और सीलास मकिदूनिया प्रांत के प्रमुख नगर फिलिप्पी में गए (प्रेरितों 16:12)।

क. वहां वे ''कुछ दिन'' रहे।

ख. सब्त के दिन वे नगर के फाटक के बाहर निर्जन स्थान में चले गए, जहां प्रार्थना करने की जगह हो (आयत 13)।

नोट : यह जगह कोई वेदी या शायद प्रार्थना का मन्दिर हो सकता है।

क. यह नदी के किनारे पर था।

ग. वे यहां बैठ गए।

घ. उन्होंने उन स्त्रियों से बातें कीं, जो वहां इकट्ठी हुई थीं।

II. आराधना के लिए आई उन स्त्रियों में से एक का नाम लुदिया था।

क. लुदिया बेशक किसी प्रकार की कारोबारी स्त्री थी, क्योंकि उसे ''बैंजनी कपड़े बेचने वाली'' बताया गया है (आयत 14)।

ख. लुदिया थुआतीरा नगर की रहने वाली थी।

ग. उसने परमेश्वर की आराधना की।

घ. उसने पौलुस और सीलास की बातें सुनीं।

ङ प्रभु ने उनकी बातों पर ध्यान लगाने के लिए उसका मन खोला।

च. इसके कारण उसने पौलुस द्वारा कही गई बातों पर ''चित्त'' लगाया।

छ. उसने **बपतिस्मा लिया** (आयत 15)।

ज. उसके ''घराने'' ने **भी** बपतिस्मा लिया।

झ. अपने मनपरिवर्तन के बाद उसने पौलुस और सीलास को अपने घर बुलाने की ज़िद की।

नोट: नजवात शिशुओं को बपतिस्मा देने के लिए अपने आपको सही ठहराने के इच्छुक लोग आम तौर पर लुदिया के **घराने** के बपतिस्मा लेने का हवाला देते हैं। यदि लुदिया के घराने में किसी भी नवजात के होने की बात वचन में कही गई हो तो इस झगड़े को कुछ बल मिल सकता था। परन्तु वचन इस पर कुछ नहीं कहता कि लुदिया के घराने में कौन कौन था। जहां तक लिखे हुए की बात है, हम यह नहीं बता सकते कि लुदिया विवाहित भी थी या नहीं, बच्चे होने की बात तो दूर की है! यह कोरी कल्पना है कि उसके घराने में नवजात शिशु थे। उसके नौकर, भाई बहनें, मित्र और अन्य लोग उसके घर में रह रहे हो सकते हैं और हो सकता है कि उनमें कोई बच्चा न हो! हम उसकी कल्पना न करें जो वचन में नहीं कहा गया है।

मनपरिवर्तन का नौवां मामला- दारोगे का घराना

I. लुदिया के मनपरिवर्तन के बाद पौलुस और सीलास तुरन्त फिलिप्पी से गए नहीं।

क. अपने बपतिस्मे के बाद लुदिया ने उन्हें यह कहते हुए मना लिया कि ''यदि तुम मुझे प्रभु की विश्वासिनी समझते हो, तो चलकर मेरे घर में रहो'' (आयत 15)।

ख. उन्हें चलने के लिए मजबूर कर दिया।

II. इस प्रकार फिलिप्पी में उनके रहने के दौरान एक दिन पौलुस और सीलास को दुष्ट आत्मा से ग्रस्त लड़की मिली (आयत 16)।

क. भविष्य बताने की अपनी अजीब शक्ति के कारण वह अपने मालिकों के लिए अच्छी कमाई कर देती थी (आयत 16) ।

ख. पौलुस और उसके साथ के लोगों के पीछे-पीछे चलती हुई वह कह रही थी, ''ये मनुष्य परमप्रधान परमेश्वर के दास हैं, जो हमें उद्धार के मार्ग की कथा सुनाते हैं'' (आयत 17)।

ग. ऐसा वह कई दिनों तक करती रही (आयत 18)।

III. एक दिन इस तमाशे से खीजकर पौलुस ने उस लड़की में पाई जाने वाली आत्मा की ओर मुड़कर उसे यीशु मसीह के नाम में उसमें से निकल जाने की आज्ञा दी (आयत 18)।

क. भावी कहलाने वाली वह आत्मा उसी समय उस लड़की में से निकल गई (आयत 18)।

IV. लड़की के मालिकों ने देखा कि उनकी तो कमाई की उम्मीद जाती रही।

क. वे पौलुस और सीलास को पकड़कर उन्हें चौंक में हाकिमों के पास ले गए।

ख. न्याय करने वालों के सामने उन्होंने पौलुस और सीलास पर यह आरोप लगाया कि

1. ये लोग जो यहूदी हैं, हमारे नगर में बड़ी हलचल मचा रहे हैं (आयत 20)।
2. ''और ऐसी रीतियां बता रहे हैं जिन्हें ग्रहण करना या मानना हम रोमियों के लिए ठीक नहीं है'' (आयत 21)।

ग. भीड़ पौलुस और सीलास पर चढ़ आई? (आयत 22)।

घ. न्याय करने वालों ने उनके कपड़े फाड़ डाले और आज्ञा दी कि पौलुस और सीलास को बैंतों से पीटा जाए (आयत 22)।

1. उन्होंने पौलुस और सीलास को कई बैंत लगवाए (आयत 23)।
2. उन्होंने उन्हें जेल में डाल दिया।
3. उन्होंने दारोगे को उनकी रखवाली करने की आज्ञा दी।

ङ ऐसा आदेश मिलने के कारण दारोगे ने उन्हें भीतर की कोठरी यानी तहखाने में डाल दिया (आयत 24)।

1. यह पक्का करने के लिए कि कहीं वे निकल न भागें, उसने उनके पांव काठ में ठोक दिए (आयत 24)।

V. आधी रात के समय कैद में रहते हुए, पौलुस और सीलास परमेश्वर से प्रार्थना कर रहे थे और उसकी स्तुति के गीत गा रहे थे (आयत 25)।

क. दूसरे कैदी उनकी सुन रहे थे।

VI. अचानक एक बड़ा भूकम्प आया (आयत 26)।

क. जेल की नींव हिल गई।

ख. तुरन्त सभी दरवाजे खुल गए

ग. सबके बंधन खुल गए।

VII. जेल का दारोगा नींद से जाग उठा (आयत 27)।

क. उसने जेल के दरवाजे खुले देखे।

ख. उसने यह मान लिया कि कैदी भाग गए हैं।

ग. उसने अपनी तलवार निकाल ली।

घ. ताकि अपने आपको मार डाले।

VIII. परन्तु पौलुस ने ज़ोर से आवाज देते हुए पुकारा (आयत 28)।

क. अपने आपको कुछ हानि न पहुंचा।

ख. क्योंकि हम सब यहीं हैं।

IX. दारोगा दीया मंगवाकर भीतर लपका और कांपता हुआ पौलुस और सीलास के कदमों में गिर गया (आयत 29)।

क. वह उन्हें जेल में से बाहर लाया।

ख. उसने कहा, ''हे सज्जनो, उद्धार पाने के लिए मैं क्या करूं?'' (आयत 30)।

X. पौलुस और सीलास ने उत्तर दिया, ''प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा।''

क. विश्वास दिलाने के लिए पौलुस और सीलास ने ''उसको और उसके सारे घर के लोगों को प्रभु का वचन सुनाया'' (आयत 32)।

ख. यह वचन उन्होंने उसके सारे घर के लोगों को सुनाया।

नोट: यह आवश्यक था, क्योंकि विश्वास तो वचन सुनने के द्वारा ही आता है (रोमियों 10:13-17)

XI. इस वचन को सुनने से दारोगे के मन में केवल विश्वास ही नहीं जगा बल्कि उसने मन भी फिराया। आयत 33 हमें बताती है, ''रात को उसी घड़ी उसने उन्हें ले जाकर उनके घाव धोए।''

XII. इसके अलावा दारोगे और उसके घर के सब लोगों ने बपतिस्मा लिया। यह

क. ''रात को उसी घड़ी'' (आयत 33)

ख. ''तुरन्त'' हुआ था।

ग. इसके बाद दारोगा उन्हें अपने घर ले गया (आयत 34)।

क. उसने उनके आगे भोजन रखा।

ख. उसने आनन्द किया।

ग. उसने अपने सारे घराने समेत परमेश्वर पर विश्वास किया।

भोजन और आनन्द करना दोनों दारोगे और उसके घराने के लोगों द्वारा बपतिस्मा लिए जाने के बाद हुए।

चर्चा: इस प्रकार के सम्पूर्ण बाइबल अध्ययन उसे हम कई गलत धारणाओं से निकाल सकते हैं जो लापरवाही के कारण लोगों के मनों में बस गए हैं। संदर्भ के बिना कोई भी उपदेश, अपदेश ही होगा। उदाहरण के लिए विचार करें कि कितने लोगों को संदर्भ पर उचित विचार न कर पाने या उसका इनकार न कर पाने के कारण ही 30 आयतों की शिक्षा से ठोकर लगी है। संदर्भ की

बात छोड़ दें तौभी ''**केवल विश्वास** से उद्धार'' के कुछ साम्प्रदायिक विचारों के समर्थन के लिए कई अच्छे-अच्छे बाइबल टीचरों ने इन दो आयतों का इस्तेमाल किया है। वे आयत 30 में दिए प्रश्न, ''हे सज्जनो, उद्धार पाने के लिए मैं क्या करूं?'' को पढ़ेंगे और फिर आयत 31 को पढ़कर बंद कर देंगे जैसे यही उसका उत्तर हो। हां, बेशक आयत 31 कहती है, ''प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा।'' परन्तु क्या यह बस इतना ही कहती है? नहीं। आयत 32 आगे कहती है, ''और उन्होंने उसको और उसके सारे घर के लोगों को प्रभु का वचन सुनाया।'' हम पहले ही देख चुके हैं कि विश्वास प्रभु का वचन सुनने से आता है (रोमियों 10:17)। इससे अब विश्वासी बन चुके दारोगे ने मन फिराया। जिसका पता इस बात से चलता है कि उसने उनके घाव धोए (आयत 33)। फिर उसने और उसके घर के सब लोगों ने बपतिस्मा लिया।

इस बात से कोई इनकार नहीं करता कि उद्धार के लिए **विश्वास करना** आवश्यक है। **प्रभु का वचन** यही कहता है (आयत 31); **और विश्वास करना आवश्यक है।** परन्तु प्रभु का वचन **कहीं पर भी** यह नहीं कहता कि उद्धार **केवल विश्वास** से है। वही नया नियम है जो उद्धार के लिए विश्वास की शिक्षा देता है, ''पापों की क्षमा'' के लिए मन फिराने और बपतिस्मा लेने की शिक्षा देता है (जो कि एक ही बात है) (देखें प्रेरितों 2:38)। बाइबल में ''केवल विश्वास'' शब्द जहां पर मिलता है वहां कहा गया है, ''इस प्रकार तुम ने देख लिया कि मनुष्य **केवल विश्वास से ही नहीं,** वरन कर्मों से भी धर्मी ठहरता है'' (याकूब 2:24)। हां यदि परमेश्वर का वचन कहता है कि मनुष्य **केवल विश्वास से धर्मी नहीं** ठहरता तो किसी को भी क्या यह दावा करना चाहिए कि ठहरता है?

बात मार्टिन लूथर से शुरू हुई थी, जिसे समझ नहीं आया कि याकूब 2:24 को इफिसियों 2:8-9 के साथ कैसे मिलाएं। इफिसियों 2:8-9 कहता है कि उद्धार विश्वास के द्वारा अनुग्रह से होता है ... **कर्मों से नहीं।** याकूब 2:24 कहता है कि हम कर्मों से धर्मी ठहराए जाते हैं केवल विश्वास से नहीं। बाइबल में और कई जगहों पर ऐसा मिलता है यानी अन्तर तो पाया जाता है, पर बाइबल में नहीं, बल्कि लूथर की सोच में। वह कम से कम कर्म के तीन विचारों को नहीं समझ पाया जिसका बाइबल में ध्यान किया गया है: (1) **मूसा की व्यवस्था के कर्म,** (2) **नये नियम के कर्म और** (3) **मनुष्य की अपनी ''धार्मिकता'' के कर्म।**

प्रभु के सामने न तो मनुष्य की धार्मिकता के कर्म (यानी उसके गुण) और न ही मनुष्य की व्यवस्था के ग्रंथ ठहरते हैं। उसकी दृष्टि में मनुष्य के कर्म मैले चीथडों के समान हैं (यशायाह 64:6); और मूसा की व्यवस्था के कर्म प्रतीकात्मक अर्थ में ''क्रूस पर कीलों से जड़'' दिए गए हैं (कुलुस्सियों 2:14)। इसके अलावा यह कहने के बाद कि ''कर्मों से नहीं'' अगली आयत में पौलुस कहता है ''क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं; और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से हमारे करने के लिए तैयार किया।'' इसका अर्थ यह हुआ कि शब्द के एक अर्थ में हमारा उद्धार ''कर्मों से नहीं'' होता; इसके बावजूद शब्द के एक और अर्थ में हमारा उद्धार (यानी हम धर्मी ठहराए जाते हैं) ''कर्मों'' से होता है। इस कारण फिलिप्पियों 2:12 में ''डरते और कांपते हुए अपने अपने उद्धार का **कार्य पूरा**'' करने की आज्ञा दी गई।

इसलिए कोई यह न कहे कि ''विश्वास से या कर्मों से वचन के अनुसार उद्धार'' **विश्वास और कर्म दोनों से**'' होता है और जैसा कि हमने इस पाठ से सीखा है, इसके अलावा दारोगे ने **केवल विश्वास** नहीं किया, बल्कि उसने **मन भी फिराया** और **बपतिस्मा भी लिया।**

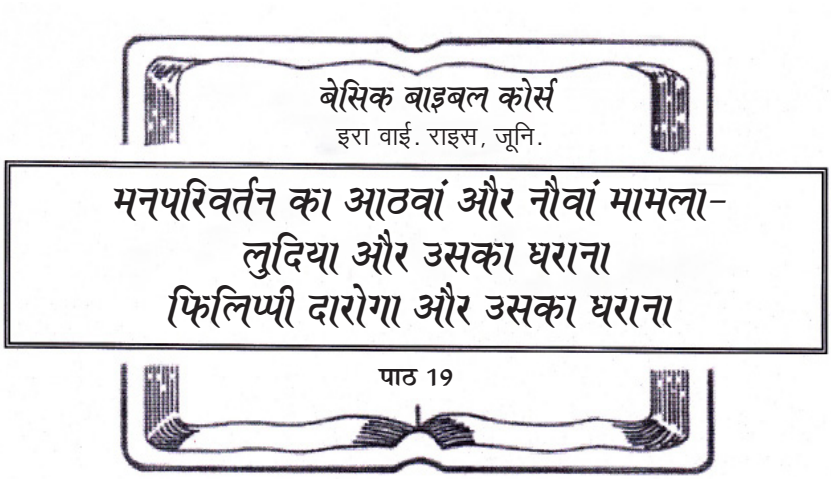

पाठ 19 के प्रश्न

Registration No.....

Grade .....

Name.....

Address.....

.....

Pin.....Mobile No.....

e-mail.....

(कृपया पता अंग्रेजी के बड़े अक्षरों में ही लिखें।)

1. प्रेरितों के काम के पहले 12 अध्यायों में कौन-सा पात्र प्रमुख है?

   .....

2. प्रेरितों के काम के अन्तिम 16 अध्यायों में कौन-सा पात्र प्रमुख है?

   .....

3. जैसा कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में है, मनपरिवर्तन का आठवां और नौवां दोनों मामले किस नगर में हुए? .....

   .....

4. पौलुस और सीलास की मुलाकात लुदिया से कैसे हुई? .....

   .....

5. लुदिया के बारे में बताई गई पवित्र शास्त्र की 5 बातें बताएं।

   1. .....

   2. .....

   3. .....

   4. .....

   5. .....

6. जब लुदिया ने पौलुस की कही बातों पर ''चित'' लगाया तो उसे किसने उभारा?

   .....

   .....

7. क्या लुदिया के साथ किसी और का भी बपतिस्मा हुआ था? .....

   यदि हां तो किसका? .....

   .....

8. क्या परमेश्वर का वचन यह बताता है कि लुदिया के घराने में नवजात शिशु थे ?

.....

.....

9 क्या हम यह मानकर सही होते हैं कि लुदिया के घर में या घराने में नवजात शिशु थे, चाहे पवित्र शास्त्र इस पर कुछ न कहता हो ?.....

.....

10 समझाएं कि लुदिया के घर में रहने के लिए पौलुस और सीलास कैसे चले गए ?

.....

.....

11. इस प्रकार वहां रहते हुए उन्हें एक दिन और दूसरा कौन मिला ?

.....

.....

12. उस लड़की में पाई जाने वाली आत्मा उससे क्या करवाती थी ?

.....

.....

13. लड़की ने पहचान लिया कि पौलुस और सीलास कौन थे। उसने उन्हें क्या कहकर बुलाया ?

.....

.....

14. क्या उसने ऐसा एक ही बार किया या वह बार-बार ऐसा करती रही ?

.....

.....

15. पौलुस ने दुष्टात्मा को लड़की में से निकल जाने की आज्ञा क्यों दी ?

.....

.....

16. उसने उस आत्मा को निकलने का आदेश किसके नाम से दिया ?

.....

.....

आपका कोई प्रश्न है तो उसे यहां लिखें .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

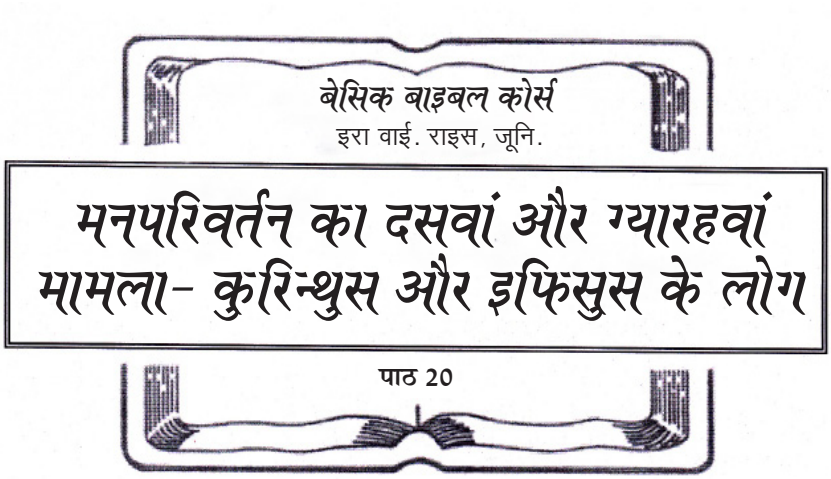

परिचय: प्रेरितों के काम की पुस्तक में मनपरिवर्तन के पहले 9 मामलों का अध्ययन पूरा कर लेने के बाद अन्त में अब हम परमेश्वर के वचन में दर्ज अन्तिम दो मामलों पर आते हैं। आरम्भिक नौ मामलों में से हमने किसी में भी कुछ ऐसा सिखाने की ज़बर्दस्ती करने की कोशिश नहीं की, जो इनमें नहीं बताया गया; न ही हम इन अन्तिम दो मामलों में करेंगे। जो भी लिखा गया है हम उसे, जैसा लिखा गया है, वैसा ही मानने, और मानते रहने से संतुष्ट होंगे। ...

मनपरिवर्तन का दसवां मामला- कुरिन्थुस वासी

I. पौलुस एथेंस से कुरिन्थुस में आया (प्रेरितों 18:1)।

II. कुरिन्थुस में पौलुस अक्विल्ला नाम के एक यहूदी और उसकी पत्नी प्रिसकिल्ला के साथ रहा (आयत 2)।

क. वह उनके साथ रहा क्योंकि वे उसी काम के कारीगर थे, जिसका वह स्वयं था।

1. वे तम्बू बनाने वाले का काम करते थे।

III. पौलुस "का उद्यम" था (आयत 3)। इसका अर्थ स्पष्टतया यह है कि कुरिन्थुस में रहते समय पौलुस तम्बू बनाने का काम किया करता था (आयत 3)।

क. बाद में कुरिन्थियों को उसने बताया कि अधिकार के द्वारा उन्हें **आर्थिक रूप** में उसकी सहायता करनी चाहिए थी (1 कुरिन्थियों 9:1-14)।

ख. परन्तु उसने कुरिन्थुस में अपने इस अधिकार का **इस्तेमाल नहीं किया** (1 कुरिन्थियों 9:15)।

ग. इसके बजाय उसने अपने निर्वाह के लिए, अपने हाथों से काम करके परिश्रम किया (1 कुरिन्थियों 4:12)।

घ. इसके अलावा उसने कुरिन्थुस के अलावा अन्य कलीसियाओं (यानी अन्य मण्डलियों) से भी सहायता ली (2 कुरिन्थियों 11:7-9)।

IV. पौलुस प्रत्येक सब्त के दिन आराधनालय में वाद-विवाद किया करता था जबकि कुरिन्थुस में रहते समय यहूदियों और यूनानियों को समझाता था (प्रेरितों 18:4)।

V. नोट: यह, यह नहीं कहता कि पौलुस सब्त के दिन को ''मानता'' था, बल्कि यह कहता है कि वह उस दिन आराधनालय में वाद-विवाद करता था। क्यों? बेशक इसलिए ताकि उसे उस दिन वहां सुनने वाले श्रोता मिल जाएं। कुलुस्सियों 2:16 बताता है कि सब्त के विषय में कोई हमारा न्याय न करे।

क. पौलुस ने यहूदियों में गवाही दी कि यीशु ही मसीह था (आयत 5)।

ख. यहूदियों ने विरोध किया और निंदा की।

घ. फिर यह कहते हुए कि ''अब से मैं अन्यजातियों के पास जाऊंगा'' पौलुस यहूदियों के पास से चला गया (आयत 6)।

VI. पौलुस आराधनालय से निकल गया, स्पष्टतया पास ही रहने वाले यूस्तुस नामक व्यक्ति के घर में (आयत 8)।

क. यूस्तुस परमेश्वर की आराधना करता था।

ख. उसका घर ''आराधनालय से लगा हुआ था।''

VII. आराधनालय के सरदार फिलिप्पुस ने अपने सारे घराने समेत प्रभु पर विश्वास किया (आयत 8)।

VIII. बहुत से कुरिन्थियों ने

क. सुना,

ख. विश्वास किया और

ग. बपतिस्मा लिया

चर्चा: बहुत से मसीही कहलाने वाले टीचरों द्वारा मनपरिवर्तन में बपतिस्मे का इनकार किए जाने का इतने कड़वे संघर्ष का कारण बता पाना कठिन होगा। यह सिखाया जा सकता है कि पापी के लिए सुसमाचार को सुनना, यीशु मसीह में विश्वास लाना, अपने पापों से मन फिराना, और अपने विश्वास का अंगीकार करना आवश्यक है और ये सिखाने वाले उस पर कोई किन्तु-परन्तु नहीं करेंगे। परन्तु यह सुझाव दिया नहीं कि बाहरी पापी के लिए बपतिस्मा लेना आवश्यक है, नहीं तो वह खोए होने की स्थिति में होगा, वे तुरन्त अपनी बाहें चढ़ा लेते हैं। क्यों?

मनपरिवर्तन के इस दसवें मामले में जब यह ध्यान दिलाया जाता है कि ''बहुत से कुरिन्थुसवासी सुनकर विश्वास लाए और उन्होंने बपतिस्मा लिया'' (आयत 8) तो ऐसी किस्म का टीचर आमतौर पर क्रिस्पुस की ओर ध्यान दिलाता है कि उसने केवल विश्वास किया। यह सच है कि इस आयत में उसके बपतिस्मे के विषय में कुछ नहीं कहा गया, परन्तु इस विषय पर परमेश्वर का वचन केवल आयत 8 तक सीमित नहीं है। यदि हम 1 कुरिन्थियों 1:14 में देखें तो पाएंगे कि क्रिस्पुस का बपतिस्मा हुआ था और उसे बपतिस्मा पौलुस प्रेरित ने ही दिया था!

मनपरिवर्तन का ग्यारहवां मामला- इफिसुस वासी

I. पौलुस ऊपर के सारे परदेश से होकर इफिसुस में आया (आयत 1)।
II. वहां उसने ''कुछ चेलों को'' देखा (आयत 1)।
III. उसने उनसे पूछा, ''क्या तुम ने विश्वास करते समय पवित्र आत्मा पाया?'' (आयत 2)।
IV. उन्होंने उत्तर दिया, ''हम ने तो पवित्र आत्मा की चर्चा भी नहीं सुनी'' (आयत 2)।
V. पौलुस ने पूछा ''तो फिर तुम ने किसका बपतिस्मा लिया?'' (आयत 3)।
VI. उन्होंने कहा, ''यूहन्ना का बपतिस्मा'' (आयत 3)।
VII. पौलुस ने समझाया कि यूहन्ना लोगों को यह कहकर कि वे उस पर विश्वास लाएं जो उसके बाद आने वाला था, (यानी मसीह यीशु पर) मन फिराव का बपतिस्मा देता था (आयत 4)।
VIII. यह सुनकर, उन्होंने यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा लिया (आयत 5)।

चर्चा : इफिसियों 4:5 कहता है, ''**एक ही** बपतिस्मा,'' इस कारण बहुत से लोग जिन्होंने बेशक वैसे बपतिस्मा नहीं लिया है जैसे नया नियम बताता है बल्कि कुछ ऐसा किया है जिसे वे ''बपतिस्मा'' कहते हैं, बहस करते हैं कि वे ''दोबारा बपतिस्मा'' नहीं ले सकते। इफिसुस के मसीही लोगों वाली ही बात। वही इफिसुस वासी जिनके नाम इफिसियों 4:5 लिखा गया था, उन्होंने दोबारा बपतिस्मा लिया। क्योंकि जो बपतिस्मा उन्होंने पहले लिया हुआ था वह, वह बपतिस्मा नहीं था, जिसे यीशु ने अधिकृत किया था! बेशक उन्होंने ''बपतिस्मा लिया'' हुआ था, परन्तु जो बपतिस्मा उन्होंने लिया हुआ था, वह नये नियम द्वारा बताया गया ''**एक ही**'' बपतिस्मा नहीं था। बेहतर समझ आ जाने पर उन्होंने बेहतर किया। यानी उन्होंने सही शिक्षा के अनुसार दोबारा बपतिस्मा लेने के लिए अपने आपको दे दिया। जो दूसरा ''बपतिस्मा'' उन्होंने लिया था वह इफिसियों 4:5 वाला ''**एक ही बपतिस्मा**'' था, या यूं कहें कि यह उनका पहला ही बपतिस्मा था।

बहुत से निष्कपट मन वाले लोग इसी भ्रम में कि दूसरी बार बपतिस्मा लेना गलत हो जाएगा अपने बपतिस्मे की गलती को बरकरार रखते हैं! इफिसियों के उदाहरण से हम साफ़ देख सकते हैं कि यदि किसी ने पहले बपतिस्मा लिया हुआ है जो सही शिक्षा के अनुसार नहीं है, तो दूसरी बार बपतिस्मा लेना सही है।

आज कई गलत बपतिस्मे दिए जा रहे हैं, केवल इसलिए कि या तो बपतिस्मा लेने वाले या बपतिस्मा देने वाले को उस **बेहतर** का ज्ञान नहीं होता। उदाहरण के लिए यदि आपका बपतिस्मा तब हुआ जब आप बच्चे थे, यानी जब आप विश्वास नहीं कर सकते थे, तो प्रेरितों 8:36-37 के अनुसार आपका बपतिस्मा मान्य नहीं हो सकता। ''बपतिस्मा'' लेने के लिए पहले पूरे मन से ''विश्वास'' करना आवश्यक है। बच्चे विश्वास नहीं करते। इसलिए नवजात बच्चों को बपतिस्मा नहीं दिया जा सकता। यदि विश्वास करने से पहले आपको बपतिस्मा दिया गया था तो इफिसियों की तरह ही आपका भी गलत बपतिस्मा हुआ है। आपको सही बपतिस्मा लेना आवश्यक है।

कई बार लोगों को वचन समझाए बिना ही बपतिस्मा दे दिया जाता है। यूहन्ना 6:44-45 कहता है कि कोई मसीह के पास नहीं आ सकता, जब तक पिता उसे न खींचे, और वे सब परमेश्वर की ओर से सिखाए हुए होंगे। ''जिस किसी ने पिता से सुना और सीखा है वही'' मसीह के पास आता है। हमें ''मसीह में बपतिस्मा'' दिया जाता है (रोमियों 6:3-4; गलातियों 3:26-27); परन्तु इससे पहले हमें सुनना और सीखना आवश्यक है। यदि हम ने सुनने और सीखने से पहले बपतिस्मा ले लिया है तो हमारा बपतिस्मा गलत है। हमें सही बपतिस्मा लेना आवश्यक है!

गलती से कुछ लोग यह सिखाते हैं कि बपतिस्मे का हमारे उद्धार से कोई सम्बन्ध नहीं है। परन्तु प्रेरितों 2:38 कहता है कि बपतिस्मा ''पापों की क्षमा के लिए'' है और प्रेरितों 22:16 कहता है, ''उठ, बपतिस्मा ले और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल।'' कोई भी व्यक्ति जिसका बपतिस्मा इस उद्देश्य (यानी पापों की क्षमा के लिए) नहीं हुआ है उसका बपतिस्मा नये नियम की शिक्षा के अनुसार नहीं हुआ है। इफिसियों की तरह हमें भी सही बपतिस्मा लेना आवश्यक है!

छिड़काव या उण्डेलने के विकल्प देना और इसे ''बपतिस्मा'' कहना प्रसिद्ध हो गया है (चाहे यह वचन के अनुसार नहीं है)। रोमियों 6:4 और कुलुस्सियों 2:12 दोनों बताते हैं कि बपतिस्मे में हम गाड़े जाते हैं। परन्तु छिड़काव या उण्डेलने से हम गाड़े नहीं जाते। इसका अर्थ यह हुआ कि न तो छिड़काव और न ही उण्डेलना किसी प्रकार बपतिस्मा है। यदि आपका ''बपतिस्मा'' केवल छिड़काव या उण्डेलने से हुआ है तो आपको सही बपतिस्मा लेना आवश्यक है।

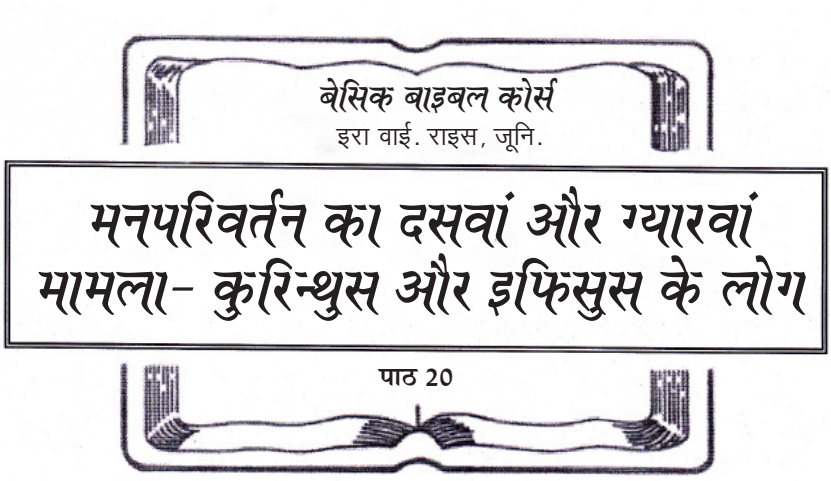

पाठ 20 के प्रश्न

Registration No.....

Grade .....

Name.....

Address.....

.....

Pin.....Mobile No.....

e-mail.....

(कृपया पता अंग्रेजी के बड़े अक्षरों में ही लिखें।)

1. इस पाठ समेत, हमें प्रेरितों के काम की पुस्तक में दर्ज मनपरिवर्तन के कितने मामले मिलते हैं ? .....

2. पौलुस प्रेरित किस नगर में तम्बू बनाने का काम करता था ?

   .....

3. पौलुस के लिए कुरिन्थुस की कलीसिया से आर्थिक सहायता लेना सही होना था या गलत ? .....

   .....

4. उसने कुरिन्थुस में ऐसी सहायता ली या नहीं ? .....

   .....

5. यदि पौलुस ने कुरिन्थुस के मसीही लोगों से सहायता नहीं ली तो कुरिन्थुस में रहते समय उसकी सहायता कौन करता था ? .....

6. क्या प्रेरितों 18 यह बताता है कि सब्त के दिन (सप्ताह के सातवें दिन यानी शनिवार) आराधनालय में होने का पौलुस का कारण सब्त को ''मानना'' था ? .....

7. यदि सब्त को ''मानना'' नहीं था, तो पौलुस आराधनालय में सब्त के दिन क्या करने जाता था ? .....

8. यदि परमेश्वर का वचन यह नहीं कहता कि पौलुस आराधनालय में सब्त को ''मानने'' के लिए जाता था तो क्या हमारा यह मानना सही है कि वह सब्त को मानने के लिए जाता था ? समझाएं .....

   .....

9. जब पौलुस ने यहूदियों में गवाही दी कि यीशु ही मसीह है तो उन्होंने क्या किया ?

.....

.....

10. पौलुस कुरिन्थुस में यहूदियों से अन्यजातियों के पास क्यों गया? .....

.....

.....

11. आराधनालय से निकलने के बाद पौलुस ने किसके घर में प्रचार किया?

.....

12. यूस्तुस का घर कहां था? .....

.....

.....

13. पौलुस के प्रचार के कारण बहुत से कुरिन्थयों ने क्या किया? .....

.....

.....

14. क्या क्रिस्पुस ने भी विश्वास किया? .....

क्या उसने बपतिस्मा लिया? .....

15. ऊपर के प्रदेश से होने के बाद पौलुस किस नगर में आया .....

वहां वह किससे मिला? .....

.....

16. क्या इन लोगों को सही ढंग से सिखाया गया था?.....

समझाएं .....

.....

.....

17. क्या इनका बपतिस्मा हो चुका था? .....

    यदि हां तो पौलुस ने उनके बपतिस्मे पर सवाल क्यों उठाया? .....

    .....

18. क्या किसी चेले को गलत सिखाकर उसे सही बपतिस्मा दिया जा सकता है?

    .....

    .....

19. यदि किसी का बपतिस्मा गलत जानकारी या गलत समझ के आधार पर हो तो क्या ऐसा बपतिस्मा मान्य होगा या अमान्य? .....

    यदि आपका उत्तर, ''मान्य'' है तो समझाएं कि कैसे: .....

    .....

20. क्या पौलुस ने इफिसियों को बताया कि ''एक ही बपतिस्मा'' है? .....

21. क्या इफिसियों ने दूसरी बार बपतिस्मा लिया? .....

22. नये नियम (यानी मसीही काल) के लिए कौन सा बपतिस्मा मान्य था? .....

    .....

23. यदि इफिसियों को दो बार बपतिस्मा दिया गया था तो समझाएं कि पौलुस का यह कहने का क्या अर्थ था कि ''एक ही'' बपतिस्मा है? .....

    .....

24. यदि हमारा बपतिस्मा बचपन में हुआ था जब हम बच्चे थे, तो क्या हमारा बपतिस्मा नये नियम की सच्ची शिक्षा के अनुसार हुआ है? .....

    यदि नहीं तो क्या हमें दोबारा बपतिस्मा लेना आवश्यक है? .....

यदि आप कहते हैं कि ''नहीं'' तो समझाएं कि कैसे .....

.....

25. क्या छिड़काव या उण्डेलने के द्वारा दिया गया बपतिस्मा वचन के अनुसार है ?

.....

25. क्या पापों की क्षमा के लिए वचन के अनुसार बपतिस्मा अनिवार्य है ?

.....

आपका कोई प्रश्न है तो उसे यहां लिखें .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

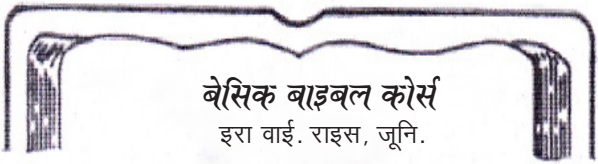

प्रेरितों के काम में मनपरिवर्तन के (सभी 11 मामलों में) परमेश्वर के रिकॉर्ड को संक्षिप्त करना

जहां तक हो सके परमेश्वर के वचन से सम्बन्धित कम से कम गलतियां करने के लिए, अध्ययन के इस कोर्स के आरम्भ से ही हमने निष्कर्ष निकालने की जल्दबाजी से बचने पर बहुत ध्यान दिया है। पाठ 14 तक पहुंचकर हमारे अपने मानवीय साधन के ''मनपरिवर्तन'' की कोई घोषणा करके अन्य बातों की ओर बढ़ना कितना आसान होना था। दूसरी ओर यह देखते हुए कि बहुमूल्य मानवीय आत्माओं का अनन्त भविष्य दांव पर लगा है, ऐसा करना कितना गलत और अविवेकी होता!

दूसरी ओर हमने प्रेरितों के काम की पुस्तक यानी ''मनपरिवर्तनों की परमेश्वर की पुस्तक'' में लिखित मनपवित्तन के ग्यारह के ग्यारह मामलों के प्रत्येक मामले की एक-एक करके धीरे-धीरे और जान-बूझकर समय अधिक देते हुए समीक्षा की है। याद रखें कि इस पाठ तक हमने इन सभी मामलों का अध्ययन एक-एक करके किया है। परन्तु अब तक आपको पूरी तरह से स्पष्ट हो जाना चाहिए कि परमेश्वर की शिक्षा किसी भी प्रकार से मनपरिवर्तन के एक ही मामले के रिकॉर्ड तक सीमित नहीं है। परमेश्वर का वचन ऐसे लिखा ही नहीं गया। जबकि जैसा कि यशायाह 28:10 इसका विवरण देता है, ''आज्ञा पर आज्ञा, आज्ञा पर आज्ञा, नियम पर नियम, नियम पर नियम, थोड़ा यहां, थोड़ा वहां।''

यदि जो ''थोड़ा यहां'' मिले उसी से निष्कर्ष निकालकर, जो ''थोड़ा वहां'' मिले उसे नज़रअन्दाज़ कर दें, तो हम बाइबल के लिखे जाने के ढंग के साथ ही अन्याय नहीं करेंगे, बल्कि हमारा उत्तर भी गलत होगा। याद रखें कि ''मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है, जीवित रहेगा।'' इसका अर्थ यह हुआ कि कोई भी निष्कर्ष या पहले से बनाया गया विचार जिसको हम ने माना है, जो मनपरिवर्तन के विषय पर परमेश्वर की शिक्षा के किसी भी भाग को छोड़ देता है, गलत है और परमेश्वर का वचन फिर भी सही

है! जैसा कि रोमियों 3:4 कहता है, ''कदापि नहीं! वरन परमेश्वर सच्चा और हर एक मनुष्य झूठा ठहरे, जैसा लिखा है, जिससे तू अपनी बातों में धर्मी ठहरे और न्याय करते समय तू जय पाए।'' यह अपने आप में स्पष्ट होना चाहिए कि संसार भर में उद्धार के बताए जाने वाले सभी ढंग और योजनाएं सच नहीं हो सकते। उनमें से कई अन्तरविरोधी हैं। और जब कलीसियाएं या प्रचारक कोई परस्पर विरोधी शिक्षा दे रहे हों तो क्या दोनों सही हो सकते हैं? उदाहरण के लिए एक कलीसिया ''नवजात शिशुओं का बपतिस्मा'' देना सिखाती और देती भी है, जबकि एक और यह ज़ोर देती है कि बपतिस्मा लेने के लिए कम से कम 16 साल का होना आवश्यक है। क्या दोनों सही हैं? दोनों गलत हो सकते हैं, परन्तु एक को तो गलत होना ही है। यह कैसे हो सकता है कि दोनों एक-दूसरे से उलट सिखाते हों और फिर भी दोनों सही हों!

अधिकतर कथित प्रोटैस्टेंट लोग यह सिखाते हैं कि उद्धार ''केवल विश्वास'' से या ''अकेले विश्वास'' से होता है। ''कैथोलिक'' चर्च का दावा है कि ''कर्म'' भी आवश्यक हैं! क्या **दोनों** सही हैं?

कुछ कलीसियाओं का दावा है कि विश्वास करते ही व्यक्ति का उद्धार हो जाता है! जबकि अन्यों का कहना होता है कि उसे मन भी फिराना आवश्यक है; ऐसे भी हैं जो यह कहते हैं कि उसे **अंगीकार** करना और **बपतिस्मा** लेना आवश्यक है।

क्या **सभी** सही है?

एक कलीसिया बपतिस्मे के लिए डुबकी की शिक्षा देती है जबकि एक और का दावा है कि ''छिड़काव'' और ''उण्डेलना'' भी ''उतना ही सही'' है।

क्या **दोनों** सही हैं?

एक कलीसिया पानी में बपतिस्मे का तर्क देती है जबकि दूसरी कहती है, नहीं, पवित्र आत्मा का बपतिस्मा होना आवश्यक है!

क्या **दोनों** सही हैं?

एक की घोषणा है कि बपतिस्मा ''पापों की क्षमा के लिए'' है; जबकि एक और का कहना है कि यह पापों की क्षमा के लिए नहीं है।

क्या **दोनों** सही हैं?

ऐसी विरोधाभासी शिक्षा को ''अनन्तकाल तक'' दोहराया जा सकता है। यह बिल्कुल सम्भव है कि सभी गलत हों, परन्तु यह सम्भव नहीं है कि सभी सही हों सकते हैं! परन्तु क्या इतनी सारी उलझन और विरोधाभास के झमेले के बीच सच्चाई मिल पाना सम्भव हो सकता है? परन्तु यदि सच्चाई कहीं है तो हम इसे कैसे ढूंढ़ सकते हैं और यह कैसे जान सकते हैं कि यह सच्चाई ही है?

जहां तक परमेश्वर के वचन की बात है, इस मामले में विश्वसनीय निष्कर्ष तक पहुंचने के लिए एक मात्र तरीका वही है। इस सम्बन्ध में परमेश्वर का वचन यानी जो कुछ भी यह कहता है, उसका बड़े ध्यान से अध्ययन करें, उस सब को मिला लें और फिर देखें कि इस विषय पर परमेश्वर क्या बताता है।

कुछ हद तक और सभी तरीके अधूरे हैं और कम से कम गलत तो हैं ही।

यह तरीका सम्पूर्ण और मुकम्मल है, जो अनुमान के लिए जगह नहीं रहने देता। मनपरितर्वन

के सभी ग्यारह मामलों को ''संक्षेप'' करने के लिए मनपरिवर्तनों की पुस्तक यानी ''प्रेरितों के काम'' पर साथ दिए चार्ट का अध्ययन करें।

अब इस चार्ट से ध्यान दें कि हमने ''प्रेरितों के काम'' में लिखित ग्यारह मामलों के मनपरिवर्तन सम्बन्धी सभी प्रासंगिक तथ्य मिला लिए हैं। अपने अध्ययन को आसान बनाने के लिए, अलग-अलग कॉलम बनाए गए हैं ताकि मनपरिवर्तन से जुड़े हर तथ्य, आज्ञा या प्रतिज्ञा को समायोजित किया जा सके। चार्ट के बाईं ओर आप क्रमवार दिए मनपरिवर्तन के सभी ग्यारह मामलों को उन अध्यायों के साथ लिखें, जहां वे वचन में हैं। हर मामले में, सिखाना या सुनाया जाना हुआ, इसलिए अगले कॉलम में सुनना लिखें, और प्रमाण के लिए हवाला लिखें। अगले पांच कॉलम में दिखाया गया है कि जो वचन सिखाया या सुनाया गया था, उसकी प्रतिक्रिया में अलग-अलग पापियों ने परिवर्तित होने के लिए क्या किया। फिर अन्त में दायें कॉलम में इस प्रकार बताई शिक्षा के सांचे को मानने से मिले परिणामों (या प्रतिज्ञा) की सूची है।

जैसा कि आप देखेंगे, मन परिवर्तन का हर मामला पूरी तरह से एक-दूसरे से मेल नहीं खाता। कई मामलों का विवरण विस्तार में दिया गया है जबकि अन्य का केवल नाम के लिए। सभी मामलों में यह स्पष्ट दिखाया गया है कि सिखाया जाना और या सुनाया जाना हुआ। उदाहरण के लिए जहां पांचवें मामले में वचन बहुत अधिक शब्दों में नहीं बताता कि पापी ने जो सुनाया गया था उसे सुना, संदर्भ से ही यह निष्कर्ष निकालना आवश्यक है कि उसने सुना। यही बात नौवें मामले में है। तरसुसवासी शाऊल के मनपरिवर्तन (छठा मामला) में उस पर जो उसने सुना विश्वास करने या मन फिराने या अपने विश्वास का अंगीकार करने के बारे में कुछ नहीं कहा गया। फिर भी उसका यह तथ्य कि उसने बपतिस्मा लिया, यह संकेत देता है कि उसने सुसमाचार की आज्ञा मानी जो हनन्याह ने उसे सुनाया था। मनपरिवर्तन के केवल तीन मामलों में मन फिराव का उल्लेख, आज्ञा या विवरण दिया गया है (पहला, तीसरा और नौवां मामला)। फिर भी प्रेरितों 17:30 में हमें पता चलता है कि परमेश्वर ''अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है।'' इस कारण यह आवश्यक नहीं है कि हर मामले में मन फिराव की बात स्पष्ट की जाए, क्योंकि परमेश्वर सब से इसकी मांग करता है! यह तथ्य कि तीन मामलों में इसका उल्लेख है यह मनुष्य के मनपरिवर्तन के लिए परमेश्वर के आदेश में मनफिराव से सम्बन्ध को दिखाने के लिए काफ़ी है।

कृपया ध्यान दें कि अंगीकार (विश्वास का) दिखाता एकमात्र मामला हब्शी खोजे का है। परमेश्वर को इसे कराने के लिए बहुत बार दोहराने की आवश्यकता नहीं है। एक ही बार कहना काफ़ी है! प्रेरितों के काम में खोजे के अंगीकार की बात कि ''मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है'' मनपरिवर्तन पर परमेश्वर की शिक्षा में ऐसे विश्वास का अंगीकार मिलाने के लिए काफ़ी है।

व्यावहारिक रूप में चाहे सभी कथित ''मसीही'' डिनोमिनेशनें मनपरिवर्तन (परमेश्वर की ओर मुड़ने) के साथ बपतिस्मे का किसी भी प्रकार का सम्बन्ध होने से इनकार करती हैं, परन्तु मन परिवर्तन के ग्यारह में से दस मामलों में परमेश्वर ने बपतिस्मे को इसके साथ जोड़कर बताया है! केवल एक मामला जहां स्पष्ट बपतिस्मे का उल्लेख नहीं है वह सुलैमान के आसारे में हुआ मनपरिवर्तन है। जहां पिन्तेकुस्त के दिन पतरस ने ''सुलैमान के ओसारे में'' आज्ञा दी थी कि ''मन

फिराओ और बपतिस्मा लो।'' उसने आज्ञा दी कि ''मन फिराओ और मन बदलो।'' मनपरिवर्तन के अन्य सभी दस मामलों में यहां पर बपतिस्मे का उल्लेख है। यह निष्कर्ष निकालना तर्कसंगत लगता है कि ''मन बदलो'' की पतरस की आज्ञा में बपतिस्मा लेना भी शामिल होगा। आप मानते हैं?

दी गई आज्ञाओं को मानने के आधार पर ये सभी परिणाम या तो माने जा सकते हैं या इनकी उम्मीद की जा सकती है, कि मनपरिवर्तन के एक भी मामले में सारी की सारी बातों का उल्लेख नहीं है। कम से कम पिन्तेकुस्त के दिन (चार्ट के दायीं ओर देखें) कम से कम तीन परिणाम बताए गए हैं। सुलैमान के ओसारे में तीन और परिणाम हैं। हब्शी खोजे, तरसुसवासी शाऊल, कुरनेलियुस और फिलिप्पी दोरोगे के कामों के भी परिणाम दोहराए गए हैं। मनपरिवर्तन पर प्रेरितों के काम की पुस्तक की सब बातों को किसी एक मामले पर तय नहीं किया जा सकता तो फिर हम मनपरिवर्तन की इस असाधारण पुस्तक के इस विषय पर सच्ची शिक्षा के कुल निष्कर्ष पर कैसे पहुंचेंगे? बेशक अलग-अलग कॉलमों को मिलाकर दी गई सारी जानकारी को मिलाना होगा! अंक गणित के जोड़ में हमें दायें से बायें को बढ़ना चाहिए। बीजगणित में जोड़ बायें से दायें को होता है। यह देखते हुए कि हमारी जानकारी तर्कसंगत रूप में बायें से दायें की ओर बढ़ती है, इस सब को बीजगणित के रूप में जोड़ते हैं यानी कॉलम दर कॉलम और फिर देखते हैं कि मनपरिवर्तन के विषय पर प्रेरितों के काम की पुस्तक में ठहराए अनुसार इसका कुल जोड़ कितना बनता है।

चार्ट के नीचे से बढ़ते हुए, प्रत्येक कॉलम में दी जानकारी को जोड़ने के बाद, अब तक प्रेरितों के काम में हमारे सारे अध्ययन का निष्कर्ष यह है कि हर मामले में सिखाना और या सुनाना आरम्भ हुआ; इस प्रकार पापियों ने सुसमाचार को सुना, जिससे मसीह में उन्हें विश्वास हुआ, उन्होंने अपने पापों से मन फिराया, अपने विश्वास का अंगीकार किया और बपतिस्मा लिया। इन मनपरिवर्तनों से, इस प्रकार शिक्षा के सांचे को मानने वालों ने सिखाए और या सुनाए वचन को मानकर पापों की क्षमा पाई, पवित्र आत्मा पाया, उद्धार पाया, उनके पाप मिटाए गए, उन्होंने ''विश्रांति के दिन'' का आनन्द लिया, आशीष पाई, आनन्द किया और उनके पाप मिटाए गए।

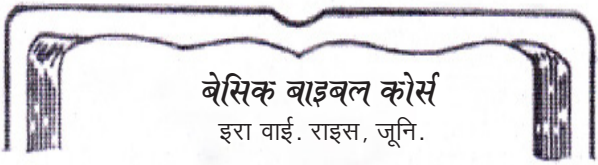

प्रेरितों के काम में मनपरिवर्तन के (सभी 11 मामलों में) परमेश्वर के रिकार्ड को संक्षिप्त करना

पाठ 21 के प्रश्न

Registration No.....

Grade .....

Name.....

Address.....

.....

Pin.....Mobile No.....

e-mail.....

(कृपया पता अंग्रेजी के बड़े अक्षरों में ही लिखें।)

1. कुल मिलाकर, प्रेरितों के काम की पुस्तक में हमने मनपरिवर्तन के कितने मामलों का अध्ययन किया है ? .....

   .....

2. मनपरिवर्तन पर क्या परमेश्वर की सारी शिक्षा केवल एक ही मामले तक सीमित है ?

   .....

3. यदि नहीं तो यशायाह 28:10 हमें परमेश्वर के वचन के कैसे लिखे होने को बताता है ?

   .....

4. यदि हम परमेश्वर के वचन को थोड़ा स्वीकार कर लें और थोड़ा नकार दें तो क्या ऐसी आंशिक जानकारी पर आधारित हमारे उत्तर सही होंगे या गलत ? .....

   .....

5. क्या संसार भर में सिखाए जा रहे उद्धार के तरीकों और योजनाओं का एक-दूसरे के उलट होना सम्भव होने के बावजूद वे सब सही होंगे ? .....

   .....

6. समझाएं कि हम परमेश्वर के वचन के अपने अध्ययन से निष्कर्ष निकालने की गलतियों से कैसे बच सकते हैं ? .....

   .....

7. प्रेरितों के काम में मनपरिवर्तन के ग्यारह मामलों के अध्ययन से, कितने मामलों का सिखाया जाना या सुनाया जाना हुआ ? .....

   .....

8. जो कुछ सिखाया या सुनाया गया उसके उत्तर में पापियों द्वारा की गई पांच बातें बताएं, जिनका वर्णन प्रेरितों की पुस्तक में है ?

1. .....

2. .....

3. .....

4. .....

5. .....

9. प्रेरितों के काम में दर्ज मनपरिवर्तन के कितने मामले में सुनने का उल्लेख है ? .....

.....

किस मामले में सुनने का उल्लेख नहीं है ? .....

.....

10. कितने मामलों में विश्वास करने का उल्लेख है ?

.....

11. क्या विश्वास करने का उल्लेख हर मामले में है ?

.....

यदि नहीं तो किस मामले में विश्वास करने का उल्लेख नहीं है।

.....

11. कितने मामलों में मनफिराव का उल्लेख, आज्ञा या विवरण है ?

.....

12. क्या सब पर लागू करने के लिए मनफिराव का उल्लेख हर मामले में होना आवश्यक है ?

.....

13. मनपरिवर्तन के कितने मामलों में अंगीकार मिलता है ?

.....

14. क्या यह पापों का अंगीकार था या यीशु मसीह में विश्वास का अंगीकार?

.....

15. खोजे के विश्वास के अंगीकार को उसी के शब्दों में लिखें:

.....

16. यदि परमेश्वर एक समय केवल एक बात कहता है तो क्या यह सही है या गलत?

.....

17. क्या परमेश्वर की किसी बात को एक से अधिक बार दोहराने से यह अधिक सच्ची हो जाती है या उसका एक बार कहना भी उतना ही महत्वपूर्ण है? .....

.....

18. मनपरिवर्तन के कितने मामलों में बपतिस्मे का उल्लेख है?

.....

19. किस मामले में बपतिस्मे का उल्लेख नहीं है?

.....

20. कौन-सा मामला बपतिस्मे और पापों की क्षमा को जोड़ता है?

.....

21. पिन्तेकुस्त के दिन जब पतरस ने लोगों से कहा, ''अपने आपको बचाओ'' (प्रेरितों 2:40) तो जिन्होंने उसका वचन ''ग्रहण किया,'' उन्होंने क्या किया?

.....

22. क्या यह तथ्य कि इन लोगों ने अपने आपको बचाने के लिए पतरस के उपदेश को मानकर बपतिस्मा लिया था, बपतिस्मे को उद्धार से मिलाता है? .....

.....

विस्तार से बताएं .....

.....

23. मनपरिवर्तन का कौन सा-मामला बपतिस्मे को पापों के धोए जाने से जोड़ता है ?

.....

24. यदि पौलुस को क्षमा उसके विश्वास करने के समय (जैसा कि कुछ लोग दावा करते हैं) मिल गई थी, तो क्या बपतिस्मे के समय धोए जाने के लिए उसमें कोई पाप बचा था ?

.....

यदि आपका उत्तर ''हां'' है तो कृपया प्रेरितों 22:16 का अर्थ बताएं।

.....

25. मनपरिवर्तन के इन मामलों से सम्बन्धित कितने परिणाम बताए गए हैं ?

.....

26. आज यदि हम वैसे ही सुनें (सुसमाचार), विश्वास करें (यीशु मसीह में), मन फिराएं (अपने पापों से), अंगीकार करें (मसीह में अपने विश्वास का) और बपतिस्मा लें, जैसे प्रेरितों के काम की पुस्तक में वर्णित लोगों ने किया था, तो क्या हमें भी वही परिणाम मिलेंगे, जो उन्हें मिले थे ? .....

.....

.....

क्या आपके पास प्रश्न हैं ?.....

.....

.....

.....

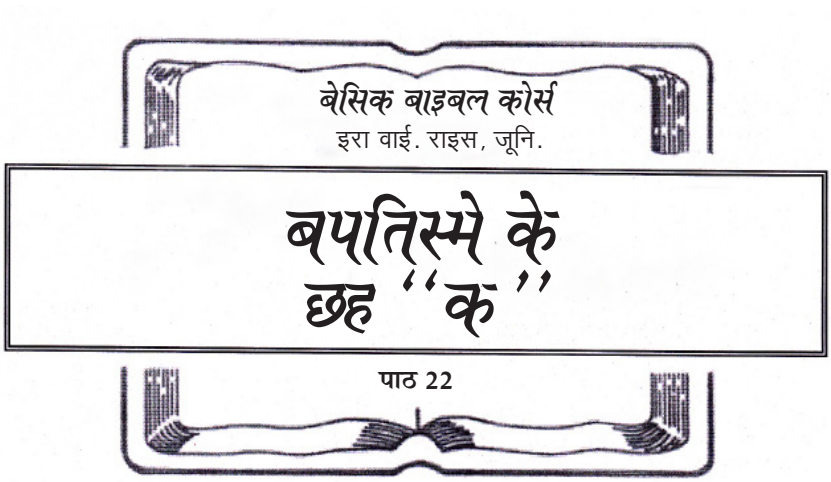

परिचय: किसी भी बात से जुड़े तथ्यों का कोई भी अध्ययन कौन, क्या, कब, कहां, क्यों और कैसे की छह बातों से तय होता है। जब आपको किसी बात के ''छह क'' का पता चल जाता है तो आपको सब पता चल जाता है।

बपतिस्मे के सम्बन्ध में बहुत से लोगों के मनों में उलझन छाई है। इसका कुछ कारण जानकारी का अभाव है। जबकि कुछ कारण जानबूझकर लोगों के मनों में डाली गई गलत जानकारी है।

पिछले कई पाठों में ग्रेट कमीशन को ही नहीं बल्कि मनपरिवर्तन के ग्यारह मामलों को भी बारीकी से देखते हुए, बीच बीच में हमने देखा कि किसी के मसीह के आज्ञाकार, बदले हुए व्यक्ति, चेला, परमेश्वर की संतान या मसीही बनने में बपतिस्मे का क्या महत्व है। ऐसे अध्ययन के बाद कि परमेश्वर ने सारी मनुष्यजाति के लिए उद्धार की अपनी योजना में बपतिस्मे को रखा है, तर्कसंगत ढंग से कोई इसका इनकार नहीं कर सकता। परन्तु नये नियम में प्रकट की गई उद्धार की पूरी योजना को समझने के लिए सबसे पहले हमारे लिए आवश्यक है कि बपतिस्मे के बारे में हर प्रकार की उलझन, गलत शिक्षा और अशुद्धि को अच्छी तरह से समझ लें। ऐसा करने के लिए हमें ''छह क'' का इस्तेमाल करना होगा।

I. आरम्भ करते हुए, परमेश्वर के वचन के अनुसार, बपतिस्मा **कौन** ले सकता है?

क. वचन में बपतिस्मे के लिए **उम्र** की शर्त कहीं पर नहीं है।

ख. परन्तु कुछ बातों का ध्यान रखा जाना आवश्यक है जिससे बपतिस्मे के लिए योग्य होने के लिए माना जाना आवश्यक है।

1. प्रेरितों 8:36 में जब फिलिप्पुस और खोजा ''किसी जल की जगह पहुंचे'' तो खोजे ने एक प्रश्न पूछा था कि ''देख यहां जल है, अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है?''

क. इसका उत्तर क्या था? ''फिलिप्पुस ने कहा, यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो ले सकता है।''

ख. ध्यान दें कि खोजे के यह अंगीकार करने से पहले तक कि ''मैं विश्वास करता हूं'' फिलिप्पुस ने उसे बपतिस्मा नहीं दिया था।

ग. यह मरकुस 16:16 के साथ मेल खाता है जहां पर यीशु ने कहा कि ''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले।''

2. पिन्तेकुस्त वाले दिन विश्वास करने वालों (जिनके ''हृदय छिद गए'' थे) ने जब पूछा, ''**हे** भाइयो, हम क्या करें?'' तो पतरस का उत्तर क्या था? (प्रेरितों 2:37, 38)।

क. ''मन फिराओ और तुम में से हर एक ... बपतिस्मा ले।''

3. इसका मतलब यह हुआ कि बपतिस्मे के लिए योग्य होने के लिए केवल योग्य होना ही नहीं बल्कि तीन बातें करना भी आवश्यक है। बपतिस्मा लेने या ले सकने से पहले

क. मसीह यीशु में **विश्वास**

ख. इस विश्वास का **अंगीकार**

ग. **मन फिराना** आवश्यक है।

सारांश: यीशु मसीह में अपने विश्वास का अंगीकार करने वाला कोई भी पश्चातापी विश्वासी बपतिस्मा ले सकता है।

प्रश्न: क्या कोई बच्चा मसीह में विश्वास कर सकता है?
क्या कोई बच्चा मसीह में अपने विश्वास का अंगीकार कर सकता है?
क्या कोई बच्चा अपने पापों से मन फिरा सकता है?

ऐसे प्रश्न पूछना भी बेकार है। बच्चे इन तीनों में से कोई बात नहीं कर सकते; इसलिए बच्चे वचन के अनुसार बपतिस्मा नहीं ले सकते। वे लें भी क्यों? जिन्होंने कभी पाप नहीं किया, जो खोए हुए नहीं हैं और खोए हुए न होने के कारण उन्हें उद्धार की आवश्यकता नहीं है। वास्तव में वे सुरक्षित हैं! यीशु ने कहा था कि स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का है! (मत्ती 19:14)

प्रश्न- यदि किसी बच्चे को वचन के अनुसार बपतिस्मा नहीं दिया जा सकता तो बपतिस्मा लेने के लिए उसे कितना बड़ा होना आवश्यक है? इस प्रश्न का उत्तर प्रभु के वचन में अधिक शब्दों में नहीं दिया गया। इसके लिए पूर्व शर्तें बताई गई हैं कि विश्वास करना, मन फिराना और अंगीकार करना आवश्यक है। इसका अर्थ यह हुआ कि जब कोई व्यक्ति इतना बड़ा हो जाता है तो वह इन सब शर्तों को पूरा कर सके तो वह बपतिस्मा ले सकता है। इससे पहले नहीं।

II. बपतिस्मा **क्या** है?

नोट: पिछले पाठों में हमने देखा है कि यहूदी काल के दौरान कम से तीन अलग-अलग बपतिस्मों का उल्लेख हुआ है: (1) इस्राएलियों को ''बादल में और समुद्र में'' मूसा का बपतिस्मा दिया गया, जो उनके मिस्र से बचाव को दिखाता है; (2) यूहन्ना का बपतिस्मा; और (3) दुखों का बपतिस्मा जो कल्वरी पर अपनी मृत्यु में यीशु ने लिया था। ये तीनों बपतिस्मे यहूदी काल के दौरान पाए गए; और जैसा हमने देखा है कि इनमें से किसी भी

बपतिस्मे को मसीही काल में आगे नहीं लाया गया।

मसीही युग में आते हुए नये नियम को ध्यान से पढ़ने पर केवल दो बपतिस्मों का पता चलता है। और इफिसियों 4:5 कहता है कि ''एक ही बपतिस्मा है'' तो हमें यह निष्कर्ष निकालना आवश्यक है कि दोनों में से एक बपतिस्मा इफिसियों की पुस्तक तक लिखे जाने तक अपने उद्देश्य को पूरा करके अलोप हो चुका था (लगभग 62 ईस्वी तक)। जैसा कि हमने पहले अध्ययन किया है, 12 प्रेरितों (प्रेरितों 2 में) को ''पवित्र आत्मा का बपतिस्मा'' मिला था, जिसकी यीशु ने उन से प्रतिज्ञा की थी (प्रेरितों 1:5 में)। उसके बाद कुरनेलियुस और उसके घराने को ''वैसा ही दान'' (प्रेरितों 10 में) मिला। पूरी बाइबल में ''पवित्र आत्मा के बपतिस्मे'' की केवल दो घटनाएं हैं।

परन्तु इफिसियों को बपतिस्मा दिए जाने के समय पांचवां अन्तिम और केवल एक बपतिस्मा रहता था, जो इनमें से कोई नहीं था, पवित्र आत्मा का बपतिस्मा केवल परमेश्वर दे सकता था। फिर भी एक ही बपतिस्मा रह गया था जो मनुष्यों के हाथों से दिया जा सकता था, और जो संसार के अन्त तक रहना था। यह बपतिस्मा ग्रेट कमीशन वाला बपतिस्मा था। अपनी मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने के बाद यीशु ने अपने प्रेरितों (यानी मनुष्यों) को आज्ञा दी, ''इसलिए तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो'' (मत्ती 28:19)। इस प्रकार से बपतिस्मा लेने वालों को वही बातें मानना सिखाया जाना था (जिसमें बपतिस्मा शामिल होना था) जिनकी आज्ञा प्रेरितों को दी गई थी; और यह बपतिस्मा ''जगत के अंत तक सदा'' रहना था (आयत 20)।

''पवित्र आत्मा'' का बपतिस्मा ऐसा नहीं था जिसकी आज्ञा मानी जा सकती थी। परन्तु ग्रेट कमीशन वाला बपतिस्मा वह बपतिस्मा था जो मनुष्यों के आज्ञापालन के लिए था। इस प्रकार जब (यीशु के इसकी घोषणा के लगभग 10 दिन बाद उसके ऊपर उठाए जाने से पहले) जिस बपतिस्मे की आज्ञा दी गई थी वह प्रभावी हो गया, पतरस ने इसे मसीही युग के सुसमाचार के सबसे पहले प्रवचन को सुनने वालों पर लागू किया, जिन्होंने पिन्तेकुस्त के दिन वचन सुना था। जिन्होंने अभी-अभी इसे सुना था वे पूछने लगे ''हम क्या करें?'' पतरस ने उन से कहा, ''मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले'' (प्रेरितों 2:38)। ''अतः जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया, उन्होंने बपतिस्मा लिया'' (आयत 41)। ऐसा ही बाद में मनपरिवर्तन करने वालों ने किया जिसमें सामरिया के लोग, शमौन जादूगर, हब्शी खोजा (प्रेरितों 8), तरसुसवासी शाऊल (प्रेरितों 9 और 22), कुरनेलियुस और उसका घराना (प्रेरितों 10), लुदिया और उसका घराना और फिलिप्पी दारोगा और उसका घराना (प्रेरितों 16), कुरिन्थुस वासी (प्रेरितों 18) और इफिसुस वासी (प्रेरितों 19) शामिल थे, जिन्हें बताया गया था कि ''एक ही बपतिस्मा है'' (इफिसियों 4:5)।

इस प्रकार इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए आइए अपने आप से पूछते हैं कि ''बपतिस्मा क्या है?'' इफिसियों 4:5 वाला यह बपतिस्मा यानी ग्रेट कमीशन वाला ही बपतिस्मा?

क. सबसे पहली बात, सरल परिभाषा के अनुसार बपतिस्मा गाड़े जाना है।

1. नीचे दी गई आयतें पढ़ने पर हमें कोई संदेह नहीं रहने दिया जाता:
   क. रोमियों 6:4 इतने अधिक शब्दों में कहता है, ''अत: मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए।''
   ख. कुलुस्सियों 2:12: ''और उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए।''
2. बपतिस्मे में हमारा गाड़ा जाना क्यों शामिल है, क्योंकि बपतिस्मे का सम्बन्ध मसीह की मृत्यु से है। ध्यान से देखें:

क. रोमियों 6:3-5: ''क्या तुम नहीं जानते कि हम जितनों ने मसीह यीशु का (में) बपतिस्मा लिया, तो उस की मृत्यु (में) का बपतिस्मा लिया? सो उस मृत्यु का (में) बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे।''

प्रश्न : ठीक है, परन्तु यदि हम ''उसकी मृत्यु की समानता में जुट'' या गाड़े नहीं गए तो क्या हम उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे?

फिर से विचार करें-

ख. कुलुस्सियों 2:12: ''और उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए, और उसी में परमेश्वर की शक्ति पर विश्वास करके, जिस ने उस को मरे हुओं में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठे।''

नोट: जब कि परमेश्वर का वचन साफ़ बताता है कि हम यीशु की मृत्यु की समानता में गाड़े जाते या जुट जाते हैं तो मसीह के कुछ कथित ''अनुयायी'' बपतिस्मा लेकर उसकी बात क्यों नहीं मान लेते? बपतिस्मा डुबकी ही है; क्योंकि केवल डुबकी में ही उसके साथ गाड़े जा या जुट सकते हैं। और केवल डुबकी से ही यीशु की समानता में मृतकों में से जी उठना हो सकता है। ''छिड़काव'' और ''उण्डेलना'' जिसे कुछ लोगों द्वारा बपतिस्मे का विकल्प बना दिया गया है, न केवल यीशु की मृत्यु की ''समानता'' बल्कि उसके जी उठने की समानता को भी नष्ट कर देता है। न तो छिड़काव में और न उण्डेलने से किसी भी प्रकार का गाड़ा जाना होता है; इस कारण छिड़काव या उण्डेलना जिसमें गाड़े जाने का कोई सुझाव नहीं मिलता, यीशु की मृत्यु की ''समानता'' में नहीं हैं। अगर गाड़ा जाना नहीं हुआ तो जी उठना भी नहीं होगा! सो छिड़काव या उण्डेला जाना किसी भी प्रकार से हमें यीशु के जी उठने की ''समानता'' में नहीं लाता है! बपतिस्मे में हम गाड़े जाते हैं (रोमियों 6:4; कुलुस्सियों 2:12)। छिड़काव किए जाने में हम गाड़े नहीं जाते हैं। इसलिए इसका अर्थ यह है कि न तो छिड़काव और न ही उण्डेलने को बपतिस्मा कहा जा सकता है। हम गाड़े बपतिस्मे में जाते हैं। डुबकी में हम गाड़े जाते हैं। इसलिए बपतिस्मा डुबकी ही है।

यह सब इतना साफ़ और स्पष्ट है कि यह सच के सिवाय और कुछ नहीं है। छिड़काव और उण्डेलना स्पष्ट रूप में बपतिस्मा नहीं है तो फिर इन्हें बपतिस्मा बताया किसने? उन्हें परमेश्वर के वचन में नहीं बताया गया था। छिड़काव या उण्डेले जाने का सबसे पुराना

रिकॉर्ड दूसरी सदी का मिलता है जब बाइबल पहले ही पूरी हो चुकी थी और यीशु की बनाई कलीसिया को बने सौ साल हो चुके थे (जिसमें बपतिस्मे के लिए केवल डुबकी का इस्तेमाल होता था)! दूसरी सदी में, लगता है कि किसी को एक उज्ज्वल विचार मिला कि यदि कोई बहुत बीमार हो या मरने के कगार पर हो तो उसके लिए बपतिस्मे के विकल्प के रूप में छिड़काव या उण्डेलना भी ''उतना ही अच्छा'' हो सकता है। न तो छिड़काव और न ही उण्डेला जाना पहले मूल बपतिस्मे की जगह पर दिया गया था; क्योंकि नये नियम का धर्मशास्त्र यूनानी भाषा में लिखा गया था और ''बपतिस्मा'' और ''बपतिस्मा देना'' के लिए यूनानी शब्दों (***baptismus*** और ***baptizo***) का सही सही अनुवाद नहीं हो सकता था कि उसका अर्थ या छिड़काव या उण्डेलना हो। (मूल यूनानी से, आज भी उनका अनुवाद नहीं हो सकता!) बल्कि इन शब्दों का सही सही अनुवाद ''गोता,'' ''डुबोना,'' ''डुबकी मारना,'' ''डुबोकर शुद्ध करना,'' ''जलमग्न करना,'' ''धोने के लिए,'' ''जल से शुद्ध करना,'' ''गोता,'' ''डुबकी,'' ''अभिभूत होना,'' ''रंगने'' के लिए। इस सूची को ध्यान से देखें। आपको कोई शब्द दिखाई देता है जिसमें छिड़काव या उण्डेले जाने का विचार हो?

संसार में कोई प्रामाणिक यूनानी शब्दकोश नहीं है जो बपतिस्मा या बपतिस्मा देने के लिए यूनानी शब्दों का अनुवाद छिड़काव या उण्डेलना बताता हो! संसार के किसी भी विश्वविद्यालय में यूनानी भाषा का कोई विद्वान नहीं है जो ऐसे व्यक्ति की विद्वता को मान्यता दे जो मूल यूनानी नये नियम से इन शब्दों का अर्थ छिड़काव या उण्डेलना बताता हो। तो फिर बपतिस्मे के लिए छिड़काव या उण्डेले जाने से संतुष्ट क्यों हों, जबकि बपतिस्मे के लिए बाइबल के शब्दों का अर्थ छिड़काव या उण्डेलना न तो है और न कभी था)? परमेश्वर ने हमें यीशु के नाम में ''छिड़काव'' करने या पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में ''उण्डेले'' जाने की आज्ञा नहीं दी है। उसने अपने नाम में बपतिस्मा लेने की आज्ञा दी है! यदि कोई और बात ''उतनी ही अच्छी'' है तो बाइबल उसे बताती क्यों नहीं है? न तो नये नियम की शिक्षा और न कभी व्यवहार में छिड़काव या उण्डेलना था। 33 ईस्वी में पिन्तेकुस्त के दिन यीशु द्वारा अपनी कलीसिया स्थापित करने के लगभग 13 सदियों बाद कौंसिल ऑफ़ रेवेना (1311 ईस्वी) में रोमन कैथोलिक चर्च द्वारा ''बपतिस्मे'' को अधिकारिक रूप में छिड़काव या उण्डेलना को मान्यता देने से पूर्व किसी को इसका पता नहीं था। बपतिस्मे के लिए ''छिड़काव'' और ''उण्डेलना'' को मानने वाले साफ़-साफ़ परमेश्वर के वचन के बजाय रोमन कैथोलिक की बेदीनी (धर्म त्याग) को मान रहे हैं। सच यह है कि बपतिस्मा डुबकी ही है और यह आरम्भ से था।

III. बपतिस्मा **कब** लें?

नोट: जिस प्रकार से लोग बपतिस्मा लेने को टाल देते हैं और कुछ आधुनिक प्रचारक लोगों को ''इकट्ठा करते हैं'' ताकि सब को किसी विशेष अवसर पर एक ही बार में बपतिस्मा दिया जाए, कोई सोच सकता है कि इससे कोई खास फर्क नहीं पड़ता कि कोई बपतिस्मा कब लेता है। परन्तु परमेश्वर के वचन को बारीकी से अध्ययन करने पर पता चलता है कि

नये नियम के समय में बपतिस्मे को अत्यधिक महत्व दिया जाता था।

क. पिन्तेकुस्त के दिन मसीही बनने वालों ने बपतिस्मा लेने की देर नहीं की थी।
   1. लोगों की भीड़ ने उस दिन मसीही युग का सबसे पहला सुसमाचार संदेश सुनाते हुए पतरस को सुना था (प्रेरितों 2:14-36)।
   2. ''उनके हृदय छिद'' जाने पर उन्होंने पूछा था कि ''हम क्या करें'' (आयत 37)।
   3. पतरस ने उन्हें बताया था कि क्या करना है (आयत 38)।
      क. उसने समझाया था कि उन्हें मन फिराकर बपतिस्मा क्यों लेना चाहिए (आयतें 38-39)।
      ख. उसने बहुत सी बातों के साथ गवाही दी थी और समझाया (यानी आग्रह किया) था कि अपने आपको बचाओ (आयत 40)।
   4. फिर जिन्होंने ''उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया।''
      क. ''फिर'' कब?
      ख. ''उसी दिन'' (आयत 41)

ख. सामरियों ने देर नहीं की।
   1. फिलिप्पुस उनमें मसीह का प्रचार करने लगा (प्रेरितों 8:5)।
   2. लोगों ने एक चित्त होकर मन लगाया (आयत 6)।
   3. **जब** उन्होंने फिलिप्पुस का **विश्वास किया ...** तो लोग क्या पुरुष क्या स्त्री बपतिस्मा लेने लगे (आयत 12)।

ग. शमौन जादूगर ने देर नहीं की।
   1. शमौन ने स्वयं भी विश्वास किया और बपतिस्मा लिया (आयत 13)।

घ हबशी खोजे ने देर नहीं की।
   1. फिलिप्पुस ने उसे यीशु का सुसमाचार सुनाया (आयत 35)।
   2. ''किसी जल की जगह'' पहुंचने पर खोजे ने बपतिस्मे के लिए कहा (आयत 36)।
   3. फिलिप्पुस ने कहा कि यदि वह विश्वास करता है तो ले सकता है (आयत 37)।
   4. खोजे ने अपने विश्वास का अंगीकार किया (आयत 37)।
   5. उसने रथ खड़ा करने की आज्ञा दी और अपने मार्ग पर जाने से पहले बपतिस्मा लिया (आयतें 38-39)।

नोट: यह आज के लोगों द्वारा बपतिस्मा लिए जाने के ढंग से कितना अलग है!

ङ तरसुसवासी शाऊल ने देर नहीं की!
   1. प्रभु द्वारा भेजा गया प्रचारक (हनन्याह) घर के भीतर गया (प्रेरितों 9:17)।
   2. प्रचारक ने शाऊल को यीशु मसीह के बारे में बताया (प्रेरितों 9:17; 22:14)।
   3. **तुरन्त** शाऊल के साथ तीन बातें हुईं
      क. उसकी आंखों से छिलके से गिरे (प्रेरितों 9:18)।
      ख. वह देखने लगा (प्रेरितों 9:18)

ग. जब हनन्याह ने पूछा, ''अब क्यों देर (यानी प्रतीक्षा) करता है?'' और शाऊल को

आज्ञा दी कि ''उठ, बपतिस्मा ले'' (प्रेरितों 22:16), तो उसने ''उठकर बपतिस्मा लिया'' (9:18)।

नोट: यह सब कब हुआ? **शाऊल** के खाना खाने से भी पहले। क्योंकि चाहे उसने तीन दिन तक कुछ नहीं खाया था (आयत 9) परन्तु वचन बताता है कि उसने बपतिस्मा ले लेने के बाद (आयत 18) भोजन करके बल पाया (आयत 19)।

च. फिलिप्पी दारोगा ने देर नहीं की।

1. पौलुस और सीलास ने उसके घर सब लोगों को प्रभु का वचन सुनाया (प्रेरितों 16:32)।
2. दारोगा पौलुस और सीलास को ''रात को उसी घड़ी ले'' गया।
   क. उसने उनके घाव धोए (आयत 33)।
   ख. उसने बपतिस्मा लिया (आयत 33)
   ग. उसके घर के सब लोगों ने भी बपतिस्मा लिया। बाद में नहीं बल्कि तुरन्त (आयत 33)।

छ. इफिसियों ने देर नहीं की।

1. पौलुस इफिसुस में आया (प्रेरितों 19:1)।
2. वहां उसे ''कुछ चेले'' मिले (आयत 1)।
3. उन्हें पवित्र आत्मा की जानकारी नहीं थी जिस कारण उसने उन से उनके बपतिस्मे के विषय में पूछा।
4. यह जान लेने पर कि उनका बपतिस्मा गलत हुआ था पौलुस ने उन्हें यीशु मसीह के बारे में बताया (आयतें 3-4)।
5. क्या ''यह सुनकर'' उन्होंने देर की? नहीं ''उन्होंने प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा लिया'' (आयत 5)।

नोट: लोगों को जब नये नियम में विश्वासी बनाया गया तो उन्होंने खाना खाने, सोने या टालने के लिए देर नहीं की बल्कि उन्होंने उसी समय बपतिस्मा लिया।

IV. बपतिस्मा **कहां** लें?

नोट: गाड़ा जाना होने के कारण आवश्यक है कि बपतिस्मा लेने के लिए कोई जगह हो।

क. नये नियम का बपतिस्मा दिए जाने के लिए कोई जगह हो जहां पानी होना आवश्यक है।

1. कुरनेलियुस के घर में। पतरस ने पूछा था ''क्या कोई जल को रोक सकता है कि ये बपतिस्मा न पाएं?'' (प्रेरितों 10:47)।

ख. नये नियम का बपतिस्मा दिया जाने के लिए पानी तक आना आवश्यक है।

1. फिलिप्पुस ने खोजे को यीशु का सुसमाचार सुनाया, ''मार्ग में चलते चलते वे किसी जल की जगह पहुंचे'' (प्रेरितों 8:36)।
2. यह सचमुच में पानी था। क्योंकि खोजे के कहा, ''देख यहां जल है अब मुझे

बपतिस्मा लेने में क्या रोक है ?'' (प्रेरितों 8:36)

नये नियम का बपतिस्मा दिए जाने के लिए जल के अन्दर जाना आवश्यक है।

1. ''तब उसने रथ खड़ा करने की आज्ञा दी, और फिलिप्पुस और खोजा दोनों जल में उतर पड़े'' (प्रेरितों 8:38)

घ. नये नियम का बपतिस्मा देने के लिए जल में गाड़ा जाना आवश्यक है।

ङ ''फिलिप्पुस और खोजा दोनों जल में उतर पड, और उसने खोजे को बपतिस्मा दिया'' (प्रेरितों 8:38)

क. अत: उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए (रोमियों 6:4)।

ख. ''उसी के साथ बपतिस्मे में गाड़े गए'' (कुलुस्सियों 2:12)।

ग. नये नियम के बपतिस्मे के लिए जी उठना आवश्यक है।

1. ''क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं तो निश्चय उसके साथ जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे'' (रोमियों 6:5)।
2. ''और उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए और उसी के साथ जी भी उठे (कुलुस्सियों 2:12)।

च. नये नियम के बपतिस्मे के लिए पानी में से बाहर आना आवश्यक है।

1. ''जब वे जल में से निकलकर ऊपर आए'' (प्रेरितों 8:39)।

नोट:छिड़काव और उण्डेलना बपतिस्मे के नये नियम के विवरण से कितने बाहरी हैं! उनमें और बपतिस्मे में पाई जाने वाली एक ही समानता यह है कि दोनों में जल का प्रयोग होता है। कम से कम कुछ हद तक तो वे सही हैं। परन्तु नये नियम के बपतिस्मे के लिए जहां व्यक्ति का पानी तक आना आवश्यक है, वहीं छिड़काव और उण्डेलने में व्यक्ति के पास पानी को लाया जाता है (बिल्कुल उलट)! नये नियम के बपतिस्मे में जहां पानी के अन्दर जाना आवश्यक है, छिड़काव और उण्डेलने में व्यक्ति को पानी के बाहर रहने की अनुमति है (यह भी उलट है)! नये नियम के बपतिस्मे में जहां यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान की समानता में गाड़े जाना और जी उठना दोनों आवश्यक है, छिड़काव और उण्डेलने में न तो गाड़ा जाना है और न जी उठना। तो समानता हुई ही नहीं। अन्त में नये नियम के बपतिस्मे में जहां पानी में से बाहर आना आवश्यक है वहीं छिड़काव और उण्डेलने में व्यक्ति जब पानी में जाता ही नहीं तो पानी में से बाहर कैसे आ सकता है। कोई कैसे कह सकता है कि छिड़काव, उण्डेलना और नये नियम के अनुसार दिया जाने वाला बपतिस्मा, सब एक ही है!

V. बपतिस्मा **क्यों** लें ?

क. उद्धार पाने के लिए बपतिस्मा लें (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38-41; 1 पतरस 3:21)

ख. परमेश्वर के राज्य में प्रवेश के लिए बपतिस्मा (जल और आत्मा से जन्म) लें (यूहन्ना 3:3-5)।

ग. पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लें (प्रेरितों 2:38)

घ. पवित्र आत्मा पाने के लिए बपतिस्मा लें (प्रेरितों 2:38)

ङ अपने मार्ग पर आनन्द करते हुए जाने के लिए बपतिस्मा लें (प्रेरितों 8:38-41; 16:34)।

च. अपने पापों को धो डालने के लिए बपतिस्मा लें (आयत 16)।

छ. मसीह में आने के लिए बपतिस्मा लें (रोमियों 6:3; गलातियों 3:26-27)

VI. बपतिस्मा **कैसे** लें?

नया नियम नियमों की पुस्तक है। परमेश्वर जो कुछ चाहता है उसे इन सब बातों में साफ़ साफ़ बता दिया गया है। परन्तु किसी भी मामले में ऐसा कोई विशेष तरीका नहीं ठहराया गया जो परमेश्वर ने करने के लिए कहा हो। जब तक हम वह सब मानते हैं जिसकी परमेश्वर ने आज्ञा दी है, तरीका चुनने को वह हमारी इच्छा पर छोड़ देता है, केवल वे व्यवस्थित ढंग से और सलीके से होने चाहिए (1 कुरिन्थियों 14:40)।

बपतिस्मा कौन ले सकता है? कोई भी पश्चात्तापी विश्वासी, मसीह में अपने विश्वास का अंगीकार करके। बपतिस्मा क्या है? यह ''जीवन के नयेपन में चलने'' के लिए जी उठकर पश्चात्तापी विश्वासी के पानी के अन्दर मसीह में डुबकी लेना है। बपतिस्मा कब लें? उसी दिन जब व्यक्ति प्रभु के वचन को ''आनन्द से ग्रहण करता है,'' इस पर विश्वास करता है, मन फिराता है, अपने विश्वास का अंगीकार करता है, तुरन्त, उसी समय। कहां? पानी में। क्यों? उद्धार पाने के लिए, परमेश्वर के राज्य में आने के लिए, पापों की क्षमा पाने के लिए, पवित्र आत्मा पाने के लिए, अपने मार्ग पर आनन्द करते हुए जाने के लिए, अपने पापों को धो डालने के लिए और मसीह में आने के लिए। कैसे? सुव्यवस्थित ढंग से और सलीके से।

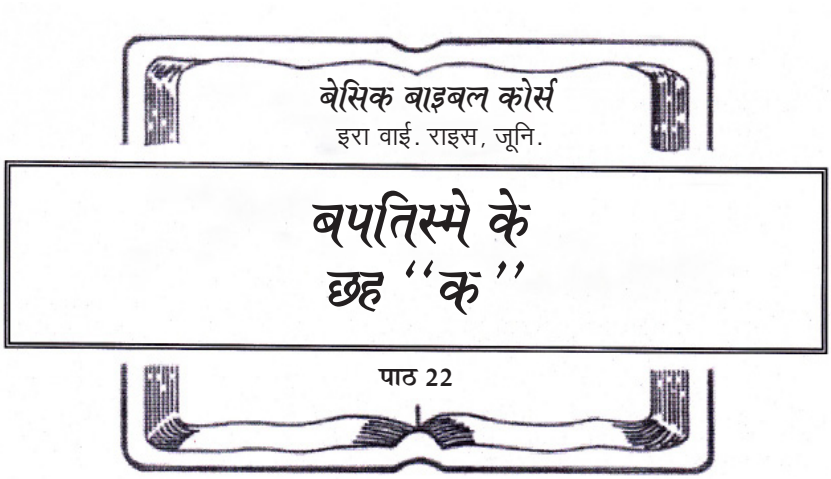

पाठ 22 के प्रश्न

Registration No.....

Grade .....

Name.....

Address.....

.....

Pin.....Mobile No.....

e-mail.....

(कृपया पता अंग्रेजी के बड़े अक्षरों में ही लिखें।)

1. किसी भी बात से जुड़े तथ्य की छह बातें कौन-कौन सी हैं ?

   1. ..... 2. .....

   3. ..... 4. .....

   5. ..... 6. .....

2. परमेश्वर का वचन क्या बताता है कि बपतिस्मा किस उम्र में लिया जा सकता है ? .....

   .....

   .....

3. फिलिप्पुस ने हब्शी खोजे को क्या कहा कि बपतिस्मा लेने से पहले उसे करना आवश्यक है ? .....

   .....

4. पिन्तेकुस्त वाले दिन मनपरिवर्तन करने वालों से पतरस ने बपतिस्मा लेने से पहले और क्या करने को कहा था ? .....

   .....

5. क्या नया नियम बपतिस्मा लेने से पहले विश्वास करने को कहता है ? .....

   मन फिराने को ? .....क्या कोई बच्चा मसीह में विश्वास कर सकता है .....

   क्या कोई बच्चा पापों से मन फिरा सकता है ? ..... यदि नहीं तो क्या वचन के अनुसार किसी बच्चे को बपतिस्मा दिया जा सकता है ? .....

   .....

6. हमें कैसे मालूम कि बच्चे सुरक्षित हैं (यानी उन्हें उद्धार पाने की आवश्यकता नहीं है) ?

   .....

   .....

7. मसीही काल के दौरान कितने बपतिस्मों की बात पढ़ने को मिलती है ? .....

   कौन-कौन से : .....

   .....

8. अब कितने बपतिस्मे हैं ? ..... कौन सा ? .....

   .....

9. अब जो बपतिस्मा प्रभावी है उसे कौन देता है, परमेश्वर या फिर मनुष्य ? .....

   .....

   .....

10. रोमियों 6:4 और कुलुस्सियों 2:12 में बताए अनुसार बपतिस्मे में किए जाने वाले काम की परिभाषा दें .....

    .....

    .....

11. क्या छिड़काव किए जाने की प्रक्रिया में किसी प्रकार का गाड़ा जाना होता है ? ..... उण्डेले जाने की प्रक्रिया में होता है ? ..... यदि नहीं तो क्या जल का छिड़काव या उण्डेला जाना बपतिस्मे के लिए नये नियम की शिक्षा के ढंग हैं ? .....

    .....

    .....

12. क्या जल का छिड़काव किए जाने या जल उण्डेले जाने में यीशु की मृत्यु और जी उठने की कोई ''समानता'' है ? ..... यदि हां तो समझाएं कि किस प्रकार

    .....

    .....

13. यदि जल का छिड़काव किए जाने या उण्डेले जाने में यीशु की मृत्यु और जी उठने की कोई ''समानता'' नहीं है तो क्या उन्हें नये नियम में बताया गया बपतिस्मा कहा जा सकता है .... यदि आपका उत्तर हां है तो कृपया समझाएं कि यह कैसे हो सकता है .....

.....

.....

14. रोमियों 6:4 और कुलुस्सियों 2:12 बताते हैं कि हम बपतिस्मे में और बपतिस्मे के द्वारा गाड़े जाते हैं, तो इस विवरण के साथ कौन सी क्रिया मेल खाती है। छिड़काव? उण्डेलना? या फिर डुबकी? .....

.....

.....

15. यदि न तो जल का छिड़काव और न उण्डेलना बपतिस्मे के नये नियम के विवरण से मेल खाता है तो क्या वचन के अनुसार उन्हें बपतिस्मा कहना सही है? .....

.....

.....

16. यदि न तो जल का छिड़काव और न उण्डेलना वास्तव में बपतिस्मा है तो किसी के उन्हें ''बपतिस्मा'' कहने से क्या वे सचमुच में बपतिस्मा होंगे? .....

.....

.....

17. यदि किसी ने नये नियम की शिक्षा के अनुसार कभी बपतिस्मा नहीं लिया है और उसे पता चलता है कि नया नियम बपतिस्मे के बारे में क्या बताता है और वह इस पर विश्वास करता

है तो उसे बपतिस्मा लेने के लिए कितनी देर लगानी चाहिए? .....

.....

18. व्यक्ति को बपतिस्मा कौन सी उम्र में दिया जाना चाहिए, शर्त यह है कि वह नये नियम और नमूने का पालन कर रहा हो? .....

.....

19. नये नियम के अनुसार बपतिस्मा कहां (किस चीज़ में) लिया जाना चाहिए? ..... क्या व्यक्ति के ऊपर उस चीज़ को लगाना या छिड़काव करना चाहिए या व्यक्ति को उस चीज़ के अन्दर जाना चाहिए? .....

.....

20. नये नियम के अनुसार, बपतिस्मा लेना क्यों चाहिए? .....

.....

.....

आपका कोई प्रश्न है तो उसे यहां लिखें .....

.....

.....

.....

.....

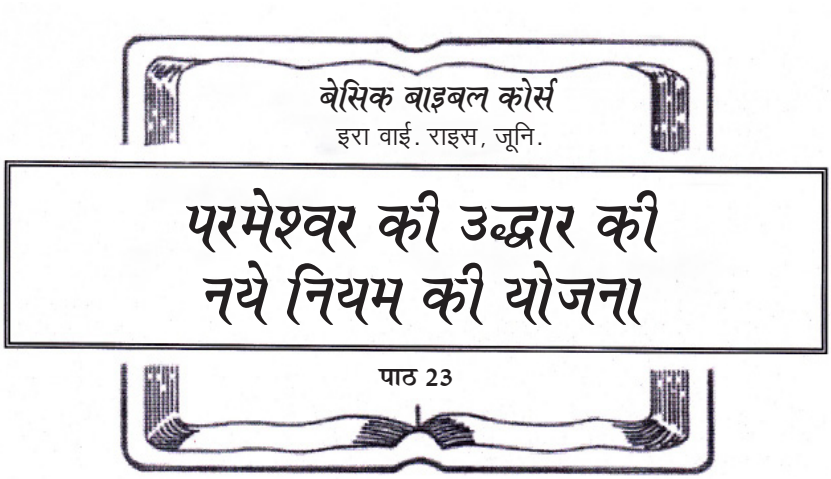

परिचय: धीरे धीरे और जानबूझकर अध्ययन के इस कोर्स में परमेश्वर के वचन बाइबल के प्रेमी सीखने वालों के लिए थोड़ा थोड़ा करके परमेश्वर की सनातन मंशा को प्रकट किया गया है। यदि आप उन कुछ चुनिंदा लोगों में से हैं, जिनकी ईश्वरीय प्रकाशन में दिलचस्पी ने बड़े विश्वास से आपको यहां तक पहुंचाया है, तो अब आपको कुछ निर्णय लेने आरम्भ करने को तैयार हो जाना चाहिए, जो इस संसार में आपके शेष धार्मिक जीवन को प्रभावित करेंगे।

सचमुच हम ने अब तक कितना लम्बा अध्ययन कर लिया है; यह समझाने के बाद कि सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में कैसे लाना है और सब वस्तुओं का आरम्भ कैसे हुआ, हम ने बाइबल में पाए जाने वाले तीन युगों अर्थात पुरखाओं, यहूदी और मसीही युग पर बड़ी सावधानी से ध्यान दिया था। हमने पाया कि परमेश्वर चाहे स्वयं तो नहीं बदलता पर उसने एक युग से अगले युग में अपनी इच्छा को बदल दिया है जिस कारण जो बात मूसा से पहले पुरखाओं पर लागू होती थी वह सीनै पहाड़ से परमेश्वर की दस आज्ञाओं पर मिलने के बाद यहूदी जाति पर लागू नहीं होती थी। इसी प्रकार से परमेश्वर की पुराने नियम (दस आज्ञाओं) वाली (व्यवस्था को) जो मूसा से लेकर मसीह तक पन्द्रह सौ साल तक यहूदी जाति जो चलाती रही, उसे प्रतीकात्मक अर्थ में उसे ''क्रूस पर कीलों से जड़ दिया गया।'' इस प्रकार से वह यीशु मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने के बाद आने वाले पिन्तेकुस्त के दिन नये नियम के लागू हो जाने के बाद मसीही व्यक्ति पर लागू नहीं होती।

परमेश्वर ने नये नियम को पुराने से मिलाने और मसीही विवेक पर विरोधाभास पूर्ण दोनों को लागू करने के बजाय हम ने निर्णायक रूप में यह साबित किया कि मसीही लोग (पिन्तेकुस्त के दिन के बाद से) पुराने नियम के नहीं बल्कि नये नियम के अधीन हैं। इस प्रकार ऐसी कोई भी आज्ञा नहीं है जो परमेश्वर ने मूसा के द्वारा यहूदियों पर लागू की (दस आज्ञाओं सहित) जो नये नियम के युग में लागू होती हों। यह समझाने के लिए कि इसका क्या प्रभाव है, आइए क्रूस पर मन फिराने वाले डाकू पर विचार करते हैं। वह किस युग में रहता था? यहूदी युग में। नया नियम

53 दिनों के बाद तक लागू नहीं हुआ था, इसका अर्थ यह है कि यह डाकू यहूदी युग में जीया और एक यहूदी के रूप में मरा। वह मसीही नहीं था क्योंकि मसीही युग का अभी आरम्भ भी नहीं हुआ था! एक यहूदी के रूप में वह मूसा की व्यवस्था (यानी दस आज्ञाओं वाली व्यवस्था) के अधीन था। न तो सीनै से मिलने वाली मूसा की व्यवस्था और न ही बाद में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के प्रचार में यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा लेने वाली की शर्त से। इसे अलावा पृथ्वी पर रहते हुए यीशु के पास आप क्षमा करने अधिकार था (मत्ती 9:6)। इस कारण यदि उसे लगा कि इस डाकू को यह कहना सही है कि ''आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा,'' तो बेशक यह उसके हाथ में था (लूका 23:43)। परन्तु जब हम क्रूस के दूसरी ओर उस डाकू के पास आते हैं तो पता चलता है कि दस आज्ञाओं वाली व्यवस्था प्रभावी नहीं रही और प्रेरितों 2 अध्याय में पिन्तेकुस्त के दिन के बाद से हर किसी के लिए अब यीशु मसीह में विश्वास लाकर मन फिराना ''अपने अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा'' लेना आवश्यक है (प्रेरितों 2:38)। डाकू के लिए उद्धार पाने के लिए यीशु के नाम में बपतिस्मा लेना आवश्यक नहीं था क्योंकि वह यहूदी धर्म और युग में जीया और मरा था, जिन्हें यह बपतिस्मा अभी नहीं दिया गया था। परन्तु डाकू के और यीशु मसीह के मरने के तीन दिनों बाद यीशु मुर्दों में से जी उठा। पृथ्वी पर रहने के चालीस दिनों के दौरान और डाकू की मृत्यु के बाद ही यीशु ने सबसे पहले ग्रेट कमीशन की शर्तों की घोषणा की थी। इसी कमीशन में यीशु ने सबसे पहले ''पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में बपतिस्मा'' दिए जाने की घोषणा की थी (मत्ती 28:19)। इस कमीशन के मरकुस के विवरण में वह बताता है कि ''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा'' (मरकुस 16:16)। इसी कमीशन से हमें यह पता चलता है कि एक बार यह लागू हो जाने पर यह सारे अधिकार से और आने वाले सारे समय के लिए यानी ''जगत के अन्त तक'' सब जातियों में, सारे संसार में सब लोगों के ऊपर लागू होना था। इसका अर्थ यह हुआ कि प्रेरितों 2 अध्याय वाले पिन्तेकुस्त के पहले जो लोग जीए और मर गए उन्हें यीशु के नाम में बपतिस्मा लेने की कोई आवश्यकता नहीं थी। परन्तु उस दिन के बाद से जो भी लोग हुए हैं और मरे हैं (या अब जीवित हैं) उनमें से ''हर किसी'' के लिए न केवल विश्वास करके मन फिराना बल्कि ''पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा'' लेना भी आवश्यक है। इसका अर्थ यह हुआ कि आज लोगों का उद्धार क्रूस पर मरने वाले डाकू की तरह नहीं हो सकता। हम एक अलग नियम के अधीन हैं जिसे नया नियम कहते हैं। तो आइए देखें कि हमें क्या करना है:

I. **सबसे पहले** तो हमें यीशु के सुसमाचार को **सुनना** आवश्यक है।

क. मसीह के सुसमाचार के बिना हमारा उद्धार नहीं हो सकता। जैसा कि 1 कुरिन्थियों 15:1-4 में पौलुस ने लिखा है, ''हे भाइयो, मैं तुम्हें वही सुसमाचार बताता हूं जो पहिले सुना चुका हूं, जिसे तुम ने अंगीकार भी किया था और जिस में तुम स्थिर भी हो। उसी के द्वारा तुम्हारा उद्धार भी होता है, यदि उस सुसमाचार को जो मैं ने तुम्हें सुनाया था स्मरण रखते हो; नहीं तो तुम्हारा विश्वास करना व्यर्थ हुआ। इसी कारण मैं ने सब से पहिले तुम्हें वही बात पहुंचा दी, जो मुझे पहुंची थी, कि पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिए मर गया। और गाड़ा गया; और पवित्र शास्त्र

के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा।''

ख. यीशु ने आज्ञा दी कि उद्धार के लिए सुसमाचार का प्रचार किया जाए। ''और उसने उनसे कहा, 'तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा' '' (मरकुस 16:15-16)।

''क्योंकि जब परमेश्वर के ज्ञान के अनुसार संसार ने ज्ञान से परमेश्वर को न जाना तो परमेश्वर को यह अच्छा लगा, कि इस प्रचार की मूर्खता के द्वारा विश्वास करनेवालों को उद्धार दे'' (1 कुरिन्थियों 1:21)।

''कि याफा में मनुष्य भेजकर शमौन को जो पतरस कहलाता है, बुलवा ले। वह तुम से ऐसी बातें कहेगा, जिनके द्वारा तू और तेरा सारा घराना उद्धार पाएगा'' (प्रेरितों 11:13-14)।

ग. प्रचार किए गए वचन को सुनना आवश्यक है।

''क्योंकि जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा। फिर जिस पर उन्होंने विश्वास नहीं किया, वे उसका नाम क्योंकर लें? और जिस की नहीं सुनी उस पर क्योंकर विश्वास करें? और प्रचारक बिना क्योंकर सुनें? और यदि भेजे न जाएं, तो क्योंकर प्रचार करें?'' (रोमियों 10:13-15)।

''जैसा कि मूसा ने कहा, प्रभु परमेश्वर तुम्हारे भाइयों में सें तुम्हारे लिए मुझ सा एक भविष्यवक्ता उठाएगा, जो कुछ वह तुम से कहे, उसकी सुनना। परन्तु प्रत्येक मनुष्य जो उस भविष्यवक्ता की न सुने, लोगों में से नाश किया जाएगा'' (प्रेरितों 3:22-23)।

II. **दूसरा** हमें यीशु में **विश्वास** लाना आवश्यक है।

नोट : यीशु मसीह में ''विश्वास'' लाना और उस में ''विश्वासी'' होना दोनों एक ही बात है। अपने जी उठने के बाद यीशु ने जब थोमा को उसे जांचने को कहा था तो उसने उसे आज्ञा दी कि ''अविश्वासी नहीं परन्तु विश्वासी हो'' (यूहन्ना 20:27)। लोग विश्वास करने और विश्वासी होने में अन्तर करने का प्रयास करते हैं, जबकि इनमें कोई अन्तर नहीं है।

क. बिना विश्वासी हुए (या विश्वास के) हम परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते।

''और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है, क्योंकि परमेश्वर के पास आनेवाले को विश्वास करना चाहिए, कि वह है; और अपने खोजने वालों को प्रतिफल देता है'' (इब्रानियों 11:6)।

ख. विश्वास क्या है?

''अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है'' (इब्रानियों 11:1)। अन्य शब्दों में हमें यकीन करना आवश्यक है कि सुसमाचार यीशु मसीह के विषय में जो कुछ कहता है वह सत्य है।

ग. विश्वास कैसे आता है?

''फिर जिस पर उन्होंने विश्वास नहीं किया, वे उसका नाम क्योंकर लें? और जिस की नहीं सुनी उस पर क्योंकर विश्वास करें?'' (रोमियों 10:14)।

''सो विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है'' (रोमियों 10:17)।

घ. क्या उद्धार के लिए विश्वास का होना आवश्यक है?

''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा'' (मरकुस 16:16)।

''क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यही तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है'' (इफिसियों 2:8)।

ङ. क्या मसीही लोगों के लिए विश्वास से चलना आवश्यक है?

''क्योंकि हम रूप को देखकर नहीं, पर विश्वास से चलते हैं''(2 कुरिन्थियों 5:7)।

च. यदि हम संदेह करें?

''परन्तु जो संदेह कर के खाता है, वह दण्ड के योग्य ठहर चुका; क्योंकि वह निश्चय धारणा से नहीं खाता, और जो कुछ विश्वास से नहीं, वह पाप है'' (रोमियों 14:23)।

''परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा; '' (मरकुस 16:16)।

III. **तीसरा** हमें अपने पापों से **मन फिराना** आवश्यक है।

क. सब जगह सब लोगों को मन फिरान की आज्ञा दी गई है।

ख. ''परमेश्वर ... अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है'' (प्रेरितों 17:30)।

ग. मन फिराना ''पापों की क्षमा के लिए'' यानी उद्धार के लिए है।

घ. ''मन फिराओ और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले'' (प्रेरितों 2:38)।

ङ मन फिराना मनपरिवर्तन के लिए आवश्यक है, ताकि पाप मिटाए जाएं।

च. ''इसलिए मन फिराओ और लौट आओ कि तुम्हारे पाप मिटाए जाएं'' (प्रेरितों 3:19)।

छ. यदि हम मन न फिराएं तो क्या होगा?

ज. ''मैं तुम से कहता हूं कि नहीं; परन्तु यदि तुम मन न फिराओगे तो तुम सब भी इसी रीति से नष्ट होगे'' (लूका 13:3)।

VI. **चौथा** यीशु मसीह में हमें **अपने विश्वास का अंगीकार** करना आवश्यक है।

क. अंगीकार उद्धार के लिए होता है।

ख. ''परन्तु क्या कहती है? यह, कि वचन तेरे निकट है, तेरे मुंह में और तेरे मन में है; यह वही विश्वास का वचन है, जो हम प्रचार करते हैं। कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा। क्योंकि धार्मिकता के लिए मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिए मुंह से अंगीकार किया जाता है'' (रोमियों 10:8-10)।

ग. बाहरी पापी बपतिस्मा लेने से पहले मसीह में विश्वास का अंगीकार करते हैं।

घ. ''तब फिलिप्पुस ने अपना मुंह खोला, और इसी शास्त्र से आरम्भ करके उसे यीशु का

सुसमाचार सुनाया। मार्ग में चलते-चलते वे किसी जल की जगह पहुंचे, तब खोजे ने कहा, देख यहां जल है, अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है। फिलिप्पुस ने कहा, यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो हो सकता है: उस ने उत्तर दिया मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है। तब उस ने रथ खड़ा करने की आज्ञा दी, और फिलिप्पुस और खोजा दोनों जल में उतर पड़े, और उस ने उसे बपतिस्मा दिया'' (प्रेरितों 8:35-38)।

ङ यदि हम मसीह का अंगीकार न करें तो क्या होगा?

च. ''जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे मान लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने मान लूंगा। पर जो कोई मनुष्यों के सामने मेरा इनकार करेगा, उससे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने इनकार करूंगा'' (मत्ती 10:32-33; मरकुस 8:38)।

V. **पांचवां,** हमें मसीह में **बपतिस्मा** लेना आवश्यक है।

क. उद्धार मसीह में है (2 तीमुथियुस 2:10)।

1. हम मसीह में बपतिस्मा लेते हैं (रोमियों 6:3; गलातियों 3:27)।

नोट : उद्धार मसीह में है और हम मसीह में बपतिसमा लेते हैं इसलिए इसका अर्थ यह हुआ कि हम उद्धार में बपतिस्मा लेते हैं!

ख. बपतिस्मा उद्धार पाने के लिए है (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:40-41; 1 पतरस 3:21)।

ग. बपतिस्मा पापों की क्षमा के लिए है (प्रेरितों 2:38)।

घ. बपतिस्मा पवित्र आत्मा पाने के लिए है (प्रेरितों 2:38)।

ङ बपतिस्मा आनन्द करने के लिए है (प्रेरितों 8:38-39; 16:34)।

च. बपतिस्मा पाप धोने के लिए है (प्रेरितों 22:16)।

छ. यदि हम बपतिस्मा न लें तो कया होगा?

''यीशु ने उत्तर दिया, मैं तुझ से सच सच कहता हं कि जब तक कोई मुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता'' यानी वह उद्धार नहीं पा सकता।

सारांश: कई कथित ''मसीही'' सम्प्रदायों में उद्धार के लिए नये नियम की ऊपर बताई गई योजना को ''आवश्यक'' बताना और कुछ बातों को ''अनावश्यक'' बताना आम बात है। परमेश्वर का वचन ऐसा कोई भिन्न भेद नहीं करता। यीशु ने सब बातें बताई हैं इसलिए हम भी सब बातों का प्रचार करें (और उन्हें मानें।)

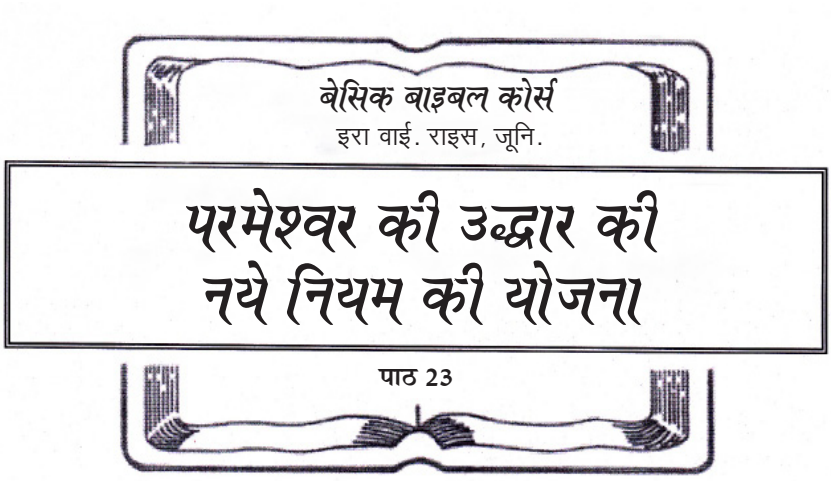

पाठ 23 के प्रश्न

Registration No.....

Grade .....

Name.....

Address.....

.....

Pin.....Mobile No.....

e-mail.....

(कृपया पता अंग्रेजी के बड़े अक्षरों में ही लिखें।)

1. बाइबल में धर्म के कितने काल मिलते हैं ? .....

2. क्या **एक** धार्मिक काल में बताई परमेश्वर की शर्तें किसी **दूसरे** काल में भी लागू होती हैं ?

.....

3. क्रूस पर मरने वाला पश्चात्तापी डाकू किस धार्मिक काल में रहा और मरा ? .....

4. क्या परमेश्वर ने **मसीही** काल की तरह ही **यहूदी** काल में भी वही शर्तें रखी थीं।

.....

5. यदि नहीं, तो उन बातों को जो परमेश्वर ने उद्धार के लिए **मसीही** काल में रखी हैं उनसे मिलाना सही होगा जो **यहूदी** काल के अधीन कलवरी पर मरने वाले डाकू के लिए आवश्यक थीं, यीशु ने कीं (या नहीं)। .....

.....

6. ने ग्रेट कमीशन की शर्तों की घोषणा डाकू के मरने से **पहले** की थीं या **बाद** में ?

.....

7. डाकू के मरने के कितनी देर बाद सबसे पहले यीशु के नाम में प्रचार किया गया ?

.....

.....

8. यदि डाकू के मरने के **बाद,** यीशु ने सब लोगों के लिए पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मे की शर्त बाद में रखी तो क्या इस शर्त में इस सवाल का कोई मतलब है कि डाकू का बपतिस्मा हुआ **था** या **नहीं** ? .....यदि आप कहते हैं, ''हां,'' तो समझाएं कि कैसे।

.....

.....

.....

9. क्या यीशु के क्रूस पर अपनी मृत्यु से पहले पृथ्वी पर रहते समय **नया नियम** प्रभावी था?

.....

10. यीशु ने **नये नियम** के अधीन उद्धार की अपनी शर्तों की घोषणा किस प्रसिद्ध घोषणा मे की।

.....

11. वे **पांच बातें** कौन-सी हैं जो नये नियम की शिक्षा के अनुसार उद्धार के लिए परमेश्वर की शर्त हैं? .....

.....

12. क्या ''सुसमचार'' का सम्बन्ध किसी भी प्रकार से हमारे उद्धार से है। .....

.....

13. हमारे उद्धार के लिए सुसमाचार का सुनाया जाना आवश्यक है या अनावश्यक?

.....

14. जब परमेश्वर का वचन (सुसमाचार) सुनाया जाता है तो हमें अपने उद्धार के लिए सबसे पहला क्या काम करना आवश्यक है?.....

.....

15. यदि हम सुन नहीं पाते या सुनने से इनकार करते हैं तो?

.....

.....

16. उद्धार के लिए हमें **दूसरी** कौन सी बात **करनी** आवश्यक है?

.....

.....

17. क्या विश्वास करना और विश्वासी होना दोनों **एक ही बात** है या **अलग अलग बातें** हैं?

.....

18. क्या हम **बिना विश्वास** के परमेश्वर के पास आ सकते हैं ? .....

19. यदि हम यीशु मसीह में विश्वास न करें ? .....

.....

20. **मन फिराने** की आज्ञा किन-किन लोगों को दी जाती है ? .....

.....

21. क्या हम बिना **मन फिराए** उद्धार पा सकते हैं ? .....

22. **अंगीकार** कैसे किया जाता है ? .....

.....

23. उद्धार पाने के लिए अंगीकार करना **आवश्यक** है या **अनावश्यक** ? .....

24. 2 तीमुथियुस 2:10 उद्धार को कहां बताता है ? .....

.....

25. क्या उद्धार के लिए बपतिस्मा आवश्यक है ? यदि नहीं तो समझाएं कि नया नियम बपतिस्मा और उद्धार को आपस में जोड़ता क्यों है ? .....

.....

.....

आपका कोई प्रश्न है तो उसे यहां लिखें या अलग पेपर पर भी लिख सकते हैं .....

.....

.....

.....

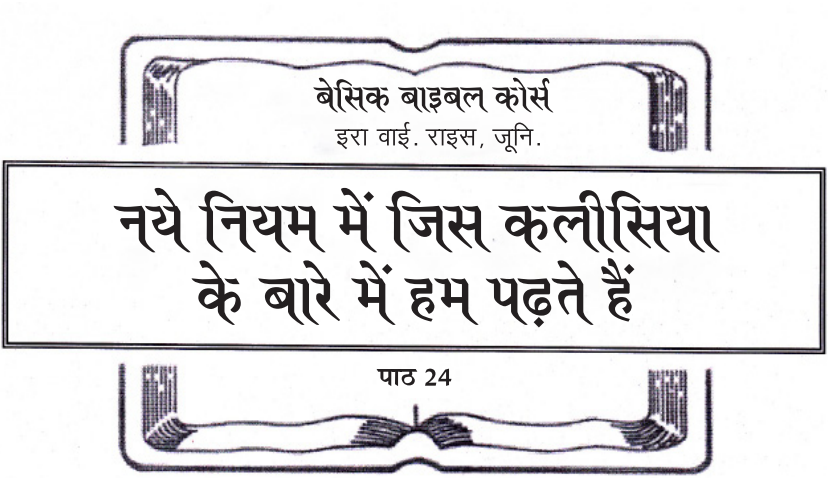

परिचय: जिस दिन नये नियम की परमेश्वर की उद्धार की योजना लागू हुई उस दिन इसे मान लेने वालों को किसी में "मिलाया गया" था। आपको याद होगा कि यह प्रेरितों 2 अध्याय में "पिन्तेकुस्त के दिन" हुआ था। ग्रेट कमीशन अभी कुछ ही दिन पहले दिया गया था। प्रेरित, जैसा कि उन्हें आज्ञा दी गई थी कि जब तक उन्हें "ऊपर से सामर्थ" न मिल जाए तब तक यरूशलेम में ठहरे रहें। जब पिन्तेकुस्त का दिन आ गया, तो सुबह के लगभग 10 बजे के करीब, परमेश्वर ने इन प्रेरितों को पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देकर उन्हें अन्यभाषाएं बोलने के योग्य बनाया जो उन्होंने सीखी नहीं थीं। "ऊपर से सामर्थ" का यह प्रदर्शन इतना शक्तिशाली था कि यह देखने के लिए कि क्या हो रहा है लोगों की एक बड़ी भीड़ जमा हो गई। अन्य ग्यारहों के साथ खड़ा होते हुए प्रेरित पतरस ने नये नियम के युग का परिचय देते हुए पहला सुसमाचार संदेश सुनाया। उसने आत्मा के परमेश्वर की ओर से ज़बर्दस्त बहाए जाने को ही नहीं बताया बल्कि भीड़ के लोगों को इतने लाजवाब ढंग से समझाया कि यीशु ही "प्रभु भी और मसीह भी" है कि उनके "हृदय छिद गए" (यानी उन्होंने विश्वास किया) और वे पतरस तथा अन्य प्रेरितों से पूछने लगे, "हे भाइयो, हम क्या करें?"

पतरस ने अभी अभी बने इन विश्वासियों को उत्तर देने में कोई हिचक नहीं की। उस ने उन से कहा, "मन फिराओ और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।" इसके बाद उसने और भी बातों के साथ उन्हें समझाया और जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिसमा लिया; और उसी दिन लगभग तीन हज़ार जन उनमें मिल गए (प्रेरितों 2:41)। वे "किसमें मिल गए?" प्रेरितों में, हां; परन्तु और किसमें? आगे आयत 47 में पढ़ें, "और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उन (यानी कलीसिया में; देखें KJV) में मिला देता था।" सो हम निष्कर्ष निकालते हैं कि जो लोग नये नियम की परमेश्वर की योजना की आज्ञा मानते थे, जिसका अध्ययन हम ने पिछले पाठ में किया था, वे केवल प्रेरितों में ही नहीं "मिलाए" जाते थे बल्कि कलीसिया में

भी मिलाए जाते थे।

I. ''कलीसिया'' दृढ़ता से धर्म की नये नियम की अवधारणा है

क. ''कलीसिया'' (चर्च) शब्द का अनुवाद यूनानी भाषा के शब्द एकलेसिया से किया गया है, जिसका अर्थ है, बुलाए हुए लोग।'' इस अर्थ में कि इस्राएली लोग मिस्र से बुलाए गए थे, नया नियम (बेशक पुराना नहीं) उन्हें जंगल की कलीसिया का नाम देता है।''

ख. इस शब्द का इस्तेमाल साधारण है, और किसी भी प्रकार से इसका अर्थ वह संस्थान नहीं है जो नये नियम का है, जिसे ''कलीसिया'' भी कहा जाता है।
नये नियम में आकर हम यीशु की प्रतिज्ञा (मत्ती 16:18) में पढ़ते हैं, ''मैं अपनी कलीसिया [चर्च यानी एकलेसिया] बनाऊंगा।''

1. यह तथ्य कि उसने क्रिया शब्द ''बनाऊंगा'' इस्तेमाल किया, साबित करता है कि उस समय तक उसने अभी कलीसिया बनाई नहहीं थे।
2. इस्राएली लोग बहुत पहले जंगल में से निकल आए थे।
3. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की मृत्यु हो चुकी थी, फिर भी यीशु ने कहा, ''मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा'' यानी जिस कलीसिया का यीशु ने बनाने की बात की थी वह मत्ती 16 के अध्याय में भविष्य मे होने वाली थी न कि उसे (1) जंगल में या (2) यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने पहले से बना दिया था (देखें मत्ती 14)।

ग. कलीसिया यानी चर्च का अर्थ है, ''बुलाए हुए लोग'' है तो फिर देह के अंग ''बुलाए हुए'' कैसे हैं?

(1) क्योंकि ''सुसमाचार'' इसलिए दिया गया था (2 थिस्सलुनीकियों 2:13-14 पढ़ें)।
मसीही ''भाइयों'' को ''उद्धार'' के लिए चुना गया है (आयत13)।

(2) परमेश्वर ने उन्हें ''सुसमाचार'' के द्वारा ''बुलाया'' है (आयत14)।

घ. सुसमाचार की पुकार को हर कोई नहीं मानता है।

1. ''क्योंकि बुलाए हुए तो बहुत हैं परन्तु चुने हुए थोड़े हैं'' (22:14)।
जो लोग सुसमाचार को मानते हैं वे ''बुलाए हुए'' हैं।
1. ''क्रूस पर चढ़ाए मसीह'' का प्रचार उनके लिए ''जो बुलाए हुए हैं'' परमेश्वर की सामर्थ और ज्ञान है (1 कुरिन्थियों 1:24)।
2. परन्तु ''न शरीर के अनुसार बहुत ज्ञानवान, और न बहुत सामर्थी, और न बहुत कुलीन बुलाए गए'' हैं (1 कुरिन्थियों 1:26)।

ङ. यह बुलाया जाना परमेश्वर की मंशा के अनुसार है।

1. ''उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए'' (रोमियों 8:28)।
2. ''उद्धार किया और पवित्र बुलाहट से बुलाया, ... उसके उद्देश्य और अनुग्रह के अनुसार'' (1 तीमुथियुस 1:9)।

यदि परमेश्वर की एकलेसिया या चर्च उसके उद्देश्य के अनुसार ''बुलाए'' हुए लोग हैं

तो फिर उसका उद्देश्य क्या है? क्या यह उद्देश्य नया नियम नहीं है? पिछले पाठों में हम ने जो कुछ भी सीखा है वह हमें बेशक इसी निष्कर्ष पर लाएगा। तो फिर यदि नया नियम परमेश्वर के "उद्देश्य" की घोषणा है और हमें उसके उद्देश्य के अनुसार "बुलाया गया" है तो इसका अर्थ यह हुआ कि हमें नये नियम की शिक्षा के अनुसार और उसी के द्वारा बुलाया जाता है। हमें "उद्धार" के निमित "बुलाया" जाता है, तो उद्धार के लिए नये नियम की शिक्षा क्या है? यीशु उन सब के लिए जो उसकी "आज्ञा मानते हैं" जो उद्धार का कर्त्ता है (इब्रानियों 5:9)। हम "आज्ञाओं को" मानते हैं, तो फिर नये नियम यानी परमेश्वर के नियम के अनुसार उद्धार के लिए यीशु ने क्या आज्ञा दी है? कि हम सुसमाचार को सुनें, यीशु मसीह में विश्वास लाएं, अपने पापों से मन फिराएं, मनुष्यों के सामने मसीह का अंगीकार करें और मसीह में बपतिस्मा लें। जो लोग ऐसा करते हैं वे "बुलाए हुए" और "उद्धार पाए हुए" हैं।

च. "बुलाए हुए" लोग धन्य हैं

1. सब बातें मिलकर उनकी भलाई के लिए काम करती हैं (रोमियों 8:28)।
2. "बुलाए हुए" लोग धर्मी ठहराए जाते हैं (रोमियों 8:30)।
3. यह "बुलाया जाना" उद्धार के लिए है (2 थिस्सलुनीकियों 2:13-14)।
4. "उद्धार पाए हुए" लोगों को प्रभु द्वारा प्रतिदिन कलीसिया में मिला लिया जाता है (प्रेरितों 2:47)।

नोट: इस प्रकार हम परमेश्वर के "बुलाए हुए" होने और उसकी "कलीसिया" में "मिलाए" जाने के बीच सीधा सम्बन्ध देखते हैं। याद रखें कि "कलीसिया" (एकलेसिया) या चर्च का अर्थ "बुलाए हुए लोग" है। और जब परमेश्वर अपने नये नियम अर्थात सुसमाचार के प्रचार के द्वारा लोगों को बुलाता है तो वह उन्हें किस में "बुलाता" है? अपनी कलीसिया (एकलीसिया) यानी चर्च में, जो कि "बुलाए हुए" लोगों की देह है।

चर्चा: आज जब लोग अपने "मसीही" होने की बात पर विचार करते हैं तो वे किसी साम्प्रदाय या डिनोमिनेशन की परम्पराओं के अनुसार जो उन्होंने सीखी होती हैं सोचते हैं। कोई भी डिनोमिनेशन या साम्प्रदायिक कलीसिया "मसीह की देह" होने का दावा नहीं करती। आम तौर पर सुनने में आता है कि "आप किसी भी कलीसिया के सदस्य हो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि कलीसिया किसी भी प्रकार से उद्धार नहीं करती है!" ऐसी बातें नये नियम की बिल्कुल स्पष्ट शिक्षा से कितनी अलग हैं! बेशक "कलीसिया" की बात करते हुए उनके मन में अलग-अलग साम्प्रदायिक यानी डिनोमिनेशनें होती हैं जिनका आरम्भ, नाम, शिक्षा, संगठन और व्यवहार दूसरों से अलग होता है। परन्तु जब नया नियम लिखा गया था तो इनमें से कोई भी आधुनिक साम्प्रदायिक कलीसिया (कथित) का अस्तित्व नहीं था! उनमें से हर किसी का आरम्भ सदियों बाद हुआ था। परन्तु जिस कलीसिया (या चर्च) के बारे में आप नये नियम में पढ़ते हैं वह प्रेरितों 1 अध्याय के बाद (33 ईस्वी) में पिन्तेकुस्त वाले दिन से ही अस्तित्व में है। यीशु ने अपनी कलीसिया यानी "बुलाए हुए लोगों की मण्डली" बनाने की प्रतिज्ञा की थी। उसने इन सब मण्डलियों को बनाने की प्रतिज्ञा नहीं की थी जिन्हें लोग **कलीसियाएं** कहते हैं। पिन्तेकुस्त

के दिन के बाद से "जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रति दिन उन [उद्धार पाए हुओं यानी KJV की भाषा का इस्तेमाल करें तो कलीसिया] में मिला देता था" (प्रेरितों 2:47)। सो "उद्धार पाए हुए लोग" प्रभु की कलीसिया में हैं, क्योंकि वह उन्हें वहीं रखता है!

II. "मसीह में" (जहां "उद्धार" है) होने का अर्थ उसकी कलीसिया में होना है! (नीचे चार्ट में दी गई आयतों को ध्यान से पढ़ें और आपको यह साफ समझ आने लगेगा ...

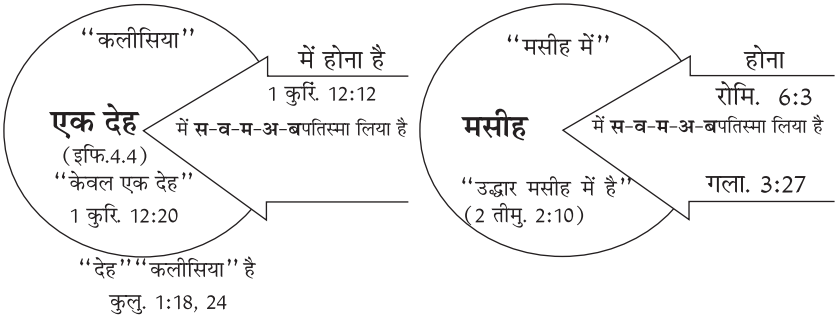

व्याख्या: ऊपर दिए गए चार्ट में हम ने दो चक्र बनाए हैं जिनके बीच एक जैसे तीर दिखाए गए हैं। पहले चर्क के अन्दर मसीह को मेल खाती आयतें दिखाते हुए बताया गया है कि उद्धार "मसीह में" है। सवाल है कि नया नियम हमें "मसीह में" कैसे आना बताता है? पूरी बाइबल में केवल दो ही हवाले हैं जो इस विषय पर बात करते हैं: रोमियों 6:3 और गलातियों 3:27. कृपया अपनी बाइबल खोलें और इन दोनों आयतों को बड़े ध्यान से पढ़ें। आप क्या कहते हैं? दोनों आयतें बताती हैं कि हमें मसीह "में बपतिस्मा" दिया जाता है। और पक्का करने के लिए उन्हें फिर से पढ़ें।

पिछले पाठों से हम पहले ही जान चुके हैं कि नये नियम के अनुसार बपतिस्मा लेने से पहले व्यक्ति के लिए पहले सुसमाचार को सुनना, यीशु मसीह में विश्वास लाना, अपने पापों से मन फिराना और लोगों के सामने मसीह में अपने विश्वास का अंगीकार करना आवश्यक है। चार्ट में स, व, म, और अ, **सु**नने, **वि**श्वास करने, **म**न फिराने और **अं**गीकार करने को दर्शाते हैं। इनमें से प्रत्येक अक्षर के बाद के तीर यह दर्शाते हैं कि एक अक्षर क्रमवार दूसरे की ओर ले जाता है। सुसमाचार को सुनने से हमें मसीह में विश्वास आता है, जो हमें मन फिराने और लोगों के सामने उसके नाम का अंगीकार करवाने का काम करता है, जिसके बाद हम मसीह "में बपतिस्मा" ले सकते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि इन चारों अन्य शर्तों से न तो पहले और न उनके बिना बपतिस्मा हो सकता है। वे सब मिलकर "उपदेश का वह सांचा" बनते हैं जो हमें न केवल मसीह में लाता बल्कि पाप से छुड़ाता भी है (रोमियों 6:16-18)।

परन्तु बपतिस्मा हमें न केवल "मसीह में" लाता है (जब सुनने, विश्वास करने, मन

फिराने और विश्वास का अंगीकार करने के बाद लिया जाता है), बल्कि यह हमें मसीह की ''कलीसिया'' में भी लाता है। 1 कुरिन्थियों 12:13 में पौलुस हमें बताता है कि ''हम सब ने एक देह में बपतिस्मा लिया।'' आयत 20 बताती है कि ''देह एक ही है।'' ठीक है, परन्तु वह ''एक देह'' क्या है? कुलुस्सियों 1:18 और 24 हमें समझाते हैं कि यह देह ''कलीसिया'' है। दोनों आयतों को ध्यान से पढ़कर देखें। यदि केवल एक ही देह है, और वह एक देह कलीसिया है, तो कुल कितनी कलीसियाएं हैं? यदि मसीह ने केवल एक ही देह (अर्थात कलीसिया) को अधिकृत किया है तो फिर इतनी अलग अलग साम्प्रदायिक कलीसियाओं (डिनोमिनेशनों) ''देहों'' को किसने अधिकृत किया? कोई तो ज़िम्मेदार है परन्तु इसका दोष मसीह पर नहीं है!

III. मसीह में यानी उसकी देह में उसकी कलीसिया में और उसके राज्य में होना सब एक ही बात है। चार्ट में दिए अनुसार नीचे दी हुई आयतों को ध्यान से अध्ययन करें:

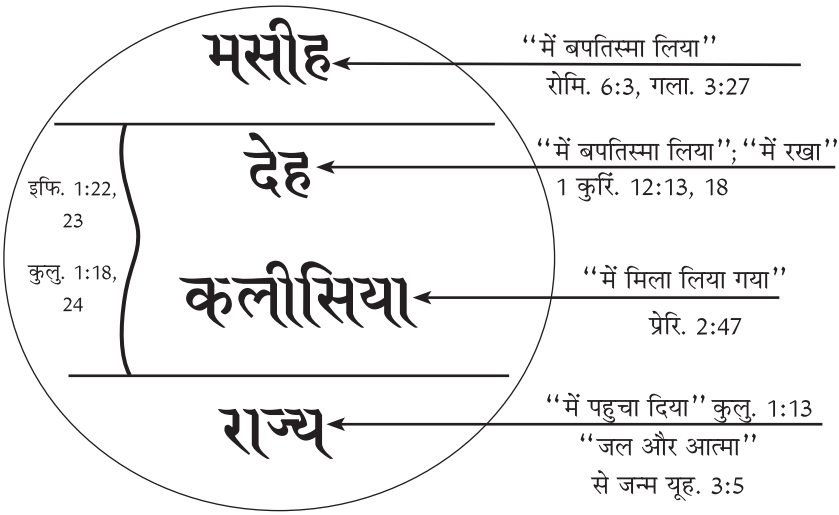

व्याख्या: बेशक जब कोई फर्क ही न हो तो फर्क करने की कोशिश करने से बड़ी उलझाने वाली कोई बात नहीं हो सकती। बहुत से निष्कपट लगने वाले धार्मिक शिक्षक ''मसीह में'' होने और ''उसकी कलीसिया में'' होने में अन्तर करने की कोशिश करते हैं। उनका कहना होता है कि ''उद्धार मसीह में है'' उसकी ''कलीसिया'' में नहीं। चार्ट में दिए गए वचनों से हम देखते हैं कि ऐसी शिक्षा कितनी बेतुकी है। रोमियों 6:3 और गलातियों 3:27 दिखाते हैं कि हमें ''मसीह में बपतिस्मा'' दिया जाता है। 1 कुरिन्थियों 12 अध्याय कहता है कि हमें एक देह या देह ''में बपतिस्मा'' दिया या ''रखा'' जाता है। सो जैसे हम मसीह में आते हैं वैसे ही उसकी देह में भी आते है। परन्तु उसकी ''देह'' तो उसकी ''कलीसिया'' है (कुलुस्सियों 1:18, 24; इफिसियों 1:22-23)। परन्तु जो बात देह (''में बपतिस्मा'' ... ''में रखा'' जाना), कलीसिया (''में मिलाए गए''— प्रेरितों 2:47) के लिए है, वही मसीह के ''राज्य'' के लिए भी है। यूहन्ना 3:5

दिखाता है कि राज्य में जाने का मार्ग ''जल और आत्मा से जन्म'' लेने के द्वारा है। आज के अधिकतर टीचर यह सिखाते हैं कि हमें ''आत्मा से'' जन्म लेना आवश्यक है, परन्तु वे पानी से बाहर रहते हैं। यीशु ने (केवल) ''आत्मा से'' नहीं बल्कि ''जल और आत्मा से जन्म'' की बात कही। मसीही वचन के साथ केवल जल के जुड़े होने के कारण बपतिस्मा का जल है इस कारण इसका अर्थ यही है कि हमें न केवल आत्मा से जन्म लेना आवश्यक है बल्कि राज्य में प्रवेश करने के लिए बपतिस्मा लेना भी आवश्यक है। कुलुस्सियों का यही अध्याय, अध्याय 1 जो ''कलीसिया'' को ''देह'' से मिलाता है (आयतें 18, 24) मसीही लोगों के लिए यह भी कहता है कि परमेश्वर ने ''हमें अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश करवाया'' (आयत 13)। इसका अर्थ यह हुआ कि जो प्रक्रिया (यानी बपतिस्मा) हमें ''मसीह में'' लाती है वह हमें न केवल उसकी देह में ''रखती'' और उसकी कलीसिया में ''मिलाती'' है, बल्कि हमें उसके राज्य में ''प्रवेश'' भी करवाती है। हमारे बपतिस्मा लेने पर हमें देह यानी कलीसिया या राज्य में रखने, मिलाता और प्रवेश कराने वाला परमेश्वर ही है। इसका अर्थ यह हुआ कि यह साफ-साफ दिखाता है कि बपतिस्मे की सामर्थ अपने आप में नहीं बल्कि परमेश्वर में है जिसने इन कारणों के लिए इसकी आज्ञा दी। इसके अलावा जहां तक इफिसियों 4:5 सिखाता है कि ''एक ही बपतिस्मा'' है, इसका अर्थ यह हुआ कि उसकी देह में बपतिस्मा लिए बिना मसीह में भी बपतिस्मा नहीं लिया जा सकता। उसकी देह उसकी कलीसिया है इसका अर्थ यह हुआ कि मसीह में बपतिस्मा लेने का अर्थ उसकी कलीसिया में बपतिस्मा लेना है। परन्तु राज्य में प्रवेश के लिए जल और आत्मा से जन्म लेना आवश्यक है। इसका अर्थ यह हुआ कि मसीह में, उसकी देह में, उसकी कलीसिया में बपतिस्मा लेने पर हम उसके राज्य में भी ''जन्म'' लेते हैं। सो मसीह में, उसकी देह में, उसकी कलीसिया में, और उसके राज्य में होने का अर्थ एक ही बात है।

VI. यीशु मसीह की केवल एक ही कलीसिया (''तुम्हारी'' कलीसिया या ''मेरी'' कलीसिया, कलीसिया नहीं बल्कि उसकी कलीसिया!) है। 1 कुरिन्थियों 1:10-15 पढ़ें

क. यीशु मसीह —

1. ने केवल एक **बनाने** की प्रतिज्ञ की(मत्ती 16:18)।
2. ने केवल एक के लिए **अपने आपको दे दिया** (प्रेरितों 20:28; इफिसियों 5:25)।
3. उद्धार पाए हुओं को एक ही में **मिलाता है** (प्रेरितों 2:47)।
4. एक ही का **उद्धारकर्त्ता** है (इफिसियों 5:23)।
5. एक ही का **सिर** है (इफिसियों 1:22-23; 5:23)।
6. ने एक ही को **पवित्र किया** (इफिसियों 5:26)।
7. ने एक ही को **शुद्ध किया** (इफिसियों 5:26)।
8. ने एक ही को अपने पास **खड़ी किया** (इफिसियों 5:27)।
9. एक ही को **पालता पोसता** है (इफिसियों 5:19)।

नोट: नया नियम एक ही कलीसिया की शिक्षा इससे साफ और स्पष्ट ढंग से और कैसे दे सकता है, परन्तु मसीह के चेले होने का दावा करने वाले बहुत से लोग बहुत सी कलीसियाओं में

विश्वास करने और उनके लिए लड़ने का दावा करते हैं जिनको समझना और समझाना लगभग असम्भव है। वे उसकी कलीसियाएं होने का दावा करते हैं जबकि वह एक ही का दावा करता है! उनके बीच आपस में मतभेद हैं परन्तु इसके बावजूद वे इसके लिए परमेश्वर को धन्यवाद देते हैं। जबकि परमेश्वर ने आज्ञा दी है कि "तुम सब एक ही बात कहो, और तुम में फूट न हो, परन्तु एक ही मन और एक ही मत होकर मिले रहो" (1 कुरिन्थियों 1:10)।

जब तक मसीही लोग "तेरी" कलीसिया और "मेरी" कलीसिया जैसे शब्दों का इस्तेमाल करते हुए यह भूल जाते हैं कि कलीसिया मसीह की है, तब तक हम मूर्खतापूर्ण डिनोमिनेशनों में बंटे रहेंगे जो हमें अलग करती हैं, एक देह के भाइयों और बहनों के रूप में बंटे रहेंगे। यदि यीशु ने केवल एक बनाने की प्रतिज्ञा की, केवल एक कलीसिया के लिए अपने आपको दिया, उद्धार पाने वालों को केवल एक में मिलाता है, केवल एक का उद्धारकर्त्ता है, केवल एक का सिर है, केवल एक को शुद्ध और पवित्र किया, केवल एक को अपने पास खड़ी करता है और केवल एक को पालता और पोसता है, तो हमें जो उसके चेले होने का दावा करते हैं मनुष्य की बनाई उन सभी कलीसियाओं को छोड़ छाड़कर जिन्हें नया नियम अधिकृत नहीं करता है केवल उस एक कलीसिया में आ जाना चाहिए जो उसकी है।

V. यदि यीशु की केवल एक ही कलीसिया है तो फिर यह कलीसिया कौन सी है?

क. विश्वव्यापी रूप में इसे अलग अलग नामों से जाना जाता है:

1. "साधारण सभा" (इब्रानियों 12:23)
2. "देह" (इफिसियों 1:23)
3. "कलीसिया" (मत्ती 16:18)
4. "परमेश्वर की कलीसिया" (प्रेरितों 20:28)
5. "जीवते परमेश्वर की कलीसिया" (1 तीमुथियुस 3:15)
6. "पहलौठों की कलीसिया" (इब्रानियों 12:23)
7. "स्वर्ग और पृथ्वी पर एक घराना" (इफिसियों 3:15)
8. "राज्य" (कुलुस्सियों 1:13) और इस जैसे और कई नाम।

ख. स्थानीय या मण्डली के अर्थ में, निजी मण्डलियों को नये नियम में इस प्रकार दिखाया गया है।

1. "सभा" (याकूब 2:2)
2. "कलीसिया" (जैसे "किंख्रिया की कलीसिया") (रोमियों 16:1)
3. "कलीसिया" (यानी मण्डलियां)—(प्रेरितों 9:31)
4. "परमेश्वर की कलीसियाएं" (1 कुरिन्थियों 11:16; 1 थिस्सलुनीकियों 1:4)
5. "मसीह की कलीसियाएं" (रोमियों 16:16)
6. "पवित्र लोगों की कलीसिया" (1 कुरिन्थियों 14:33)
7. "झुण्ड" (प्रेरितों 20:28; 1 पतरस 5:2-3; आदि।)

ग. निजी सदस्यों को चाहे वे स्थानीय हों या विश्वव्यापी इन नामों से पुकारा जाता है

1. ''भाई'' (प्रेरितों 6:3)
2. ''बुलाए गए'' (रोमियों 1:6)
3. ''चुने हुए'' —रोमियों 8:33)
4. ''विश्वासी'' (प्रेरितों 5:14; 1 तीमुथियुस 4:12)
5. ''परमेश्वर की संतान'' (रोमियों 8:16)
6. ''भागीदार''—इब्रानियों 3:14
7. ''चेले''—प्रेरितों 6:1
8. ''मसीही''—प्रेरितों 11:26—और अन्य ऐसे शब्द

नोट: नये नियम में कलीसिया को या तो स्थानीय अर्थ में या विश्वव्यापी अर्थ में बताया गया है परन्तु कभी भी डिनोमिनेशन के अर्थ में नहीं। इसके सदस्यों को कई नामों से जाना जाता है परन्तु एक भी बार किसी भी डिनोमिनेशन के साथ जोड़कर नहीं जिन्हें आज के समय में हम जानते हैं। क्यों? क्योंकि डिनोमिनेशनें परमेश्वर की ओर से नहीं बल्कि मनुष्य की ओर से हैं। इस कारण वे अपने आपको मनुष्यों के बनाए नियमों और मनुष्य के बनाए रुतबों से मेल खाते हुए मनुष्यों के दिए नामों से बुलाते और उन मण्डलियों के सदस्य बताते हैं। जिस कलीसिया के बारे में हम नये नियम में पढ़ते हैं अपने विश्वव्यापी अर्थ में वह इनमें से किसी भी डिनोमिनेशन से बड़ी हैं परन्तु स्थानीय यानी मण्डली के रूप में यह किसी भी डिनोमिनेशन के रूप से छोटी है। इस कारण जो कलीसिया यीशु ने बनाई वह किसी भी अर्थ में डिनोमिनेशन के साथ मेल नहीं खाती। डिनोमिनेशनें नये नियम की कलीसिया नहीं हैं। न ही उन में और इसमें कोई स बन्ध या रिश्ता है।

VI. उस कलीसिया के, जिसके बारे में नये नियम में पढ़ने को मिलता है, सदस्य कैसे बनता जाता है?

उत्तर: हम ने अब तक जितना भी अध्ययन किया है उसमें से हम यह निष्कर्ष निकालते हैं? परमेश्वर लोगों को ''सुसमाचार'' सुनाने के द्वारा ''बुलाता है।'' (2) बदले में लोग सुसमाचार की आज्ञा मानकर परमेश्वर की बुलाहट को चाहे तो मान सकते हैं या चाहे तो इसे ठुकरा सकते हैं। (3) जो लोग सुसमाचार को सुनकर, मसीह में विश्वास लाकर, पापों से मन फिराकर, अपने विश्वास का अंगीकार करके और बपतिस्मा लेकर परमेश्वर की बुलाहट को इस प्रकार से मानते हैं। (4) जब वे उपदेश के उस सांचे को जो नये नियम में ''दिया गया'' है, ''मन से मानते'' हैं तो उन्हें अपने पिछले पापों के परिणामों से ''बचाया'' जाता है। (5) ''उद्धार पाए हुए'' लोगों को प्रभु के द्वारा कलीसिया में ''मिलाया'' जाता है। उस कलीसिया के, जिसके बारे में आप नये नियम में पढ़ते हैं, सदस्य बनने का यही ढंग है। आकाश के नीचे किसी भी डिनोमिनेशन का सदस्य ऐसे नहीं बना जा सकता। परन्तु एक भी डिनोमिनेशन (या डिनोमिनेशनों का कोई भी समूह) नये नियम की कलीसिया नहीं बनता है। हर डिनोमिनेशन पूर्णता कलीसिया से अलग है।

नोट: आम तौर पर लोग कलीसिया के लिए अंग्रेज़ी शब्द ''चर्च'' का इस्तेमाल भवन या गिर्जाघर

के लिए करते हैं जिसमें चर्च यानी कलीसिया की सभाएं होती हैं। डिनोमिनेशनों की अन्य बहुत सी बातों की तरह इस प्रकार से बात करना भी परमेश्वर के वचन के उलट है (पढ़ें 1 पतरस 4:11)। कलीसिया के लिए नये नियम में "चर्च" शब्द का इस्तेमाल कभी भी इस अर्थ में नहीं हुआ है। स्थानीय हो या विश्वव्यापी "कलीसिया" (यानी चर्च) लोगों को ही कहा गया है जो मसीह की देह है, न कि उस भवन को जिसमें वे इकट्ठा होते हैं। कुछ आयतें इसे इस प्रकार समझने में सहायता कर सकती हैं:

1. "उद्धार पाए हुए" लोगों को कलीसिया (यानी चर्च) में मिलाया जाता है —प्रेरितों 2:47
   —क्योंकि लोग उद्धार पाए हुए हैं।
2. कलीसिया (यानी चर्च) पर "भय छा गया" (प्रेरितों 5:11)— डर लोगों को लगता है।
3. कलीसिया (या चर्च) पर "सताव" हुआ (प्रेरितों 8:11) सताए लोग जाते हैं, इमारते नहीं।

सो पूरे नये नियम में इसी प्रकार से मिलता है। मसीही (लोग) कलीसिया (यानी चर्च) हैं। स्थानीय रूप में (मसीही लोग) किसी भवन में इकट्ठा हो सकते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि चर्च (यानी कलीसिया) भवन में इकट्ठा होती है। भवन कलीसिया (यानी चर्च) नहीं है बल्कि वह स्थान है जहां कलीसिया इकट्ठा होती है।

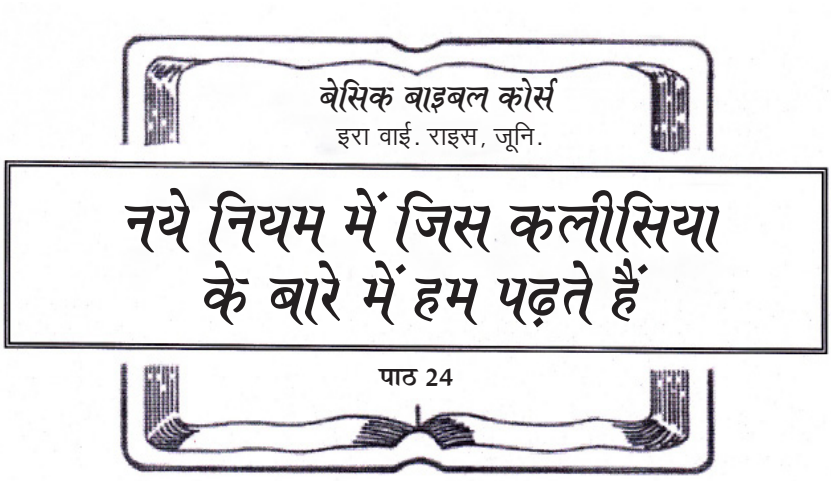

पाठ 24 के प्रश्न

Registration No.....

Grade .....

Name.....

Address.....

.....

Pin.....Mobile No.....

e-mail.....

(कृपया पता अंग्रेजी के बड़े अक्षरों में ही लिखें।)

1. बाइबल का वह हवाला बताएं जहां यीशु ने प्रतिज्ञा की कि मैं ''अपनी कलीसिया बनाऊंगा।''

   .....

2. नये नियम में **स्थापित तथ्य** के रूप में हम कौन से दिन के बारे में पढ़ते हैं जिस में यीशु ने कलीसिया को सबसे बनाया था? .....

   .....

3. पिन्तेकुस्त वाले दिन के आरम्भिक विश्वासियों को, जिन्होंने पूछा था कि वे क्या करें, पतरस ने उन्हें क्या करने को कहा था? .....

   .....

4. क्या पतरस ने उन्हें समझाया था कि अपने आपको ''बचाओ।'' .....

   .....

5. जिन्होंने पतरस के निर्देशों को ''मान लिया,'' उन्होंने क्या किया? .....

   .....

6. प्रेरितों 2:41 बताता है कि बपतिस्मा लेने वालों को किसी में ''मिलाया'' जाता था। उन्हें किसमें ''मिलाया'' जाता था? (आयत 47)।

   .....

   .....

7. प्रभु लोगों के एक विशेष वर्ग को ''कलीसिया'' में मिलाता था। वह किन लोगों को मिलाता था? .....

   .....

8. ''उद्धार पाए हुए'' लोगों को प्रभु द्वारा कलीसिया में ''मिलाया जाता'' है। इसके पांच कारण बताएं जो आपने सीखे हैं कि उद्धार के लिए एक पापी को क्या करना आवश्यक है:

.....

.....

9. यूनानी शब्द *एक्लेसिया* जिसका अनुवाद नये नियम में ''कलीसिया'' या चर्च हुआ है, का क्या अर्थ है ? .....

.....

10. नये नियम में आप जिस कलीसिया के बारे में पढ़ते हैं वह परमेश्वर के ''बुलाए हुए लोगों की मण्डली'' है, तो परमेश्वर लोगों को संसार से इस मण्डली में कैसे ''बुलाता'' है ?

.....

.....

11. क्या किसी के लिए ''मसीह में'' होने के बावजूद उसकी ''कलीसिया'' में न होना सम्भव है ? ..... यदि हां तो समझाएं कि कैसे:.....

.....

.....

12. सुसमाचार को सुनने, मसीह में विश्वास लाने, पापों से मन फिराने और लोगों के सामने मसीह का अंगीकार करने के बाद, आज्ञापालन का वह अन्तिम कार्य कौन सा है, जो व्यक्ति को ''मसीह में'' लाता है ? .....

.....

13. क्या ''मसीह में'' आज्ञापालन का कार्य व्यक्ति को उसी प्रकार मसीह की **कलीसिया में** लाता है ? ..... उसके राज्य में लाता है ? .....

.....

14. यीशु ने कितनी कलीसियाएं बनाने की प्रतिज्ञा की थी ? .....

.....

15. यीशु ने अपने आपको कितनी कलीसियाओं के लिए दे दिया ? .....

.....

16. प्रभु उद्धार पाने वालों को कितनी कलीसियाओं में मिलाता है ? .....

.....

17. यीशु कितनी कलीसियाओं का उद्धारकर्त्ता है ? ..... कितनी कलीसियाओं का सिर है ?.....

.....

18. यीशु ने कितनी कलीसियाओं को ''शुद्ध'' और ''पवित्र'' किया ? .....

19. यीशु ने कितनी कलीसियाओं को अपने पास खड़ी किया ? .....

20. यीशु कितनी कलीसियाओं को पालता-पोसता है ? .....

.....

21. डिनोमिनेशनें यानी साम्प्रदायिक ''कलीसियाएं'' **एक ही** शिक्षा देती हैं या **अलग अलग** शिक्षाएं ? .....

.....

22. डिनोमिनेशनें या साम्प्रदायिक कलीसियाएं अपने आपको उसी नाम से बुलाकर जिस नाम से यीशु और नया नियम कलीसिया को बुलाते हैं, सीमित करती हैं या वे अपने आपको परमेश्वर के वचन से **अलग** शब्दों के साथ दिखाती हैं ? .....

.....

.....

.....

23. नये नियम में ''कलीसिया'' शब्द का इस्तेमाल कितने अर्थ में किया गया है ? .....

.....

.....

24. डिनोमिनेशनें दोनों में से किसी अर्थ में मेल खाती हैं ? .....

.....

25. क्या डिनोमिनेशनें वही कलीसिया हैं, जिसके बारे में नये नियम में पढ़ने को मिलता है या वे उस कलीसिया **से अलग** हैं ? .....

.....

आपका कोई प्रश्न है तो उसे यहां लिखें .....

.....

.....

.....

.....

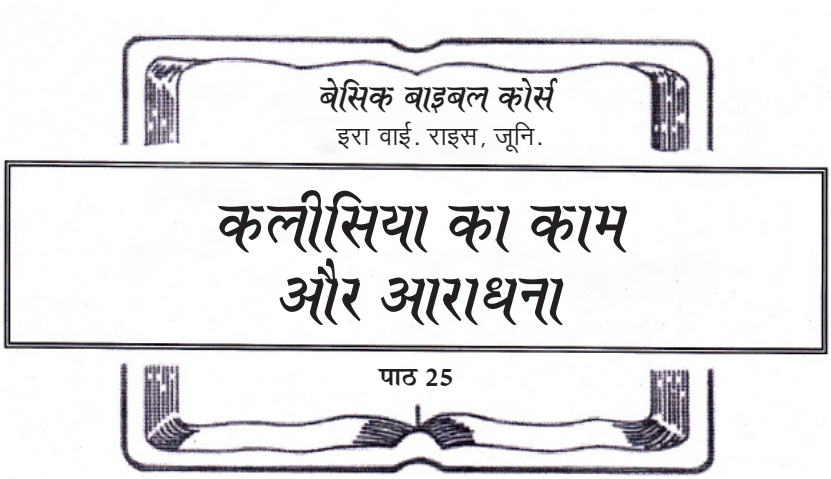

परिचय: पाठ 24 में उस ''कलीसिया'' को समझने के बाद नये नियम में पढ़ने को मिलता है, अब हम वहां प्रकट की गई उस कलीसिया के काम और आराधना के अध्ययन पर आते हैं। नये नियम का कोई भी स्तर्क छात्र यह आसानी से समझ सकता है कि सदियों से कलीसिया के काम और आराधना में बहुत सी गलत बातें घुस आई हैं। नये सिरे से पता लगाने के लिए कि आरम्भ में परमेश्वर ने क्या लिखा था, आइए हम भूल जाएं कि मनुष्यों ने क्या लिखा है और फिर एक नई सृष्टि के लिए नये नियम में वापस लौट आएं। ...

I. पवित्र शास्त्र के सावधानी से किए गए अध्ययन से पता चलता है कि कलीसिया के काम के केवल तीन चरण हैं: (1) सुसमाचार का प्रचार (2) सुधार और (3) महिमा।

क. नये नियम द्वारा अधिकृत कलीसिया के लिए संसार में सुसमाचार सुनाया जाना आवश्यक है।

1. 1 तीमुथियुस 3:15 से हमें पता चलता है कि कलीसिया सत्य का ''खम्भा और नींव'' है।
2. इफिसियों 3:8-10 बताता है कि परमेश्वर का ज्ञान ''कलीसिया के द्वारा'' बताया जाना आवश्यक है।
3. ग्रेट कमीशन सुसमाचार के प्रचार की सीमा को दिखाता है
   क. ''सब जातियों'' को सिखाया जाना आवश्यक है (मत्ती 28:19)।
   ख. ''सारे जगत में'' और ''सारी सृष्टि के लोगों को'' सुनाया जाना आवश्यक है (मरकुस 16:15)।
   ग. ''सब जातियों'' के लिए सुनना आवश्यक है (लूका 24:47)।
4. आरम्भ में कलीसिया के इस कमीशन को गम्भीरता से लेने की बात इन वचनों से स्पष्ट है:

क. पौलुस ने कहा, ''उनके स्वर सारी पृथ्वी पर, और उनके वचन जगत की छोर तक पहुंच गए हैं'' (रोमियों 10:18)।

ख. कलीसिया की पहली सदी में जब पौलुस अभी जीवित था, सुसमाचार ''का प्रचार आकाश के नीचे की सारी सृष्टि में किया गया'' था (कुलुस्सियों 1:23)।

ख. नये नियम में प्रकट की गई कलीसिया के लिए अपने आपको सुधारना यानी अपने आपको बनाना आवश्यक है।

1. लोगों को सिखाने और बपतिस्मा देने के बाद, मत्ती 28:20 बताता है कि उन्हें यीशु मसीह द्वारा दी गई आज्ञा के अनुसार ''सब बातें मानना'' सिखाना भी आवश्यक था।
2. प्रेरितों 8 और 9 वाले सतावों के खत्म हो जाने के बाद कलीसिया को झगड़ों से चैन मिला था और उसकी ''उन्नति होती गई'' (प्रेरितों 9:31)।
3. पौलुस ने रोम की कलीसिया को कहा कि वे ''उन बातों का प्रयत्न करें जिनसे मेल मिलाप और एक दूसरे का सुधार हो'' (रोमियों 14:19)।
4. सुधार के लिए हर मसीही के लिए अपनी नहीं बल्कि एक दूसरे की भलाई की इच्छा करनी थी (1 कुरिन्थियों 10:23-24)।
5. मसीहियत में हर बात सुधार के लिए की जानी आवश्यक थी (1 कुरिन्थियों 14:26; 2 कुरिन्थियों 12:19)।
6. मसीह की देह (यानी कलीसिया) को ''सुधारने'' का उद्देश्य हम सब को पहुंचने में सहायता करना है:
   क. विश्वास की एकता और परमेश्वर के पुत्र के ज्ञान में
   ख. एक सिद्ध मनुष्य की मसीह के पूरे डील डौल तक (इफिसियों 4:11-13)।

ग. नये नियम की कलीसिया के लिए परमेश्वर को ''महिमा'' देना आवश्यक है।

1. यीशु ने कहा, ''मेरे पिता की महिमा इसी से होती है कि तुम बहुत सा फल लाओ, तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे'' (यूहन्ना 15:8)।
   क. कुछ फल जो हम लाते हैं वह ''आत्मा का फल'' यानी प्रेम, आनन्द, शांति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, संयम है (गलातियों 5:22-23)।
   ख. ''भले काम'' (मत्ती 5:16; गलातियों 6:10)।
   ग. जो लोग फल नहीं लाते उन्हें काटकर आग में डाला जाना तय है (मत्ती 7:19)।
2. कलीसिया आराधना के द्वारा ही परमेश्वर को महिमा देती है।
   क. प्रेरितों 2:42 से पता चलता है कि सबसे पहले मनपरिवर्तन करने वालों को कलीसिया में मिला लिए जाने के बाद (प्रेरितों 2:41, 47), वे ''प्रेरितों से शिक्षा पाने और संगति रखते, और रोटी तोडने और प्रार्थना करने में लौलीन

रहे।''

ख. आयत 47 कहती है कि परमेश्वर की स्तुति करते थे।

नोट: नये नियम में बताई गई कलीसिया की सब गतिविधियां ऊपर बताई तीन मुख्य श्रेणियों में आती हैं, इस कारण आज कलीसिया की कोई भी गतिविधि वचन के अनुसार होने के लिए आवश्यक है कि इन में से एक के अंतरगत आती है। यानी या तो (1) पापियों को सुसमाचार सुनाएं या (2) मसीही लोगों को सुधारें या (3) परमेश्वर की महिमा करें। इन में से बाहर की कोई भी गतिविधि परमेश्वर के वचन के अनुसार नहीं है, इसलिए वह पाप है (1 पतरस 4:11)।

II. नये नियम की कलीसिया द्वारा की जाने वाली मसीही आराधना।

नोट: जैसा कि हम पहले देख चुके हैं, कलीसिया के काम का एक भाग, मसीही आराधना है। जिस कलीसिया को यीशु ने बनाया उसमें आरम्भ से ही वे लोग होते थे जो बपतिस्मा लेकर ''प्रेरितों की'' शिक्षा और संगति में लौलीन रहते हुए, रोटी तोड़ने और प्रार्थनाओं में भागीदार होते थे (आयत 41)। इसके अलावा परमेश्वर की महिमा करते हुए (आयत 47)- प्रेरितों 2, आइए इन बातों पर एक एक करके विचार करें:

क. ''प्रेरितों की शिक्षा यानी डॉक्ट्रिन'' (आयत 42)।

नोट: आज आपको आम लोग यही कहते सुनाई देंगे: मैं डॉक्ट्रिन पर दिए जाने वाले सरमन में विश्वास नहीं रखता। उस कलीसिया के आरम्भ में, जिसे यीशु ने बनाया था, ऐसी कोई बात नहीं थी। वही लोग जिन्होंने वचन को ग्रहण किया था और बपतिस्मा लिया था (आयत 41), प्रेरितों की शिक्षा यानी डॉक्ट्रिन में लौलीन रहे (आयत 42) ऐसा कैसे किया जा सकता है?

1. वह सुनते रहकर जो प्रेरित दिखाते थे, जैसे वे लोग कर रहे थे (देखें आयत 37 और 41)।
2. इस शिक्षा को अपने जीवनों को ढालने देकर (याकूब 1:22-25)।

ख. ''और संगति'' (आयत 42)।

नोट: आम तौर पर लोग कहते हैं, ''मैं चर्च (कलीसिया में) जाए बिना अच्छा मसीही बन सकता हूं।'' इसमें कोई संदेह नहीं है कि ये लोग ईमानदार थे, परन्तु यह ईमानदारी पथभ्रष्ट है! आरम्भ से ही सहभागिता या संगति या साझे की चीजें होना मसीहियत का हिस्सा थीं (1 यूहन्ना 1:7)।

1. मसीही लोग वचन सुनने में योगदान देते थे (प्रेरितों 2:41)।
2. वे बपतिस्मा लेने में योगदान देते थे (प्रेरितों 2:41)।

3. वे कलीसिया में ''मिलाए'' जाने में योगदान देते थे (आयतें 41, 47)।
4. कलीसिया में आ जाने पर वे योगदान देते जारी रखते थे:
   क. धार्मिक अनुभवों में (आयतें 43-46)।
   ख. सुसमाचार प्रचार के सहयोग में (1 कुरिन्थियों 9:7-14)।
   ग. एक दूसरे की सहायता करने में (प्रेरितों 2:45; 4:34-35)।
   घ. दूसरों का भला करने में (1 कुरिन्थियों 16:1-2; गलातियों 6:10)।

ग. और रोटी तोड़ने (यानी, प्रभु भोज) (प्रेरितों 2:42)।

नोट: नये नियम में दो प्रकार के रोटी तोड़ने की बात की गई है। एक प्रकार प्रभु भोज का है जो सप्ताह के पहले दिन लिया जाता था। एक और प्रकार स्पष्टतया सामान्य भोजन था जिसे प्रभु भोज के साथ न उलझाया जाए तो उसे भी ''रोटी तोड़ना'' कहा गया है (प्रेरितों 20:7)। लोग प्रतिदिन खाने के लिए आते थे इसलिए यह सामान्य भोजन यानी रोटी तोड़ना घर घर होता था। पहले वाले रोटी तोड़ने को ''दाख का फल'' के साथ मिलाया जाता था (मत्ती 26), जबकि बाद वाले को ''भोजन'' के साथ (प्रेरितों 2:46)। प्रभु भोज में कोई भोजन नहीं था इसलिए बाद वाला रोटी तोड़ना, वह नहीं हो सकता।

1. यीशु ने अपनी मृत्यु से पहले यादगार के रूप में ''रोटी तोड़ना'' ठहराया (मत्ती 26:26-29)।
   क. यह उसके राज्य के आने से पहले नहीं लिया जाना था (आयत 29)।
2. अपने दुख सहने, मृत्यु और पुनरुत्थान के बाद यीशु ने अपने चेलों को सिखाने, बपतिस्मा देने और बपतिस्मा लेने वालों को ''उन सब बातों को मानना जिनकी मैंने तुम्हें आज्ञा दी है'' सिखाने की आज्ञा दी (मत्ती 28:20)।

नोट: परन्तु प्रभु-भोज यीशु के अपने पिता के राज्य में अपने चेलों के साथ दाखरस पीने से पहले नहीं लिया जाना था, इसका अर्थ यह हुआ कि उन्हें राज्य के आने की राह देखनी आवश्यक है। हमने देखा है कि राज्य सामर्थ के साथ आना चाहिए (मरकुस 9:1)। यीशु ने अपने प्रेरितों से कहा कि वे ऊपर से सामर्थ मिलने तक यरूशलेम में ठहरे रहें। वह ''सामर्थ'' प्रेरितों 2 अध्याय में पिन्तेकुस्त वाले दिन आई। इस प्रकार प्रभु भोज मनाया जाना आरम्भ हो पाया। इस कारण प्रेरितों 2:42 से हमें पता चलता है कि वे ''रोटी तोड़ने में ... लौलीन रहे।''

3. मत्ती 26 में यीशु द्वारा आरम्भ किए जाने के बाद रोटी तोड़ने का पहला उल्लेख पिन्तेकुस्त के दिन मिलता है (प्रेरितों 2:42)।

नोट: पिन्तेकुस्त का दिन ''सप्ताह के पहले दिन'' था। इस शब्द का अर्थ मूलतया 50 दिन होता है और पिन्तेकुस्त ''सब्त के दिन के बाद सप्ताह के पहले दिन'' यीशु के मुर्दों में से जी उठने के बाद पचासवें दिन था (मत्ती 28:1)। सात हफ्ते बाद (यानी 50वें दिन) या पिन्तेकुस्त के दिन, यह भी सप्ताह के पहले दिन पड़ता था, (क) पवित्र आत्मा दिया गया

(ख) पहला सुसमाचार संदेश सुनाया गया और (ग) कलीसिया में लोगों को सबसे पहले लाया गया और (घ) मसीही युग में पहली बार प्रभु भोज लिया जाने लगा।

इतिहासकार हमें बताते हैं (और प्रेरितों 20:7 इसकी गवाही देता है) कि कलीसिया के आरम्भ में चेले रोटी तोड़ने के लिए ''सप्ताह के पहले दिन'' इकट्ठा हुआ करते थे।

ग. ''और प्रार्थना करने में'' लौलीन रहे (प्रेरितों 2:42)।

1. मत्ती 6:9-13 में यीशु ने यह कहते हुए कि ''तुम इस रीति से प्रार्थना किया करो'' प्रार्थना का एक नमूना दे दिया था।

नोट: यीशु ने अपने चेलों को बार-बार यह प्रार्थना दोहराने को नहीं कहा था जैसा कि कुछ लोग करते हैं। वास्तव में आयत 7 में उसने ऐसा न करने को कहा था। ''परन्तु जब तू प्रार्थना करे,'' यीशु ने कहा कि ''अन्यजातियों के समान बकबक न करो, क्योंकि वे समझते हैं कि उनके बहुत बोलने से उनकी सुनी जाएगी। इसलिए तुम उनके समान न बनो।'' अच्छा, यदि हम इस प्रार्थना को बार बार दोहराते हैं तो क्या यीशु ने हमें नहीं कहा कि हम ऐसा न करें? यदि वह नहीं चाहता था कि हम ''बक बक'' करें और ''बहुत बोलें'' तो फिर उसने यह प्रार्थना क्यों की? उसने एक नमूना दिया ताकि हम अपनी प्रार्थना इस प्रकार से कर सकें। उसने कहा, ''तुम इस रीति से प्रार्थना किया करो।''

2. प्रार्थनाओं में ये बातें होती हैं
   क. धन्यवाद (कुलुस्सियों 3:17)।
   ख. विनतियां (प्रेरितों 7:59)।
   ग. सिफारिशें (प्रेरितों 7:60; 12:5)।
3. निरन्तर प्रार्थना करते हुए (1 थिस्सलुनीकियों 5:17)।

ख. ''परमेश्वर की स्तुति करते हुए'' (प्रेरितों 2:47)।

1. गवाही देकर (प्रेरितों 3:12-26; 8:25; 11:18, आदि)।
2. प्रार्थना करके (इफिसियों 3:14-21)।
3. गाकर (प्रेरितों 16:25; रोमियों 15:9; 1 कुरिन्थियों 14:15)।

नोट: आराधना करने का अर्थ किसी के प्रति भक्ति या धार्मिक श्रद्धा का होना है। आराधना के स्थान का कोई महत्व नहीं है (यूहन्ना 4:21) क्योंकि परमेश्वर आत्मा है (मत्ती 18 :20; इब्रानियों 10:25)। और जो लोग उसकी आराधना करते हैं कि वे उसकी आराधना आत्मा और सच्चाई से करें (यूहन्ना 4:20-24)। परन्तु मसीही लोगों के लिए परमेश्वर के लोगों के साथ इकट्ठे होना आवश्यक है (मत्ती 18:20; इब्रानियों 10:25)। हम जिसकी आराधना करते हैं उस से ऊपर नहीं उठ सकते। तर्क हमें यह बताता है कि हमें उसकी आराधना नहीं करनी चाहिए जो हम से कम हो। काफिर लोग अपने ही बनाए देवता के आगे झुकते हैं; कई प्रसिद्ध मसीही लोग भी भौतिक वस्तुओं की उपासना करते हैं। हमें अपने बराबर के लोगों या वस्तुओं की आराधना नहीं करनी चाहिए। सृष्टि के लिए किसी

सृष्टि की आराधना करना शोभा नहीं देता। कुरनेलियुस जैसे कुछ लोग प्रचारक को माथा टेकते हैं (प्रेरितों 10:25)। इसके बजाय हमें अपने से बड़े को माथा टेकना चाहिए यानी अपने पिता को जो स्वर्ग में है (मत्ती 6:9)। क्यों भला? क्योंकि वह हमारा सृजनहार है। सृष्टि के लिए अपने बनाने वाले को पूजना कैसा है! वह ऐसा ही चाहता है (यूहन्ना 4:23)। ऐसी आराधना हमें उसके जैसा बनने में सहायता करती है (2 कुरिन्थियों 3:18)। आराधना अपने आप में मंजिल नहीं है बल्कि मंजिल का रास्ता ज़रूर है। इसलिए हमें उसे भाने के लिए जो हमारी आराधना के एकमात्र सही ढंग से योग्य है, बहुत चौकसी बरतनी आवश्यक है। परमेश्वर को हर प्रकार की आराधना स्वीकार्य नहीं है। मत्ती 15:9 यह दिखाता है कि जो लोग मनुष्यों की आज्ञाओं को धर्मोपदेश सिखाते हुए आराधना करते हैं, वे ''व्यर्थ में आराधना करते हैं!'' क्योंकि परमेश्वर के लिए हमारी आराधना के स्वीकार होने के लिए आवश्यक है कि हम न केवल ''आत्मा'' (ईमानदारी से) बल्कि ''सच्चाई से'' (उसके वचन के अनुसार) आराधना करें (यूहन्ना 4:24; 17:17)।

विचार करें कि अलग अलग आधुनिक ''कलीसियाएं'' उस ''कलीसिया'' से निकली हैं जिसके बारे में आप नये नियम में पढ़ते हैं। वह आत्मिक संस्थान होने के बजाय जो परमेश्वर अपनी कलीसिया को बनाना चाहता था, आज बहुत सी साम्प्रदायिक कलीसियाएं आत्मा रहित, सच्चाई रहित, मसीह रहित हो गई हैं जो कि सामाजिक संस्थाएं ही बन कर रह गई हैं जहां लगता है कि वे परमेश्वर की इच्छा को मानने के बजाय अपने आपको प्रसन्न करने के लिए, परमेश्वर के बजाय वे अपने ही विचारों की पूजा करते हैं। ''प्रेरितों की शिक्षा'' में बने रहने के बजाय, मनुष्यों के धर्मसारों ने इसका स्थान ले लिया है; आरम्भिक कलीसिया की सहभागिता (संगति) के बजाय साम्प्रदायिक रेखाएं खींच दी गई हैं। ''सप्ताह के पहले दिन'' रोटी तोड़ने के बजाय, इसे मासिक, त्रैमासिक या वार्षिक रूप में लिया जाता है या कभी लिया ही नहीं जाता; गाने की जगह बजाना आ गया है। क्यों? ऐसा क्यों हो रहा है?

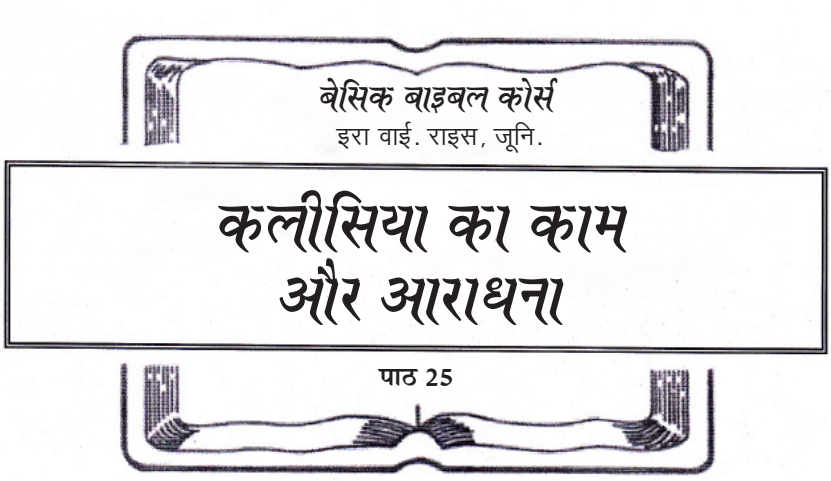

पाठ 25 के प्रश्न

Registration No.....

Grade .....

Name.....

Address.....

.....

Pin.....Mobile No.....

e-mail.....

(कृपया पता अंग्रेजी के बड़े अक्षरों में ही लिखें।)

1. वचन में हमें कलीसिया के काम को कितने चरणों में बांटा गया मिलता है ?

   उनके नाम बताएं। .....

   .....

   .....

2. नया नियम यीशु के चेलों को संसार में कहां तक सुसमाचार सुनाने की शिक्षा देता है ?

   .....

   .....

3. लोगों को सिखाने और बपतिस्मा देने के बाद ग्रेट कमीशन के लिए और क्या किया जाना आवश्यक है ? .....

   .....

4. मसीह की देह को किस उद्देश्य (या उद्देश्यों) के लिए सुधाना आवश्यक है ?

   .....

   .....

5. दो तरीके बताएं जिनके द्वारा कलीसिया परमेश्वर की महिमा करती है:

   .....

   .....

6. यदि कोई कलीसिया सुसमाचार सुनाने, सुधार और महिमा करने के चरणों के भीतर नहीं आती तो क्या इसकी गतिविधि को वचन के अनुसार कहा जाएगा या वचन के बाहर ?

   .....

   .....

7. नये नियम के आपके अपने अध्ययन के क्या आपको इन तीन शीर्षकों में से एक या और

चरण मिला है जिसमें कलीसिया का काम न हो? ..... यदि हां तो कौन सा?

.....

.....

8. पिन्तेकुस्त के दिन आनन्द से वचन को ग्रहण कर लेने वालों ने क्या किया? .....

उन्हें किसमें मिलाया गया? .....

.....

9. बपतिस्मा लेने के बाद पिन्तेकुस्त के दिन ''मिलाए'' लोगों के कलीसिया से जुड़े काम और आराधना की पांच बातें बताएं.....

.....

10. ''प्रेरितों की शिक्षा'' क्या है?

.....

.....

11. दो तरीके बताएं जिनमें वे प्रेरितों की शिक्षा में बने रहे हो सकते हैं।

.....

.....

12. ''संगति'' का क्या अर्थ है?

.....

.....

13. दूसरों को मसीहियत के बारे में बताए बिना क्या परमेश्वर का कोई बालक विश्वासयोग्य बना रह सकता है? (1 यूहन्ना 1:7) .....

.....

14. वे चार बातें बताएं जो बपतिस्मा लेने के बाद आरम्भिक मसीही लोग दूसरों को बताते थे?

.....

.....

15. नये नियम में कितने प्रकार का रोटी तोड़ना बताया गया है? विस्तार से बताएं:

.....

.....

16. नये नियम में चेले रोटी तोड़ने के लिए कब इकट्ठा होते थे (प्रेरितों 20:7)।

.....

.....

17. प्रत्येक सप्ताह में ''पहला दिन'' कितनी बार आता है?

.....

.....

18. यदि हम नये नियम के नमूने को मानें तो क्या हम रोटी (प्रभु भोज) सप्ताह में एक बार, महीने में एक बार, तीन महीने में एक बार, साल में एक बार, जब मन करे, या कितनी बार प्रभु लेंगे? .....

.....

.....

19. प्रार्थना करते हुए क्या हमें बार-बार उसे दोहराना चाहिए जिसे ''प्रभु की प्रार्थना'' कहा जाता है, ? यदि हां तो क्यों .....

.....

20. तीन तरीके बताएं जिन से हम परमेश्वर की महिमा कर सकते हैं ?

.....

.....

21. नया नियम मसीही आराधना के सम्बन्ध में गाने के साथ बाजों के इस्तेमाल को अधिकृत करता है ?.....यदि हां, तो हवाला बताएं।

.....

.....

क्या आपके पास प्रश्न हैं ?.....

.....

.....

.....

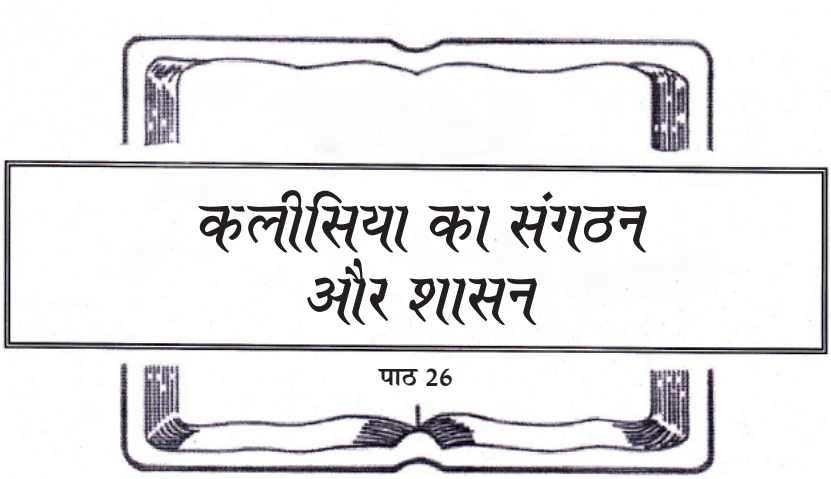

कलीसिया का संगठन और शासन

पाठ 26

परिचय: पाठ 25 में परमेश्वर के वचन के सावधानीपूर्वक अध्यय से हम यह जान पाए थे कि कलीसिया के काम और आराधना को बड़े ही स्पष्ट ढंग से परिभाषित किया गया है। मसीहियत के आरम्भ में और आज की कथित ''कलीसियाओं'' में धीरे-धीरे आने वाले कलीसिया के काम और आराधना के बीच कई भिन्नताओं को देखा गया। हमने पूछा कि आखिर यह अंतर क्यों पाए जाते हैं। पवित्र शास्त्र में से हम ने यह भी दिखाया कि उन्हें जारी रखना परमेश्वर की इच्छा के उलट है।

इस पाठ में अब हम कलीसिया के संगठन और शासन पर विचार करते हैं। यह जानने के लिए कि इन पहलुओं में कलीसिया को क्या करना चाहिए आइए, ध्यान से वचन में से ढूंढ़ते हैं:

I. कलीसिया का संगठन

विश्वयापी- नये नियम का ध्यान से अध्ययन करने पर पता चलता है कि पृथ्वी पर मसीह की मण्डलियों के ऊपर या उनके बीच कलीसिया का कोई संगठन नहीं है।

1. शब्द के सामान्य अर्थ में यीशु मसीह हैड यानी सिर है
   क. ''और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया, यह उसकी देह है'' (इफिसियों 1:22-23)।
   ख. ''मसीह **कलीसिया** का **सिर** है'' (इफिसियों 5:23)।

नोट: सिर के रूप में यीशु के अलावा नया नियम कुल मिलाकर मण्डलियों के ऊपर किसी अन्य अधिकारी को सिर बनने के लिए अधिकृत नहीं करता। न ही किसी इलाके या देश की कलीसियाओं के समूह या कलीसियाओं के लिए किसी प्रकार का कोई संगठन या शासन है। परमेश्वर के वचन में मनुष्यों के बनाए किसी भी प्रकार के अन्य प्रबन्ध को चाहे जो भी क्यों न हो, महत्व नहीं दिया गया।

2. कलीसिया के विश्वव्यापी सिर के रूप में यीशु मसीह को दिखाते हुए कलीसिया को इस प्रकार दिखाया गया है।
   क. उसकी **देह** (पढ़ें इफिसियों 1:22-23; कुलुस्सियों 1:18-24)।
   ख. उसकी **पत्नी** (पढ़ें, इफिसियों 5:22-32; रोमियों। 7:4)।
   ग. उसका **राज्य** (पढ़ें कुलुस्सियों 1:13; प्रकाशितवाक्य 1:9)।

एक याजकाई। ''महायाजक'' (इब्रानियों 5:6; 6:20) के रूप में यीशु के अधीन उसकी कलीसिया बनने वाले लोग ''याजकों का पवित्र समाज'' (1 पतरस 2:5), ''राजपदधारी'' याजकों का समाज (1 पतरस 2:9) बनते हैं। राजपदधारी यानी शाही होने के कारण इस याजकाई में याजक राजा भी हैं (प्रकाशितवाक्य 1:6)। कलीसिया के भीतर किसी प्रकार का विशेष वर्ग होने के बजाय इसके सभी सदस्य केवल राजा ही नहीं, याजक भी हैं।

क. एक आत्मिक घर। 1 पतरस 2:5, 6 विश्वासियों को, ''जीवते पत्थरों के समान आत्मिक घर,'' यीशु को उस घर में ''कोने के सिरे का बहुमूल्य पत्थर'' दिखाता है। आयत 7 उसे कोने का ''सिरा'' बताती है।

ख. **स्थानीय रूप** में।
   1. किसी नगर, राज्य देश या इलाके में। एक स्थानीय मण्डली या सभा से बढ़कर चाहे वचन में किसी संगठनात्मक शासन की बात नहीं है परन्तु किसी नगर, राज्य, देश या इलाके में परमेश्वर के सब लोगों को इस या उस इलाके की ''कलीसिया'' कहा जाता है। उदाहरण: किसी नगर की ''कलीसिया''- 1 कुरिन्थियों 1:2; किसी राज्य की कलीसिया— प्रेरितों 9:31; किसी देश की कलीसिया— गला. 1:2; आदि
   2. मण्डली के रूप में। नये नियम की ओर से अधिकृत कलीसिया के एकमात्र संगठनात्मक शासन केवल स्थानीय स्वशासित मण्डलियों या सभाओं का मिलता है।

क. ये स्थानीय मण्डलियां (कलीसिया) कुछ समय के लिए बिना किसी प्रकार के पदाधिकारियों के हो सकती थीं (और होती भी थीं)। इस प्रकार वे परमेश्वर की इच्छा के अनुसार जो उसने प्रकट की थी उसके काम और आराधना को मिलकर बरकरार रखने वाले, बपतिस्मा पाए हुए विश्वासियों के समूह थे यानी मसीही लोगों के समूह जो पृथ्वी पर परमेश्वर की इच्छा को आगे बढ़ाने के लिए इकट्ठा होते थे।

ख. बाद में जब भाई योग्य होने के लिए मसीह के अनुग्रह और ज्ञान में इतना बढ़ गए तो स्थानीय मण्डलियों के भीतर ''अधिकार'' के दो वर्गों की अनुमति दी गई: (1) प्राचीन (*Elders*) जिन्हें अध्यक्ष (*Bishops*), प्रेसबितुर (*Presbyters*), पासबान (*Pastors*), निगरान (*overseers*) और (2) सेवक (*deacons*) भी कहा जाता था।

ग. इस प्रकार से जब कोई मण्डली पूरी तरह से संगठित हो जाती- जैसे कि फिलिप्पी में हुई, तो पौलुस अपना पत्र इस प्रकार लिख सकता था, ''मसीह यीशु के दास पौलुस और तीमुथियुस की ओर से, सब पवित्र लोगों के नाम जो मसीह यीशु में होकर फिलिप्पी में रहते हैं, **अध्यक्षों** (प्राचीनों, ऐल्डरों या बिशपों) और **सेवकों** (डीकनों) समेत'' (फिलिप्पियों 1:1)।

II. कलीसिया का शासन।

नोट: यह ध्यान दिया जाना और ज़ोर दिया जाना चाहिए कि जैसा कि नये नियम में बताया गया है, स्थानीय मण्डलियां, सभी परमेश्वर की दृष्टि में समान थीं; ये संगठनात्मक रूप में एक दूसरे से अलग; वे संगठन में एक जैसी; एक दूसरे से सम्बन्धित थी; और उन सब का एक ही काम और उद्देश्य था।

क. मण्डली की क्षमता में धार्मिक लोगों के प्रबन्ध के लिए मनुष्य द्वारा तीन शिक्षाएं बनाई गई हैं, इससे कलीसिया के शासन के तीन अलग अलग गुट बन गए हैं। पहले इन्हें निकाल देते हैं ताकि कलीसिया के शासन की नये नियम की शिक्षा को और ज़ोरदार ढंग से बताया जा सके।

1. ऐपिस्कोपल। शासन के रूप में कलर्जी के तीन ढंगों को माना जाता है जिसमें डीकन होते हैं और जो आम तौर पर एक प्रकार की शिष्यता को मानने वाले युवा होते हैं; प्रीस्ट, जिन्हें पैरिश का अधिकार दिया जाता है और उनके पास बड़ी शक्तियां होती हैं; और बिशप जो कई पैरिशों के अध्यक्ष होते हैं। जिस जिले पर बिशप प्रधानगी करता है उसे डायोसिस कहा जाता है। रोमन कैथोलिक, ग्रीक ऑर्थोडॉक्स और एंगलिकन चर्च कलीसिया के शासन के इस रूप का नमूना है। मैथोडिस्ट ऐपिस्कोपल चर्चों के इस रूप का सुधरा हुआ रूप है।
2. प्रैसबिटेरियन। शासन का यह रूप नये नियम की कलीसियाओं में पाई जाने वाली बातों को नये सिरे से बनाने का प्रयास है जिसमें ऐल्डरों की बहुसंख्या होती थी। प्रबन्ध के इस रूप में सिखाने वाले ऐल्डर में अंतर किया जाता है जिसे मिनिस्टर और प्रचारक के रूप में ठहराया (ऑर्डेन किया) जाता है और शासन करने वाले ऐल्डरों में लेमैन होते जिन्हें लीडरशिप में अपनी योग्यता के लिए चुना जाता है। वे मिलकर एक परिषद बनाते हैं और कलीसियाई मर्यादा के मामलों पर फैसले लेते हैं। शासन के इस रूप का एक नमूना प्रैसबिटेरियन चर्च है।
3. कॉंग्रिगेशनल। कलीसिया के शासन का यह रूप इस शिक्षा पर आधारित है कि प्रत्येक स्थानीय कलीसिया स्वशासित संस्थान है। सभी मामलों का निपटारा सदस्यों के मत से होता है। कलीसियाओं को ऐसोसियेशनों, कनवैंशनों और कॉंग्रेसों में संगठित किया जाता है, परन्तु उन में पूरी स्वतन्त्रता बनी रहती है। कॉंग्रिगेशनों और बैपटिस्ट चर्च, कलीसिया के शासन के इस रूप के उदाहरण हैं।

नोट: नये नियम द्वारा अधिकृत कलीसियाओं का शासन इन में से किसी ढंग से नहीं होता।

ख. जिस कलीसिया को यीशु ने पृथ्वी पर छोड़ा है उसके शासन का सारा अधिकार कलीसिया के ऐल्डरों को दिया गया है।

1. जब पौलुस ने इफिसुस से ''कलीसिया के **प्राचीनों** को (मिलेतुस में) बुलाया'' (प्रेरितों 20:17), तो उसने उन्हें अपनी और ''पूरे **झुंड** की चौकसी'' करने को कहा जिस पर पवित्र आत्मा ने उनहें ''**अध्यक्ष** ठहराया है'' (आयत 28)।
2. पौलुस ने तीमुथियुस को समझाया, ''जो **प्राचीन** अच्छा प्रबन्ध करते हैं, विशेष करके वे जो वचन सुनाने और सिखाने में परिश्रम करते हैं, दो गुने आदर के योग्य समझे जाएं'' (1 तीमुथियुस 5:17)।
3. पौलुस ने थिस्सलुनीके के भाइयों से चाहा ''कि जो तुम में परिश्रम करते हैं, और प्रभु में तुम्हारे अगुवे हैं, और तुम्हें शिक्षा देते हैं, उन्हें मानो'' (1 थिस्सलुनीकियों 5:12)।
4. फिर ''जो तुम्हारे अगुवे थे, और जिन्होंने तुम्हें परमेश्वर का वचन सुनाया है, उन्हें स्मरण रखो; और ध्यान से उसके चाल-चलन का अन्त देखकर उनके विश्वास का अनुकरण करो'' (इब्रानियों 13:7)।
5. फिर: ''अपने **अगुवों** की **मानो;** और उनके अधीन रहो, क्योंकि वे उनकी नाईं तम्हारे प्राणों के लिए जागते रहते, जिन्हें लेखा देना पड़ेगा, कि वे यह काम आनन्द से करें, न कि ठंडी सांस ले लेकर, क्योंकि इस दशा में तुम्हें कुछ लाभ नहीं'' (इब्रानियों 13:17)।
6. और फिर: ''तुम में जो **प्राचीन** हैं मैं उनकी नाईं प्राचीन ... यह समझाता हूं कि परमेश्वर की **उस झुंड** की, जो तुम्हारे बीच में है **रखवाली** करो; और यह दबाव से नहीं, परन्तु परमेश्वर की इच्छा के अनुसार आनन्द से, और नीच-कमाई के लिए नहीं, पर मन लगाकर। और जो लोग तुम्हें सौंपे गए हैं, उन पर अधिकार न जताओ, वरन झुंड के लिए आदर्श बनो। हे नवयुवको, तुम भी **प्राचीनों** के **अधीन** रहो'' (1 पतरस 5:1-5)।

ग. नये नियम की कलीसिया के शैशवकाल के दौरान पौलुस ने घोषणा की कि यीशु ने ''कितनों को प्रेरित (*Apostles*) नियुक्त करके, और कितनों को भविष्यवक्ता (*Prophets*) नियुक्त करके, और कितनों को सुसमाचार सुनाने वाले (*Evangelist*) नियुक्त करके, और कितनों को रखवाले (*Pastors*) और उपदेशक (*Teachers*) नियुक्त करके दे दिया'' (इफिसियों 4:11)।

1. प्रेरित बनने के लिए यह आवश्यक था कि वह उन लोगों में से जो ''जितने दिन तक प्रभु यीशु मसीह हमारे साथ आता जाता रहा, अर्थात यूहन्ना के बपतिस्मा से उसके हमारे पास से उठाए जाने तक, जो लोग बराबर हमारे साथ रहे, ... एक व्यक्ति ... उसके जी उठने का गवाह हो'' (प्रेरितों 1:15-26), मसीह के चेलों के साथ रहे हों, उनके बीच में से विशेष रूप में चुना जाए। 21 और 22

आयतों पर विशेषकर ध्यान दें। यह स्पष्ट होना चाहिए कि यीशु के जी उठने के ऐसे सब योग्य ''गवाह'' मर चुके हैं इसलिए आज की कलीसिया के किसी संगठन या शासन में कोई **जीवित प्रेरित** नहीं हो सकता। यह अलग बात है कि आज भी ''प्रेरितों की शिक्षा'' (प्रेरितों 2:42), यानी नये नियम के द्वारा जो ऊपर से प्रेरणा मिलने के कारण उन्होंने लिखा था, शासन आज भी हमारे साथ हैं।

2. भविष्यवाणी एक विशेष ''दान'' था जो हर किसी को नहीं बल्कि उन्हीं मिलता था जिन्हें पवित्र आत्मा यह दान देने के लिए चुनता था (पढ़ें 1 कुरिन्थियों 12:1-11)। परन्तु भविष्यवाणियां सदा होती रहनी थी। जैसा कि पौलुस ने कहा, ''प्रेम कभी टलता नहीं; भविष्यवाणियां हों, तो समाप्त हो जाएंगी; ... हमारी भविष्यवाणी अधूरी। परन्तु जब सर्वसिद्ध आएगा, तो अधूरा मिट जाएगा'' (1 कुरिन्थियों 13:8-10)। ''सर्वसिद्ध'' के अर्थ के रूप में दाऊद ने भविष्यवाणी की थी कि यह ''यहोवा की व्यवस्था खरी है'' (भजन संहिता 19:7)। यह पुराने नियम की व्यवस्था के लिए नहीं कहा गया था क्योंकि उस व्यवस्था की बात करते हुए इब्रानियों 7:19 घोषणा करता है, ''(व्यवस्था ने किसी बात की सिद्धि नहीं की), और उसके स्थान पर एक ऐसी उत्तम आशा रखी गई है जिसके द्वारा हम परमेश्वर के समीप जा सकते हैं।'' अच्छा, तो वह कौन सी व्यवस्था है जिससे हमें एक उत्तम आशा मिलती है। याकूब इसे ''स्वतन्त्रता की सिद्ध व्यवस्था'' कहता है (याकूब 1:25)। जैसा कि 2 तीमुथियुस 3:16-17 कहता है कि, ''सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धार्मिकता की शिक्षा के लिए लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए।'' यह लगभग नये नियम के वचन के लिए ही है। पौलुस के उस भविष्यवाणी को लिखने के समय ''अधूरा'' होने के कारण ''सर्वसिद्ध'' या नये नियम के आ जाने पर इसका ''मिट जाना'' आवश्यक था, परन्तु पूरी तरह से प्रकट नहीं किया गया था। और लिखने की मनाही करते हुए (प्रकाशितवाक्य 22:18) कि ''आएगा'' शब्द उनके लिए हो सकते हैं जो ''सिद्ध है'' अर्थात स्वतन्त्रता की सिद्ध व्यवस्था, नये नियम के लिए आगू हो सकते हैं, 96 ईस्वी में परमेश्वर की प्रेरणा से यूहन्ना द्वारा लिखे जाने तक नहीं था। उसके बाद भविष्यवाणी ''मिट गई'' क्योंकि कलीसिया में कोई जीवित नहीं था। बेशक वे आज भी हमारे पास हैं क्योंकि उनकी भविष्यवाणी नये नियम में दर्ज की गई हैं।

3. **सुसमाचार सुनाने वाले** (इवैंजलिस्ट) आरम्भ से ही कलीसिया में थे परन्तु **अधिकारियों** के रूप में **नहीं।** सुसमाचार सुनाने वाले, प्रचारक और सेवक (मिनिस्टर्स) ये सब एक ही हैं और एक ही जैसे हैं। उदाहरण **के** रूप में जवान तीमुथियुस को ''वचन का प्रचार'' करने (इसका अर्थ है कि वह एक प्रचारक था) .... ''सुसमाचार प्रचार का काम'' करने (इसका अर्थ है कि वह एक

इवैंजलिस्ट था), ''अपनी सेवा को पूरा'' करने (इसका अर्थ यह है कि वह एक सेवक था) को कहा गया (पढ़ें 2 तीमुथियुस 4:1-5)। ''इवैंजलिस्ट'' शब्द का अर्थ अच्छी बातें बताने वाला या सुसमाचार का सुनाने वाला है। यह काम ''संसार के अन्त तक सदा तक'' रहना था इसलिए इसका अर्थ यह हुआ कि हमारे पास आज भी इवैंजलिस्ट यानी प्रचारक या मिनिस्टर/सेवक हैं। परन्तु नये नियम में कलीसिया के प्रबन्ध में परमेश्वर ने उन्हें कोई भाग नहीं दिया, इसलिए उन्हें अब इसमें शामिल करना गलत होगा।

4. पास्टर (यानी ऐल्डर, बिशप, प्रैसबिटर और अध्यक्ष) आज भी हमारे पास हैं। कलीसियाओं में ''हुकूमत'' करने के लिए अधिकृत केवल वही हैं। परन्तु इतने बड़े इस पद पर ठहराए जाने के लिए भाइयों के लिए पहले अपने आपको योग्य साबित करना आवश्यक है, जिसकी योग्यताएं 1 तीमुथियुस 3 और तीतुस 1 में दी गई हैं। ये भाई उन मण्डलियों के सदस्य हैं जिनके वे भाग हैं। उनका अधिकार उसी मण्डली तक सीमित है जिसके वे सदस्य हैं। किसी भी ऐल्डर (यानी पास्टर) को एक से अधिक मण्डलियों पर कोई अधिकार नहीं है। जैसा कि प्रेरितों 14:23 बताता है कि पौलुस और बरनबास ने प्रत्येक कलीसिया (बहुत सी कलीसियाओं के ऊपर नहीं) ''में'' ऐल्डर (यानी पास्टर, जो एक से अधिक) नियुक्त किए। कलीसिया के शासन का कोई भी सिस्टम जो ऐल्डरों के अधिकार को उनकी अपनी स्थानीय मण्डली के अधिकार से बाहर अधिकार देता है वह नये नियम की शिक्षा के विपरीत है और अपने लोगों के प्रबन्धन के लिए परमेश्वर के क्रम को बिगाड़ता है। किसी मण्डली के एक ऐल्डर या सभी ऐल्डरों का दूसरी मण्डलियों पर अधिकार होगा तो वह मण्डली जिसके वे ऐल्डर सदस्य होंगे उस कलीसिया से ऊपर होंगे जिस पर वे ऐल्डर हैं। यह कलीसियाओं की स्वतन्त्रता और समानता को खत्म कर देता है और स्थानीय मण्डली की स्वायतता को नकारा।

5. **उपदेशक** (टीचर) भी ईश्वरीय योजना का भाग हैं। सिखाना संसार के अंत तक जारी रहना था (मत्ती 28:19-20)। यह अपने आप में जारी रहने वाला प्रबन्ध था (पढ़ें 2 तीमुथियुस 2:2)। परन्तु नया नियम कहीं भी उपेदशकों को शासन करने का नहीं बल्कि केवल सिखाने का अधिकार देता है। इसलिए उपदेश कलीसिया के शासन का भाग नहीं हैं।

घ. डीकन और डीकनेसें।

क. बेशक उनके पद में शासन करने का कोई अधिकार नहीं था फिर भी जैसा कि हम ने ऊपर देखा है, नये नियम की कलीसिया में अधिकारियों का एक विशेष वर्ग था जिसे ''डीकन'' कहा जाता था।

ख. *Diakonos* का अनुवाद ''डीकन'' है जिसका अर्थ सहायक यानी सेवक बनता है। इस कारण डीकन वे भाई होते थे जिन्हें विशेषकर कलीसिया में सेवा के लिए ठहराया जाता था। उनकी नियुक्ति के लिए योग्यताएं 1 तीमुथियुस 3 अध्याय

में मिलती हैं।

ग. डीकनों के हुकूमत करने के लिए वचन में कोई प्रावधान नहीं है इसलिए कलीसिया के शासन में उनका कोई योगदान नहीं है।

घ. बिशप (यानी ऐल्डर) हुकूमत करते थे इसलिए स्पष्ट है कि डीकन उनकी अगुआई में, उनकी अध्यक्षता में सेवा करते थे।

ड. सात भाइयों को जिन्हें यूनानी विधवाओं की देखभाल के लिए चुना गया था (प्रेरितों 6:1-6) आम तौर पर डीकन कहा जाता है। हो सकता है कि वे डीकन रहे हों; परन्तु अगर ऐसा था तो बाइबल इस पर खामोश है।

ङ डीकन, आर्क डीकन जैसे पदों की अलग-अलग कोई व्यवस्था नहीं थी। जहां तक प्रकट किए गए वचन की बात है डीकन सभी समान पद के होते थे।

2. फीबी (रोमियों 16:1 में) का वर्णन किंख्रिया की ''कलीसिया की सेविका'' के रूप में किया गया है।

क. ''सेवक'' शब्द का अनुवाद कई बार डीकनेस या ''सेविका'' किया जाता है।

ख. सेविकाओं (डीकनेसों) के लिए नये नियम में योग्यताएं नहीं बताई गई हैं।

ग. वचन में सेविकाओं यानी डीकनेसों के शासन करने के अधिकार के बारे में कुछ नहीं कहा गया है।

घ. पौलुस ने फीबे के भले काम के लिए उसकी सराहना की और भाइयों से उसकी किसी भी आवश्यकता में उसकी सहायता करने के लिए उसे **ग्रहण** करने को कहा। परन्तु ऐसा कोई संकेत नहीं है कि फीबे को उनसे इस विनती को मनवाने का अधिकार दिया गया हो।

ङ **भण्डारी।**

1. बेशक परमेश्वर के वचन में ''भण्डारी'' और ''भण्डारीपन'' शब्द पाए जाते हैं परन्तु उनका इस्तेमाल कलीसिया में किसी पद के लिए नहीं किया जाता।
2. 1 कुरिन्थियों 4:1-2 में पौलुस और सोस्थिनेस (जिन्होंने मिलकर यह पुस्तक लिखी) ने अपने आपको मसीह के सेवक (*ministers*) और परमेश्वर के भण्डारी (*stewards*) बताया।
   क. पौलुस एक प्रेरित और साथ ही एक भण्डारी था।
   ख. सोस्थिनेस प्रेरित तो नहीं था परन्तु भण्डारी था।
3. बिशप (अध्यक्ष) भी भण्डारी होते हैं (तीतुस 1:7)।
4. वास्तव में परमेश्वर के सब लोग भण्डारी हैं। पतरस समझाता है, ''**जिस** को जो वरदान मिला है, वह उसे परमेश्वर के नाना प्रकार के अनुग्रह के भले **भण्डारियों** के समान एक दूसरे की सेवा में लगाए'' (1 पतरस 4:10)।

नोटः प्रेरितों, बिशपों और हर किसी समेत ''जिस को'' भण्डारी है, इसलिए यह सबको स्पष्ट होना चाहिए कि यह वचन कलीसिया की हुकूमत की बात नहीं हो सकती। परिभाषा

से इसका साधारण अर्थ प्रबन्धक होना है। परमेश्वर संसाधनों और अवसरों के अच्छे प्रबन्ध के लिए हर मसीही को ज़िम्मेदार ठहराता है, इसलिए ''भण्डारी'' या ''भण्डारीपन'' का विचार नये नियम के वचन में केवल इसी अर्थ में है, पद या कुर्सी के अर्थ में कभी नहीं।

सारांश: आधुनिक रीति के विपरीत, नये निमय में बताया गया कलीसिया का संगठन और प्रबन्ध/शासन सरल, जटिलता से रहित प्रबन्ध है। मसीह ही इसका एकमात्र सिर होने के कारण विश्वव्यापी कलीसिया में मण्डलियों के रूप में किसी प्रकार का कोई प्रोहिततंत्र या ऊपरी ढांचा नहीं है, बल्कि उसकी देह, पत्नी, राज्य, याजकाई और आत्मिक घराने के रूप में कलीसिया में स्थानीय स्वायत मण्डलियां या सभाएं होती हैं जिनमें प्रत्येक उसी को जवाबदेह है न कि बीच के किसी मानवीय मध्यस्थ को। स्थानीय रूप में ये मण्डलियां जब तक उनमें काम की अध्यक्षता करने के लिए बिशपों (ऐल्डरों) और बिशपों के अधीन सेवा करने के लिए डीकनों के रूप में अन्य पुरुषों की नियुक्ति नहीं हो जाती तब ये यह मण्डलियां असंगठित हो सकती हैं। बिशपों और डीकनों को प्रत्येक कलीसिया यानी मण्डली **में** ठहराया जाता है न कि बहुत सी कलीसियाओं **के ऊपर।** अध्यक्ष हुकूमत करते हैं; जबकि डीकन नहीं। केवल डीकन (या अगर कोई डीकनेस हो) ही नहीं बल्कि सुसमाचार सुनाने वाले इवैंजलिस्ट, सिखाने वाले उपदेशक स्थानीय मण्डली का कोई भी और हर अन्य सदस्य बिशपों की ''अध्यक्षता'' में उनके अधीन होता है। भण्डारी सब लोग हैं।

नये नियम में बताई गई कलीसिया का संगठन और शासन उसमें शामिल लोगों पर लागू होता है न कि उस इलाके पर जिसमें वे रहते हैं। ''पैरिश'' या ''डायोसिस'' का विचार जो कि शासन के एपिस्कोपल रूप में पाया जाता है, नये नियम में कहीं नहीं मिलता।

एक मण्डली के अंदर सिखाने वाले ऐल्डरों और शासन करने वाले ऐल्डरों के बीच ऐसा कोई अंतर नहीं है, क्योंकि सभी के लिए, ''सिखाने के योग्य'' होना आवश्यक है और सभी समान रूप में शासन करने के लिए अधिकृत हैं। इसी प्रकार जहां ऐल्डरों को ठहराया जाता है वहां निर्णय मण्डलियों के अधिक मतों से नहीं लिए जाते; न ही ऐल्डरों और डीकनों की बहुसंख्या मिलकर वोट डालती हैं। ऐसा करना ऐल्डरों के शासन को पूरी तरह से नष्ट कर देगा। और जैसा कि हम ने देखा है कि परमेश्वर ने ऐल्डरों को हुकूमत करने का अधिकार दिया है।

नये नियम में ''कलर्जी'' और ''लेयटी'' में कोई अंतर नहीं किया गया। सब मसीही लोगों को वर्ग या श्रेणी के किसी भेद के बिना भण्डारी, याजक और राजा कहा गया है। इसका अर्थ यह हुआ कि कलर्जी और लेयटी की धारणा ही परमेश्वर की शिक्षा के विपरीत है।

जब मसीही लोग नये नियम के नमूने को मानेंगे तो मनुष्य के बनाए कलीसिया के संगठन और शासन के सारे बनावटी रूप खुद-ब-खुद हट जाएंगे। उनकी जगह पर सब मण्डलियां एक दूसरे से स्वतन्त्र होंगी, परमेश्वर के अधीन समान रूप मं स्वायता होंगी, परन्तु मसीह की उसी देह में एक दूसरे पर निर्भर होंगी। प्रत्येक मण्डली के ऐल्डर इस पर और केवल इसी पर शासन करेंगे। हर मण्डली के सब सदस्य उस नियम के अधीन हो जाएंगे। परमेश्वर के वनच के अनुसार व्यवस्था और शांति पाई जाएगी और सब डिनोमिनेशनें खत्म हो जाएंगी।

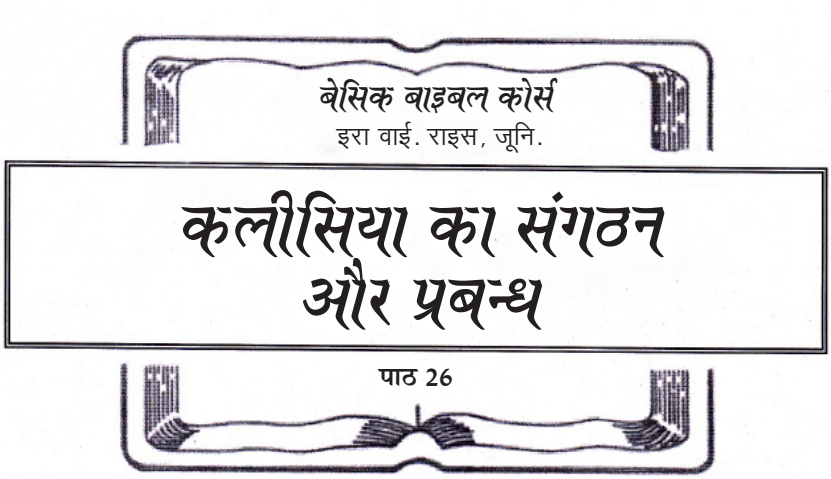

पाठ 26 के प्रश्न

Registration No.....

Grade .....

Name.....

Address.....

.....

Pin.....Mobile No.....

e-mail.....

(कृपया पता अंग्रेजी के बड़े अक्षरों में ही लिखें।)

1. नये नियम का अध्ययन करते हुए क्या आपको किसी भी प्रकार का कोई ऐसा संगठन मिला, जो पृथ्वी पर मसीह की मण्डलियों के ऊपर या उनके बीच में पाया जाता हो ? .....

   यदि हां, तो वचन में से उसका हवाला बताएं:.....

   .....

   .....

2. नये नियम के अनुसार कलीसिया का सिर कौन है ?

   .....

3. यीशु के अधीन क्या नया नियम विश्वव्यापी अर्थ में मण्डलियों के ऊपर अन्य अधिकारियों को अधिकृत करता है ? ..... यदि हां, तो सबूत के लिए वचन बताएं ?.....

   .....

   .....

4. मसीह के अधीन विश्वव्यापी कलीसिया के लिए नये नियम में अधिकृत अलग-अलग धारणाओं की पांच बातें बताएं ?.....

   .....

5. नये नियम के पांच हवाले बताएं जिनमें कलीसिया में पोप, कार्डिनल, आर्कबिशप, आर्कडीकन की नियुक्ति को अधिकृत किया गया है ?.....

   .....

6. यदि आप ऊपर दिए गए पदों के वचन में से अधिकृत होने का कोई हवाला नहीं दे सकते तो समझाएं कि यह पद वचन के अनुसार हैं या वचन के बाहर। .....

   .....

   .....

7. संगठन की बात करें तो नये नियम की कलीसिया की सबसे बड़ी इकाई क्या है ?

.....

.....

8. स्थानीय मण्डली के लिए नये नियम में कितने ''पद'' बताए गए हैं ? ..... उनके नाम बताएं: .....

.....

9. जब कोई कलीसिया नये नियम की शिक्षा के अनुसार संगठित होती है तो बताएं कि उसमें कौन कौन से पदाधिकारी होते हैं ? .....

.....

10. जब कोई कलीसिया इतनी उन्नति कर लेती है कि उसमें ऐल्डर और डीकन नियुक्त किए जा सकते हों, तो शासन के लिए किन भाइयों को चुना जाना चाहिए ?

.....

.....

11. ऐल्डर के चार और नाम बताएं जिनका अर्थ वही है जो ऐल्डर के पद का है।

.....

.....

12. कलीसिया के प्रबन्ध के लिए मनुष्य की बताई तीन थ्यूरियां बताएं जिन्हें आज कथित मसीही कलीसियाओं में तो इस्तेमाल किया जाता है परन्तु परमेश्वर के वचन में नहीं बताया गया है ? .....

.....

.....

13. कलीसिया के प्रबन्ध की ऐपिस्कोपल शिक्षा नये नियम की शिक्षा से कैसे अलग है?

.....

.....

14. क्या कलीसिया के प्रबन्ध का प्रेसबिटेरियल रूप वैसा ही है जैसा नये नियम में मिलता है?

..... यदि नहीं तो बताएं कि इसमें उससे क्या फर्क है?

.....

.....

15. जब कोई कलीसिया इतनी उन्नति कर ले कि वह ऐल्डरों और डीकनों को नियुक्त कर सकती हो तो क्या ऐसे मामलों का निर्णय गण्डली के मतों से होना चाहिए? .....

यदि नहीं तो फिर कैसे होना चाहिए? .....

.....

16. क्या कलीसिया में आज भी प्रेरित और भविष्यवक्ता होते हैं? .....

थोड़ा विस्तार से बताएं: .....

.....

17. ''इवैंजलिस्ट'' शब्द की परिभाषा बताएं?

.....

.....

18. क्या कलीसिया में इवैंजलिस्टों, प्रचारकों, सेवकों या उपदेशकों का कोई ''पद'' है?

..... सबूत के लिए वचन का हवाला बताएं: .....

.....

.....

19. डीकनों का क्या काम होता है ?

.....

.....

20. नये नियम में क्या अधिकृत है ? किसी एक मण्डली के अंदर बिशपों और डीकनों का होना या बहुत सी मण्डलियों के ऊपर एक बिशप का होना ?

.....

.....

आपका कोई प्रश्न हो तो उसे यहां लिखें.....

.....

.....

.....

.....

The NORTH INDIA BIBLE COLLEGE
P. O. BOX 44
CHANDIGARH-160017

E-mail: hindibiblecourse@gmail.com
basicbiblecourse@gmail.com